: 1 : अंगूर खट्टे हैं

एक बार एक लोमड़ी अंगूरों के बाग से गुजर रही थी। चारों ओर स्वादिष्ट अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। मगर वे सभी लोमड़ी की पहुंच से बाहर थे। अंगूरों को देखकर लोमड़ी के मुंह में बार-बार पानी भर आता था।

वह सोचने लगी- 'वाह ! कितने सुंदर और मीठे अंगूर हैं। काश मैं इन्हें खा सकती।' यह सोचकर लोमड़ी उछल-उछल कर अंगूरों के गुच्छों तक पहुंचने की कोशिश करने लगी। परंतु वह हर बार नाकाम रह जाती। बस, अंगूर के गुच्छे उसकी उछाल से कुछ ही दूर रह जाते थे।

अंत में बेचारी लोमड़ी थक हार कर अपने घर की ओर चल दी। पास ही में पेड़ पर बैठे एक कौवे ने व्यंग्य से पूछा, क्या बात है काकी, अंगूर नहीं खाओगी? तो लोमड़ी तमक कर बोली, अरे भैया ये अंगूर खट्टे हैं। कौआ हंस कर बोला, जो वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती उसे खराब बताने में ही समझदारी है। इसी आशय में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

: 2 : अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई

इस कहावत के पीछे कोयल और कौए की एक दिलचस्प और शिक्षाप्रद कहानी छिपी हुई है।

कहते हैं कि कोयल स्वभाव से बड़ी चालाक होती है। वह खुद घोंसला बनाने और अंडे सेने का कष्ट नहीं उठाती। जब अंडे देने का समय आता है तो वह कौए के घोंसले में जाकर अपने अंडे दे देती है। कौआ बेचारा इतना भोला होता है कि उन अंडों को अपने अंडे समझकर उन्हें सेता है और उनकी पूरी लगन से देखभाल करता है।

जब अंडों से बच्चे निकलते हैं तब कौए को यह मालूम होता है कि जिन अंडों को उसने इतनी मेहनत और प्यार से सेया, वे उसके नहीं, बल्कि कोयल के थे, कोयल ने अपनी चालाकी से खुद कोई मेहनत किए बिना अपने बच्चों को बड़ा करवा लिया।

जब कोई मेहनत किसी और करे लेकिन उसका फल कोई दूसरा ले जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 3 : अंधा घोड़ा, बहिर सवार–दे परमेसुर ढूँढ़नहार

एक गाँव के रास्ते पर एक व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था। लोगों ने ध्यान दिया कि घोड़ा अंधा है। वह केवल सवार के हाथ की थपकी और लगाम के हल्के इशारों से ही आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर बैठा व्यक्ति भी कुछ असमंजस में लग रहा था। राह चलते लोगों ने उससे पूछा, "भैया, कहाँ जाना है?" लेकिन सवार ने कोई उत्तर नहीं दिया। लोगों ने फिर जोर से पूछा, पर इस बार भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। तब सब समझ गए कि सवार बहरा है।

पास खड़े एक बुजुर्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, "इस जोड़ी का तो भगवान ही मालिक है! घोड़ा अंधा है, इसलिए रास्ता पहचान नहीं सकता, और सवार बहरा है, इसलिए किसी से पूछ नहीं सकता।"

लोगों ने इस अजीब स्थिति को देखकर ठहाका लगाया और वहीं से यह कहावत प्रचलित हो गई। इसी भाव की एक और कहावत है, *"अंधा सिपाही, कानी घोड़ी–विधि ने खूब मिलाई जोड़ी।"*

जब दो अयोग्य व्यक्ति मिलकर कोई कार्य करते हैं और उनकी जोड़ी असंगत या हास्यास्पद लगती है, तब इस प्रकार की कहावत कही जाती है।

: 4 : अंधा बांटे रेबड़ी, फिर फिर अपनेहु देय

एक गाँव में एक व्यक्ति ने किसी खुशी के अवसर पर रेबड़ियाँ बाँटने का निश्चय किया। इस काम के लिए उसने गाँव के एक अंधे व्यक्ति को चुना, यह सोचकर कि

वह किसी के साथ पक्षपात नहीं कर पाएगा और सबको समान रूप से रेवड़ियां बंट जाएंगी। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि अंधे व्यक्ति को आवाज़ें पहचानने में महारत हासिल थी।

जब रेबड़ियाँ बाँटने का समय आया, तो वह अंधा व्यक्ति आवाज़ सुनकर केवल अपने परिचितों और रिश्तेदारों को ही रेबड़ियाँ देने लगा। वह भीड़ में से उन आवाज़ों को चुन लेता जिन्हें वह पहले से जानता था और मुट्ठी भर-भर कर रेबड़ियाँ उन्हीं की ओर बढ़ाता। वह बार-बार उन्हीं लोगों की तरफ घूम जाता जिन की आवाज वह पहचानता था।

यह तमाशा देखकर भीड़ में मौजूद अन्य लोग समझ गए कि वह व्यक्ति केवल अपनों का ही पक्ष ले रहा है। तब एक बुज़ुर्ग ने तंज कसते हुए कहा, "अंधा बांटे रेबड़ी, फिर फिर अपनेहु देय"।

इस कहावत का अर्थ है कि जब किसी स्वार्थी या पक्षपाती व्यक्ति के हाथ में अधिकार आता है, तो वह केवल अपने करीबियों को ही लाभ पहुँचाता है।

: 5 : अंधा राजा बहिर पतुरिया, नाचे जा सारी रात

(बहिर - बहरी, पतुरिया - वैश्या या नर्तकी)।

बहुत समय पहले एक राज्य था। उस राज्य का राजा, उम्र के साथ-साथ दृष्टिहीन हो गया था। फिर भी वह गद्दी पर बैठा रहा। दरबार लगता, फैसले होते, पर राजा को न अपने राज्य की हालत दिखाई देती, न प्रजा की पीड़ा। राजा के मनोरंजन के लिए एक प्रसिद्ध नर्तकी रखी गई थी। वह नृत्य में निपुण थी, परंतु सुन नहीं सकती थी। दरबार में जब वह नाचती, तो वह संगीत की लय नहीं पकड़ पाती थी, फिर भी दरबारियों की तालियों के बीच उसका नृत्य चलता रहता।

एक दिन दरबार में संगीत बज रहा था और नर्तकी अपने ही अंदाज़ में नाच रही थी। अंधा राजा सिंहासन पर बैठा मुस्कुरा रहा था, जैसे सब कुछ ठीक चल रहा हो। उसी समय कुछ किसान अपनी फरियाद लेकर दरबार में पहुँचे, “महाराज! हमारे खेत सूख रहे हैं, नहरों में पानी नहीं है।” राजा ने सुना, और मंत्री की ओर इशारा किया। मंत्री ने बात सुनी और कहा, “सब ठीक है, जाओ! वर्षा हो जाएगी।”

कुछ दिन बाद व्यापारी आए, “महाराज, चोरियाँ बढ़ गई हैं, व्यापार ठप हो रहा है।” राजा ने सिर हिला कर कोतवाल की तरफ इशारा किया, कोतवाल ने आधा-अधूरा आदेश दिया, जिसे सिपाहियों ने ठीक से सुना ही नहीं। और दरबार में वही नाच-गाना चलता रहा। धीरे-धीरे राज्य में अराजकता फैल गई।

एक दिन राज्य के एक वृद्ध साधु दरबार में आए। उन्होंने यह दृश्य देखा तो उन के मुंह से निकल पड़ा वाह! - क्या व्यवस्था है, राजा को कुछ दिखता नहीं है, विधायिका को कुछ सुनाई नहीं देता। कार्यपालिका नाच गाने में व्यस्त हैं।

कहावत का अर्थ है कि जब नेतृत्व देखने की क्षमता खो देता है और व्यवस्था सुनने की, तब राज्य में भयंकर दुर्व्यवस्था फ़ैल जाती है।

: 6 : अंधाधुंध के राज में गधे पंजीरी खाएँ

एक राज्य था "सुव्यवस्थापुर"। उसका राजा सुबुद्धि प्रताप एक बहुत अच्छा शासक था। उसके कई मंत्रियों में से एक था अंधाधुंध सिंह जो ऊपर से अपने को राजा का वफादार दिखाता था लेकिन भीतर से बहुत दुष्ट प्रवृत्ति का था।

एक दिन मौका लगने पर उसने सोते समय राजा की हत्या कर दी और खुद राजा बन बैठा। उस के राजा बनते ही उस राज्य में योग्य लोगों की कदर ख़त्म हो गई और दुष्ट, कामचोर व चापलूस लोगों की बन आई। सारे महत्वपूर्ण पदों पर ऐसे ही लोगों की भरती हो गई। सारा सरकारी कामकाज दलालों और रिश्वतखोर लोगों के चंगुल में आ गया।

एक सरकारी विभाग में तैनात एक योग्य एवं ईमानदार कर्मचारी ने जब एक बुज़ुर्ग सहकर्मी को अपनी व्यथा सुनाई तो उस ने हँसते हुए कहा, "बेटा, यह 'अंधाधुंध का राज' है। यहाँ गधे पंजीरी खाते हैं, और घोड़े भूखे रह जाते हैं।" कहावत का अर्थ है कि जिस देश में बेईमानी और अराजकता का राज हो वहाँ योग्य व्यक्तियों को कोई नहीं पूछता जबकि अयोग्य व्यक्तिओं की चांदी हो जाती है।

: 7 : अंधी पीसे, कुत्ता खाए

एक गाँव में रामवती नाम की एक अंधी स्त्री रहती थी। उसकी दो बेटियाँ थीं, जो अपनी-अपनी ससुराल चली गई थीं। पति के देहांत के बाद उसके पास जीविका का कोई साधन नहीं था, लेकिन वह स्वाभिमानी थी और दान पर निर्भर नहीं रहना चाहती थी।

कुछ समय बाद उसे एक लाला के यहाँ गेहूँ पीसने का काम मिल गया। रामवती सुबह से शाम तक मेहनत करके गेहूँ पीसती और बदले में उसे भोजन मिल जाता। इसी तरह उसका गुज़ारा चलने लगा। धीरे-धीरे लाला को लगने लगा कि आटा कुछ कम हो रहा है। उसने रामवती से पूछा, तो उसने साफ कहा कि वह अकेली है, उसे अतिरिक्त आटे की कोई जरूरत नहीं। लाला को भी उस पर विश्वास था।

एक दिन लाला अचानक उसके घर पहुँचा। उसने देखा कि रामवती चक्की चला रही है और पास रखी परात में पिसा हुआ आटा रखा है। उसी परात में एक कुत्ता चुपचाप आटा खा रहा था, और रामवती को इसका बिल्कुल पता नहीं था।

कहावत का अर्थ है कि यदि गृहस्थी या व्यापार में अनदेखी और लापरवाही बरती जाए, तो स्वार्थी और अवांछित तत्व चुपचाप नुकसान पहुँचाते रहते हैं।

: 8 : अंधे और हाथी

छह अंधे आपस में दोस्त थे। एक बार उन्होंने ने सुना कि हाथी नाम का एक बहुत बड़ा जीव होता है। उन के मन में हाथी के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा हुई। वे सब मिल कर जमींदार के पास गए और उससे प्रार्थना की कि वे उस का हाथी देखना चाहते हैं। जमींदार ने उन से कहा कि कोई भी व्यक्ति बिना आँखों से देखे हाथी की विशालता का अनुभव नहीं कर सकता। पर अंधे नहीं माने। हार कर जमींदार

उन्हें अपने हाथी के पास ले गया और उनसे कहा कि वे छू कर हाथी को महसूस करें।

वे सब हाथी के इर्द गिर्द बिखर गए। उन में से एक अंधे ने हाथी की सूंड पकड़ी। वह बोला हाथी तो सांप जैसा है। दूसरे के हाथ में हाथी की पूंछ आई। वह बोला गलत, हाथी तो रस्सी जैसा है। तीसरे के हाथ हाथी के पैर पर पड़े। वह बोला, अरे हाथी तो खम्बे जैसा है। चौथे के हाथ में हाथी के कान आए। वह बोला, तुम सब पागल हो। हाथी तो सूप (छाज) जैसा है। इसी तरह पांचवें और छठे के हाथ में क्रमश: हाथी का दांत और धड़ आये। उन्होंने उसे भाले और मशक जैसा बताया। फिर वे सभी अपने को सही और दूसरों को गलत बताते हुए आपस में लड़ने लगे।

जब कोई मंद बुद्धि लोग किसी वस्तु या विज्ञान के विषय में ज्ञान हुए बिना अपने को सही और दूसरों को गलत बताते हैं तो यह कहावत कही जाती है।

: 9 : अंधे के हाथ बटेर लगी

किसी गाँव में कुछ मित्र रहते थे, जिन्हें शिकार का बड़ा शौक था। उनके साथ एक नेत्रहीन मित्र भी था, जो एक दिन उनके साथ शिकार पर गया। उस दिन दुर्भाग्यवश किसी के हाथ कोई शिकार नहीं लगा। सभी मित्र निराश हो गए और उन्होंने उस नेत्रहीन को ही इसका दोषी ठहराया कि उसी के कारण वे असफल रहे।

इसी बीच नेत्रहीन व्यक्ति ने खेत में मिट्टी का एक ढेला उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। संयोग से वहाँ एक बटेर सोया हुआ था और उसका हाथ सीधे उसी पर जा पड़ा। उसने तुरंत बटेर को पकड़ लिया।

जब उसके मित्रों ने बटेर देखा, तो वे बहुत प्रसन्न हुए। नेत्रहीन व्यक्ति भी अत्यंत उत्साहित हो गया और खुशी में बोला, "अब तो हम रोज़ शिकार किया करेंगे!"

किसी अयोग्य व्यक्ति को संयोगवश कोई बड़ी सफलता मिल जाए तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 10 : अंधे को दीखे हजारीबाग

एक व्यक्ति को घूमने-फिरने का बड़ा शौक था। उसे जहाँ भी मौका मिलता, वह नई-नई जगहों पर निकल पड़ता। एक बार उसने सुना कि हजारीबाग बहुत सुंदर स्थान है–हरे-भरे पेड़, साफ हवा और मन को भाने वाले दृश्य। बस फिर क्या था, वह तुरंत वहाँ जाने के लिए निकल पड़ा।

हजारीबाग पहुँचकर वह वहाँ की सुंदरता देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। लौटते समय उसके मन में बस एक ही बात थी, "ऐसी जगह तो दुनिया में कहीं नहीं।"

लेकिन किस्मत की बात थी हजारीबाग से लौटने के कुछ समय बाद अचानक उसकी आँखों की रोशनी चली गई। इलाज के कई प्रयास किए गए, परंतु उसकी दृष्टि वापस न आ सकी।

लेकिन उसके व्यवहार में एक विशेष परिवर्तन हुआ। जब भी किसी नए शहर, गाँव या स्थान की चर्चा होती, वह व्यक्ति तुरंत हजारीबाग का वर्णन शुरू कर देता।

कोई कहता, “मैं बनारस होकर आया हूँ।” वह तुरंत बोल उठता, “अरे, बनारस कैसा होगा! हजारीबाग जैसा सुंदर कहाँ! वहाँ तो हर तरफ हरियाली है, हवा इतनी शुद्ध कि मन प्रसन्न हो जाए…”

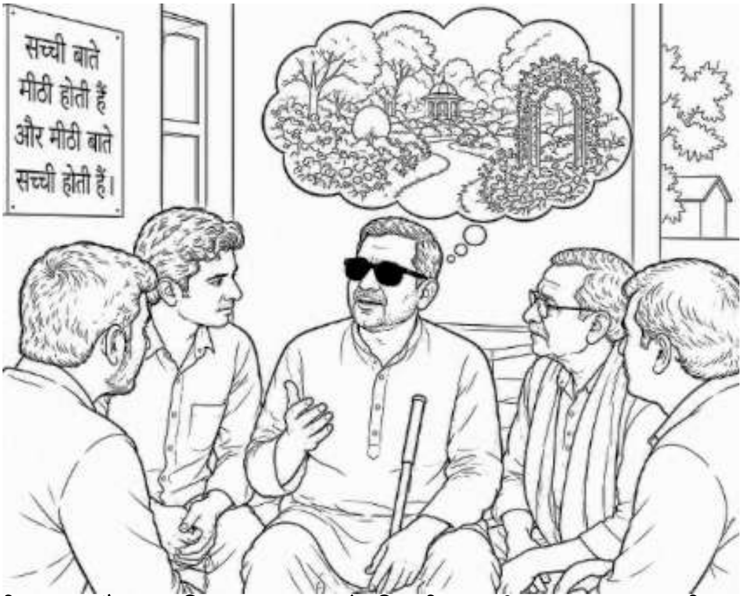

कोई दूसरा कहता, “दिल्ली बहुत बड़ी और चहल-पहल वाली जगह है।”वह फिर कहता, “अरे, दिल्ली अपनी जगह, पर हजारीबाग जैसी शांति कहाँ! वहाँ का सुकून ही अलग है…”

लोग समझ जाते कि इस बेचारे का ज्ञान अब उसी एक अनुभव तक सीमित रह गया है। धीरे-धीरे उसकी यह आदत लोगों में चर्चा का विषय बन गई। लोग मुस्कुराकर कहते, “अरे, अंधे को दीखे हजारीबाग!”

जब कोई व्यक्ति अपने सीमित ज्ञान या अनुभव के आधार पर हर विषय में राय देने लगता है, तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

: 11 : अंधेर नगरी चौपट राजा

एक बार एक सन्यासी अपने चेले के साथ घूमते हुए अंधेर नगरी नाम के एक ऐसे शहर में पहुंचे जहां की शासन व्यवस्था बड़ी अजीब थी। वहां पर मामूली सब्जियां भी एक टके में एक सेर मिल रही थीं और खाजा नाम की खोए से बनी एक बढ़िया मिठाई भी। यह देख कर चेला बहुत खुश हुआ और गुरु जी से बोला, गुरु जी यह तो बहुत अच्छी जगह है हम लोगों को यही रहना चाहिए।

गुरुजी ने कहा वत्स, यह बहुत खतरनाक जगह है। यहां रहना खतरे से खाली नहीं है। लेकिन चेला नहीं माना और वहीं रुकने पर अड़ गया।

गुरुजी ने कहा, ठीक है तुम यहाँ रुको, मैं जाता हूं। कभी किसी संकट में पड़ो तो मुझे याद करना। चेला खुशी-खुशी वहां रहने लगा और टके सेर मिठाईयां खा- खा कर खूब मोटा हो गया।

एक बार उस राज्य में ककड़ी की चोरी के अपराध में एक चोर पकड़ा गया। राजा ने उसे फांसी की सजा सुनाई और राज्य के लोगों को हुक्म दिया गया की फांसी वाले दिन सभी को वहां उपस्थित रहना है। जल्लाद जब चोर को फांसी पर चढ़ाने चला तो देखता क्या है कि चोर की गर्दन पतली है और फांसी का फंदा मोटा।

उसने राजा से पूछा, हुजूर अब क्या करूं?

राजा बोला कोई बात नहीं। भीड़ में से छांट लो, जिसकी गर्दन इस फंदे में फिट आ जाए उसे फांसी पर चढ़ा दो (अंधेर नगरी जो ठहरी)। संयोग से चेले की गर्दन फंदे

में बिल्कुल फिट आ गई तो उसे ही फांसी पर चढ़ाने की तैयारी होने लगी। अब चेले ने घबरा कर गुरु जी को याद किया।

गुरुजी सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने जान लिया कि चेला संकट में है और फौरन वहां आ गए। वहां आकर उन्होंने चेले के कान में कुछ कहा। उसके बाद गुरु और चेला आपस में झगड़ने लगे कि फांसी पर मैं चढ़ूँगा, नहीं मैं चढ़ूँगा।

मूर्ख राजा को इस बात पर बड़ा कौतूहल हुआ कि ऐसी क्या बात है जो दोनों ही फांसी पर चढ़ने पर आमादा हैं। उसने गुरुजी से पूछा तो गुरु जी ने बताया, महाराज इस समय ऐसा मुहूर्त है कि जो फांसी पर चढ़ेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा और स्वर्ग का राजा बनाया जाएगा। मूर्ख राजा तुरंत अपने सिंहासन से कूदा और जल्लाद से बोला, मुझे फौरन फांसी पर चढ़ा, मैं स्वर्ग का राजा बनूंगा। इस तरह चेले की जान बची तो उसने कसम खाई कि अब कभी ऐसी अंधेर नगरी में नहीं रहेगा।

किसी देश की शासन व्यवस्था बिलकुल चौपट हो तो उस के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 12 : अक्ल उम्र की मोहताज नहीं होती

बालक अष्टावक्र ने अपने ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वानों को भी चकित कर दिया था। उनके शरीर के आठ अंग टेढ़े थे इसलिए उनका नाम अष्टावक्र था।

अष्टावक्र के पिता वेदों के ज्ञाता थे। कहा जाता है कि जब अष्टावक्र अपनी माँ के गर्भ में थे, तब उन्होंने अपने पिता को वेदों का उच्चारण करते हुए सुना। एक स्थान पर उनसे उच्चारण में थोड़ी त्रुटि हो गई। गर्भ में ही बालक अष्टावक्र ने यह सुनकर सुधार कर दिया। पिता को यह बात बुरी लगी। क्रोध में आकर उन्होंने शाप दे दिया, “तू आठ अंगों से टेढ़ा होगा!”

जब अष्टावक्र थोड़े बड़े हुए, तो उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता बंदी नामक विद्वान से शास्त्रार्थ में हारकर कारागार में कैद हैं। वे अपने मामा के साथ जनक के दरबार पहुँचे, जहाँ विद्वानों का शास्त्रार्थ चल रहा था।

वहाँ उनहोंने बंदी से शास्त्रार्थ किया और अपने अद्भुत ज्ञान से उसे पराजित कर दिया। बंदी ने हार स्वीकार की और अष्टावक्र के पिता को मुक्त कर दिया गया। बाद में अष्टावक्र ने राजा जनक को आत्मज्ञान का उपदेश दिया, जो ‘अष्टावक्र गीता’ के रूप में प्रसिद्ध है। कहावत का अर्थ है कि छोटी आयु का व्यक्ति भी कभी कभी अधिक आयु वालों से अधिक बुद्धिमान हो सकता है। इसलिए कम आयु के व्यक्ति की बात को भी महत्व देना चाहिए।

: 13 : अक्ल के पोपट ज्ञान कहाँ पाए, पानी में भिगो के काहे न खाए

एक दिन, एक सियार ने एक कछुए को पकड़ लिया। लेकिन कछुए की कठोर खाल को चीरकर उसे खाना आसान नहीं था। सियार बार-बार कोशिश करता, लेकिन उसके दांत और नाखून कछुए की मजबूत खाल के आगे बेअसर साबित हो रहे थे। पास ही में एक पेड़ की शाखा पर कछुए का मित्र कौआ बैठा हुआ था। उस ने कछुए को बचाने के लिए योजना बनाई। उस ने सियार से कहा, "हे सियार! तुम इस कछुए

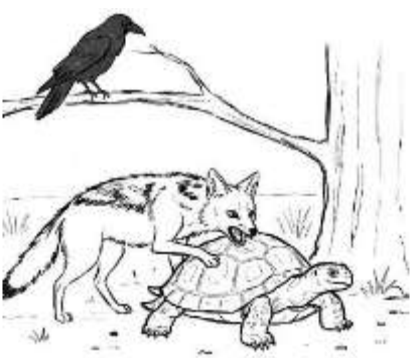

को ऐसे कभी नहीं खा पाओगे। अगर इसे तालाब के पानी में भिगो दो, तो इसकी खाल मुलायम हो जाएगी, और फिर तुम इसे आराम से खा सकोगे।"

सियार ने कौए की बात पर भरोसा कर लिया और कछुए को तालाब में डाल दिया। जैसे ही कछुआ पानी में पहुंचा, वह तेजी से तैरकर भाग निकला। यह कहानी हमें सिखाती है कि संकट के समय में सच्चे मित्रों का होना कितना महत्वपूर्ण है।

कोई धूर्त व्यक्ति अपनी होशियारी से खुद गच्चा खा जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 14 : अक्ल बड़ी या भैंस

एक बार एक भैंस तालाब में नहाकर बाहर निकली। उसके शरीर पर कीचड़ लगा था और उसके सींगों में जलकुंभियाँ उलझी हुई थीं। पास के पेड़ पर बैठा एक बंदर यह दृश्य देखकर हँस पड़ा।

भैंस को बहुत गुस्सा आया। उसने पूछा, "तुम मुझ पर क्यों हँस रहे हो?"

बंदर बोला, "तुम्हारी हालत देखकर हँसी आ गई। नहाकर निकली हो, फिर भी कीचड़ में सनी हो, और सींगों में जलकुंभियाँ लपेटे हुए–बहुत मजेदार लग रही हो!"

यह सुनकर भैंस और भड़क गई। उसने कहा, "तू अपने आप को बहुत अक्लमंद समझता है? चल, मुकाबला कर ले!"

दोनों के बीच कहासुनी बढ़ गई और जंगल के कई जानवर तमाशा देखने के लिए इकट्ठा हो गए। तभी वहाँ जंगल का राजा शेर भी आ पहुँचा। उसने पूरा मामला सुना और कहा, "ठीक है, तुम दोनों के बीच प्रतियोगिता करवा देते हैं। जो इस तालाब को पहले पार करके दिखाएगा, वही विजेता होगा।"

भैंस तुरंत तैयार हो गई, क्योंकि वह अच्छी तरह तैरना जानती थी। लेकिन बंदर के सामने समस्या थी–उसे तैरना नहीं आता था। वह मन ही मन कोई उपाय सोचने लगा।

सभी जानवर तालाब के दूसरी ओर जाकर खड़े हो गए। शेर ने संकेत दिया, "एक... दो... तीन... शुरू!"

भैंस तुरंत पानी में उतरकर तेजी से तैरने लगी। उधर बंदर ने अपनी बुद्धि का उपयोग किया। वह तालाब के किनारे लगे पेड़ों पर एक से दूसरे पेड़ पर छलाँग लगाते हुए आगे बढ़ने लगा।

जब भैंस लगभग किनारे के पास पहुँचने वाली थी, तभी बंदर एक ऐसे पेड़ पर पहुँचा जिसकी टहनी तालाब के ऊपर झुकी हुई थी। वहाँ से उसने सीधे भैंस की पीठ पर छलाँग लगाई और फिर भैंस की पीठ से उछलकर किनारे पर पहुँच गया। यानि बंदर पहले पहुँच गया। वह शेर के सामने हाथ जोड़कर बोला,

"महाराज, अब आप ही बताइए–अक्ल बड़ी या भैंस?"

: 15 : अक्कल अपनी ही आड़ी आवे

बहुत समय पहले की बात है। एक तालाब में एक मगरमच्छ रहता था। एक दिन वह अच्छे भोजन की तलाश में तालाब से बाहर निकला। उसे किनारे पर एक फलदार जामुन का पेड़ दिखा। पेड़ पर एक बंदर बैठा मज़े से जामुन खा रहा था।

मगरमच्छ ने उससे कहा–"भाई, थोड़े जामुन मुझे भी दे दो।" बंदर स्वभाव से भला था। उसने ढेर सारे जामुन मगरमच्छ को खिला दिए। धीरे-धीरे दोनों में दोस्ती हो गई। अब मगरमच्छ रोज़ जामुन खाने उसी पेड़ के नीचे आने लगा।

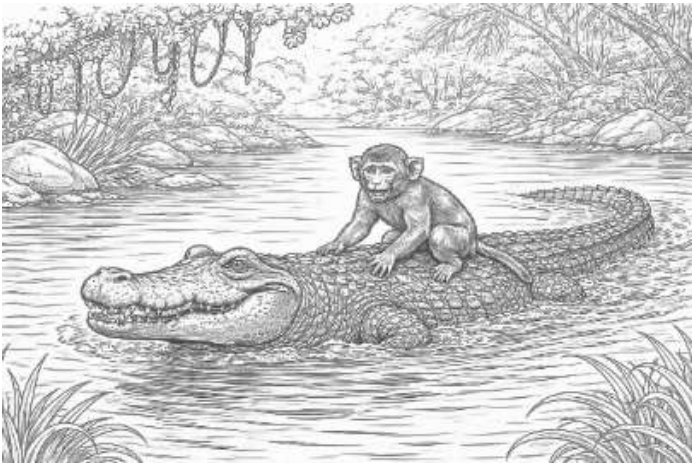

एक दिन मगरमच्छ कुछ जामुन अपनी पत्नी के लिए घर ले गया। जामुन खाकर मगरमच्छनी बोली, "इतने मीठे जामुन जो बंदर खाता है, उसका जिगर कितना मीठा होगा!" वह

जिद करने लगी, "मेरे लिए बंदर का जिगर लेकर आओ!" मगरमच्छ ने बहुत समझाया, "वह मेरा मित्र है।" पर मगरमच्छनी एक नंबर की धूर्त थी। वह नहीं मानी।

आख़िर हारकर मगरमच्छ ने एक चाल सोची। वह बंदर के पास गया और बोला, "तुम्हारी भाभी तुमसे मिलना चाहती है। मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें तालाब पार करा देता हूँ।" बंदर भरोसा करके उसकी पीठ पर बैठ गया।

जब दोनों तालाब के बीच पहुँचे, तो मगरमच्छ ने सच बता दिया, "दरअसल मेरी पत्नी तुम्हारा जिगर चाहती है।" यह सुनते ही बंदर के होश उड़ गए। मौत सामने थी। पर उसने घबराहट में अक़्ल नहीं खोई। वह तुरंत बोला, "मित्र, यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई? दोस्त के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ।" मगरमच्छ थोड़ा ढीला पड़ा।

बंदर ने आगे कहा, "पर एक समस्या है। हम बंदर अपना जिगर पेड़ की कोटर में रखते हैं, ताकि कूदते-फाँदते समय वह गिर न जाए।" फिर बोला, "मुझे जल्दी से पेड़ के पास ले चलो, ताकि मैं जिगर लाकर तुम्हें दे सकूँ।" मगरमच्छ उसकी बातों में आ गया और उसे वापस पेड़ के पास ले चला।

जैसे ही पेड़ नज़दीक आया, बंदर झट से छलांग लगा कर उस के ऊपर चढ़ गया और हँसते हुए बोला, "अरे मूर्ख! बिना जिगर के कोई जीवित रह सकता है क्या?" "आज के बाद हमारी दोस्ती खत्म!" मगरमच्छ पानी में खड़ा शर्म से गड़ गया। उसे अपनी भूल का घोर पछतावा हुआ।

कहावत का अर्थ है कि संकट के समय किसी और की नहीं, अपनी बुद्धि ही काम आती है।

: 16 : अगाड़ी तुम्हारी, पिछाड़ी हमारी

किसी गाँव में दो भाई रहते थे। दोनों ने मिलकर एक भैंस खरीदी – सोचा, साझे में रहेगी तो दोनों को फायदा होगा। अब भाइयों में एक था बड़ा चतुर, दूसरा था सीधा-सादा। चतुर भाई ने एक दिन बड़े प्यार से कहा, "भैया, अगर आधा-आधा साफ़ बँटवारा कर लें तो आगे कभी झगड़ा ही नहीं होगा।" सीधे भाई ने कहा, "ठीक है, जैसा तुम कहो।"

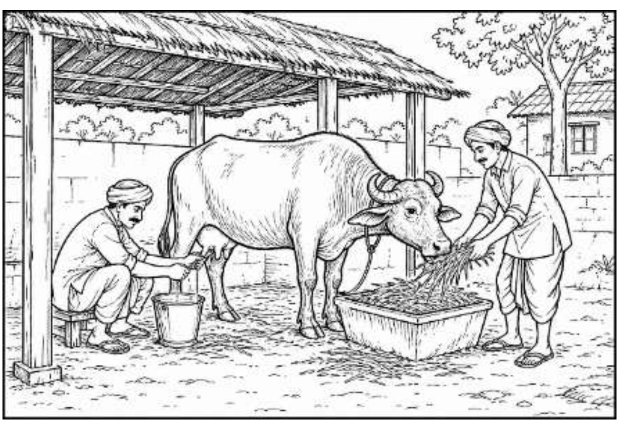

चतुर भाई मुस्कराया और बोला, "तो सुनो, आज से भैंस का आगे का हिस्सा तुम्हारे हिस्से में और पीछे का हिस्सा मेरे हिस्से में। कोई झंझट ही नहीं!" चलो एक कागज़ पर लिख कर पक्की रसीद बना लेते हैं। सीधे भाई को इसमें कोई चालाकी नज़र नहीं आई। उसने खुशी-खुशी यह बँटवारा मान लिया।

अब देखिए खेल! भैंस को चारा-दाना खिलाने का काम सीधे भाई के हिस्से आया–क्योंकि मुँह तो आगे है। और दूध दुहने का काम चतुर भाई करने लगा–क्योंकि थन तो पीछे हैं। एक भाई खर्च और मेहनत करता रहा, दूसरा मज़े से दूध पीता रहा। सीधा भाई कुछ समझ ही नहीं पाया। और चतुर भाई मन ही मन हँसता रहा।

तभी से इस तरह का कोई वाकया होने पर लोग कहते हैं–वाह! यह तो वही बात हुई, "अगाड़ी तुम्हारी, पिछाड़ी हमारी।"

यह कहावत ऐसे स्वार्थी और चालाक व्यक्ति पर कही जाती है, जो बंटवारे में बेईमानी कर के किसी चीज़ का लाभकारी हिस्सा खुद रख लेता है और अधिक मेहनत व नुकसान वाला हिस्सा दूसरों को दे देता है।

: 17 : अच्छी अच्छी मेरे भाग, बुरी नाऊ बामन के लाग

एक समय की बात है। उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव में एक किसान रहता था। उसकी एक ही बेटी थी–जिसके लिए एक अच्छे घर की तलाश की चिंता उसे दिन-रात बनी रहती थी। उन दिनों गाँव में पंडित जी और नाई की रिश्ते तय कराने में खास भूमिका होती थी। एक दिन पंडित जी और नाई ने किसान के घर आकर कहा, "भैया, तुम्हारी बेटी के लिए बहुत अच्छा रिश्ता मिला है। लड़का पढ़ा-लिखा है, परिवार इज्जतदार है, और खेती-बाड़ी भी अच्छी है।"

किसान ने बिना कोई छानबीन किए, उनके कहने पर विश्वास कर लिया। जल्दी ही लड़की की शादी कर दी गई। शादी के कुछ महीने तक सब ठीक रहा। रामस्वरूप और उसकी पत्नी संतुष्ट थे और गाँव में कहते फिरते, "देखो, हमारी बिटिया का भाग्य कितना अच्छा है।"

लेकिन धीरे-धीरे सच्चाई सामने आने लगी। एक दिन किसान खुद बेटी से मिलने गया। वहाँ का वातावरण देखकर उसका मन बैठ गया। लौटते ही उसने गुस्से में कहा, "यह सब उस नाई और पंडित की मूर्खता का नतीजा है! उन्होंने बिना देखे-समझे रिश्ता करा दिया, और हमारी बेटी का जीवन खराब कर दिया।"

गाँव के एक बुजुर्ग यह सब देख-सुन रहे थे। उन्होंने मुस्कुराते हुए किसान से कहा, "क्यों भाई!, जब सब अच्छा लग था तो तुमने कहा 'मेरी बेटी का भाग्य अच्छा है', और अब जब बुरा निकला तो दोष पंडित और नाई को दे रहे हो। कहावत का अर्थ

है कि मनुष्य अच्छे परिणाम का श्रेय अपने भाग्य को और बुरे परिणाम का दोष दूसरों को देता है।

इस कहावत को इस प्रकार से भी कहा गया है - बढ़िया मिल गया तो बिटिया के भाग, न मिला तो नाऊ बामन मारियो।

: 18 : अच्छी मति जो चाहो, बूढ़े पूछन जाओ

किसी देश की एक राजकुमारी अपनी सुंदरता और बुद्धिमत्ता के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। अनेक देशों के राजकुमार उससे विवाह करना चाहते थे।

राजकुमारी के पिता ने यह शर्त रखी कि जो भी राजकुमार विवाह के लिए आएंगे, उनकी कड़ी परीक्षा ली जाएगी। जो राजकुमार उन परीक्षाओं में सबसे खरा उतरेगा, उसी से राजकुमारी का विवाह किया जाएगा। साथ ही एक और शर्त यह थी कि किसी भी राजकुमार के साथ कोई वृद्ध या बुजुर्ग व्यक्ति नहीं आएगा, सिर्फ युवा ही साथ आ सकते थे।

एक बुद्धिमान राजकुमार ने इस शर्त का उपाय खोजा। वह अपने राज्य के सबसे बुजुर्ग और अनुभवी मंत्री को एक बड़े ढोल में छिपाकर साथ ले आया। जब भी राजा कोई कठिन प्रश्न या परीक्षा सामने रखते, तो उसके साथी ढोल के पास जाकर मंत्री से सलाह लेते और उसी के अनुसार उत्तर देकर समस्या का समाधान कर देते।

इस प्रकार, वह राजकुमार हर परीक्षा में सफल होता गया, जबकि अन्य सभी राजकुमार असफल हो गए। अंततः उसी राजकुमार को विजेता घोषित किया गया और उसका विवाह राजकुमारी से कर दिया गया।

कहावत का अर्थ है कि यदि कोई समझदारी भरी सलाह लेना हो तो बुजुर्ग लोगों के पास जाना चाहिए, क्योंकि उन के पास हर बात का अनुभव होता है।

: 19 : अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम

एक दिन मलूकदास के मन में विचार आया–ईश्वर सबको भोजन देता है, तो मैं भी देखूं कि बिना प्रयास के मुझे कैसे खिलाता है। यह सोचकर वे जंगल में जाकर

एक पेड़ के ऊपर चढ़ कर बैठ गए। कुछ देर बाद एक राहगीर वहाँ आया। उसने पेड़ के नीचे बैठकर अपना खाना निकाला ही था कि घोड़ों की टापों की आवाज आई। उस के पास काफी धन था। उस ने सोचा कि कहीं डाकू न हों। वह अपनी पोटली लेकर जल्दी से वहाँ से निकल गया। भोजन वहीं पड़ा रह गया।

इसके तुरंत बाद ही डाकुओं का एक दल वहाँ पहुँचा। भोजन देखकर उन्हें शंका हुई कि कहीं उनको पकडवाने के लिए इसमें ज़हर न मिला हो। उन्होंने आसपास खोजा और पेड़ पर बैठे मलूकदास को जासूस समझ कर पकड़ लिया। मलूक दास ने बताया कि वे एक साधु हैं और एक व्यक्ति अपना खाना वहाँ छोड़ गया है, इस पर डाकुओं के सरदार ने कहा, "अगर यह खाना सुरक्षित है तो तुम ही खाकर दिखाओ।"

मजबूरी में मलूकदास ने भोजन करना शुरू कर दिया। खाते-खाते उनके मन में विचार आया–मैं तो यह देखने आया था कि बिना मांगे ईश्वर कैसे खिलाता है, और यहाँ तो मेरी इच्छा के विरुद्ध भी भोजन करना पड़ रहा है। इसी पर उन्होंने यह पंक्तियाँ कहीं - अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए, सब के दाता राम।

व्यवहार में इन पक्तियों का दुरूपयोग अधिक होता है। भीख मांगने वाले लोग अक्सर यह बोलते हुए पाए जाते हैं।

: 20 : अढ़ाई दिन का बादशाह

यह कहावत उस व्यक्ति के लिए कही जाती है जिसे थोड़े समय के लिए सत्ता, पद या अधिकार मिल जाए और वह उसमें घमंड करने लगे। इसका मूल अलिफ लैला की एक प्रसिद्ध कथा से जुड़ा है।

बगदाद में अबू हसन नाम का एक गरीब, लेकिन अतिथियों का सत्कार करने वाला व्यक्ति रहता था। उसकी आदत थी कि वह रोज किसी अजनबी को अपने घर बुलाकर भोजन कराता और उससे बातचीत करता। एक दिन बगदाद के खलीफा, हारून-अल-रशीद, भेष बदलकर उसके घर पहुँचे। अबू हसन ने उनका आदर-सत्कार किया। बातचीत में उसने हँसते हुए कहा कि यदि वह एक दिन के लिए बादशाह बन जाए, तो समाज के बुरे लोगों को ठीक कर दे।

खलीफा को उसकी बात रोचक लगी। उन्होंने उसे नशीला पदार्थ देकर महल में लाकर शाही वस्त्र पहना दिए और सिंहासन पर बैठा दिया। नशा टूटने पर अबू हसन ने खुद को बादशाह के रूप में पाया। पहले तो उसे लगा कि उसे भ्रम हुआ है, पर जब सबने उसे "जहाँपनाह" कहकर सलाम किया, तो उसे विश्वास हो गया। उस दिन उसने पूरे अधिकार के साथ शासन किया–अच्छे निर्णय लिए, अपराधियों को दंड दिया और न्याय किया। रात को उसे फिर सुलाकर उसके घर छोड़ दिया गया। सुबह उठने

पर वह फिर एक साधारण व्यक्ति था। उसे लगा जैसे कोई सपना देखा हो। कुछ समय बाद खलीफा ने उसे फिर बुलाकर वही अनुभव कराया। इस तरह वह कुल मिलाकर "ढाई दिन" तक बादशाह जैसा जीवन जी पाया।

इस विषय में दूसरी कहानी एक भिश्ती की है जिसने हुमायूँ को उस समय डूबने से बचाया था जब वह शेरशाह सूरी से हार कर भाग रहा था। हुमायूँ ने उसे एक दिन का बादशाह बनाने का वचन दिया था। बादशाह बनने के बाद हुमायूँ ने अपना वचन निभाते हुए उसे एक दिन की बादशाहत दी तो उस भिश्ती ने चमड़े के सिक्के चलवा दिए थे।

कहावत को इस आशय में प्रयोग किया जाता है कि मनुष्य को पद मिलने पर विनम्र रहना चाहिए, क्योंकि परिस्थितियाँ कभी भी बदल सकती हैं।

: 21 : अतिशय लोभ न कीजिए, लोभ पाप की धार, इक नारियल के कारने पड़े कुएं में चार

एक समय की बात है, एक गांव में लालचंद नाम का आदमी था, जिसे लोग "कंजूस लालचंद" के नाम से चिढ़ाते थे। उसे हर चीज में मोलभाव करने और मुफ्त की चीजें पाने का शौक था। एक दिन वह नारियल लेने बाज़ार गया और दुकानदार से नारियल का भाव पूछा।

पहला दुकानदार बोला, "चार पैसे का।" उस ने आगे बढ़ कर दूसरे दुकानदार से पूछा। वह बोला "तीन पैसे का।" तीसरे ने दो पैसे कहा, और आखिरी ने एक पैसे। लालचंद की आंखें चमक उठीं। उसने पूछा, "कहीं मुफ्त में कहीं मिलेगा?"

दुकानदार हंसते हुए बोला, "आगे नारियल का पेड़ है, खुद तोड़ लो।" वह फौरन पेड़ पर चढ़ गया और एक नारियल तोड़ लिया। लेकिन जैसे ही नीचे उतरने की कोशिश की, पैर फिसल गया। वह घबराकर एक डाल पकड़कर लटक गया। संयोग से नीचे एक कुआं भी था, याने अगर वह गिरता तो सीधे कुएं में जाता। डर के मारे उसे

भगवान याद आने लगे। सोचने लगा कि कितने भी पैसे खर्च हो जाएँ, किसी तरह जान बच जाए।

कुछ देर बाद ऊँट पर सवार एक आदमी उधर से निकला। कंजूस उससे बोला तुम मुझे उतार दो तो मैं सौ रूपये दूंगा। सौ रूपये उस समय बहुत ही बड़ी रकम थी। ऊंट सवार जल्दी से उसकी मदद करने पहुंचा। लेकिन ऊंट के ऊपर खड़े हो कर जैसे ही उसने लालचंद के पैर पकड़ने की कोशिश की, ऊंट आगे बढ़ गया, और अब दोनों कुएं के ऊपर लटकने लगे।

इतने में एक और ऊंट सवार आया। उसने भी मदद की कोशिश की, लेकिन फिर वही हुआ—अब तीनों लटक रहे थे। अंत में एक घुड़सवार आया, उसने लटके हुए आदमी के पैर पकड़े तो घोड़ा आगे बढ़ गया। अब चार लोग एक ही डाल पर लटके हुए थे। डाल इतना वजन कहां सहती? टूट गई और चारों सीधे कुएं में जा गिरे।

अधिक लोभ के कारण कोई अनावश्यक संकट में पड़ जाए तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 22 : अतिसय लोभ बकुल ने कीन्हा, छन में प्राण केकड़ा लीन्हा

एक तालाब के किनारे एक बूढ़ा बगुला (बकुल) रहा करता था। कभी वह बड़ा चतुर शिकारी था—लेकिन अब उम्र का असर दिखने लगा था। मछलियाँ पकड़ना उसके बस का नहीं रहा। बगुले ने सोचा—अब चालाकी से पेट भरना पड़ेगा।"

एक दिन वह तालाब के किनारे सिर झुकाए बैठ गया और आँसू बहाने लगा। तालाब के दूसरे जीव—मछलियाँ, मेंढक, केकड़े—सब हैरान हो गए। उन्होंने पूछा—"बाबा बकुल, आज इतने दुखी क्यों हो?" बगुला गहरी साँस लेकर बोला, "मैंने शास्त्रों में पढ़ा है, तीन साल बाद यहाँ भयंकर अकाल पड़ेगा। तालाब सूख जाएगा और तुम सब मारे जाओगे।"

यह सुनते ही सारे जलजन्तु काँप उठे। डर के मारे बोले, "फिर हमारा क्या होगा?" बगुला बोला, "घबराओ मत। यहाँ से थोड़ी दूर एक बहुत बड़ा तालाब है। उसका पानी कभी नहीं सूखता। अगर चाहो तो मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा सकता हूँ।" फिर बड़ी

चालाकी से जोड़ दिया, "मैं बूढ़ा हो गया हूँ, एक दिन में बस एक ही चक्कर लगा पाऊँगा।" डरे हुए जीवों ने बिना सोचे-समझे बगुले पर भरोसा कर लिया।

अब रोज़ बगुला एक मछली या मेंढक को अपनी गर्दन में लटकाकर उड़ता...लेकिन उस बड़े तालाब की ओर नहीं (बड़ा तालाब कोई था ही नहीं), बल्कि थोड़ी दूर एक चट्टान पर जाता। वहाँ बैठकर आराम से उसे चट कर जाता।

दिन बीतते गए। तालाब के जीव कम होते गए। और बगुला मोटा होता गया। एक दिन केकड़े की बारी आई। बगुला उसे भी गले में लटकाकर उड़ चला। लेकिन

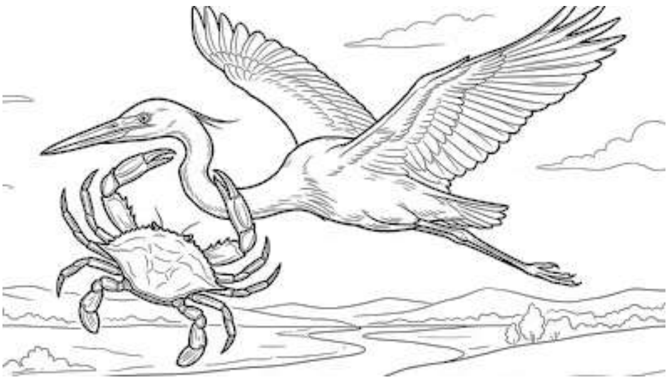

जब वे उस चट्टान के पास पहुँचे, तो केकड़े की नज़र चट्टान पर पड़े हड्डियों के ढेर पर पड़ी। केकड़े को शक हुआ। उसने पूछा–"बाबा बकुल, यह कैसी जगह है?"

बगुला हँस पड़ा। बोला–"अरे मूर्ख! यही है मेरा भोजन स्थल। आज तक जिसे भी ले गया, यहीं खा गया।" यह सुनते ही केकड़े को असलियत समझ आ गई। उसने झट से अपने मजबूत पंजों से बगुले की गर्दन जकड़ ली और इतनी ज़ोर से दबाई कि उसी क्षण बगुले के प्राण-पखेरू उड़ गए। केकड़ा धीरे-धीरे चल कर तालाब की ओर लौट आया और सबको सच्चाई बता दी।

कोई व्यक्ति अत्यधिक लोभ में दूसरों को धोखा दे और अंत में अपनी ही चाल में फँस जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 23 : अधफाड़िया न्याय (पाली पंचायती न्याय)

पाली क्षेत्र में एक समय पंचों (गाँव के निर्णायकों) का बड़ा प्रभाव था। सभी प्रकार के झगड़े-टंटे वही निपटाते थे और उनके निर्णय को लोग सहर्ष स्वीकार करते थे। एक बार दो व्यक्तियों के बीच लेन-देन का विवाद पंचों के पास आया। एक व्यक्ति ने दूसरे को 100 रुपये उधार दिए थे। ऋण लेने वाला अत्यंत गरीब और पूरी राशि लौटाने में असमर्थ था। पंच इस स्थिति को भली-भांति समझते थे। उन्होंने विचार-विमर्श करके निर्णय दिया कि ऋण लेने वाला व्यक्ति 100 रुपये के स्थान पर केवल 50 रुपये ही लौटाए।

ऋण देने वाले से पंचों ने कहा, “देखो भाई, पूरे सौ रुपये मिलना कठिन है। 20-25 रुपये तो तुम भी छोड़ देते, और 25 रुपये हम लोगों के कहने से छोड़ दो। इस तरह कम से कम आधी रकम तो तुम्हें मिल जाएगी, नहीं तो पूरी रकम से भी हाथ धो बैठोगे।” फिर ऋण लेने वाले से कहा, “तुमने 100 रुपये उधार लिए थे, हमने उन्हें आधा कर दिया है। अब 50 रुपये तो तुम्हें हर हालत में चुकाने ही चाहिए।”

दोनों पक्षों ने पंचों की बात मान ली और विवाद समाप्त हो गया। इस प्रकार पाली के पंच दोनों पक्षों को समझाकर बीच का रास्ता निकालते थे, जिसे “अधफाड़िया न्याय” कहा जाता था–अर्थात आधा-आधा छोड़कर किया गया व्यावहारिक न्याय।

: 24 : अधिक सयाना तीन जगह सने

एक कस्बे में दो दोस्त रहते थे– एक था रामू, सीधा-सादा, काम से काम रखने वाला। दूसरा था गोवर्धन–अपने आपको बड़ा सयाना समझने वाला।

एक दिन दोनों बाजार जा रहे थे। रास्ते में कहीं गंदगी पड़ी थी। दोनों का पैर उस पर पड़ गया। रामू ने बिना कुछ सोचे पैर को ज़मीन पर रगड़कर साफ किया और आगे बढ़ गया। गोवर्धन यह देख कर बोला, “पहले देखो तो कि यह चीज़ है क्या!” रामू ने कंधे उचकाए, “गंदगी है, और क्या होगी?”

पर गोवर्धन को अपना “सयानापन” दिखाना था। उसने पहले उंगली से छूकर देखा, “हूँ... कुछ तो अलग लग रहा है...” फिर उसने उंगली को नाक के पास ले जाकर सूँघा। इस चक्कर में जरा सी गंदगी उस की नाक पर भी लग गई। जैसे ही उसे असलियत का एहसास हुआ, उसका चेहरा बिगड़ गया।

रामू हँस पड़ा और बोला, “बुजुर्गों ने सही ही कहा है - अधिक सयाना तीन जगह सने।” इस कहावत को इस प्रकार से भी कहा गया है - अधिक सयानो, जाए ठगानो।

: 25 : अधेले के वास्ते पैसे का तेल जलाया

लखनऊ शहर में एक अफीमची मियां रहते थे। एक रात वह एक हलवाई की दुकान से दोने में रेवड़ियाँ लेकर घर लौट रहे थे। रास्ते में चलते-चलते दो रेवड़ियाँ उनके दोने से गिर गईं। मियां जी को जब इसका पता चला तो वे वहीं ठिठक गए। उन्होंने तुरंत एक चिराग जलाया और जमीन पर झुक-झुककर बड़ी तन्मयता से उन रेवड़ियों को ढूंढ़ने लगे।

काफी देर तक उन्हें इसी तरह खोजते देख एक राहगीर ने आश्चर्य से पूछा, “मियां जी, आप कब से क्या तलाश कर रहे हैं?” मियां जी ने जवाब दिया, “दो रेवड़ियाँ गिर गई हैं, वही खोज रहा हूँ।” राहगीर ने हंसते हुए कहा, “अरे मियां, उन दो

रेवड़ियों की कीमत तो दमड़ी भर होगी, और आप इतने देर से चिराग जलाकर कई पैसे का तेल फूंक चुके हैं! उतने में तो बहुत रेवड़ियाँ आ जातीं।"

यह सुनकर अफीमची मियां मुस्कुराए और बोले, "भाईजान, मुझे पैसे का कोई अफसोस नहीं है। चिंता तो बस इस बात की है कि अगर ये रेवड़ियाँ किसी बेदर्द के हाथ लग गईं, तो वह उन्हें यूँ ही खट से चबा जाएगा!"

इस कहावत का आशय बनियों की एक ख़ास आदत से भी है। उनके हिसाब में थोड़ा सा भी फरक रह जाय तो उसे ढूँढने में घंटों लगा देते हैं। दिन में वे व्यापार में व्यस्त रहते हैं इसलिए रात में बैठकर हिसाब मिलाते हैं और कभी-कभी रोकड़ में अधेले के फर्क के लिए कई पैसों का तेल जल जाता है।

इस कहावत का अर्थ है—कम लाभ के लिए अधिक हानि उठाना, या तुच्छ बात के पीछे अनावश्यक समय, श्रम और साधन खर्च कर देना।

: 26 : अन्ते मति सो गति

बहुत समय पहले की बात है, हिमालय के एक घने वन में एक ऋषि रहते थे। ऋषि बड़े दयालु और शांत स्वभाव के थे। एक दिन उन्हें जंगल में एक मृग शावक मिला, जिसकी मां उसे जन्म देते ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। उन्होंने दयावश उसे अपने आश्रम में ला कर पाल लिया। शावक धीरे-धीरे बड़ा हुआ और ऋषि के जीवन का केंद्र बन गया। सुबह-शाम ऋषि उसकी सेवा में लगे रहते। भजन-पूजन पीछे छूट गया। आश्रम के शिष्यों ने कहा, "गुरुजी, यह मोह आपको उचित नहीं है।" ऋषि ने हंसते हुए कहा, "प्राणी मात्र पर दया करना तो धर्म है।"

कुछ समय बाद ऋषि अत्यधिक बीमार हो गए। जब वे मृत्युशैया पर लेटे थे, उनका मन मृग के भविष्य की चिंता में डूबा हुआ था कि अगर मैं चला गया तो इसका क्या होगा? इसे शेर खा जाएगा! कोई इसे चारा नहीं देगा! इत्यादि, इत्यादि।।।

उनकी अंतिम सांस मृग की चिंता में ही चली गई। परिणामस्वरूप, अगले जन्म में ऋषि को मृग योनि में जन्म लेना पड़ा।

इस विषय में एक दूसरी कथा एक स्त्री के बारे में कही जाती है जो विवाह के तुरंत बाद ही विधवा हो गई थी। जब वह प्रौढावस्था में थी तो बहुत अधिक बीमार

हो कर मृत्यु शैया पर पड़ी थी। उसको देखने एक युवा वैद्य आए। वैद्य ने जब नाड़ी देखने के लिए उसका हाथ पकड़ा तो उस स्त्री को एक अजीब सी सिहरन हुई और उस के मन में आया कि हाय मैं इस सुखद अनुभूति से कितनी वंचित रही। उसी समय उसका प्राणांत हो गया। अंतिम समय की उस अतृप्त इच्छा के कारण उसे एक वैश्या के घर में जन्म मिला। मरते समय व्यक्ति के मन में जो विचार, इच्छाएं, या भाव होते हैं, उसके अनुसार उसे अगला जन्म मिलता है। इसलिए, जीवन के अंतिम दिनों में अपने मन को अच्छे विचारों और सुकर्मों में लगाना चाहिए।

: 27 : अपना अपना स्वभाव कोई नहीं छोड़ सकता

एक साधु ने देखा कि कुछ बच्चे पानी में बहते एक बिच्छू को पत्थर मार रहे हैं। साधु ने उन्हें रोका और बिच्छू को बचाने के लिए पानी से निकालने लगा। हर बार जैसे ही वह बिच्छू को उठाता, बिच्छू उसे डंक मार देता और फिर पानी में गिर जाता। फिर भी साधु बार-बार उसे बचाने की कोशिश करता रहा और अंत में उसे सुरक्षित बाहर निकालकर झाड़ी में छोड़ दिया।

बच्चों ने आश्चर्य से पूछा–"बाबा, वह आपको डंक मारता रहा, फिर भी आपने उसे क्यों बचाया?"

साधु मुस्कराकर बोला–"बिच्छू का स्वभाव डंक मारना है, और मेरा धर्म किसी की जान बचाना। न वह अपना स्वभाव छोड़ सकता है न मैं अपना धर्म। इसी प्रकार के सन्दर्भ में यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 28 : अपनी-अपनी खाल में सब मस्त

बहुत समय पहले की बात है। एक धर्मात्मा राजा था– न्यायप्रिय, दानी और प्रजा-वत्सल। जब वह अपनी मृत्यु शैया पर पड़ा था। तो उसके मन में एक ही प्रश्न घूम रहा था–"मृत्यु के बाद क्या?"

उसी समय एक सिद्ध मुनि राजमहल में आए। राजा ने काँपती आवाज़ में उनसे पूछा, "मुनिवर, बताइए मेरा अगला जन्म कहाँ होगा?" मुनि पहले तो राजा को टालते रहे, पर राजा के बहुत आग्रह करने पर कुछ क्षण मौन रह कर बोले, "राजन, तुम्हारा अगला जन्म फलाँ स्थान पर एक शूकरी (सूअरी) के गर्भ से होगा।"

यह सुनते ही राजा का चेहरा उतर गया। इतने पुण्य कर्मों के बाद भी पशु योनि! राजा अत्यंत दुखी हुआ। उसने अपने पुत्र को पास बुलाया और कहा, "बेटा, मेरी मृत्यु के कुछ दिन बाद तुम उस स्थान पर जाना। यदि उस शूकरी का बच्चा जन्म ले, तो उसे मार देना, ताकि मुझे उस योनि से शीघ्र मुक्ति मिल जाए।"

राजकुमार भारी मन से यह वचन देकर चुप हो गया। कुछ समय बाद राजा का देहांत हो गया। वचन निभाने के लिए राजकुमार उस स्थान पर पहुँचा। वहाँ सचमुच एक शूकरी के साथ एक छोटा-सा शूकर शावक था। राजकुमार ने तलवार निकाली और जैसे ही आगे बढ़ा–शूकर शावक ने मानव वाणी में कहा, "रुक जाओ, राजकुमार।"

राजकुमार चौंक गया। उसने पूछा–"तुम मुझे पहचानते हो?" शावक बोला, "मैं वही हूँ–तुम्हारा पिता। इस जन्म में भी मुझे सब याद है।" राजकुमार की आँखें भर आईं। उसने कहा, "पिताजी, मैं आपको इस दुर्दशा से मुक्त करने ही आया हूँ।"

शूकर शावक मुस्कराया और बोला–"नहीं, पुत्र। मैं इस हाल में भी बहुत खुश हूँ। मुझे कोई कष्ट नहीं है। मुझे मत मारो।"

राजकुमार स्तब्ध रह गया। जिस योनि को वह नरक समझ रहा था, उसी में उसका पिता संतुष्ट था। वह चुपचाप तलवार म्यान में रखकर लौट आया।

कोई व्यक्ति बुरे हाल में रह रहा हो फिर भी खुश हो और अपनी हालत को बदलने का कोई प्रयास करने को तैयार न हो तो यह कहावत कही जाती है।

: 29 : अपनी टेक भँजाई, बलमा की मूंछ कटाई

स्त्रियाँ एक दूसरे से होड़ करने के लिए कैसे कैसे मूर्खतापूर्ण काम कर सकती हैं यह सोच पाना मुश्किल है। एक बार दो पड़ोसनों में होड़ हुई कि किसका पति उसे अधिक चाहता है। उन में से एक के पति ने बड़ी बड़ी मूंछें रखी हुई थीं जिन्हें वह बड़े जतन से संभालता था। दूसरी स्त्री ने उसे चुनौती दी कि वह किसी भी तरह से अपने पति की मूंछें नहीं कटवा पाएगी।

बस फिर क्या था। उस स्त्री ने बीमारी का बहाना बनाकर चारपाई पकड़ ली। उसका पति बहुत चिंतित हुआ और उसने उसके इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी, परन्तु स्त्री की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ।

एक दिन स्त्री ने पति से कहा, "यदि तुम अपनी मूंछ मुड़ा डालो, तो मैं ठीक हो जाऊंगी।" पति अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता था। उसकी बात मानकर उसने अपनी प्रिय मूंछें कटवा दीं।

आश्चर्य की बात कि दूसरे ही दिन स्त्री बिल्कुल स्वस्थ होकर उठ बैठी और चक्की पीसते हुए गाने लगी, "अपनी टेक भँजाई, बलमा की मूंछ कटाई।"

पति समझ गया कि उसकी पत्नी ने अपनी जिद पूरी करने के लिए यह सारा नाटक रचा था।

यह कहावत उस मूर्ख व्यक्ति के लिए कही जाती है, जो अपनी हठ या जिद पूरी करने के लिए अपने ही लोगों को हानि पहुंचाने में भी संकोच नहीं करता।

: 30 : अपने किए का क्या इलाज

एक गाँव में एक किसान रहता था। मेहनती था, पर थोड़ा गुस्सैल भी। उसके घर में कई मुर्गियाँ थीं। पास के जंगल में एक चालाक लोमड़ी रहती थी, जो आए दिन उसकी मुर्गियों पर घात लगाकर हमला करती और उन्हें उठा ले जाती। किसान दिन-रात बस यही सोचता रहता कि इस लोमड़ी को कैसे सबक सिखाया जाए।

एक दिन किसान को मौका मिल ही गया। उसने जंगल के पास एक शिकंजा लगाया जिसमें लोमड़ी फँस गई। किसान ने सोचा, "अब इस लोमड़ी को ऐसी सजा दूँगा कि जीवन भर याद रखेगी।"

किसान ने लोमड़ी की पूँछ पर फटे-पुराने कपड़े बाँध दिए, उन्हें मिट्टी के तेल से भिगोया और आग लगा दी। लोमड़ी आग की तपिश से घबरा गई और जान बचाने के लिए जंगल के बजाय उसकी ही गेहूँ की पकी फसल की ओर भागी।

किसान ने घबराकर चिल्लाया, "अरे! रुक जा, उधर मत जा!" लेकिन लोमड़ी को तो अपनी जान बचानी थी। उसकी जलती हुई पूँछ की आग से देखते ही देखते पूरा खेत जलकर खाक हो गया।

जब आग बुझी और केवल राख बची, तो किसान अपना सिर पकड़ कर जमीन पर बैठ गया। वह बड़बड़ाने लगा, "अब किसे दोष दूँ? यह सब मेरे ही किए का नतीजा है। यहीं से यह कहावत बनी, "अपने किए का क्या इलाज।"

: 31 : अपने अपने भाग से खाते हैं सब कोय

एक समय की बात है, एक राजा के चार बेटे थे। एक दिन उसने अपने चारों बेटों को अपने पास बुलाया और बड़े प्यार से पूछा, "बताओ, तुम सब किसके भाग्य से खाते हो?"

पहले तीनों बेटे एक स्वर में बोले, "पिताजी, हम तो आपके भाग्य से खाते हैं। आपके कारण ही हमारा जीवन सुखी और संपन्न है।" राजा यह सुनकर प्रसन्न हुआ। लेकिन जब चौथे बेटे की बारी आई, तो उसने थोड़ी अलग बात कही। उसने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "पिताजी, यह ठीक है आप बहुत प्यार से हमारा पालन पोषण कर रहे हैं लेकिन मैं मानता हूँ कि संसार में हर कोई अपने-अपने भाग्य से खाता है।"

राजा को बेटे की यह बात बुरी लगी। उसने गुस्से में कहा, "अगर तुम अपने भाग्य से खाते हो, तो आज से मेरा संरक्षण छोड़कर चले जाओ और अपनी बात को साबित करो!"

चौथा बेटा चुपचाप घर छोड़कर निकल पड़ा। वह कुछ दिनों तक जंगलों और गाँवों में भटकता रहा। कभी मेहनत करके कमाता खाता, तो कभी भूखा सो जाता।

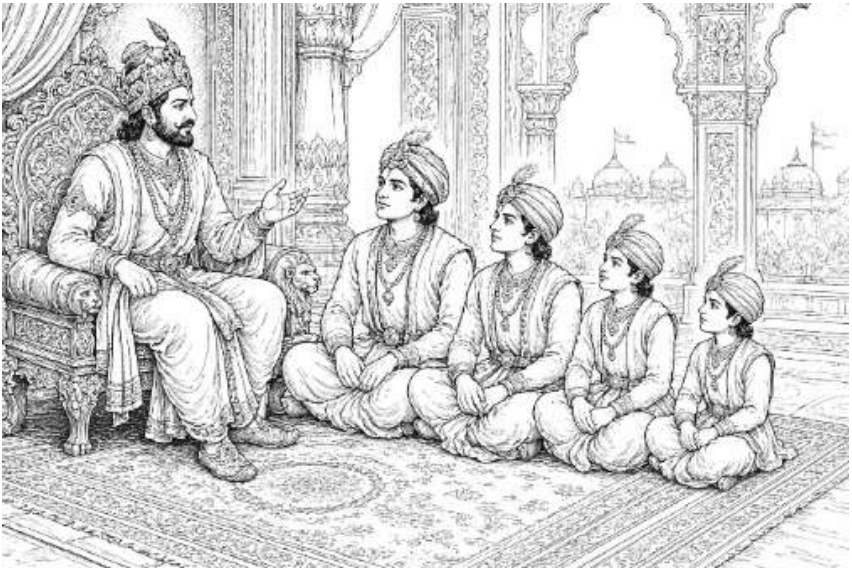

एक दिन, घूमते-घूमते वह एक दूसरे राज्य में पहुँचा। उस राज्य का राजा अपनी बेटी के लिए योग्य वर की तलाश में था। संयोग से राजा की बेटी ने उस युवक को देखा और उसे पसंद कर लिया। राजा को भी उसका स्वभाव और चरित्र भा गया और जब उसे मालूम हुआ कि वह पड़ोसी राजा का बेटा है तो उसने अपनी बेटी का विवाह उसी युवक से कर दिया। विवाह के साथ राजा ने उसे आधा राज्य भी दहेज में दे दिया।

कुछ समय बाद यह समाचार उस युवक के पिता तक पहुँचा। जब राजा को यह पता चला कि उसका वही बेटा अब एक दूसरे राज्य का आधा राजा बन चुका है, तो वह स्तब्ध रह गया। उसने अपने दरबार में सबके सामने स्वीकार किया, "सचमुच, संसार में हर कोई अपने-अपने भाग्य से खाता है।"

: 32 : अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गई खेत

चम्पत राय एक किसान था, पर स्वभाव से आलसी था। उसकी पत्नी बहुत मेहनती थी। उसने मेहनत करके खेत तैयार करवाया और फसल उगा ली। लेकिन फसल की रखवाली तो वह नहीं कर सकती थी। जब फसल की देखभाल का समय आया, तो चम्पत राय हमेशा की तरह लापरवाही करता रहा। वह चौपाल में ताश खेलने में समय बिताता और खेत पर जाकर मचान पर सो जाता। कभी-कभी कनस्तर बजाकर चिड़ियों को उड़ाता, लेकिन अधिकतर समय फसल असुरक्षित रहती।

इलाके की सारी चिड़ियाँ बेरोकटोक उसके खेत में डेरा जमाने लगीं। धीरे-धीरे चिड़ियों ने फसल के सारे दाने चुग लिए। जब फसल काटने का समय आया, तो पता चला कि बालियों में दाना ही नहीं बचा। चम्पत राय को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह रोने और पछताने लगा।

कोई व्यक्ति समय पर मेहनत न करे और अवसर हाथ से निकल जाने पर दुखी हो तो उसे उलाहना देने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 33 : अभी दिल्ली दूर है

यह कहानी इतिहास के पन्नों से जुड़ी है, जहाँ एक सूफी संत और एक बादशाह के बीच की दिलचस्प घटनाओं ने इस कहावत को जन्म दिया।

गयासुद्दीन तुगलक, जो दिल्ली का सुल्तान था, अपने समय का एक ताकतवर शासक माना जाता था। लेकिन जितना वह ताकतवर था, उतना ही अभिमानी भी। उसी समय दिल्ली में एक सूफी संत हजरत निज़ामुद्दीन औलिया रहते थे। उनका जीवन गरीबों की मदद और समाज को सेवा देने में समर्पित था। उनकी लोकप्रियता सुल्तान गयासुद्दीन को खटकती थी।

इसी कारण से सुल्तान और हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के बीच मनमुटाव हो गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि हजरत निज़ामुद्दीन को तुरंत दिल्ली छोड़नी होगी। लेकिन उसी समय सुल्तान को बंगाल की ओर युद्ध के लिए निकलना पड़ा। जाते-जाते उसने सख्त हिदायत दी कि जब तक वह युद्ध से लौटे, हजरत को दिल्ली छोड़ देना चाहिए।

गयासुद्दीन तुगलक जब बंगाल से लौट रहा था तो उसने हजरत निज़ामुद्दीन के पास फिर से यह संदेश भिजवाया कि उसके पहुँचने से पहले निज़ामुद्दीन को हर हाल में दिल्ली छोड़नी होगी। जब निज़ामुद्दीन को सन्देश पहुँचाया गया तो उन्होंने शांत मन से मुस्कुराते हुए केवल इतना कहा, "हनोज दिल्ली दूरस्त", जिसका मतलब था, "अभी दिल्ली दूर है।"

दिल्ली पहुँचने से चार मील पहले ही सुलतान को अपनी नियति का सामना करना पड़ा। उसके बेटे, मुहम्मद बिन तुगलक ने षड्यंत्र रचकर उसके तंबू को गिरा दिया, जिससे सुल्तान की मृत्यु हो गई।

हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के कहे शब्द सच साबित हुए। सुल्तान गयासुद्दीन कभी दिल्ली लौट ही नहीं सका। कोई कार्य होने में देर हो और अनिश्चितता हो तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 34 : अभी लोटे को जलपात्र कहना बाकी है

एक अहीर अपनी ससुराल पहुँचा। मन में पहले से ठानकर आया था कि वहाँ ऐसा रौब जमाएगा कि सब उसे बड़ा विद्वान मानेंगे।

गाँव के लोग सीधे-सादे थे, रोज़मर्रा की भाषा में बात करते थे। अहीर ने सोचा, “ये लोग तो ‘पानी’ बोलते हैं, मैं ‘जल’ कहूँगा। फिर क्या था, “जरा *जल* पिलाना...”, “मैं *जल* ग्रहण कर लूँ...”, “यह *जल* कुछ अधिक ठंडा है, स्नान करने में कष्ट हो रहा है...”

लोग सचमुच प्रभावित हो गए। कहने लगे, “दामाद जी बड़े पढ़े-लिखे हैं!” बस, यही सुनना बाकी था। अहीर का सीना और चौड़ा हो गया। चेहरे पर विद्वत्ता छा गई। फिर अकड़कर बोला,“अरे, यह तो कुछ भी नहीं... अभी तो लोटे को ‘जलपात्र’ कहना बाकी है!”

अब जो थोड़े समझदार लोग थे, उन्हें समझते देर न लगी कि यह ज्ञान नहीं, केवल शब्दों का दिखावा है—जैसे खाली बर्तन ज्यादा आवाज करता है। जब कोई व्यक्ति छोटी-सी बात को भी भारी-भरकम शब्दों में लपेटकर खुद को बड़ा विद्वान दिखाने की कोशिश करता है, तब यह कहावत कही जाती है।

: 35 : अमर सिंह को मरते देखा, धनपत माँगें भीख, लछमी कंडा बीनतीं - इसे नाम छुछइयाँ ठीक

पुराने समय की बात है, एक गाँव में एक आदमी रहता था, जिसका नाम छुछइयाँ था। उसका यह नाम उसके माता-पिता ने बड़े ही सोच-समझकर रखा था। दरअसल, उनके कई बच्चे जन्म लेते ही काल के गाल में समा गए थे। यह परंपरा

थी कि यदि बच्चों को बचाना हो, तो ऐसा नाम रखा जाए, जिससे उन्हें नज़र न लगे (जैसे - मांगे राम, घूरेमल आदि)। इसी डर से माता-पिता ने अपने बेटे का नाम छुछइयाँ रख दिया।

लेकिन यह नाम छुछइयाँ के लिए हमेशा परेशानी का कारण बन गया। गाँव के लोग उसका मज़ाक उड़ाते, बच्चे उसे चिढ़ाते, और वह जहाँ भी जाता, उसे अपने नाम को लेकर शर्मिंदगी महसूस होती। छुछइयाँ ने कई बार सोचा कि काश, उसका नाम कुछ अच्छा होता, जैसे अमर सिंह, धनपत, या लक्ष्मी नारायण।

एक दिन, अपनी जिंदगी से निराश होकर उसने मरने का फैसला कर लिया। "अब और नहीं सह सकता," उसने सोचा और घर छोड़कर जंगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक बड़ी भीड़ मिली। यह एक शवयात्रा थी। छुछइयाँ ने उत्सुकता से लोगों से पूछा, "यह किसका शव है?"

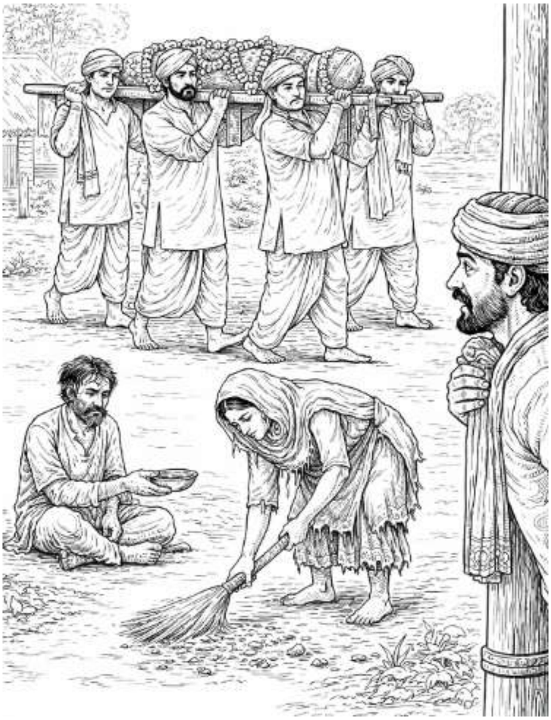

लोगों ने जवाब दिया, "यह अमर सिंह हैं।"

छुछइयाँ हैरान रह गया। उसने मन ही मन सोचा, "अमर सिंह जैसे वीर और ताकतवर नाम वाला इंसान भी मर सकता है?"

थोड़ा आगे बढ़ा तो एक भिखारी मिला। उसकी हालत दयनीय थी। फटे पुराने कपड़े पहने, वह सड़क पर बैठा भीख माँग रहा था।

छुछइयाँ ने पूछा, "भाई, तुम्हारा नाम क्या है?" भिखारी ने उत्तर दिया, "मेरा नाम धनपत है।" छुछइयाँ और भी चकित हुआ। "धनपत" नाम का व्यक्ति जो धन का मालिक होना चाहिए, वह भीख माँग रहा है!

थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक गरीब औरत फटेहाल कपड़ों में कंडे बीन रही है। उसका चेहरा भूख और थकान से मुरझाया हुआ था। छुछइयाँ ने पूछा, "माता, आपका नाम क्या है?" औरत ने उत्तर दिया, "मेरा नाम लक्ष्मी है।"

यह सुनकर छुछइयाँ रुक गया। उसने आसमान की ओर देखा और मुस्कुराया। उसे समझ आ गया कि नाम के पीछे भागने का कोई अर्थ नहीं। अमर सिंह भी मर

सकते हैं, धनपत भी भीख माँग सकते हैं, और लक्ष्मी भी गरीबी में जी सकती हैं। छुछइयाँ ने लंबी साँस ली और कहा, "मेरा नाम छुछइयाँ ही ठीक है।"

: 36 : अल्लाह का घर सब जगह है

गुरु नानक देव जी अपनी उदासियों (यात्राओं) के दौरान दुनिया को प्रेम, एकता और ईश्वर की सर्वव्यापकता का संदेश देते हुए एक बार मक्का पहुँचे। लंबी यात्रा से थके हुए गुरु जी एक जगह काबा के पास आराम करने के लिए लेट गए। लेकिन अनजाने में उन्होंने अपने पैर काबा की ओर कर दिए।

सुबह एक मुल्ला ने यह देखा, तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उसने नानक जी को झकझोरते हुए जगाया और जोर से कहा, "चल उठ! तूने काबा की ओर पैर क्यों किए हैं? यह अल्लाह का घर है। इसकी तरफ पैर करना अल्लाह का बहुत बड़ा अपमान है।"

गुरु नानक जी ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "भाई, मैं तो बहुत थका हुआ हूँ। मुझसे तो उठा नहीं जा रहा। अगर तुम्हें मेरे पैर की दिशा बदलनी है, तो खुद घुमा दो।"

मुल्ला ने सोचा, "यह आदमी कितना अजीब है!" उसने गुरु जी के पैर दूसरी ओर घुमा दिए। लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने देखा कि काबा अब उस दिशा में दिख रहा है।

मुल्ला चौंक गया। उसने तुरंत गुरु जी के पैर किसी और दिशा में घुमाए, लेकिन अब काबा वहाँ नजर आने लगा। उसने हर दिशा में प्रयास किया, पर हर बार उसे काबा उसी ओर दिखाई दिया।

अवाक होकर मुल्ला ने गुरु नानक जी से कहा, "यह क्या जादू है?"

गुरु नानक जी मुस्कुराए और बोले, "भाई, यह कोई जादू नहीं। यह सच्चाई है। अल्लाह का घर हर जगह है। अल्लाह केवल काबा में नहीं, वह तो पूरी सृष्टि में समाया हुआ है।"

इस पर किसी ने लिखा है - मुल्ला बोला नानक से क्यूँ पैर उधर करता है, नानक बोले काबा तो सब ओर मुझे दिखता है।

: 37 : आँखों की सुइयाँ निकालना बाकी है

(लोक-विश्वास है कि यदि आटे की मूर्ति बनाकर जादू के जोर से उसमें शत्रु का नाम लेकर सुइयाँ चुभो दी जाएं और फिर उस मूर्ति को मरघट में रख दिया जाए, तो उस शत्रु के सर्वांग में उसी तरह की सुइयाँ चुभ जाएंगी और वह तड़प-तड़प कर मर जाएगा। पर अगर कोई तरकीब जानता हो, तो मंत्र द्वारा सुइयों को एक-एक करके अलग करके उसे जीवित भी किया जा सकता है)

एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव में एक आदमी और उसकी पत्नी खुशी-खुशी रहते थे। पर दुर्भाग्यवश, पति के कुछ शत्रु थे, जो उसकी तरक्की और खुशहाल जीवन से जलते थे। उन्होंने उसे मारने के लिए जादू-टोने का सहारा लिया और उपरोक्त विधि का उपयोग कर के उस आदमी को मार डाला।

उसकी पत्नी, जो जादू-टोने की विधियाँ जानती थी, अपने पति की मृत्यु से विचलित नहीं हुई। उसने अपने ज्ञान और मंत्रों का सहारा लिया और उसे पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। रात के अंधेरे में वह मरघट गई और आटे की मूर्ति को ढूँढा। उसने मंत्र पढ़ते हुए एक-एक करके सभी सुइयाँ निकालनी शुरू कर दीं। हर सुई के निकलने के साथ उसके पति के शरीर में हरकत होने लगी। जैसे-जैसे वह सुइयाँ निकालती गई, उसका पति धीरे-धीरे जीवन की ओर लौटने लगा।

आखिर में, सिर्फ आँखों की सुइयाँ निकालनी बाकी रह गईं, लेकिन उसी समय पत्नी को बाहर जाना पड़ा। वह मूर्ति वहीं छोड़कर चली गई और मन ही मन सोचा कि लौटकर अंतिम सुइयाँ निकालकर अपने पति को पूरी तरह जीवित कर लेगी।

इसी बीच, उनकी घर की नौकरानी वहाँ पहुँची। उसने मूर्ति को देखा और बिना किसी मंत्र-ज्ञान के ही मूर्ति की आँखों से बची हुई सुइयाँ निकाल दीं। आश्चर्यजनक रूप से जैसे ही सुइयाँ हटीं, वह आदमी पूरी तरह जीवित हो गया। जब उसकी आँखें

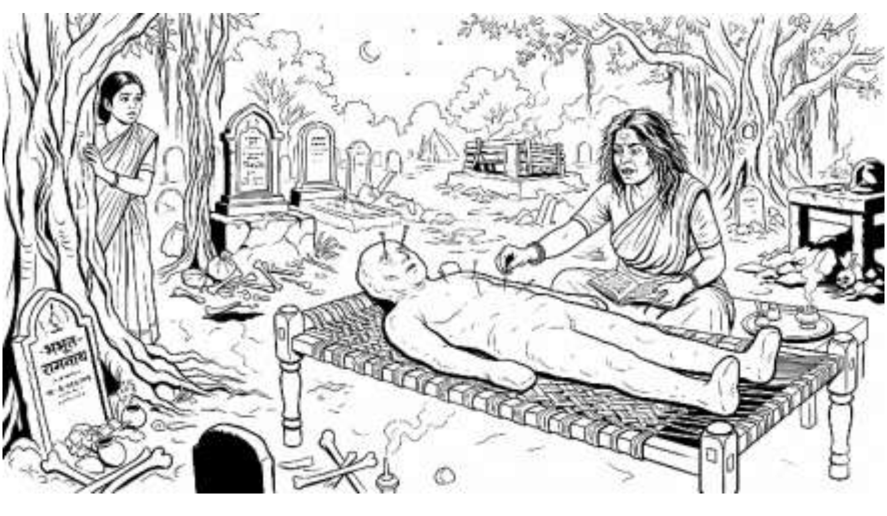

खुलीं, तो उसने सामने अपनी नौकरानी को देखा। उसने सोचा कि यही उसकी प्राणरक्षक है। उसने नौकरानी का आभार मानते हुए उसी के साथ रहने का निर्णय कर लिया।

जब उसकी पत्नी लौटकर आई, तो उसने देखा कि उसका पति अब नौकरानी के साथ है और उसे ही अपनी जीवनदाता मानता है।

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि अधूरा छोड़ा गया कार्य दूसरों को श्रेय दिला सकता है। अपनी मेहनत को तब तक जारी रखें, जब तक वह पूरी तरह समाप्त न हो जाए।

: 38 : आ पड़ोसन, लड़ें

एक सराय में काम करने वाली दो स्त्रियाँ थीं, जो यात्रियों के लिए भोजन बनाने और सफाई आदि का काम करती थीं। वे दोनों स्वभाव से बड़ी लड़ाका थीं। लड़े बिना उन्हें चैन नहीं मिलता था। जब वे अपने काम-काज से निवृत्त हो जातीं तो एक दूसरे को पुकारती थीं कि आओ लड़ो।

जब काम का समय आ जाता, तो वे झगड़ा तुरंत बंद कर देतीं। काम समाप्त होते ही वे फिर से उसी स्थान पर इकट्ठा होतीं और झगड़ा वहीं से शुरू कर देतीं, जहाँ छोड़ा था।

जो लोग बिना किसी कारण हर समय किसी-न-किसी से झगड़ा करने के लिए तैयार रहते हैं और व्यर्थ में विवाद खड़ा करते हैं उनका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

इस से मिलती जुलती कहावत है - आ झगड़ालू राड़ करें, ठाली बैठे क्या करें।

: 39 : आई थी बिल्ली, पूँछ थी गीली

एक समय की बात है, एक गाँव में सास और बहू का जोड़ा साथ-साथ एक ही कमरे में लेटा था। रात का समय था और हल्की ठंड पड़ रही थी। सास ने अपनी जगह से बिना हिले-डुले बहू से कहा, "बहू, ज़रा बाहर देख तो, बारिश हो रही है या नहीं?" बहू ने तुरंत कहा, "माँ जी, अभी थोड़ी देर पहले बिल्ली आई थी। उसकी पूँछ गीली थी। इसका मतलब है कि बारिश हो रही है।"

फिर थोड़ी देर बाद, दीपक की रोशनी से परेशान होकर सास ने कहा, "बहू, जरा दीपक बुझा दे।" बहू मुस्कुराई और बोली, "माँ जी, आप अपनी आँखें बंद कर लीजिए। अंधेरा अपने आप हो जाएगा।"

सास ने यह सुनकर गुस्से में करवट ली, लेकिन चुप रह गई। थोड़ी देर बाद उसने फिर कहा, "अच्छा, बहू, ज़रा किवाड़ बंद कर दे। ठंड लग रही है।" इस बार बहू ने और मज़ेदार जवाब दिया, "माँ जी, मैंने दो काम तो कर दिए, अब एक काम आप भी कर लो। सास हक्की-बक्की रह गई, लेकिन उसे हँसी भी आ गई। उसने मन ही मन सोचा, "यह बहू तो बड़ी मक्कार है, इससे आगे बहस करना बेकार है।"

हर काम में टाल मटोल करने वालों के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 40 : आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास

संत कबीर दास का जन्म एक जुलाहे (बुनकर) परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनका मन ईश्वर भक्ति में रमा रहता था। उस समय समाज में जाति-पाँति का गहरा प्रभाव था, इसलिए जुलाहे के घर जन्म लेने के कारण कोई भी उन्हें अपना शिष्य बनाने को तैयार नहीं था।

कहा जाता है कि उन्होंने गुरु प्राप्ति के लिए एक अनोखा उपाय किया। वे एक दिन प्रातःकाल गुरु रामानंद जी के मार्ग में घाट की सीढ़ियों पर लेट गए। जैसे ही रामानंद जी का पैर उन पर पड़ा, उनके मुख से सहज ही “राम-राम कहो” शब्द निकल पड़ा। कबीरदास जी ने इसी को अपना गुरुमंत्र मान लिया।

कबीरदास जी मन से तो पूर्ण संत थे, किन्तु गृहस्थ जीवन के कारण उन्हें सांसारिक कर्तव्यों का भी निर्वाह करना पड़ता था। परिवार का पालन-पोषण करने के लिए वे जुलाहे का कार्य करते थे–करघे पर बैठकर कपड़ा बुनते थे। एक संत के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। एक बार जब वे करघे पर बैठकर कपड़ा

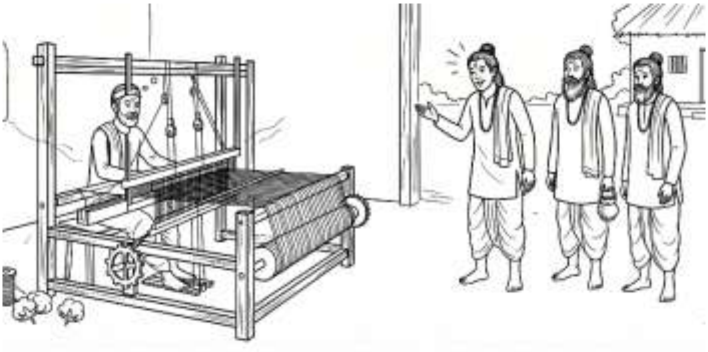

बुन रहे थे, तब कुछ संत उनसे मिलने आए। उन्हें इस कार्य में लगा देखकर एक संत ने आश्चर्य से पूछा, "महात्मा जी, आप यह क्या कर रहे हैं?" कबीरदास जी ने मुस्कुराते हुए विनोद पूर्वक कहा, "आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास।"

कोई व्यक्ति अपने वास्तविक उद्‌देश्य को भूल कर दूसरे कामों में उलझ जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 41 : आओ मियाँजी, छान उठाओ

एक मियाँजी यात्रा करते हुए गाँव के किसी किसान के घर रुक गए। मियाँजी बातें बनाने में बड़े-चढ़े थे, पर काम में निरे आलसी थे। वे किसान के दालान में बैठ पान लगा-लगाकर खाते रहते थे।

उस दिन किसान को अपना छप्पर उठवाना था। देहात में छान (छप्पर) बहुत बड़ी न हो तो जमीन पर बना ली जाती है, फिर उठाकर ऊपर रख देते हैं। उसके उठाने में पाँच-दस आदमी लगते हैं। काम दस मिनट का होने पर भी थोड़ा मेहनत का होता है। एक मुहावरा भी है, "इतने आदमियों को बुला रहे हो, कोई छान उठवानी है?"

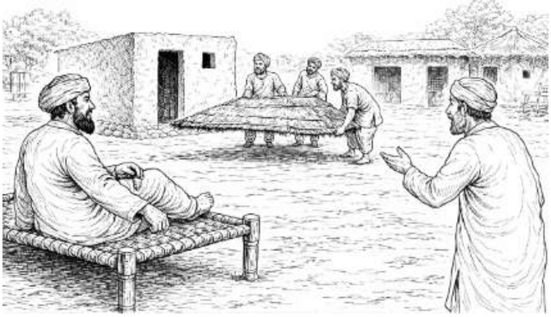

किसान ने मियाँजी से कहा, "आओ, मियाँजी, छान उठाओ।" मियाँजी बोले, "मैं बूढ़ा, कोई जवान बुलाओ।" खैर कुछ लोगों ने मिल कर छप्पर उठा लिया।

खाने का वक्त होने पर किसान ने मियाँजी से कहा, “आओ मियाँजी, खाना खाओ।” वे तुरंत तैयार हो गए। बोले, “ बिस्मिल्लाह झट, हाथ धुलाओ।”

इस प्रकार के लोगों के लिए एक कहावत और भी है - राम भजन को आलसी, भोजन को हुशियार। तुलसी ऐसे नरन को, बार-बार धिक्कार।।

: 42 : आखिर ऐसे कब तक, जब तक चले तब तक

किसी ने पूछा - यह अनीतिपूर्ण व्यवहार कब तक चलेगा। उत्तर मिला- जब तक चल सके ऐसे ही चलाओ। एक समय की बात है, कहीं पर चार ब्राह्मण भाई रहते थे। चारों ही मूर्ख और गरीब थे। उनके पास कोई काम-धंधा नहीं था, बस दिन ऐसे ही काट रहे थे। एक दिन, उनमें से एक भाई ने सोचा, “ऐसे कब तक चलेगा? चलो, कहीं रोजी-रोटी की तलाश में निकलते हैं।”

वह भाई गाँव से निकल पड़ा। उसे कोई मंत्र-तंत्र या जप-तप तो आता नहीं था, बस यूँ ही घूम रहा था। घूमते-घूमते वह एक राजा के महल के सामने जा पहुँचा। अब करे तो क्या करे, इसलिए वहीं बैठकर मुँह ही मुँह में “जाप जपो, जाप जपो” बुदबुदाने लगा। राजा के सिपाहियों ने उसे देखा और राजा को खबर दी। राजा को लगा कोई बड़ा तपस्वी है। उसने तुरंत उस ब्राह्मण के रहने के लिए एक कुटिया बनवा दी और खाने-पीने का भी प्रबंध कर दिया। अब पहले भाई की तो मौज हो गई।

कुछ दिनों बाद, दूसरा भाई भी घूमता-फिरता उसी जगह आ पहुँचा। उसने देखा कि पहला भाई तो बड़े आराम से रह रहा है। उसने पूछा, “ये सब क्या है?” पहले भाई ने बताया कि वह राजा के लिए जप करता है। दूसरे भाई को भी लगा, “जब भैया जप रहे हैं, तो हम भी जपेंगे।” चूंकि, वह भी लिख-लोढ़ा पढ़-पत्थर था, इसलिए उसने जो भइया जपें, सो हम भी जपें का पाठ आरम्भ किया। राजा ने उसके लिए भी रहने का इंतजाम कर दिया।

फिर कुछ दिनों बाद, तीसरा भाई भी आ पहुँचा। उसने देखा कि दोनों भाई मजे से रह रहे हैं। उसने भी वही काम शुरू कर दिया। लेकिन तीसरे भाई के मन में एक डर था। वह सोचता था, “ये सब कब तक चलेगा? एक न एक दिन तो राजा को पता चल ही जाएगा कि हम ढोंग कर रहे हैं।” इसलिए वह “जाप जपो” के साथ-साथ “आखिर ऐसा कब तक?” भी जपने लगा।

और फिर, कुछ दिनों बाद, चौथा भाई भी आ पहुँचा। उसने देखा कि तीनो भाई जप कर रहे हैं और मजे से रह रहे हैं। उसने तीसरे भाई से पूछा, “क्या हो रहा है?” तीसरे भाई ने अपनी चिंता बताई। तब चौथे भाई ने जवाब दिया, “जब तक चले तब तक।” और वह भी “जाप जपो, जाप जपो” के साथ-साथ “जब तक चले तब तक” जपने लगा।

कहावत का अर्थ है कि जब किसी को धोखे से फायदा होने लगता है, तो उसे छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। वह तब तक उस धोखे को चलाता रहता है जब तक वह चल सकता है।

: 43 : आगामीर की दाई, सब सीखी सीखाई

अवध के नवाब गाजीउद्दीन हैदर के दरबार में एक वजीर था–आगामीर। वह अपनी चतुराई, चालाकी और मौके के अनुसार बात को मोड़ देने की कला के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। लखनऊ के पुराने चौक के इलाके के पास उसके नाम से एक स्थान आज भी है - आगामीर ड्योढ़ी। आगामीर की चतुराई के चर्चे न केवल अवध, बल्कि अंग्रेजों के गलियारों तक थे। लखनऊ के चौक क्षेत्र में स्थित 'आगामीर की ड्योढ़ी' केवल एक घर नहीं, बल्कि सत्ता का समानांतर केंद्र थी। कहा जाता है कि यहाँ की जागीरदारी का प्रभाव ऐसा था कि लोग नवाब के महल से ज्यादा यहाँ हाजिरी लगाना जरूरी समझते थे।

आगामीर के नौकरों के बारे में कई कहावतें मशहूर थीं। कहते हैं कि उस के यहाँ काम करने वाले नौकर-चाकर भी कम धूर्त नहीं थे; वे भी अपने मालिक से हर दांव पेंच सीख चुके थे। यदि कोई फरियादी आगामीर से मिलने आता, तो दरबान और मुलाजिम उसे बातों में ऐसे उलझाते थे कि वह बिना 'नजराना' दिए अंदर कदम भी नहीं रख पाता था। वे अपने मालिक की तरह ही विनम्रता की ओट में अपना काम निकालने में माहिर थे। इसी पर यह कहावत बनी।

आज के परिप्रेक्ष्य में जब किसी धूर्त हाकिम के नौकर भी उतने ही शातिर होते हैं तो उनके लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 44 : आगी होती तो का पाहुनो मूंछें लैके चलो जातो

कहावत का अर्थ है कि यदि हम समर्थ होते तो कुछ कर न दिखाते। इस आशय की एक मजेदार कहानी कही जाती है। पहले जमाने में माचिस लाइटर आदि नहीं होते थे। जब चूल्हा जलाना हो तो लोग आस पड़ोस से जलती हुई लकड़ी या कंडा इत्यादि ले कर आते थे।

एक गाँव में दो महिलाएँ पड़ोसी थीं। एक दिन, एक महिला अपनी पड़ोसी के घर गई और उससे आग माँगी।

अब, जिस पड़ोसी के घर वह आग लेने गई थी, उस दिन संयोग से उसके घर में आग नहीं थी। और तो और, उसके घर में कुछ दिनों से एक मेहमान आया हुआ था। मेहमानदारी करते-करते वह बुरी तरह से थक चुकी थी और थोड़ी चिढ़ी हुई भी

थी। जैसे-तैसे वह मेहमान आज ही सुबह विदा हुआ था, और अभी तक उस महिला का गुस्सा शांत नहीं हुआ था।

जब पड़ोसी महिला ने आग माँगी, तो चिढ़ी हुई पड़ोसी ने झुँझलाते हुए कहा, "अगर मेरे घर में आग होती, तो मैं उस मेहमान की मूँछें न जला देती!" इस पर मजाक में यह कहावत बन गई। कोई चिढ़ा हुआ व्यक्ति किसी बात का उल्टा जवाब दे तब भी यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 45 : आज नहीं, कल

पुराने समय की बात है। एक मियाँ साहब रोज रात को एक बड़े पेड़ के नीचे बैठकर ईश्वर से बड़े ही दिल से प्रार्थना किया करते थे "ऐ खुदा! मुझे अपनी मुहब्बत में खेंच।" उनकी इस अदा में सच्चाई कम और दिखावटीपन ज्यादा था।

एक बार गाँव के एक मसखरे ने मियाँ की यह बात सुन ली। मसखरे को शरारत सूझी। एक रात वह मियाँ के आने से पहले ही उस पेड़ पर चढ़ गया और एक मोटी रस्सी साथ ले आया। जैसे ही मियाँ साहब ने हमेशा की तरह पेड़ के नीचे बैठकर अपनी दुआ दोहराई, मसखरे ने रस्सी का फंदा बनाया और नीचे गिरा कर उनके गले में फंसा दिया। मियाँ को कुछ समझ आता उससे पहले ही मसखरे ने ऊपर से रस्सी खींचनी शुरू कर दी।

जैसे-जैसे मियाँ ऊपर उठने लगे, उनके चेहरे पर घबराहट साफ झलकने लगी। उन्हें कतई उम्मीद नहीं थी कि उनकी दुआ कुबूल हो जाएगी। डर के मारे मियाँ साहब चिल्ला उठे, "ऐ खुदा! आज नहीं, कल!" पेड़ पर बैठा मसखरा तो यह सुनकर हँसते-हँसते लोटपोट हो गया। उसने रस्सी छोड़ दी, और मियाँ धड़ाम से नीचे आ गिरे।

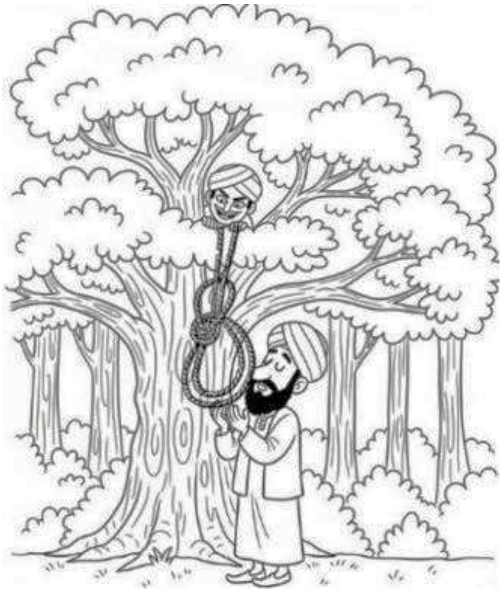

मियाँ साहब ने जब ऊपर देखा तो उनकी घबराहट गुस्से में बदल गई। बोले, "तू था क्या? खुदा का मजाक उड़ाता है? अब मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा!" मसखरा भाग खड़ा हुआ, लेकिन जाते-जाते मियाँ के बनावटीपन की कलई खोल गया।

बनावटी भक्ति करने वाले लोगों की मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 46 : आटा-दाल है और उल्लू भी है

एक सिपाही अपने बेटे का कर्ज़ चुकाने के लिए किसी उपाय की खोज में था। जिस बनिए से उस ने उधार ले रखा था वह रोज तकाजे करता था। एक दिन उसने एक उल्लू पकड़ लिया और उसे बाज़ जैसा रूप देने के लिए उसके सिर पर एक विशेष टोपी पहना दी। फिर वह उसे लेकर बनिए की दुकान पर पहुँचा। बनिए ने उस विचित्र पक्षी को देखकर पूछा, "यह कौन-सा पक्षी है?"

सिपाही ने बड़ी चतुराई से उसे एक विशेष जाति का बाज़ बताकर उसके गुण और उसकी ऊँची कीमत के बारे में बढ़-चढ़कर बातें करनी शुरू कर दीं। बनिया उसकी बातों में आ गया और उस 'बाज़' को खरीदने के लिए तैयार हो गया। जब सिपाही ने उसकी कीमत बताई, तो बनिया थोड़ा चौंका और बोला, "मैं घर जाकर अपनी पत्नी से सलाह करके कल उत्तर दूँगा।"

अगले दिन बनिया सिपाही के घर पहुँचा और अपने उधार के पैसे मांगने लगा। सिपाही ने कहा, "जैसे ही यह बाज़ बिक जाएगा, मैं आपका पूरा पैसा चुका दूँगा।" बनिया बोला, "तो फिर यह बाज़ ही मुझे दे दो।" सिपाही ने कहा, "आज इसकी कीमत और बढ़ गई है।"

अब बनिया पूरी तरह लालच में आ चुका था। उसने कहा, "जो माँगो, वह ले लो, पर यह बाज़ मुझे दे दो।" अंततः उसने ऊँची कीमत देकर उस पक्षी को खरीद लिया और घर ले आया। जब उसकी पत्नी ने उस पक्षी को देखा, तो वह समझ गई कि यह कोई बाज़ नहीं, बल्कि उल्लू है। उसने बनिए को खूब डाँटा-फटकारा।

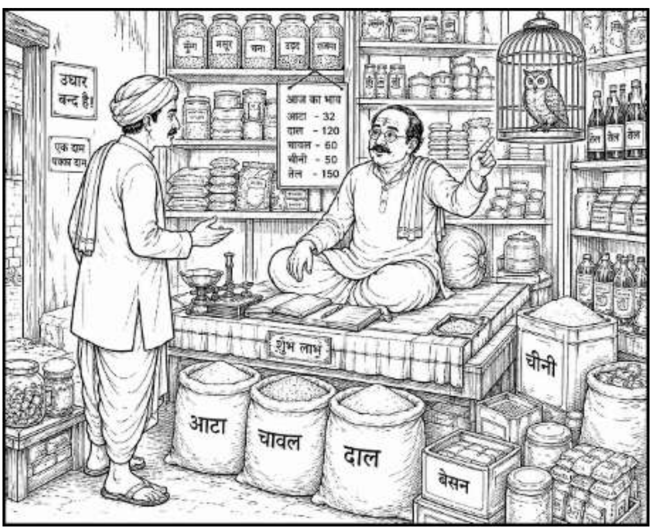

बनिया तुरंत सिपाही को ढूँढने निकला, पर वह कहीं नहीं मिला। अंततः उसने उस उल्लू को अपनी दुकान पर ही रख लिया, इस आशा में कि शायद कोई और भोला व्यक्ति उसे खरीद ले और उसका नुकसान पूरा हो जाए। अब उसका यह नियम बन गया कि जब भी कोई ग्राहक पूछता, "तुम्हारी दुकान पर क्या मिलता है?" तो वह हँसकर जवाब देता, "यहाँ आटा-दाल है और उल्लू भी है।"

कोई बहुत होशियार आदमी अगर बेबकूफ बन जाए तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 47 : आधी छोड़, सारी को धावे

एक कुत्ता खाने की तलाश में भटक रहा था। किस्मत से उसे कहीं से आधी रोटी मिल गई। उसने सोचा, चलो, भर पेट न सही, कुछ तो मिला।

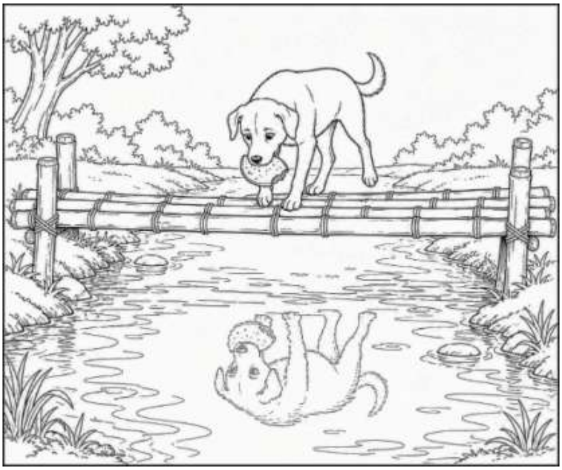

कुत्ता उस आधी रोटी को अपने मुँह में दबाए नदी के किनारे-किनारे चलने लगा। रास्ते में उसने पानी में झांक कर देखा, तो उसे अपनी ही परछाईं दिखाई दी। उसे लगा कि पानी में एक और कुत्ता है, जिसके मुँह में भी आधी रोटी है।

उसके दिमाग में लालच जागा। उसने सोचा, "अगर मैं इस कुत्ते की आधी रोटी भी छीन लूँ, तो मेरे पास पूरी रोटी हो जाएगी।" वह पूरी ताकत से भौंका और पानी में छलांग लगाकर उस दूसरी रोटी को छीनने की कोशिश की। पर क्या हुआ? मुँह में दबाई उसकी आधी रोटी भी पानी में गिरकर बह गई।

अधिक लालच करने से कोई नुकसान उठाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 48 : आधे आंगन सासरा, आधे आंगन पीहर

एक कस्बे की घनी बस्ती में कुछ मुस्लिम परिवार रहते थे। उन्हीं में से एक बहन और उसका भाई अपने अपने परिवार सहित आमने-सामने के घरों में रहते थे। दोनों घरों के बीच एक साझा आंगन था। सुबह की चाय से लेकर शाम की गपशप तक, यही आंगन दोनों घरों को एक सूत्र में बाँधे रखता था।

समय बीता, बच्चे बड़े हुए। भाई की बेटी और बहन के बेटे ने भी इसी आंगन में खेलते-कूदते बचपन बिताया था। जब वे बड़े हुए, तो परिवार ने उनके विवाह का निश्चय कर लिया।

शादी के बाद दृश्य बड़ा रोचक हो गया। लड़की की ससुराल उसी आंगन के एक ओर थी और मायका ठीक सामने। अब उसे मायके जाने के लिए कोई तैयारी नहीं करनी पड़ती, बस आंगन पार करना होता था।

कभी वह ससुराल में रोटी बेलते-बेलते माँ की आवाज़ सुन लेती और झट से आंगन लांघकर उधर पहुँच जाती। कभी मायके में बैठी-बैठी सास की पुकार सुनती और मुस्कुराते हुए लौट आती।

यह सब देखकर पड़ोसियों को बड़ा आनंद आता। एक दिन किसी ने हँसते हुए कहा, "अरे भई, इसका तो आधा आंगन पीहर है और आधा आंगन ससुराल!"

सब लोग खिलखिला पड़े। लेकिन वही हँसी-मजाक की बात धीरे-धीरे लोगों की जुबान पर चढ़ गई और एक कहावत बन गई।

जब दो स्थान इतने पास हों कि उनके बीच दूरी का अहसास ही न रहे, तब यह कहावत मजाक में कही जाती है। (जैसे किसी का दफ्तर और घर एक ही जगह हो)।

: 49 : आधे में काजी कुद्दू, आधे में बाबा आदम

कहते हैं कि एक काजी कुद्दू नाम के व्यक्ति थे, जिनकी संतानें इतनी अधिक थी कि उनका घर-परिवार एक छोटे गाँव के बराबर हो गया था। उनके बच्चे ही इतने थे कि गिनती मुश्किल हो जाए, और फिर उन बच्चों के भी बच्चे और फिर उनके भी बच्चे। इस प्रकार उनकी वंशावली बहुत तेजी से फैलती चली गई। गाँव-गाँव में उनके परिवार की चर्चा रहती थी।

इसी संदर्भ में लोगों ने मज़ाक में एक तुलना गढ़ ली। अब्राहिमक धर्मों की धार्मिक मान्यता के अनुसार आदम और हव्वा से ही संसार की पूरी मानव जाति का विस्तार हुआ है। यानी दुनिया के सारे मनुष्य उनके वंशज माने जाते हैं।

अब जब काजी कुद्दू की औलादें भी अत्यधिक बढ़ गई, तो लोगों ने हँसी-हँसी में कहना शुरू किया–"अगर दुनिया को दो हिस्सों में बाँटा जाए, तो आधे में काजी कुद्दू की औलादें आ जायेंगी और आधे में बाबा आदम की!"

लोकभाषा में अतिशयोक्ति के माध्यम से बात को अधिक प्रभावशाली और मनोरंजक बना दिया जाता है। जब किसी व्यक्ति के बहुत अधिक बच्चे या बहुत बड़ा परिवार हो, तो इस कहावत का प्रयोग मजाक में किया जाता है।

: 50 : आन का दाना तान के खाना, मर जाना परवाह नहीं

कहावत का अर्थ है कि दूसरे का माल मुफ्त में मिल रहा हो तो जम कर खाना चाहिए, चाहे जान ही क्यों न चली जाय। न्योता खाने वाले ब्राह्मणों के लिए तो यह बात ख़ास तौर पर कही जाती है और इस पर मजाक मजाक में बहुत से किस्से भी बनाए गए हैं। ऐसा ही एक किस्सा है कि एक बार एक ब्राह्मण किसी के यहाँ निमंत्रण खाने गये। तो सास ने बहू से कहा कि 'बहू भइया का बिस्तर लगा दो, वे जैसे ही न्योता खाकर घर आयेंगे, वैसे ही तुरंत बिस्तर पर लेट जायेंगे। इस पर बहू जोर जोर से रोने लग गई। डरते हुए सास ने बहू से पूछा, बहू क्या बात है? इस तरह क्यों रो रही हो? तो बहू बोली- सास जी यह भला आपके यहाँ का क्या रिवाज है कि न्योता खाने वाले घर तक पैदल

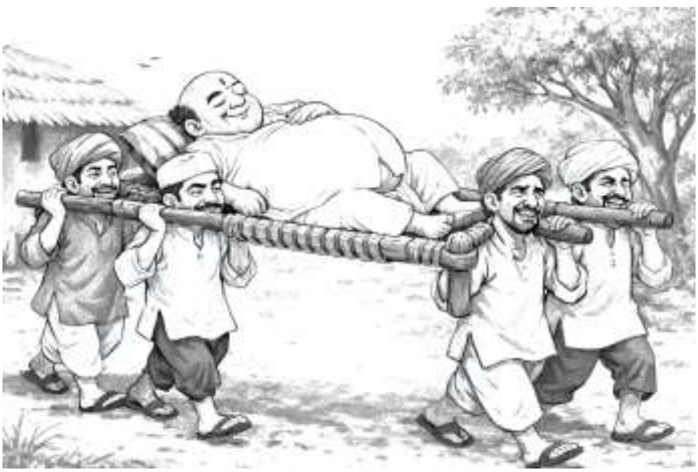

चल कर आते हैं। हमारे मैके में तो चारपाई भी साथ जाती है। न्योता खाने वाले को उसी पर चार लोग लेकर आते हैं।

मुफ्त का खाना मिलने पर जो लोग ठूंस कर खाते हैं उन का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 51 : आनक धंधा आन करे, आंड दबे से बांदर मरे

गाँव के बाहर एक लकड़ी का गोदाम था, जहाँ बढ़ई काम कर रहे थे। उन्होंने एक मोटे लट्ठे को बीच से चीरना शुरू किया था और बीच में दरार को खुला रखने के लिए एक लकड़ी की कील फंसा रखी थी। काम करते-करते बढ़ई थोड़ी देर के लिए वहाँ से चले गए।

तभी एक बंदर उछलता-कूदता वहाँ आ पहुँचा। उसकी नजर उस लट्ठे पर पड़ी। बंदरों की तो आदत होती है हर चीज में टांग अड़ाने की। उसने लट्ठे के बीच फंसी कील को देखा और सोचने लगा, "अरे, यह क्या चीज है? इसे खींचकर निकालता हूँ, देखता हूँ क्या होता है।"

बिना सोचे-समझे, बंदर ने पूरी ताकत से कील को खींच दिया। जैसे ही कील बाहर आई, लट्ठा ज़ोर से बंद हो गया। दुर्भाग्यवश, बंदर के अंडकोष उसी दरार के बीच फंस गए। दर्द से छटपटाते हुए वह बंदर वहीं का वहीं ढेर हो गया। कहावत यह बताती है कि किसी काम को करने से पहले उसकी जानकारी होना बेहद जरूरी है। उत्सुकता और बिना जानकारी के दखल कई बार विनाशकारी हो सकती है।

: 52 : आपके नौकर हैं, न कि बैंगनों के

एक बार की बात है, एक राजा अपने राजमहल में दरबार लगाए बैठा था। दरबारियों की मंडली चारों तरफ बैठी थी। इसी दौरान राजा ने अचानक कहा, “बैंगन की सब्ज़ी तो बड़ी लाजवाब होती है! वैद्य भी इसकी खूब प्रशंसा करते हैं। इसे खाने से तंदुरुस्ती बढ़ती है और शरीर को ताकत मिलती है।”

दरबारी तो जैसे मौका ही ढूंढ रहे थे। एक ने तुरंत सिर झुकाया और कहा, “बिलकुल सही फरमाया, हुजूर! तभी तो बैंगन के सिर पर ताज रखा गया है!” दूसरे दरबारी ने झट से बात आगे बढ़ाई, “सही बात है महाराज, बैंगन तो सब्ज़ियों का राजा है!”

कुछ दिन बीते। एक दिन राजा का मूड कुछ अलग था। उसने दरबारियों से कहा, “बैंगन जैसी घटिया सब्ज़ी शायद ही कोई हो। कितना बेस्वाद है, इसे खाने से वायु रोग होता है और भूख भी खराब हो जाती है।”

राजा की यह बात सुनते ही दरबारियों ने तुरंत हाँ में हाँ मिलाई। एक बोला, “हुज़ूर, बिलकुल सही कहा! तभी तो इसका नाम बेगुन पड़ा है।” दूसरा दरबारी बोला, “हुज़ूर, बैंगन खाना तो गरीबों की मजबूरी है, स्वाद तो बिलकुल नहीं है”

राजा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, “अरे, ये क्या बात हुई? कुछ दिन पहले तो तुम लोग बैंगन की बड़ी प्रशंसा कर रहे थे, और आज इतनी बुराई करने लगे। ये क्यों?” दरबारियों के मुखिया ने तुरंत हाथ जोड़कर जवाब दिया, “महाराज, हम तो आपके नौकर हैं, न कि बैंगनों के। जो बात आप कहें, वही हमारे लिए सत्य है!”

चाटुकार लोगों का मजाक उड़ाने के लिए के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 53 : आप डूबे तो जग डूबा

एक आदमी नदी में स्नान करते-करते गहरे उतर गया। वह तैरना नहीं जानता था, अतः पानी में डूबने लगा। वह चिल्लाया, “अरे, मुझे निकालो, नहीं तो जग डूबा!” पुकार सुनकर एक नेक आदमी वहाँ आया और उसे बचा लिया। बचने पर लोगों ने उससे पूछा, “तुम जो चिल्ला रहे थे कि ‘मुझे निकालो, नहीं तो जग डूबा’, इसका क्या मतलब था?”

उसने उत्तर दिया, “दोस्तो, सोचिए, मैं डूब जाता तो मेरे लिए तो सारा जग ही डूब जाता, है न?” इस कहावत के अन्य प्रचलित रूप हैं - “आप मुए तो जग मुआ।” “आप मरा तो जग मरता।”

: 54 : आप से आवे तो आने दे

एक गाँव में एक मियाँ साहब रहते थे। उन्होंने कसम खा रखी थी कि वे कभी भी पक्षियों का मांस नहीं खाएँगे। "हम तो बस सादा खाना खाते हैं," वे अकसर कहते, "और किसी परिंदे की जान लेना तो गुनाह है!"

एक दिन उनकी औरत ने बहुत सा घी-मसाला डालकर मुर्गी पकाई। मियाँ को जब यह बात मालूम हुई तो बड़े नाराज हुए, किंतु बाद में बहुत कहने पर थोड़ा शोरबा लेने के लिए राज़ी हो गये। औरत ने सावधानी से बोटियों को अलग करके शोरबा परोसना शुरू किया, लेकिन परोसते समय एक बोटी नीचे गिरने लगी। औरत ने उसे रोकना चाहा। इस पर मियाँ ने कहा - आप से आवे तो आने दे, और फिर शराफत से पूरी बोटी खा गये।

कहावत का शाब्दिक अर्थ है कि अपने आप आ रही वस्तु के लिए मना नहीं करना चाहिए लेकिन इसे उन लोगों का मजाक उड़ाने के लिए प्रयोग करते हैं जो ईमानदार होने का ढोंग करते हैं पर मौका मिलने पर भ्रष्टाचार करने से नहीं चूकते।

: 55 : आप ही की जूतियों का सदका है

उर्दू को बड़ी अदब की ज़ुबान माना जाता है। उदाहरण के तौर पर आप किसी के काम की तारीफ़ करें तो वह अदब से कहेगा कि साहब ये सब आपकी मेहरबानी है, वरना मैं किस काबिल हूँ। एक बार की बात है, लखनऊ शहर में एक मशहूर मसखरा था जिसे उसके दोस्त अक्सर इस बात के लिए उलाहना देते थे कि उस ने कभी किसी को कोई दावत नहीं दी। आखिरकार एक दिन उस ने अपने दोस्तों को

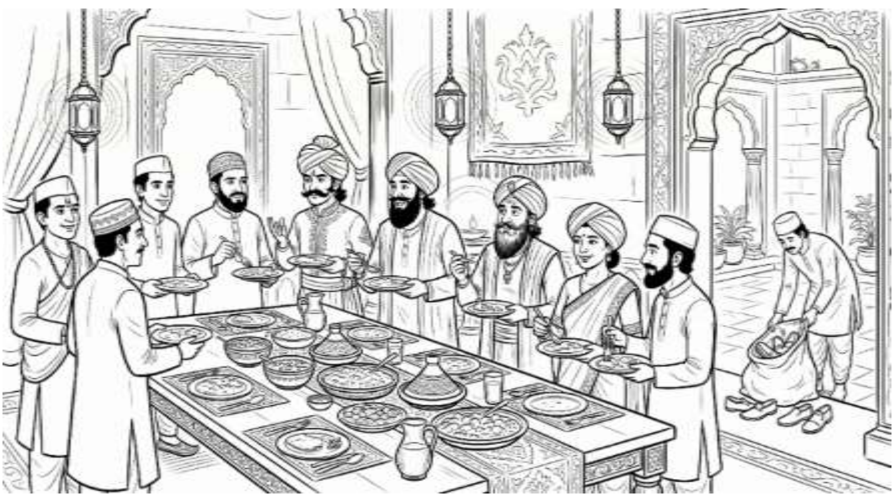

दावत पर बुलाया। दावत का न्योता पाकर सब बड़े खुश हुए और तय समय पर सज-धजकर उसके घर पहुँचे।

मेहमानों ने अंदर जाने से पहले अपने जूते दरवाज़े के बाहर उतार दिए और आराम से बैठकर गपशप करने लगे। मसखरे ने मौके का फायदा उठाते हुए अपने नौकर को बुलाया और धीरे से कहा, "जा, इन सबके जूते बेच आ, और जो पैसे मिले, उन से दावत के सामान ले आ।"

नौकर चुपके से सभी जूते इकट्ठा कर बाजार गया और उन्हें बेचकर बिरयानी, कबाब, मटन कोरमा, और मीठे में शीर खुरमा ले आया। मेहमानों ने जी भरकर खाना खाया और हर पकवान की तारीफ करते रहे।

खाने के बाद किसी ने कहा, "भाई, आपने तो कमाल कर दिया। इतनी शानदार दावत।" दूसरे ने कहा, "सच में, आज का खाना तो यादगार रहेगा।"

यह सुनकर मसखरा हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से बोला, "अरे हुज़ूर, ये सब मेरी किस्मत कहाँ! यह तो बस आप ही की जूतियों का सदका है।" पहले तो मेहमानों को उसकी बात समझ नहीं आई, लेकिन जब उन्होंने बाहर जाकर देखा कि उनके जूते गायब हैं, तो सारा माजरा समझ में आ गया।

दोस्तों और रिश्तेदारों में आपसी मजाक के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 56 : आफत में औ दुख में, बुध नहिं तजें उछाह

एक जंगल में अनेक जानवर आपस में मिल-जुलकर सुखपूर्वक रहते थे। एक दिन पास के जंगल से एक खूंखार शेर वहाँ आ गया। वह केवल भूख मिटाने के लिए ही नहीं, बल्कि बिना कारण भी कई निर्दोष जानवरों को मार डालता था। इससे पूरे जंगल में भय और अशांति फैल गई।

घबराकर सभी जानवरों ने एक सभा की और शेर के पास एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। उन्होंने विनम्रता से प्रार्थना की कि वह यूँ अनावश्यक रूप से जानवरों का वध न करे।

शेर ने कहा, "मुझे शिकार के पीछे भागने का शौक नहीं है। तुम लोग स्वयं तय कर लो–प्रतिदिन एक जानवर मेरे पास भेज दिया करो। मैं उसी को खा लूँगा और बाकी को नहीं मारूँगा।" जानवरों ने अपनी सुरक्षा के लिए यह व्यवस्था स्वीकार कर ली। रोज़ पर्ची डालकर एक जानवर चुना जाता, और वह स्वयं शेर के पास चला जाता।

एक दिन एक छोटे-से खरगोश की बारी आई। वह मन ही मन भयभीत था, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने सोचा–"यदि बुद्धि से काम लिया जाए, तो इस संकट से छुटकारा मिल सकता है।"

वह जानबूझकर देर से शेर के पास पहुँचा। तब तक शेर भूख से व्याकुल होकर क्रोध में इधर-उधर घूम रहा था। खरगोश को देखते ही वह गरजा, "इतनी देर क्यों? और मेरे लिए इतना छोटा जीव!" खरगोश ने हाथ जोड़कर कहा–"महाराज, मैं तो सुबह ही चला था, पर रास्ते में एक और भयानक शेर मिल गया। उसने मुझे पकड़ लिया और कहा कि वही इस जंगल का असली राजा है।"

यह सुनते ही शेर क्रोध से लाल हो गया, "कहाँ है वह दुष्ट? मुझे तुरंत वहाँ ले चलो!" खरगोश उसे एक गहरे कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, वह इसी कुएँ में छिपा है।"

शेर ने कुएँ में झाँका, तो उसे अपनी ही परछाईं दिखाई दी। उसने जोर से दहाड़ लगाई–कुएँ से वही आवाज और तेज गूँजकर वापस आई। शेर जोर से गुर्राया, "तू कौन है मूर्ख! कहां से आया है।" कुएं में से और जोर से आवाज आई - तू कौन है मूर्ख कहां से आया है। शेर ने गुस्से से कहा, "तेरी यह हिम्मत।" कुएं में से आवाज आई - तेरी यह हिम्मत। क्रोध में अंधा होकर शेर बोला, "अभी तुझे सबक सिखाता हूँ!" और सीधे कुएँ में कूद पड़ा।

कुआँ गहरा था, और उसकी दीवारें चिकनी थीं–शेर बाहर नहीं निकल सका और वहीं उसका अंत हो गया।

कहावत का अर्थ है कि सच्चा बुद्धिमान व्यक्ति संकट और दुख के समय भी अपना धैर्य और उत्साह नहीं खोता, बल्कि सूझ-बूझ से समाधान खोज लेता है।

: 57 : आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से

एक बार दो मित्र एक आम के बगीचे में घूमने गए। बगीचे में चारों ओर हरे-भरे पेड़ों पर पके हुए, रसीले और सुगंधित आम लटके हुए थे। उनमें से एक मित्र का ध्यान आमों के स्वाद और आनंद की ओर था, जबकि दूसरा मित्र व्यर्थ की जिज्ञासाओं में उलझ गया। वह बगीचे के रखवाले से तरह-तरह के प्रश्न पूछने लगा–यहाँ कितने पेड़ हैं? कौन-कौन सी किस्म के आम हैं? साल भर में कितनी पैदावार होती है? कितना मुनाफा हो जाता है? आदि आदि।

उधर पहला मित्र इन बातों में समय न गंवाकर सीधे रखवाले से बोला, "भैया, मेरे लिए दो-चार पके हुए आम तोड़ दीजिए।" रखवाले ने आम तोड़कर दे दिए, उसने पैसे दिए और स्वाद लेकर आम खाने लगा।

जब तक दूसरा मित्र अपनी जिज्ञासाओं में उलझा रहा, तब तक रखवाला अपना काम पूरा करके वहाँ से चला गया। अब उसे भी आम खाने की इच्छा हुई, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। कहावत का अर्थ है कि हमें मुख्य उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए, न कि अनावश्यक बातों में उलझकर अवसर को खो देना चाहिए।

: 58 : आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा

वैसे तो यह कहावत लापरवाही में गृहस्थी का नुकसान करने वाली महिलाओं के लिए कही जाती है, लकिन इसका उद्‌गम एक अलग प्रकार की कहानी से हुआ है। एक बार की बात है, अमीर खुसरो किसी सफर पर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें जोर की प्यास लगी, और पानी की तलाश में वे एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि चार महिलाएँ पानी भर रही थीं।

अमीर खुसरो ने उनसे पानी माँगा। संयोग से उनमें से एक महिला ने उन्हें

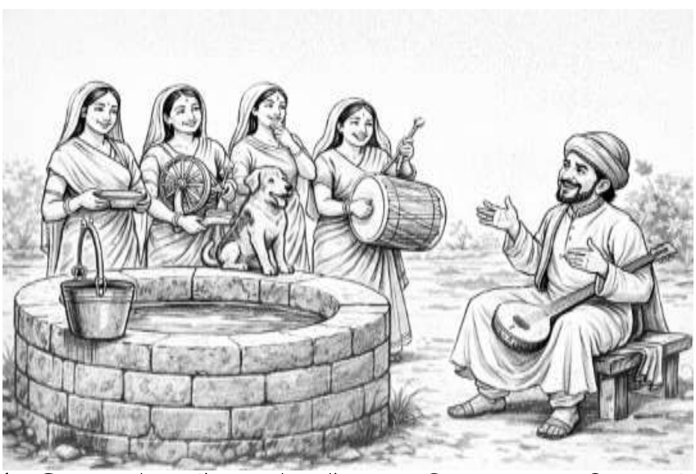

पहचान लिया और बाकी औरतों से कहा, "अरे, ये तो अमीर खुसरो हैं! इनसे तो हमें कविता सुननी चाहिए!" यह सुनते ही चारों महिलाएँ उत्साहित हो गईं और जिद करने लगीं, "पहले हमें एक कविता सुनाइए, फिर पानी देंगे।" उस जमाने

में संगीत और कवितायेँ आदि केवल राजाओं और धनवान लोगों को ही सुनने को मिलते थे।

अमीर खुसरो मुस्कुराए और पूछा, "बताइए, किस पर कविता सुननी है?" पहली महिला ने कहा, "मुझे खीर बहुत पसंद है। आप खीर पर कविता सुनाइए।" दूसरी ने कहा, "आप चरखे पर कविता कहिए।" तीसरी ने कहा, "मुझे अपना कुत्ता बहुत प्यारा है, उस पर भी कविता बना दीजिए।" और चौथी ने हँसते हुए कहा, "और मेरे लिए ढोल पर कुछ कहिए।"

अमीर खुसरो ने उनकी बात सुनी और अपनी हाज़िरजवाबी से एक ही कविता में चारों की फरमाइश पूरी कर दी। उन्होंने तुरंत यह कहा, "खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जला, आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा, ला पानी पिला।"

व्यवहार में इस कहावत को लापरवाही में गृहस्थी का नुकसान करने वाली महिलाओं का मजाक उड़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

: 59 : आया बंदा, आई रोज़ी; गया बंदा, गई रोज़ी

कहा जाता है कि एक बादशाह ने अपने खजाने को बढ़ाने के उद्देश्य से राजकर्मचारियों की संख्या कम करने का निर्णय लिया। उसने कई कर्मचारियों को पद से हटा दिया, ताकि खर्च घटाया जा सके।

उसी रात बादशाह ने एक विचित्र स्वप्न देखा। उसने देखा कि कुछ लोग उसके खजाने से धन की थैलियाँ लेकर जा रहे हैं। यह देखकर वह चकित रह गया और उनसे पूछा, "तुम लोग यह धन क्यों ले जा रहे हो और इसे कहाँ ले जाओगे?"

उन लोगों ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "जहाँ वे कर्मचारी जाएँगे, जिनको आपने पद से हटाया है, वहीं उनका भोजन और आजीविका भी चली जाएगी। यह धन उसी के लिए है।" सुबह होते ही बादशाह की आँख खुली। उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। उसने तुरंत अपना आदेश वापस ले लिया और सभी कर्मचारियों को पुनः उनके पदों पर नियुक्त कर दिया।

कहावत का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य और आजीविका के साथ ही संसार में आता है; उसका पालन-पोषण ईश्वर ही करता है।

: 60 : आलमगीर सानी, चूल्हे आग न घड़े पानी

मुगलों के पूरे खानदान में औरंगजेब सबसे क्रूर और धर्मांध शासक हुआ है। उसके दरबारी उसे आलमगीर कहते थे। उसने अपने 49 वर्ष के शासनकाल में कोई प्रजाहित और विकास का कार्य नहीं किया। उस का पूरा ध्यान अपने साम्राज्य के विस्तार और इस्लाम के जबरन प्रसार पर केन्द्रित रहा। उसकी मृत्यु भी दक्षिण भारत में मराठों से लड़ते हुए हुई।

औरंगजेब के जमाने में प्रजा बड़े कष्ट में थी। लोग कहते थे कि न लोगों के घर में ठीक से चूल्हे जलते थे और न पीने के लिए पानी उपलब्ध था। लेकिन मदांध बादशाह जनता की भलाई के काम न कर के सिर्फ अपने जिहाद, लूटमार और रक्तपात में लगा रहता था।

इसी प्रकार की एक कहावत अंग्रेजों के शासन के विषय में भी कही जाती है, अंग्रेजी राज, तन को कपड़ा, न पेट को नाज। अर्थात न लोगों को पहनने को कपड़ा मिलता था और न पेट भरने को अनाज।

आज के परिप्रेक्ष्य में जहां कोई शासन व्यवस्था जनहित के काम न कर के सिर्फ लूटमार में लगी हुई हो वहाँ यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 61 : आला दे निवाला

एक बार की बात है, एक राजा ने एक भिखारी की असाधारण रूप से सुंदर बेटी पर मोहित हो कर उस से शादी कर ली। भिखारी की बेटी अचानक महल की रानी बन गई। लेकिन इस नए जीवन में रानी को एक परेशानी थी। उसे बचपन से भीख माँगने की आदत थी। अब वह महल में, सबकी नज़रों के सामने, भीख माँगने जैसा कुछ कर नहीं सकती थी।

इस उलझन में वह बीमार रहने लगी। फिर उसने एक अजब तरीका निकाला। वह अपने कमरे में अकेले जाकर दरवाज़ा बंद कर लेती और दीवार में बने एक छोटे से आले (ताक) में रोटी का टुकड़ा रख देती। फिर वह उस आले के सामने खड़ी होकर भीख मांगने वाले अंदाज में कहती, "आला दे निवाला।" इसके बाद वह खुद ही उस टुकड़े को उठाकर खाती और खुश हो जाती।

एक दिन राजा को कुछ शक हुआ तो उसने रानी के कमरे के बाहर छुपकर देखा तो उसकी यह अजीब हरकत देख हैरान रह गया। कहावत का अर्थ है कि कोई आदमी कहीं भी पहुँच जाए उसकी बुनियादी आदतें नहीं छूटतीं। कोई नीची मानसिकता वाला व्यक्ति यदि उच्च पद पर आसीन हो जाए और फिर भी ओछी हरकतें करे तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 62 : इक्के-दुक्के का अल्ला बेली

बहुत समय पहले की बात है। एक घना जंगल था, जिसमें एक कच्ची सड़क गुजरती थी। जंगल के किनारे एक बुढ़िया अपने बदमाश बेटों के साथ एक झोपड़ी में रहती थी। उसका नाम था फरीदा।

दिन के समय उसके लड़के सड़क के पास वाले नाले के पीछे छिप जाते, और फरीदा सड़क पर नजर रखती। जब कोई अकेला मुसाफिर नज़र आता, तो फरीदा ऊंची आवाज में कहती, "इक्के-दुक्के का अल्ला बेली!"

बस, यह सुनकर उसके डकैत बेटे समझ जाते कि शिकार आ गया है। वे नाले से निकलकर मुसाफिर को लूट लेते। लेकिन जब कोई बड़ा समूह या कारवां आता, तो फरीदा चतुराई से पुकारती, "जमात में करामात है!"

यह सुनकर उसके बेटे समझ जाते कि भीड़ बड़ी है, और छिपे रहते।

फरीदा और उसके बेटों की यह चाल बहुत दिनों तक चलती रही। लोग इस रास्ते पर डर के साए में सफर करते, लेकिन किसी को समझ नहीं आता कि यह सब कैसे हो रहा है।

आखिरकार एक दिन, फरीदा के बेटों की यह चालाकी पकड़ी गई। वे सभी मुसाफिरों को लूटने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें फांसी की सजा दी गई।

फरीदा को अपने इस छल-कपट से उसे इतनी घृणा हो गई कि उसने निश्चय किया कि अब वह कुछ अच्छा करेगी। उस ने जो पैसे जमा किए थे, उनसे उसने नाले पर एक पुल बनवा दिया। लोगों ने उसकी इस अच्छाई को याद रखते हुए उस जगह का नाम फरीदाबाद रख दिया।

कहावत का अर्थ है कि सफर में अकेले जाने वालों का भगवान ही मालिक है।

: 63 : इत्तेफाक से कुतिया मरी, ढोंगी कहे मेरी बानी फली

एक गाँव में भोंदू बाबा नाम के एक ढोंगी साधु रहते थे। वे हमेशा इस ताक में रहते थे कि कोई ऐसी घटना घट जाए जिसका वे श्रेय ले सकें। उसी गाँव में एक बूढ़ी

कुतिया रहती थी। वह कुतिया काफी समय से बीमार थी और मुश्किल से चल-फिर पाती थी।

एक दिन दोपहर के समय वह कुतिया भोंदू बाबा की कुटिया के बाहर लेटी हांफ रही थी। बाबा को डर लगा कहीं ऐसा न हो कि कुतिया वहीं मर जाए और उन्हें गंदगी साफ करनी पड़े। उन्होंने जोर से चिल्लाकर कहा, "भाग यहाँ से कलमुंही! अगर तू यहाँ से नहीं हिली, तो मेरा श्राप तुझे अभी भस्म कर देगा!"

कुतिया बीमार थी, वह हिल भी न सकी। बाबा ने गुस्से में अपना चिमटा जमीन पर पटका और बड़बड़ाते हुए अंदर चले गए। इत्तेफाक से, कुछ ही मिनटों बाद कुतिया ने अपनी आखिरी सांस ली और वहीं ठंडी हो गई। आस पास काम कर रहे कुछ लोगों ने यह दृश्य देखा तो वे हैरत में आ गये।

गाँव वाले इकट्ठे हुए तो भोंदू बाबा बाहर आए और छाती ठोककर कहने लगे, "देखा! मैंने अभी इसे श्राप दिया था और देखो, इसके प्राण पखेरू उड़ गए।"

भोले गाँव वाले बाबा के 'चमत्कार' से डर गए और उन्हें सिद्ध पुरुष मानकर भेंट चढ़ाने लगे। गाँव के एक बुजुर्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, “कुतिया तो हफ्तों से मरने वाली थी, बाबा ने मौके का फायदा उठाकर अपनी दुकान चमका ली।“ संयोग का फायदा उठाने वाले कुटिल लोगों के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 64 : इनको भी लिखो

एक दिन अकबर बादशाह अपने दरबार में बैठा था। बातों-बातों में उसने बीरबल से एक अजीब सवाल पूछा, "बीरबल, यह बताओ कि इस संसार में अंधों की संख्या ज्यादा है या आँख वालों की?" बीरबल मुस्कुराए और बोले, "जहांपनाह, अंधों की संख्या अधिक है।"

अकबर को बीरबल का यह जवाब बड़ा अजीब लगा। उस ने कहा, "बीरबल, इसे साबित करके दिखाओ।" बीरबल ने सिर झुकाकर कहा, "ठीक है जहांपनाह।"

अगले ही दिन, बीरबल ने अपनी योजना बना ली। वह राजमहल के दरवाजे पर बैठे और जूते गांठने लगे। साथ में एक मुंशी को भी बैठा दिया, जो नामों की सूची लिखने लगा।

अब जो कोई भी महल के दरवाजे से गुजरता, वह बीरबल को देखकर हैरानी से पूछता, "बीरबल, आप यह क्या कर रहे हैं?" बीरबल मुंशी से कहते, "इनका नाम अंधों की सूची में लिखो।"

लेकिन जब कोई व्यक्ति यह सवाल करता, "बीरबल, आप जूते क्यों गाँठ रहे हैं?" तो बीरबल कहते, "इनका नाम आँख वालों की सूची में लिखो।" राजमहल के बहुत से दरबारी और सेवक भी वहां से गुजरे। अधिकतर लोगों ने वही पूछा, "आप यह क्या कर रहे हैं?" और बीरबल ने उन्हें अंधों की सूची में डाल दिया।

थोड़ी देर बाद, अकबर बादशाह खुद महल के दरवाजे से गुजरा। उसने बीरबल को देखा और हैरानी से पूछा, "बीरबल, यह क्या कर रहे हो?" बीरबल ने मुंशी की ओर देखकर कहा, "इनको भी लिखो।"

यह सुनकर अकबर चौंक गया। उसने पूछा, "बीरबल, यह क्या मजाक है?" बीरबल ने बड़ी विनम्रता से अपनी लिस्ट बादशाह को दिखाई। अंधों की सूची आँख वालों से बहुत ज्यादा लंबी थी और उस में सबसे ऊपर अकबर का नाम था।

यदि मित्र मंडली में कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्ण बात कर रहा हो तो यह कहावत आपसी हंसी मजाक में प्रयोग की जाती है।

: 65 : इस मुर्दे का पीला पाँव, के माथा कूटत तुम भी आओ

कुछ चालाक चोरों ने एक मंदिर से सोने की आदमकद मूर्ति चुराई। यह मूर्ति न केवल कीमती थी, बल्कि काफी भारी भी। अब समस्या यह थी कि इसे मंदिर से चुराकर शहर के बाहर अपने अड्डे तक सुरक्षित कैसे ले जाएं।

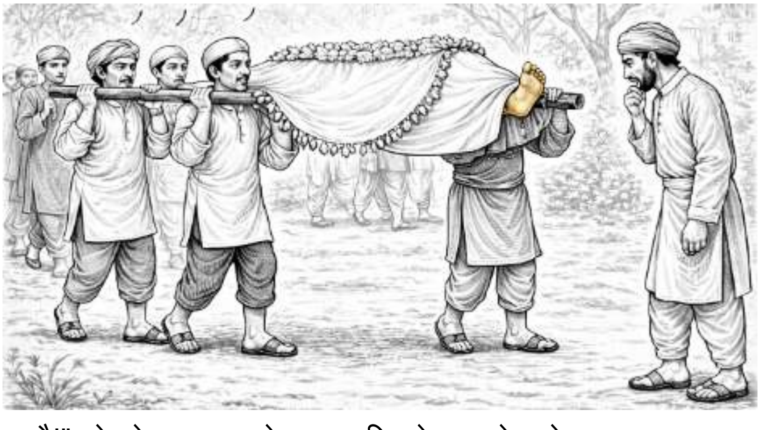

चोरों ने इस मुश्किल के लिए एक नायाब तरकीब निकाली। उन्होंने एक अर्थी बनाई, मूर्ति को उस पर रखा, और उसे सफेद कपड़े से ढक दिया। फिर कंधे पर अर्थी उठाई और जोर-जोर से "राम नाम सत्य है!" बोलते हुए शहर के बाहर की ओर चलने लगे।

उनका यह नाटक इतना असली लग रहा था कि जो भी देखता, समझता कि किसी का अंतिम संस्कार हो रहा है। रास्ते में कुछ राहगीर भी श्रद्धा के साथ उनके पीछे-पीछे चलने लगे। लेकिन तभी कुछ गड़बड़ हो गई। चलते-चलते अर्थी के ऊपर ढंका हुआ कपड़ा थोड़ा सरक गया, और मूर्ति का सुनहरा पैर दिखने लगा। एक राहगीर ने इसे देखा और हैरानी से पूछा, "अरे भाई, इस मुर्दे का पांव पीला क्यों है?"

चोर भी कम चालाक नहीं थे। उन्होंने तुरंत उस आदमी से कहा, "भाई साहब, तुम्हें बहुत समझ है। चलो, तुम भी रोते बिलखते और राम नाम सत्य बोलते हुए हमारे साथ आ जाओ। काम खत्म होने पर तुम्हें भी हिस्सा देंगे।" अब वह आदमी उनके साथ हो लिया। न वह कुछ बोल सका, न किसी और से कह सका। चोरों ने इसी तरकीब से मूर्ति को अपने ठिकाने तक पहुंचा दिया।

जब कोई व्यक्ति किसी घोटाले या गलत काम का भांडा फोड़ने जा रहा हो और उसे लालच दे कर चुप करा दिया जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 66 : इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं, जे तरजनी देखि मरि जाहीं

यह प्रसंग रामचरितमानस के बालकाण्ड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में जब भगवान राम ने शिव धनुष को तोड़ दिया, तो उसकी भयंकर ध्वनि सुनकर परशुराम वहाँ पहुँचे। परशुराम जी अत्यंत क्रोध में थे और उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों को कठोर वचन कहे। उनका क्रोध देखकर सभी राजा-महाराजा भयभीत हो गए। कोई भी उनके सामने बोलने का साहस नहीं कर पाया।

तभी लक्ष्मण ने निर्भीक होकर उत्तर दिया। उन्होंने परशुराम के क्रोध को चुनौती

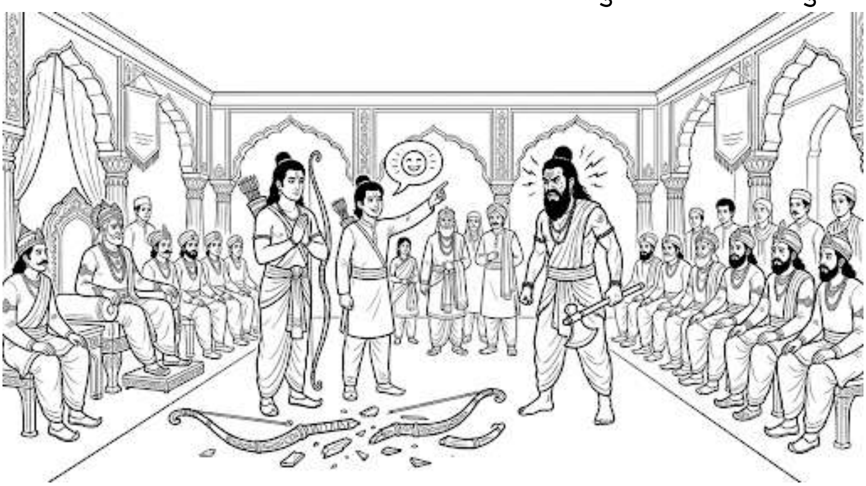

देते हुए व्यंग्य में कहा, “यहाँ कोई छुईमुई का पौधा नहीं है, जो आपकी उंगली दिखाने मात्र से ही मुरझा जाए।“

इसके बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई, परंतु अंत में भगवान राम ने विनम्रता और शांति से परशुराम को समझाया और उनका क्रोध शांत किया। कहावत का अर्थ है कि यहाँ कोई इतना डरपोक नहीं है जो केवल डराने से ही हार मान ले।

: 67 : इहाँ भी कद्दू, उहाँ भी कद्दू, कद्दू की तरकारी, कौन घाट पर उतरा कद्दू, आय गया ससुरारी

कद्दू की एक विशेषता होती है कि जब उसकी पैदावार शुरू होती है, तो वह इतनी अधिक मात्रा में पैदा होता है कि बाजार में चारों ओर कद्दू ही कद्दू दिखाई देता है। अन्य सब्जियों की तुलना में सस्ता होने के कारण गरीब लोगों के लिए वही मुख्य भोजन बन जाता है।

एक बार एक व्यक्ति अपने घर में रोज़-रोज़ कद्दू की सब्ज़ी खाकर तंग आ गया। सुबह कद्दू, दोपहर कद्दू और रात को भी कद्दू। उसने सोचा कि कुछ दिन ससुराल जाकर रहा जाए, वहाँ तो तरह-तरह के व्यंजन मिलेंगे और इस कद्दू से छुटकारा मिलेगा।

वह बड़े उत्साह से ससुराल पहुँचा। लेकिन उसकी किस्मत देखिए, पहले ही दिन भोजन में कद्दू की सब्ज़ी परोसी गई। अगले दिन भी वही कद्दू, और तीसरे दिन भी वही हाल। अब वह व्यक्ति हँसते हुए, किंतु भीतर से परेशान होकर बोला, “खाओ तो कद्दू से, न खाओ तो कद्दू से!”

जिस चीज़ से व्यक्ति ऊब चुका हो, वही बार-बार सामने आए और उससे छुटकारा न मिले तो यह कहावत कही जाती है।

: 68 : ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है

एक बार की बात है, एक राजा अपने मंत्री और लाव-लश्कर के साथ शिकार पर निकला। घने जंगल में शिकार के दौरान राजा का ध्यान भटक गया और अपनी ही

तलवार पर हाथ लग जाने से राजा की एक ऊँगली कट गई। राजा दर्द से कराह रहा था लेकिन तभी मंत्री ने शांत स्वर में कहा, "महाराज, ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।" यह सुनकर राजा को गुस्सा आ गया। उसने मंत्री को डांटते हुए कहा, "मेरी ऊँगली कट गई है और तुम इसे अच्छा कह रहे हो? क्या तुम्हें मेरी पीड़ा का अंदाजा नहीं है?" गुस्से में आकर राजा ने मंत्री को तुरंत जेल में डालने का हुक्म दे दिया।

कुछ दिनों बाद, राजा फिर से शिकार पर गया। इस बार वह अपने सैनिकों से अलग होकर जंगल में भटक गया। चलते-चलते उसे कुछ जंगली डाकुओं ने पकड़ लिया और अपने अड्डे पर ले गए। ये डाकू हर महीने किसी इंसान की बलि चढ़ाते थे।

डाकुओं ने राजा की बलि चढाने की तैयारियां शुरू कर दीं। तभी डाकुओं का सरदार वहां पहुंचा। जैसे ही उसने राजा के हाथों की ओर देखा वह चिल्लाकर बोला, "बलि रोको! इस आदमी की बलि नहीं दी जा सकती।"

डाकुओं ने चकित होकर पूछा, "क्यों, सरदार?" सरदार ने समझाया, "इसकी ऊँगली कटी हुई है। हमारे नियमों के अनुसार, किसी अपूर्ण शरीर वाले व्यक्ति की बलि नहीं चढ़ाई जा सकती। इसे छोड़ दो।"

राजा को आज़ादी मिल गई। जंगल से सुरक्षित लौटने के बाद, वह सीधे अपने महल पहुंचा और सबसे पहले अपने मंत्री को जेल से रिहा करने का आदेश दिया। मंत्री के सामने आते ही राजा ने क्षमा मांगते हुए कहा, "मुझे अब समझ में आया कि तुमने उस दिन ऐसा क्यों कहा था। मेरी कटी हुई ऊँगली ने मेरी जान बचा ली। सच में, ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। लेकिन यह बताओ कि जब मैंने तुम्हें जेल में डलवाया था, तब इसमें क्या अच्छा था?"

मंत्री ने नम्रता से उत्तर दिया, "राजन, जब भी आप शिकार पर जाते हैं, मैं हमेशा आपके साथ होता हूं। अगर मैं उस दिन जेल में नहीं होता, तो मैं भी आपके साथ जाता। आपकी तो कटी हुई ऊँगली के कारण जान बच गई, लेकिन मेरी बलि चढ़ाने में डाकू बिल्कुल नहीं हिचकते। इसलिए मैं आज भी कहता हूं–ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।"

: 69 : उघरे अंत न होहि निबाहू, कालनेमि जिमि रावण राहू

(गोस्वामी तुलसीदास)

<u>संदर्भ कथाएँ</u>

कालनेमि की कथा : जब लक्ष्मण मूर्छित हो गए, तब हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय जा रहे थे। मार्ग में रावण ने राक्षस कालनेमि को भेजा कि वह हनुमान को धोखे से रोक दे।

कालनेमि ने साधु का वेश धारण कर हनुमान को भ्रमित करने का प्रयास किया। उसने उन्हें आश्रम में विश्राम और स्नान के लिए कहा। परंतु जब हनुमान को उसके छल का आभास हुआ, तो उन्होंने कालनेमि का वध कर दिया और अपने कार्य के लिए आगे बढ़ गए।

रावण की कथा : लंका के राजा रावण ने सीता का हरण करने के लिए साधु का वेश बनाया। वह भिक्षा मांगने के बहाने आए और छलपूर्वक सीता का अपहरण कर लिया। शुरू में उसका छल सफल हुआ, परंतु अंततः भगवान राम ने युद्ध में रावण का वध कर दिया।

राहु की कथा : समुद्र मंथन के समय देवताओं और असुरों के बीच अमृत बाँटा जा रहा था। तभी राहु नामक असुर, देवता का रूप धारण कर चुपके से अमृत पीने बैठ गया। लेकिन सूर्य और चंद्र ने उसे पहचान लिया और भगवान विष्णु को बता

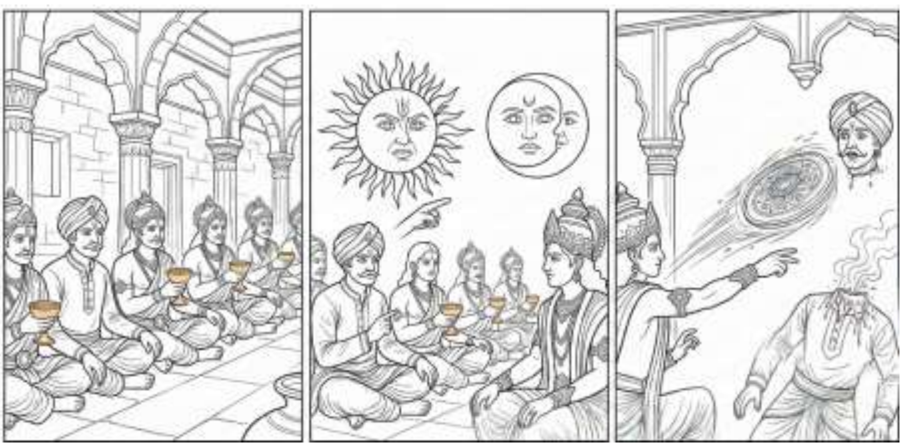

दिया। विष्णु ने तुरंत सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया।

कहावत का अर्थ है कि झूठ, कपट और छल छिपे नहीं रहते; एक न एक दिन उनका भंडाफोड़ अवश्य हो जाता है।

: 70 : उत्तम विद्या लीजिये जदपि नीच में होय, पड़यो अपावन ठौर में कंचन तजे न कोय

लंका का युद्ध समाप्त हो चुका था। रणभूमि पर लंका का पराक्रमी सम्राट रावण घायल अवस्था में पड़ा अपने अंतिम क्षणों की प्रतीक्षा कर रहा था। भगवान राम ने जब यह देखा, तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "लक्ष्मण, रावण एक महान विद्वान है। तुम उसके पास जाओ और उससे कुछ ज्ञान प्राप्त करो। लक्ष्मण को यह बात कुछ विचित्र लगी। उन्होंने कहा, "भ्राताश्री, रावण तो एक अत्याचारी और अधर्मी राक्षस है। ऐसे नीच व्यक्ति से ज्ञान लेना क्या उचित है?"

राम ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "लक्ष्मण, मनुष्य का आचरण और उसकी विद्या, ये दोनों अलग-अलग बातें हैं। रावण ने अपने अहंकार और दुष्कर्मों के कारण यह स्थिति प्राप्त की है, परंतु उसकी विद्वता में कोई कमी नहीं है। उत्तम ज्ञान जहाँ से भी मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए।"

राम के वचनों का मर्म समझकर लक्ष्मण रावण के पास पहुँचे और विनम्रतापूर्वक बोले, "हे लंकेश्वर, यदि आप उचित समझें तो मुझे कुछ ज्ञान प्रदान करें।"

रावण ने अपनी मद्धिम होती आवाज़ में कहा, "लक्ष्मण, जीवन में कभी भी शुभ कार्य को कल पर मत टालो और अशुभ कार्य को जितना हो सके टालते रहो। मैंने सीता हरण जैसे दुष्कर्म में शीघ्रता की और राम से शत्रुता मोल ली, परंतु राम से मित्रता करने जैसे शुभ कार्य को टालता रहा। यही मेरी सबसे बड़ी भूल थी।"

: 71 : उल्टी गंगा बहाई है

एक जाट की पत्नी बहुत ज़िद्दी स्वभाव की थी। वह हमेशा अपने पति की इच्छा के उलट ही काम करती थी। जाट अपनी पत्नी की इस आदत से अत्यंत परेशान था। एक दिन उसने उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से कहा, "आज से मैं तुम्हें मायके नहीं जाने दूँगा।"

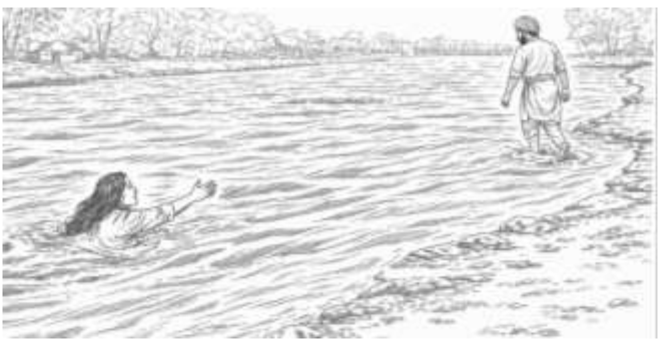

पत्नी ने अपनी आदत के अनुसार कहा, "मैं तो अभी मायके जाऊँगी।" तब पति ने कहा, "अच्छा, तुम चली जाओ, पर मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।" इस पर वह कहने लगी कि तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा। लिहाजा दोनों उसी समय चल पड़े।

रास्ते में गंगा नदी पड़ी। जाट ने कहा, "नाव में बैठकर पार चलो।" पत्नी ने इस बात से भी इंकार कर दिया और बोली, "मैं तो धार के बीच से ही पार जाऊँगी।"

इतना कहकर वह नदी में उतर पड़ी, पर तेज बहाव के कारण डूबने लगी। जाट उसे नदी के बहाव की दिशा में खोजने के बजाय बहाव की उल्टी दिशा में ढूँढने लगा। किनारे खड़े लोगों ने उससे पूछा– "तुम क्या खोज रहे हो?" उसने उत्तर दिया, "मेरी पत्नी तो हमेशा उल्टा ही काम करती थी, इसलिए नदी में बहने के बाद भी वह बहाव के विपरीत ही गई होगी।"

यह सुनकर लोग हँस पड़े और बोले, "वाह! तुम तो उल्टी गंगा बहा रहे हो!"

कहावत तब प्रयोग की जाती है जब कोई जान-बूझकर हठपूर्वक ऐसा काम करे जो सामान्य नियमों और परंपराओं के विरुद्ध हो।

: 72 : ऊँचे चढ़ चढ़ देखा तो घर-घर वो ही लेखा

एक गाँव में एक विधवा स्त्री अपने छोटे से बेटे के साथ रहती थी। वह दिखावे के लिए तिलक-छापे लगाकर और हाथ में माला लेकर खुद को धार्मिक साबित करने की कोशिश करती, लेकिन असल में उसका आचरण कुछ और ही था, जिसे उसका बेटा समझने लगा था।

जैसे-जैसे लड़का बड़ा हुआ, उसने अपनी माँ के चाल-चलन को पहचान लिया। एक दिन उसने सीधे-सीधे माँ से पूछ ही लिया, "माँ, तुम काजल-बिंदी क्यों लगाती हो?" माँ का चेहरा तमतमा उठा। अपने करतूतों की पोल खुलने के डर से उसने बेटे को दूर भेजने का फैसला किया और उसे एक गुरु के पास छोड़ आई।

गुरु के घर लड़के की पढ़ाई-लिखाई शुरू हुई, लेकिन यहाँ गुरु की पत्नी भी चरित्रहीन निकली। एक दिन, जब गुरु किसी दूसरे गाँव गया हुआ था, तो उसकी पत्नी ने अपने प्रेमी को घर बुला लिया। उस दिन उसने बैंगन की सब्जी बनाई। पर प्रेमी ने मुँह बनाकर कहा, "बैंगन तो मुझे वादी करता है, इसे मैं नहीं खा सकता।"

गुरु की पत्नी ने वह सब्जी लड़के को दे दी। लड़के को सब्जी अच्छी लगी तो वह खुशी से बोल पड़ा, "किसी को बैंगन वादी करे, किसी को जाए जंच!" उसकी इस बात से गुरु की पत्नी समझ गई कि लड़का उसकी हरकतों को भाँप चुका है। डर के कारण उसने लड़के को घर से निकाल दिया।

लड़का वहाँ से चलता-चलता एक राजा की राजधानी में पहुँच गया। किस्मत ने उसे राजा के यहाँ नौकरी दिला दी। उसे अंतःपुर की ड्योढ़ी पर तैनात किया गया। यहाँ भी उसने देखा कि राजा की रानी अपने पति के प्रति वफादार नहीं थी। अंततः लड़के के मन में यह बात पक्की हो गई कि चाहे कोई गरीब हो या राजा, इस पाप की छाया सब पर एक जैसी है।

कहावत का अर्थ है कि समाज के छोटे से लेकर बड़े तबके तक पाप की छाया सर्वत्र व्याप्त है।

: 73 : ऊँट की नकेल चूहे के हाथ

एक पालतू ऊँट जंगल में झाड़ियाँ चर रहा था। तभी एक जंगली चूहा आया और उसने ऊँट की नकेल की रस्सी पकड़ ली और उसे अपने बिल की ओर ले जाने लगा।

आज्ञा पालन करना ऊँट की आदत थी, इसलिए वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

यह दृश्य देखकर एक व्यक्ति ने कहा, "जिसे गुलामी करने की आदत पड़ जाती है, वह हर किसी की गुलामी ही करता है।" जब कोई बड़ा या शक्तिशाली व्यक्ति अपनी गुलामी की आदत के कारण किसी छोटे या अयोग्य व्यक्ति की हर उचित अनुचित आज्ञा मानता है तो यह कहावत प्रयोग की जाती है। आजकल के कुछ राजनीतिक दलों पर यह कहावत सटीक बैठती है।

: 74 : ऊँट के गले में पालकी

एक बार एक लालाजी पालकी में बैठकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में खेतों में हरे-भरे चने के पौधे लहलहा रहे थे। उन्हें देखकर लालाजी का मन ललचा गया। उन्होंने एक कहार से कहा, "जरा कुछ चने उखाड़ लाओ।" कहार ने खेत से पाँच-सात चनों के पौधे उखाड़कर पालकी में रख दिए। लालाजी आराम से बैठे चने छील-छीलकर खाने लगे। इतने में उधर से एक ऊँट निकला। हरे चनों की खुशबू पाकर उसने पालकी के भीतर गर्दन डालकर चनों के पौधे पकड़ लिए।

लालाजी यह दृश्य देखकर घबरा गए और एक ओर सिमट गए। ऊँट ने चने के पौधे खाने के बाद अपनी गर्दन वापस खींचने के बजाय पालकी के दूसरी और से बाहर निकाल ली। जैसे ही उसने गर्दन उठाई उसकी लंबी गर्दन के साथ पूरी पालकी ही लटककर उसके गले में टंग गई।

अब ऊँट चलता जा रहा था और उसके गले में पालकी झूल रही थी। यह अद्भुत दृश्य देखकर राहगीर दंग रह गए। वे हँसते हुए चिल्लाने लगे, "अरे देखो-देखो! ऊँट के गले में पालकी!"

जब कोई दृश्य या घटना अत्यंत अजीब, अनपेक्षित या हास्यास्पद हो, तो उसके लिए कहा जाता है, "ऊँट के गले में पालकी।"

: 75 : ऊँट के गले में बिल्ली

किसी गाँव में एक व्यक्ति का ऊँट खो गया। बहुत ढूँढने पर भी जब ऊँट नहीं मिला तो परेशान होकर उसने पूरे गाँव में ऐलान कर दिया, "जो भी मेरा ऊँट ढूँढकर वापस लाएगा, मैं उसे ऊँट दो टके में बेच दूँगा!"

यह सुनकर एक आदमी ऊँट की तलाश में निकल पड़ा। आखिरकार, काफी खोजबीन के बाद उसे ऊँट एक जंगल में चरता हुआ मिल गया। वह आदमी बहुत खुश हुआ और सोचा, "अब तो मैं इसे दो टके में खरीद लूँगा।"

वह फौरन ऊँट को पकड़कर उसके मालिक के पास ले गया। ऊँट को देखते ही उसका मालिक मुस्कुराया। उसने तुरंत एक युक्ति लगाई। ऊँट के गले में उसने एक बिल्ली बाँध दी और बड़े आराम से बोला, "हाँ, मैंने वादा किया था कि ऊँट दो टके में बेच दूँगा। लेकिन यह ऊँट अकेला नहीं बिकेगा। इसके साथ यह बिल्ली भी खरीदनी होगी।" ऊँट ढूँढ़कर लाने वाले ने उत्सुकता से पूछा, "ठीक है, लेकिन बिल्ली की कीमत क्या है?" ऊँट वाले ने मुस्कुराते हुए कहा, "ऊँट तो दो टके में है, लेकिन यह बिल्ली बड़ी खास है। इसकी कीमत ऊँट से भी ज्यादा है।"

यह सुनकर ऊँट लाने वाला आदमी दंग रह गया। उसने गुस्से में कहा, "यह तो धोखा हुआ! मैंने तो ऊँट खरीदने के लिए मेहनत की थी, बिल्ली नहीं!" ऊँट वाला हंसते हुए बोला, "भाई, ऊँट खरीदना है तो बिल्ली भी साथ लेनी होगी। दोनों का सौदा साथ ही होगा।"

अंत में, ऊँट वापस उसके मालिक के पास आ गया, और वह भी बिना एक पैसा खर्च किए। गाँव के लोग ऊँट वाले की चालाकी की चर्चा करते हुए हँसते रहे।

कोई चालाक व्यक्ति किसी आसान शर्त के साथ मुश्किल शर्त रख कर अपना काम निकाले तो यह कहावत कही जाती है।

: 76 : ऊँट मरा, कपड़े के सिर

कहा जाता है कि एक कपड़ा व्यापारी ने माल की ढुलाई के लिए एक ऊँट खरीदा था। कुछ ही दिनों बाद वह ऊँट मर गया। इससे व्यापारी को अच्छा-खासा नुकसान हुआ।

उसने अपने इस नुकसान की भरपाई के लिए एक उपाय सोचा। उसने अपने कपड़ों के दाम बढ़ा दिए और सामान महँगे दामों पर बेचने लगा। धीरे-धीरे ही सही, कुछ ही दिनों में उसका सारा घाटा पूरा हो गया।

कहावत का अर्थ है कि व्यापार में जो नुकसान होता है, उसे दाम बढ़ा कर ही वसूला जाता है।

: 77 : ऊपर बरछी नीचे कुआँ, तासें बनिया फारखत हुआ

एक समय की बात है, एक व्यक्ति पर एक बनिये का बहुत सा रुपया उधार था। वह व्यक्ति कई बार सोच चुका था कि वह ऋण कैसे चुकाए, लेकिन उसके पास कोई उपाय नहीं था। समय बीतता जा रहा था, और बनिया बार-बार अपना पैसा माँगने उसके घर आ जाता।

एक दिन उस व्यक्ति ने सोचा कि अब सिर्फ चालाकी से ही छुटकारा पाया जा सकता है। उसने बनिये को अपने घर बुलाया और बड़े ही मीठे शब्दों में कहा, “भाई, तुमने मुझे इतना उधार दिया, तुम्हारा एहसान कभी नहीं भूल सकता। चलो, आज कुछ खास बात करनी है, मेरे साथ कुएँ के पास चलो।”

बनिया उसकी बातों में आ गया और उसके साथ कुएँ की ओर चला गया। वहाँ पहुँचते ही उस व्यक्ति ने बनिये को कुएँ की मुंडेर पर बिठा दिया। फिर अचानक हाथ में बरछी (भाला) उठा ली और डरावनी आवाज़ में बोला, "देखो, अगर तुमने मुझे मेरे सारे कर्ज़ से मुक्त नहीं किया, तो मैं तुम्हें बरछी मार कर इस कुएँ में गिरा दूँगा।

बनिया घबराया, लेकिन वह बड़ा चालाक और होशियार था। उसने अपने डर को छुपाते हुए कहा, "ठीक है भाई, मैं तुम्हें कर्ज़ से मुक्त कर देता हूँ। जो तुम कह रहे हो, वह लिखकर दे देता हूँ।"

उसने फारखती (कर्ज़ माफी की रसीद) लिखी और बड़े ही शांत मन से उस पर दस्तखत कर दिए। लेकिन साथ ही, अपनी चालाकी से उसने फारखती की पर्ची के पीछे एक पंक्ति लिख दी - "ऊपर बरछी नीचे कुआँ, तासें बनिया फारखत हुआ।"

जब बनिया सुरक्षित अपने घर लौट आया तो उसने यह बात गाँववालों और अदालत में जाकर बताई। अदालत में न्यायाधीश ने वह पर्ची तलब की। पर्ची की पीठ पर लिखी बात को सब को दिखाकर बनिए ने बताया कि किस तरह उसे जान से मारने की धमकी दी गई थी। अदालत ने तुरंत उस व्यक्ति को दोषी ठहराया और बनिये का पूरा पैसा वापस दिलवाया।

: 78 : ऊपर से बाबाजी दीखे, नीचे खोज गधे का

एक जंगल के किनारे एक साधु बाबा की कुटिया थी। सुबह-सुबह लोग उन्हें भजन-पूजन में लीन देखते और उनके त्याग की प्रशंसा करते। पर बाबा का एक दूसरा रूप था, जिसे कोई नहीं जानता था।

कुटिया के पास ही एक किसान का खेत था। किसान के खेत में ताजी सब्ज़ियाँ और खीरे लहलहा रहे थे। हर सुबह किसान यह देखकर परेशान होता कि रात में कोई उसके खेत में घुसकर खीरे और सब्ज़ियाँ तोड़ लेता है। उसने खेत

में गधे जैसे पगचिन्ह देखे और सोचा कि शायद कोई गधा ही रात को खेत में आकर नुकसान कर रहा है।

लेकिन हकीकत कुछ और ही थी। साधु बाबा, जो दिन में तपस्वी का चोला ओढ़े रहते, रात होते ही खड़ाऊँ पहनकर किसान के खेत में पहुँच जाते। उनकी खड़ाऊँ खास तरीके से बनाई गई थीं, जिनसे जमीन पर गधे जैसे पगचिन्ह बनते थे। कई दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा। किसान को गधे की करतूत पर बहुत गुस्सा आता था। आखिर एक रात उसने खेत में छिपकर बैठने का निश्चय किया।

रात के सन्नाटे में बाबा अपनी खड़ाऊँ पहनकर खेत में आए। बड़े ही इत्मीनान से उन्होंने खीरे और सब्ज़ियाँ तोड़नी शुरू कीं। किसान ने पीछे से लपककर बाबा को पकड़ लिया। बाबा सकपका गए और माफी माँगने लगे। किसान ने बाबा की जमकर मरम्मत की और खेत से खदेड़ दिया।

कोई व्यक्ति देखने में धर्मात्मा लगता हो लेकिन चोरों जैसे कारनामे करता हो तो उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

: 79 : एक की सैर, दो का तमाशा, तीन का पिटना, चार का स्यापा

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके चार बेटे थे। वे हमेशा आपस में झगड़ते रहते। किसान ने कई बार समझाने की कोशिश की, पर उन के झगड़े कम होने का नाम ही नहीं लेते थे।

एक दिन किसान ने सोचा कि बेटों को एकता का महत्त्व सिखाया जाए। उसने कुछ लकड़ियाँ मँगवाईं और अपने बेटों को बुलाकर कहा, "तुम सब एक-एक लकड़ी लो और इसे तोड़कर दिखाओ।"

बेटों ने चुटकियों में लकड़ियाँ तोड़ दीं। किसान ने अब चार लकड़ियों को एक साथ बाँधकर गट्ठर बना दिया और कहा, "अब इसे तोड़कर दिखाओ।" बेटों ने कोशिश की, लेकिन गट्ठर नहीं टूटा। किसान मुस्कुराते हुए बोला, "देखो बेटा, अगर तुम अलग-अलग रहोगे, तो

कोई भी तुम्हें तोड़ सकता है। लेकिन अगर तुम एकजुट रहोगे, तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें हरा नहीं सकती।”

बेटों ने सिर हिलाया, लेकिन उनमें से सबसे छोटा बेटा कुछ ज्यादा ही होशियार था। वह चुपचाप अंदर गया और पाँच गमले लेकर बाहर आया। एक गमले में चार छोटे-छोटे पौधे लगे थे, जो सूखे और कमजोर दिख रहे थे। बाकी चार गमलों में एक-एक पौधा लगा था, और वे हरे-भरे और मजबूत थे।

छोटे बेटे ने गमले किसान के सामने रखे और बोला, “देखो बापू! इस गमले में चार पौधे साथ-साथ लगे हैं, लेकिन इनका विकास रुक गया है। ये एक-दूसरे के हिस्से की जमीन, पानी और पोषण छीन रहे हैं। लेकिन इन चार गमलों में जो पौधे अकेले हैं, वे कितने अच्छे से बढ़ रहे हैं।

कहावत का अर्थ है कि एक ही सिद्धांत को हर जगह लागू नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों के अनुसार परिवार और समाज के मानक बदल सकते हैं।

: 80 : एक गरीब को मारा था, तो नौ मन चर्बी निकली

एक धनी व्यक्ति हमेशा अपने आप को बहुत गरीब बताता था। वह लोगों के सामने अपनी निर्धनता का दिखावा करता रहता था।

एक बार उस पर धोखाधड़ी का आरोप सिद्ध हो गया। परिणामस्वरूप उसके घर की संपत्ति जब्त करने का आदेश दिया गया। जब अधिकारियों ने उसके घर की तलाशी ली, तो अन्य सामान के साथ-साथ वहाँ से बहुत अधिक धन और बड़ी मात्रा में उत्तम किस्म का घी भी प्राप्त हुआ।

यह देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। कहावत का अर्थ है कि ऊपरी दिखावे से व्यक्ति की वास्तविकता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। जो अपने को गरीब बताता है, वह वास्तव में भीतर से संपन्न भी हो सकता है।

: 81 : एक न शुद, दो शुद

(क्या एक मुसीबत कम थी जो अब दूसरी भी गले पड़ गई)

एक समय की बात है, एक व्यक्ति ने एक जादूगर से तीन शक्तिशाली मंत्र सीखे। पहला मंत्र मृत को जीवित कर सकता था, दूसरा मंत्र जीवित व्यक्ति के मन का हाल जानने की शक्ति देता था, और तीसरा मंत्र जीवित को फिर से मृत बना सकता था। वह व्यक्ति इन मंत्रों से बेहद खुश था और सोचता था कि अब उसके पास अनोखी शक्तियाँ हैं।

एक दिन, उसने इन मंत्रों को आजमाने का फैसला किया। उसने एक मुर्दा ढूँढा, पहला मंत्र बोला, और मुर्दा तुरंत जीवित हो गया। यह देखकर वह बड़ा खुश हुआ।

फिर उसने दूसरा मंत्र बोला और उस जीवित मुर्दे से उसके जीवन की सारी बातें जान लीं।

अब समस्या यह हुई कि वह जीवित मुर्दा उसे घूर-घूरकर देखने लगा। उसका अजीब-सा रूप और खतरनाक हावभाव देखकर व्यक्ति को डर लगने लगा। उसने तीसरा मंत्र बोलकर उसे फिर से मृत बनाने की कोशिश की, लेकिन... ओह! तीसरा मंत्र वह भूल चुका था!

अब वह जीवित मुर्दा, जो दरअसल प्रेत बन चुका था, उस व्यक्ति के पीछे लग गया। जहाँ वह जाता, वह प्रेत उसकी परछाई की तरह उसके साथ रहता। डरा-सहमा वह व्यक्ति दिन-रात इस मुसीबत से छुटकारा पाने का उपाय सोचता रहा।

वह परेशानी का हल ढूँढने अपने गुरु के पास पहुँचा। वहाँ जा कर मालूम हुआ कि गुरु की मृत्यु हो चुकी है। अंत में उसने फैसला किया कि क्यों न अपने गुरु को ही जीवित कर लिया जाए। उसने तुरंत अपने गुरु की कब्र पर जाकर पहला मंत्र बोला। गुरु जीवित हो गए। पर दुर्भाग्यवश वह इस बार दूसरा मंत्र भूल गया और अपने गुरु से जीवित को फिर मृतक बनाने का मंत्र नहीं जान सका। अब क्या हुआ? गुरु भी प्रेत बन गए! और अब एक प्रेत की जगह दो प्रेत उसके पीछे लग गए। दोनों प्रेत हर समय उसे डराते और उसके इर्द-गिर्द मंडराते रहते।

कहते हैं कि वह व्यक्ति अंत तक उन प्रेतों से पीछा नहीं छुड़ा पाया। कोई व्यक्ति किसी एक मुसीबत से जूझ रहा हो और तब तक कोई दूसरी उससे बड़ी मुसीबत भी आ पड़े तो यह कहावत कही जाती है।

: 82 : एक नकटा सौ को नकटा करे

एक गाँव में एक व्यक्ति की नाक धोखे से कट गई। अपनी हालत देखकर वह बेचैन हो गया। अब वह सोचने लगा कि जब लोग उसे बिना नाक के देखेंगे तो कितना मजाक बनाएंगे। शर्मिंदगी और चिंता से बचने का उपाय सोचते-सोचते उसे एक चालाक योजना सूझी।

उसने गाँव के लोगों को इकट्ठा किया और बड़े रहस्यमय अंदाज़ में कहा, "मित्रों, मुझे स्वर्ग के दर्शन हुए हैं। लेकिन यह तभी संभव हुआ जब मेरी नाक कट गई। यह तो एक चमत्कार है! आप लोगों की आँखों के आगे नाक है इसलिए आप को स्वर्ग नहीं दीखता। जो कोई स्वर्ग देखना चाहता है, उसे अपनी नाक कटवानी होगी।"

गाँव के कुछ लोग उसकी बातों में आ गए। स्वर्ग देखने का लालच कौन छोड़ता? उन्होंने तुरंत अपनी नाक कटवा ली। लेकिन नाक कटवाने के बाद जब उन्हें स्वर्ग का कोई अता-पता नहीं मिला, तो वे उस नकटे व्यक्ति के पास शिकायत करने पहुँचे।

उसने हँसते हुए जवाब दिया, "अरे भाई, अब अगर तुम दूसरों से कहोगे कि तुम्हें स्वर्ग नहीं दिखा, तो लोग तुम्हारा मजाक बनाएंगे। अपनी इज्जत बचाने का एक ही तरीका है - सबसे कहो कि तुम्हें स्वर्ग दिखाई दिया। इससे बाकी लोग भी नाक कटवाएंगे, और इस तरह सब बराबर हो जाएंगे।"

धीरे-धीरे पूरा गाँव नकटों का गाँव बन गया। कोई किसी का मजाक नहीं उड़ाता, क्योंकि सब एक जैसे हो गए थे।

इस तरह, यदि कोई धूर्त व्यक्ति अपने नुकसान की भरपाई दूसरों को धोखा देकर करता है, तो इस पर कहा जाता है, "एक नकटा, सौ को नकटा करे।"

: 83 : एक से दो भले

एक गाँव में एक गरीब लड़का था, जो अपनी माँ के साथ रहता था। परिवार की हालत ठीक नहीं थी, इसलिए एक दिन उसने फैसला किया कि वह परदेस जाकर

मेहनत-मजदूरी करेगा।

जब वह जाने को तैयार हुआ, तो उसकी माँ ने चिंता से कहा, "बेटा, अकेले जाना ठीक नहीं। रास्ता लंबा है और खतरे भरा भी। किसी को साथ ले लो, एक के बजाय दो भले।" लड़के ने उदासी से जवाब दिया, "माँ, मेरे साथ कौन जाएगा? यहाँ तो सबको अपने काम हैं।"

माँ कुछ देर सोचती रही और फिर अपने पालतू नेवले को पास बुलाया। उसने नेवले को पिटारी में रखा और कहा, "यह तुम्हारे साथ जाएगा।" लड़के को माँ की बात समझ नहीं आई, लेकिन फिर भी उसने पिटारी ले ली और परदेस के रास्ते निकल पड़ा। रास्ता लंबा और थकान भरा था। चलते-चलते वह एक बड़े वृक्ष के नीचे रुका। छांव देखकर उसने वहीं आराम करने का सोचा और वहीं सो गया।

लेकिन उस पेड़ के नीचे एक सांप की बांबी थी। सांप ने सोते हुए लड़के को देखा और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा। तभी नेवला पिटारी से बाहर निकल आया। उसने सांप को आते देखा और तुरंत उस पर झपट पड़ा। दोनों के बीच भीषण लड़ाई हुई। आखिरकार, नेवले ने सांप को मार डाला। जब लड़का नींद से जागा, तो उसने देखा कि नेवले के मुँह और पंजों पर सांप का खून लगा था और सांप मरा हुआ पड़ा था। उसे सारी बात समझ में आ गई। इस तरह, माँ की सीख ने उसकी जान बचाई, और यह कहावत सच साबित हुई।

: 84 : एक ही साड़ी में नौ रे नौ, कहे सुने न मनियो रीस, तोहे लगा के पूरे बीस

एक समय की बात है, एक आदमी था जो बहुत ही धूर्त और शातिर था। उसके पास एक बेहद कीमती साड़ी थी। उसको वह भोली भाली स्त्रियों को फंसाने के लिए प्रयोग करता था। जब उसे कोई नई स्त्री मिलती, तो वह उस साड़ी को बड़े शान से दिखाता और अपने अमीर व प्रतिष्ठित होने का झूठा प्रदर्शन करता। उसकी बातों और दिखावे में आकर, स्त्रियां उससे शादी करने को राजी हो जातीं। लेकिन कुछ समय बाद, वह उन्हें छोड़कर नई "शिकार" की तलाश में निकल पड़ता।

इस तरह उसने अपनी चालाकी से एक के बाद एक नौ शादियां कर डालीं। जब उसने अपनी नौवीं शादी की, तो वह अपने हुनर पर बहुत खुश था। वह मुस्कुराते हुए गुनगुनाने लगा, "एक ही साड़ी में नौ रे नौ।" उसकी नई पत्नी, जो चालाक और तेज़ थी, तुरंत उसके झूठ और इरादों को समझ गई।

वह मुस्कुराई और मज़ाकिया लहजे में बोली, "बुरा मत मानना, पर यह मत सोचो कि तुम ही सबसे बड़े होशियार हो। सच तो यह है कि तुम मेरे बीसवें पति हो!" यह सुनते ही वह आदमी सन्न रह गया। उसकी सारी चालाकी हवा हो गई। जब दो

धूर्त लोग आपस में मिलते हैं और एक-दूसरे से बाजी मारने की कोशिश करते हैं तो यह कहावत कही जाती है।

: 85 : ऐसो बनिज साहु न करै, दानो खिलाय लीद घर भरै

एक गाँव में एक व्यक्ति था, जिसने गाँव के बनिये से काफी धन उधार लिया था। जब कर्ज चुकाने का समय आया, तो वह व्यक्ति मुश्किल में पड़ गया, क्योंकि उसके पास पैसे तो थे नहीं। आखिरकार वह बनिये के पास गया और बोला, "भाई साहब, मेरे पास इस वक्त तुम्हारे पैसे चुकाने का कोई इंतजाम नहीं है। लेकिन मेरी घोड़ी ले लो। यह मजबूत है और तुम्हारे काम आएगी।"

बनिया अपनी जगह से हँसते हुए बोला, "भाई, मैं घोड़ी लेकर क्या करूँगा? मुझे इसे पालने के लिए दाने-चारे पर खर्च करना पड़ेगा, और बदले में मुझे मिलेगा क्या? बस लीद! ऐसा व्यापार तो कोई समझदार बनिया नहीं करेगा। मुझे मेरे रुपये ही दो, किसी और चीज में मेरा फायदा नहीं।"

कहावत का अर्थ है कि बनिया हर काम तौल कर करता है। वह ऐसा व्यापार नहीं करता कि जिससे लाभ के बजाय हानि हो।

: 86 : औसत मेरा ज्यों का त्यों, कुनबा मेरा डूबा क्यों

एक बार की बात है, एक गणित के शिक्षक अपने परिवार के साथ यात्रा पर निकले। रास्ते में उन्हें एक छोटी नदी पार करनी थी। नदी का बहाव तेज़ नहीं था, लेकिन पानी की गहराई देख कर उनकी पत्नी घबरा गईं। उन्होंने कहा, "सुनिए, यह नदी गहरी लग रही है। कहीं हम डूब न जाएं।"

शिक्षक महोदय ठहरे गणितज्ञ। उन्होंने तुरंत अपना फीता निकाला और नदी की गहराई मापनी शुरू कर दी। फीता दिखा रहा था कि नदी की गहराई चार फुट है। फिर उन्होंने अपनी लम्बाई और परिवार के सभी सदस्यों - पत्नी और बच्चों - की लम्बाई नापी।

उन्होंने अपनी लम्बाई 5 फुट 8 इंच, पत्नी की लम्बाई 5 फुट 2 इंच और बच्चों की औसत लम्बाई 3 फुट 6 इंच लिखी। उन्होंने तेजी से जोड़-घटाकर औसत निकाला और खुशी-खुशी ऐलान किया, "औसत लम्बाई साढ़े चार फुट है! यानी हम सब आराम से इस नदी को पार कर सकते हैं। कोई चिंता की बात नहीं।"

परिवार को उनके हिसाब पर पूरा भरोसा था, तो सभी नदी में उतर गए। लेकिन जैसे ही उन्होंने पानी में कदम रखा, पत्नी और बच्चे चीखने लगे। वे डूबने लगे थे! किनारे पर मौजूद लोगों ने यह देखा और तुरंत दौड़कर उन्हें बचा लिया।

शिक्षक महोदय और उनका परिवार किसी तरह सुरक्षित किनारे पहुंचा। लेकिन

शिक्षक परेशान थे। उन्होंने फीता और कागज निकाल कर दुबारा हिसाब लगाया। औसत फिर वही निकला - साढ़े चार फुट।

हैरान होकर उन्होंने सिर खुजलाया और गहरी सांस लेते हुए कहा, "औसत तो मेरा ज्यों का त्यों है, फिर मेरा कुनबा डूबा क्यों?"

इस घटना को देख लोग हँसी रोक न सके। कोई व्यक्ति केवल किताबों के ज्ञान पर निर्भर रहे और व्यावहारिक बुद्धि का इस्तेमाल न करे तो उसका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 87 : औसर चूकी डोमनी, गावे ताल बेताल

डोमनियां डोम जाति की स्त्रियां होती हैं, जो शादी-ब्याह में लोगों के घर जाकर गाती-बजाती हैं और उसके लिए इनाम पाती हैं। डोमनियां अक्सर बिन बुलाए ही पहुँच जाती हैं और कोई इनाम न दे तो झगड़ा भी करती हैं।

गाँव में एक शादी का समारोह पूरे जोर पर था। बारात दरवाजे पर आ चुकी थी, ढोल-नगाड़े बज रहे थे, और हर कोई उत्साह से झूम रहा था। लोग उम्मीद कर रहे थे कि डोमनियां भी जरूर आएँगी। लेकिन इस बार डोमनियों की टोली तय समय पर नहीं पहुँची। बारातियों का स्वागत हो गया, दुल्हन की विदाई भी हो गई, और शादी

का जश्न लगभग खत्म हो गया। तभी, देर रात को डोमनियों का दल शादी के घर पहुँचा।

गृहस्वामी ने कहा, "अब आकर क्या करोगी? शादी की सारी रस्में तो खत्म हो चुकी हैं। तुम्हारे गाने-बजाने का समय भी चला गया। अब तुम्हें इनाम कैसे दें?"

यह सुनकर डोमनियां भड़क गईं। उन्होंने वहां बेसुरे और अजीबोगरीब गाने गाने शुरू कर दिए। उनकी भौंडी आवाज़ और बेतुके गाने सुन कर लोग परेशान हो गए।

यह कहावत उन पर सटीक बैठती है जो सही मौके पर अपना काम नहीं करते और बाद में अजीबोगरीब हरकतें करके अपनी गलती छिपाने की कोशिश करते हैं।

: 88 : कंजूस मक्खीचूस

एक कंजूस आदमी एक बार घी लेने बाजार गया। उस जमाने में ज्यादा बर्तन वगैरह नहीं होते थे इसलिए एक पतीला अपने घर से ले गया। घी ले कर लौट रहा था तो अचानक एक मक्खी घी में गिर गई। कंजूस के तो होश उड़ गए। इतना सारा घी फेंक कैसे दे। उसने सोचा मक्खी निकाल कर फेंक देता हूँ। ऊँगली और अंगूठा लगा कर मक्खी को उठाया तो देखता है कि मक्खी में तो बहुत सारा घी लगा हुआ है। उसकी आत्मा कचोटने लगी। इतना सारा घी बेकार जा रहा है। उसने इधर उधर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा है। फिर उस मक्खी को चूस कर फेंक दिया। खिड़की में से एक आदमी ने यह दृश्य देखा तो वह खूब हँसा। उस ने यह किस्सा और लोगों को बताया तो लोगों ने उस आदमी का नाम कंजूस मक्खीचूस रख दिया।

इस कहावत का प्रयोग बहुत ही अधिक कंजूस व्यक्तियों का मजाक उड़ाने के लिए करते हैं।

: 89 : ककड़ी के चोर को फांसी नहीं दी जाती

एक राजा के दरबार में एक चोर को ककड़ी चुराते हुए पकड़ कर लाया गया। उस राज्य का कानून था कि चोरी छोटी हो या बड़ी, चोर को सूली पर चढ़ाया जाता था। लिहाजा राजा ने उसे सूली पर चढ़ाने का हुक्म दिया। चोर ने अनुनय भरे स्वर में कहा, "महाराज मुझसे एक बहुत छोटी सी भूल हुई है जिसके लिए मैं लज्जित हूं और क्षमा मांगता हूं। कृपा करके इसके लिए मुझे इतनी बड़ी सजा न दें।"

राजा ने कड़क कर कहा, "चोरी तो चोरी है हीरे की हो या खीरे की, उसके लिए सजा एक ही है।"

चोर ने कहा, "ठीक है महाराज, आप मुझे सूली पर चढ़ा दें, पर मरने से पहले मैं एक राज बताना चाहता हूँ जिससे राज्य को बहुत फायदा हो सकता है।"

राजा ने पूछा, "वह क्या?" चोर बोला - महाराज मुझे एक विद्या आती है जिसके द्वारा सोने की खेती की जा सकती है।" चोर की बात सुनकर सारे दरबारी आश्चर्य में पड़ गए लेकिन महामंत्री गुस्से से बोले, "महाराज यह झूठ बोल रहा है। अगर इसको सोने की खेती करना आती होती तो यह छोटी मोटी चोरियां क्यों करता।"

चोर बोला, "अन्नदाता! मैं छोटा मोटा आदमी ठहरा, मेरे पास कोई जमीन नहीं, न ही इतने पैसे कि मैं सोने के बीच खरीद सकूं, और जब खेत में सोना उगेगा तो

उसकी रखवाली करने के लिए भी तो सेना चाहिए। मेरे पास यह सब कहां।"

राजा बोला, "ठीक है तुम्हें एक मौका देते हैं।" चोर को सख्त पहरे में एक कारागार में रखा गया और उससे सोने की खेती का प्रबंध करने को कहा गया।

चोर ने कहा, “महाराज शुरू में हम केवल एक बीघा जमीन में खेती करेंगे। इसके लिए गेहूं की तरह के बने हुए एक किलो सोने के बीच चाहिए और विषैले सांपों से बनी हुई खाद। इतना इंतजाम होने के बाद कुछ विशेष मंत्रों के साथ बुवाई की जाएगी।“

निश्चित दिन राजपुरोहित एवं नगर के कुछ विद्वान ब्राह्मण बुलाए गए और सोने की बुवाई की तैयारी शुरू हुई। सभी लोगों के मन में इस सारे आयोजन को लेकर बड़ा कौतूहल था।

सबके आ जाने के बाद चोर बोला, “महाराज मैं एक बात तो बताना भूल ही गया। बुवाई की एक शर्त है। बुवाई केवल वही कर सकता है जिसने अपने जीवन में कभी कोई छोटी से छोटी चोरी भी न की हो। पहले मंत्र बोले जाएंगे, उसके बाद बुवाई करने वाले को ईश्वर की सौगंध खाकर पहले यह कहना होगा कि उसने बचपन से लेकर अभी तक कोई छोटी से छोटी चोरी भी नहीं की है। मंत्र बोलने के बाद यदि कोई झूठी सौगंध खाएगा तो तुरंत उसकी मृत्यु हो जाएगी। महाराज मेरी प्रार्थना है कि आप से अधिक उपयुक्त इस कार्य के लिए कौन होगा। आपने तो कभी कोई चोरी नहीं की होगी।“

यह बात सुनकर राजा पशोपेश में पड़ गया। अपने दिमाग पर काफी जोर देकर बोला, “मैंने बचपन में अपने पिता महाराज के शाही पानदान से एक पान चुराकर खाया था क्योंकि पिता महाराज बच्चों के पान खाने के सख्त खिलाफ थे।“ चोर महामंत्री की ओर मुड़ा और बोला, “महामंत्री जी आप?” मंत्री बोले, “मैंने भी बचपन में अपने पिताजी की जेब में से एक पैसे का सिक्का चुराया था।“

अब चोर ने राजपुरोहित की ओर मुड़ कर उनसे कहा, “आप तो स्वयं धर्म की मूर्ति हैं। आप ही यह कार्य करें।“ उसकी बात सुनकर राजपुरोहित पसीना पसीना हो गए और बोले, “मैं भी यह कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने बचपन में एक बार अपनी माता जी के प्रसाद के लड्डुओं में से एक लड्डू चुरा कर खाया था।“

चोर ने फिर सभी दरबारियों की ओर मुड़ कर कहा, “आप सब महानुभावों में से कोई तो ऐसा होगा जिसने बचपन से लेकर अभी तक कोई चोरी न की हो। आप में से कोई आगे आइए।“ सभी दरबारी बगले झांकने लगे। कोई आगे नहीं आया।

चोर अब राजा की ओर मुड़ा और बोला - महाराज जब सभी लोगों ने कभी न कभी कोई छोटी मोटी चोरी की है तो सजा अकेले मुझको ही क्यों मिल रही है।

उसकी यह बात सुनकर राजा लज्जा से पानी पानी हो गया। उसने चोर को कुछ धनराशि देकर कहा कि अब वह चोरी करना छोड़ दे और इस धनराशि से अपना कोई व्यापार करे। इस के साथ ही राजा ने छोटी सी चोरी पर भी सूली पर चढ़ाने वाला कानून भी समाप्त कर दिया।

: 90 : कमरिया छोड़े तब तो हम छोड़ें

एक बार की बात है, एक साधु अपने शिष्य के साथ यात्रा पर निकले। चलते-चलते उन्हें एक नदी पार करनी पड़ी। जैसे ही वे नदी के किनारे पहुँचे, साधु की नजर नदी में बहते एक कंबल पर पड़ी। वास्तव में वह नदी में डुबकी लगा कर तैर रहे एक भालू की पीठ थी, लेकिन साधु ने उसे एक बढ़िया ऊनी कंबल समझ लिया था।

साधु ने शिष्य से कहा, "देखो, नदी में कितना अच्छा कंबल बह रहा है। इसे लेकर आओ, यह सर्दी में हमारे काम आएगा।" शिष्य ने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए तुरंत नदी में छलांग लगा दी। शिष्य ने जैसे ही उस "कंबल" को पकड़ने की कोशिश की भालू ने झपटकर उसे अपनी मजबूत पकड़ में ले लिया। शिष्य भालू के चंगुल में फंस गया और उससे छूटने के लिए संघर्ष करने लगा।

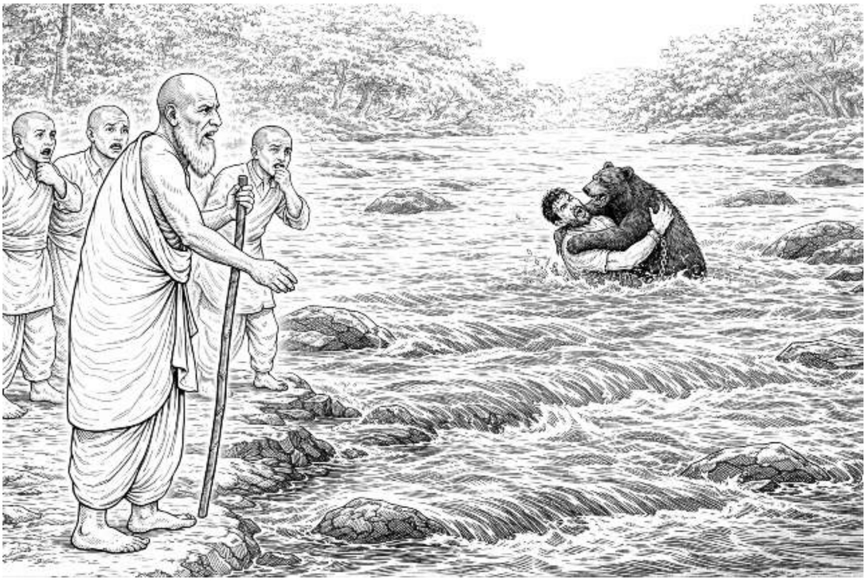

किनारे खड़े साधु ने देखा कि शिष्य काफी देर से वापस नहीं आ रहा है। उन्होंने आवाज लगाई, "अरे बेटा, इतनी देर क्यों कर रहे हो? अगर कंबल हाथ नहीं आ रहा तो उसे छोड़ दो और वापस आ जाओ।" शिष्य ने मुश्किल से चिल्लाकर जवाब दिया, "गुरुजी, मैंने तो कंबल छोड़ दिया है, लेकिन कंबल मुझे नहीं छोड़ रहा है!"

साधु यह सुनकर समझ गए कि मामला कुछ और है। उन्होंने जल्दी ही लोगों को बुलाया और सबने मिलकर शिष्य को भालू के चंगुल से छुड़ाया।

इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब कोई ऐसी स्थिति में फंसा हो, जिसे छोड़ना उसके बस में न हो।

: 91 : कर तो डर, न कर तो खुदा के गज़ब से डर

एक बार की बात है, दो फकीर एक गांव के बाहर कुटिया बनाकर रहते थे। दोनों शांतिप्रिय और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते थे, लेकिन उनकी विचारधाराएं अलग-अलग थीं। एक दिन चर्चा के दौरान पहले फकीर ने दूसरे से कहा, “कर तो डर, न कर तो भी डर।" दूसरे फकीर ने आश्चर्य से पूछा, "अगर मैं कुछ गलत करूं ही नहीं, तो डरने की क्या जरूरत?" पहले फकीर ने मुस्कुराते हुए कुछ नहीं कहा और चुपचाप अपनी राह चला गया।

कुछ दिनों बाद, उसी राज्य के महल में चोरी हो गई। लेकिन चोरों का एक अजीब नियम था। हर चोरी के बाद वे अपनी चोरी का एक हिस्सा किसी फकीर को भेंट कर दिया करते थे। इस बार उन्होंने चुराए गए गहनों में से एक सोने का हार चुना और आधी रात को उस फकीर की कुटिया में गए। चोरों ने वह सोने का हार उसके गले में डाल दिया और चुपचाप वहां से चले गए।

सुबह गांव वालों ने उसके गले में चमचमाते हार को देखा। यह बात तेजी से फैली, और राजा तक पहुंच गई। राजा के सैनिक आए और फकीर को पकड़कर महल ले गए।

फकीर ने लाख सफाई दी कि उसे हार के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन कोई उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ। आखिरकार, राजा ने उसे चोर मानकर फांसी की सजा सुना दी।

कहावत का अर्थ है कि बुरा काम करे या न करे, पर हर हालत में ईश्वर के कोप से तो डरना ही चाहिए। कोई व्यक्ति शक्ति पा कर उस का दुरूपयोग कर रहा हो और घमंड से चूर हो तो उसे नसीहत देने के लिए भी यह कहावत कही जाती है।

: 92 : करम में लिख्या कंकर तो के करै शिवशंकर

जंगल के किनारे एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया अपना जीवन बड़े ही कठिनाई से गुजारते थे। उनका काम था जंगल से लकड़ियाँ काटना और शहर ले जाकर बेच देना। उनकी उम्र ढल चुकी थी, पर काम के सिवा और कोई सहारा न था।

एक दिन, जैसे ही वे अपने लकड़ियों के गट्ठर को कंधे पर उठाए शहर की ओर चले, उसी रास्ते से भगवान शिव और माता पार्वती गुजर रहे थे। माता पार्वती ने उन बूढ़े दंपति की हालत देखी तो उनका हृदय भर आया। उन्होंने शिवजी से कहा, “स्वामी, देखिए, ये बेचारे कितनी कठिन ज़िंदगी जी रहे हैं। इन पर कृपा कीजिए और इन्हें कुछ धन दे दीजिए, ताकि इन्हें इस दुःख भरी जिंदगी से मुक्ति मिल सके।”

शिवजी ने मुस्कुराते हुए कहा, “देवी, इनकी दशा देखकर मुझे भी दुःख है, लेकिन इनके भाग्य में धन लिखा ही नहीं है। मैं कैसे इनके भाग्य को बदल सकता हूँ?” माता पार्वती ने निवेदन किया, “स्वामी, कृपा करिए। यदि भाग्य में धन नहीं है, तो आप भी तो भगवान हैं, आप इसे बदल सकते हैं।”

पार्वती के बार-बार आग्रह पर शिवजी ने कहा, “अच्छा, मैं कोशिश करता हूँ। "उन्होंने रुपयों से भरी एक थैली तैयार की और उसे उस रास्ते पर रख दिया, जहां से बूढ़ा और बूढ़िया गुजरने वाले थे। उधर बूढ़ा और बूढ़िया रास्ते में चलते-चलते सोचने लगे, “हम दोनों तो बूढ़े हो गए हैं। अगर कहीं अंधे भी हो जाएँ, तो क्या करेंगे? चलो, आज इसे अनुभव कर के देखते हैं।

यह सोचकर दोनों ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अंधों की तरह लाठी से रास्ता टटोलते हुए चलने लगे। तभी वे उस थैली के पास पहुँचे, जिसमें शिवजी ने रुपए रखे थे। लेकिन चूंकि उनकी आँखें बंद थीं, उन्होंने थैली देखी ही नहीं। लाठी से टटोलते हुए वे रुपयों की थैली को लांघकर आगे बढ़ गए।

शिवजी यह सब देख रहे थे। उन्होंने पार्वती से कहा, “देखा देवी, मैंने धन इनके रास्ते में रख दिया था, लेकिन इनके भाग्य में वह धन लिखा ही नहीं था। इसलिए यह थैली इनके काम नहीं आ सकी।" माता पार्वती ने भी यह सब देखकर स्वीकार कर लिया कि भाग्य के लिखे को कोई नहीं बदल सकता।

ईश्वर में आस्था रखने और परिश्रम करने के बाद भी किसी की बदहाली दूर न हो रही हो तो अपने आप को समझाने के लिए वह यह कहावत कहता है।

: 93 : करा तो लीं पर ढकेगा कौन

इसकी पूरी कहावत इस प्रकार है - फूहड़ के घर लगी किवाड़ी, सारे कुत्ते चले रिवाड़ी, काना कुत्ता तोडा मौन, करा तो लीं पर ढकेगा कौन?

किसी गाँव में एक फूहड़ स्त्री रहा करती थी। उसके घर की हालत बड़ी ही दयनीय थी। उसके घर के दरवाजे ही नहीं थे इससे कुत्तों को घर में बेरोक-टोक आने-जाने की पूरी छूट थी। जब चाहते, घर में घुस जाते और जो कुछ खाने लायक मिलता, उसे खाकर चलते बनते। फूहड़ स्त्री को इससे कोई खास परेशानी नहीं थी, लेकिन गाँव वाले इस दुर्दशा पर अक्सर हँसते थे।

कुछ समय बाद, उसका पति विदेश से लौटा। घर की यह हालत देखकर वह शर्मिंदा हुआ और उस ने ठान लिया कि वह इस समस्या का हल निकालेगा। उसने लकड़ी के मजबूत किवाड़ बनवाए और उन्हें घर के दरवाजे पर लगवा दिया।

अब कुत्तों में खलबली मच गई। गाँव के कुत्ते, जो उस घर को अपने सबसे प्रिय आश्रय स्थल के रूप में देखते थे, चिंता में पड़ गए। वे इकट्ठा हुए और बैठक करने लगे। एक नौजवान कुत्ते ने कहा, “यह अब सहन नहीं हो सकता। फूहड़ के घर में किवाड़ लग गए हैं। अब हम वहाँ कैसे घुसेंगे? हमें इस गाँव को छोड़कर कहीं और जाना होगा। मेरा सुझाव है कि हम रेवाड़ी चलें। वहाँ सुना है, हालात हमारे लिए बेहतर हैं।”

सभी कुत्ते उसकी बात पर सहमत हो गए। वे रेवाड़ी जाने के लिए चलने ही वाले थे कि बूढ़ा काना कुत्ता, जो काफी समझदार और अनुभवी था, बोला, “देखो भाई, यह सही है कि फूहड़ के घर पर किवाड़ लगा दिए गए हैं, लेकिन सोचो, क्या वह उन्हें बंद भी करेगी? उसका स्वभाव तो तुम जानते ही हो। किवाड़ भले ही लग गए हों, लेकिन वे सदा खुले ही पड़े रहेंगे। इसलिए इस गाँव को छोड़कर जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।” काने कुत्ते की बात सबको समझ आ गई। वे खुशी-खुशी वापस लौट आए।

फूहड़ और आलसी लोगों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 94 : कलियुग में झूठ ही फले

किसी शहर में एक मशहूर सेठ था। उसका एक मित्र बहुत गरीब था। मदद के लिए हाथ फैलाया तो सेठ ने उसे काम-धंधा शुरू करने के लिए दो हजार रुपये उधार दे दिए।

वक्त हमेशा एक-सा नहीं रहता। कुछ ही समय बाद सेठ का निधन हो गया। सेठ के जाने के साथ ही उस का कारोबार चौपट हुआ और हालत इतनी खराब हो गई कि उसकी पत्नी और बेटे को दो वक्त का खाना जुटाना भी मुश्किल हो गया। दूसरी ओर, सेठ का वही गरीब मित्र, जिसे उसने मदद दी थी, अवसर का लाभ उठा कर अमीरी की बुलंदियों पर पहुंच चुका था।

एक दिन, मजबूरी में सेठ की विधवा अपने इकलौते बेटे को साथ लेकर उस नये सेठ के पास गई। उसने कहा, "मेरे पति ने तुम्हें दो हजार रुपये उधार दिए थे। हमारी हालत अब बहुत खराब है। कृपया वे रुपये लौटा दो, ताकि हम अपना गुजारा कर सकें।"

नया सेठ यह सुनकर हंस पड़ा। उसने तिरस्कार भरे स्वर में कहा, "तुम्हारे पति ने मुझे पैसे उधार क्यों दिए होंगे? मेरे पास पहले से ही इतनी दौलत थी!" उसके आस-पास बैठे लोगों ने भी कहा, "अगर तुम्हारे पास कोई सबूत या लिखा-पढ़ी है, तो दिखाओ। वरना यहां आकर झूठे आरोप मत लगाओ।"

विधवा के पास कोई सबूत तो था नहीं। उसने विनम्रता से कहा, "मेरे पास कोई कागज नहीं है, लेकिन अगर मैं झूठ बोल रही हूं, तो मेरा यह इकलौता बेटा मर जाए!"

उसके यह शब्द बोलते ही उसका बेटा अचानक जमीन पर गिर पड़ा और दम तोड़ दिया। वहां बैठे सभी लोग सन्न रह गए। उन्होंने विधवा को झूठी करार देते हुए उसकी खूब निंदा की।

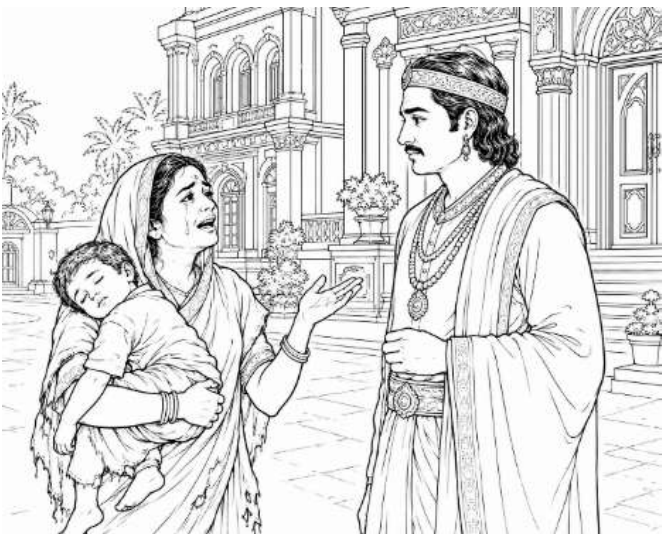

अपनी बदनसीबी पर आंसू बहाती हुई वह बेचारी सेठ की हवेली से बाहर निकली। रास्ते में उसकी मुलाकात एक

अनजान आदमी से हुई, जो पुरुष के वेश में 'कलियुग' था। विधवा ने अपनी आपबीती सुनाई तो कलियुग मुस्कुराया और बोला, "तुमने गलती की। यह सतयुग नहीं, कलियुग है। यहां सच बोलने से किसी को कुछ नहीं मिलता। यह झूठ का युग है। अगर झूठ बोलोगी, तो फल मिलेगा। अब मेरी बात मानो। वापस जाकर सेठ से कहो कि मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिए थे। मैंने गलती से दो हजार बताया था, और इसीलिए मेरा बेटा मर गया। अगर मेरे पति ने सच में बीस हजार रुपये दिए हों, तो मेरा बेटा जी उठेगा!"

विधवा ने कलियुग की बात मानी और साहस जुटाकर फिर से सेठ के पास पहुंची। उसने कहा, "मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिए थे। मेरी गलती थी कि मैंने पहले दो हजार बताया। इस गलती की वजह से मेरा बेटा मर गया। अगर मेरे पति ने तुम्हें वाकई बीस हजार रुपये दिए हों, तो मेरा बेटा फिर से जी उठेगा।"

इतना कहते ही चमत्कार हो गया। विधवा का बेटा सांस लेने लगा और उठकर खड़ा हो गया। यह देखकर वहां मौजूद लोग दंग रह गए। नया सेठ भी घबरा गया। डर के मारे उसने तुरंत बीस हजार रुपये निकालकर विधवा को दे दिए।

कहावत का अर्थ है कि कलियुग में सच बोलने से नहीं, झूठ बोलने से फल मिलता है। आज के समय में झूठे लोगों को मौज करते देख कर सच्चे लोग कुढ़ कर यह कहावत बोलते हैं।

: 95 : कहूँ तो माँ मार खाय, न कहूँ तो बाप कुत्ता खाय

एक छोटे से गाँव में एक साधारण परिवार रहता था। परिवार में पति, पत्नी, और उनका एक बेटा था। एक दिन पति ने पत्नी से बकरे का मांस पकाने के लिए कहा। पत्नी ने हामी भर ली लेकिन अनजाने में या शायद जानबूझ कर पत्नी ने बकरे के बदले कुत्ते का मांस पका दिया।

शाम हुई। पति काम से लौटा और भूख से बेहाल होकर खाने के लिए बैठा। बेटा भी पास ही खड़ा था। उसको किसी तरह से यह मालूम पड़ गया था कि उसकी माँ ने जो मांस पकाया है, वह बकरे का नहीं, कुत्ते का है!

अब बेटे के मन में भारी उथल-पुथल शुरू हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। "अगर मैं बाप को बता दूँ कि यह कुत्ते का मांस है, तो बाप माँ को पीटेगा। माँ के लिए यह बहुत बड़ी मुसीबत हो जाएगी। और अगर मैं नहीं बताऊँ, तो बाप कुत्ता खा लेगा और उसका पाप लगेगा।"

यह सोचकर कि माँ को मार खाने से बचाना जरूरी है, बेटे ने चुप रह जाना ही ठीक समझा। लेकिन अंदर ही अंदर वह इस दुविधा में परेशान रहा। यह कहावत उन स्थितियों के लिए कही जाती है, जब कोई व्यक्ति किसी उलझन में ऐसा फँस जाए कि कुछ भी कहने या करने का परिणाम बुरा ही हो।

: 96 : काग पढ़ायो पींजरो, पढ़ गया चारों वेद, समझायो समझे नहीं, रह्यो ढेढ़ को ढेढ़

यह कहानी एक महात्मा जी की है, जो अपनी विद्या और ज्ञान पर बड़ा गर्व करते थे। वे कहते थे कि उनकी विद्या से कुछ भी संभव है। उनका दावा था कि वह किसी को भी चारों वेद पढ़ा सकते हैं और उसे ज्ञानी बना सकते हैं, चाहे वह कितना भी अज्ञानी क्यों न हो।

एक दिन महात्मा जी को अपने ज्ञान की परीक्षा लेने का विचार आया। उन्होंने सोचा, "अगर मैं किसी जानवर को वेद पढ़ा दूँ, तो मेरी विद्या की ख्याति चारों ओर फैल जाएगी।"

महात्मा जी ने एक कौवे को पकड़ा और उसे पिंजरे में बंद कर दिया। अब उन्होंने अपनी विद्या के बल पर कौवे को चारों वेद पढ़ाना शुरू किया। कुछ समय बाद उन्हें लगा कि कौवा अब वेदों का ज्ञाता बन गया है। आखिरकार, बड़े गर्व से उन्होंने घोषणा की, "यह कौवा अब चारों वेद पढ़ चुका है। अब यह पूरी तरह ज्ञानी बन चुका है।"

महात्मा जी ने कौवे का पिंजरा खोला और बड़े उत्साह से कहा, "जा, अब तू ज्ञानी बनकर उड़ जा। अपनी बुद्धिमानी का परिचय दे।"

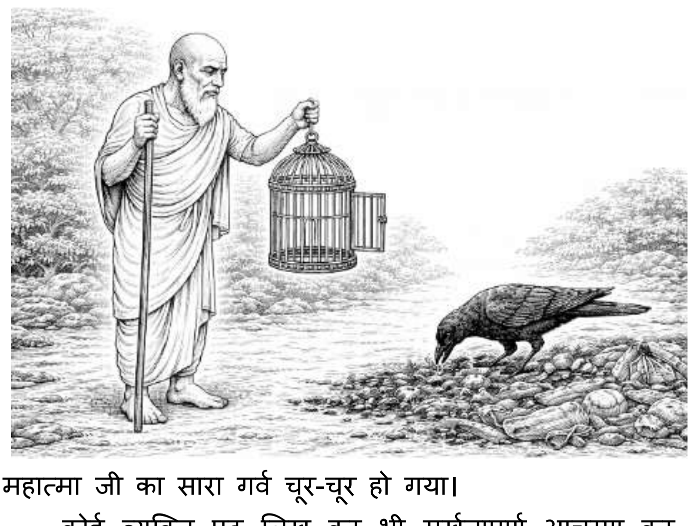

लेकिन जैसे ही पिंजरे का दरवाजा खुला, कौवा वेदों का ज्ञान भूलकर सीधे जाकर विष्टा खाने लगा। यह देखकर महात्मा जी का सारा गर्व चूर-चूर हो गया।

कोई व्यक्ति पढ़ लिख कर भी मूर्खतापूर्ण आचरण कर रहा हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 97 : काज़ी जी दुबले क्यों? शहर के अंदेशे से

एक नगर के काज़ी साहब दिन-प्रतिदिन दुबले होते जा रहे थे। उनका शरीर कमजोर पड़ता जा रहा था, जबकि उनके पास किसी प्रकार की कमी नहीं थी। एक

दिन किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा, “आप तो संपन्न और सुखी जीवन जी रहे हैं, फिर भी इतने दुर्बल क्यों होते जा रहे हैं?”

काज़ी साहब ने गहरी साँस लेते हुए उत्तर दिया, “क्या बताऊँ, मुझे पूरे नगर की चिंता सताती रहती है। कौन क्या कर रहा है, किसके साथ क्या होगा–इन सब बातों की फिक्र मुझे चैन से रहने नहीं देती।”

कहावत का अर्थ है दूसरों की अत्यधिक चिंता करते-करते स्वयं को कष्ट देना ठीक नहीं है। इसका एक अर्थ यह भी है कि महत्वपूर्ण पदों पर बैठे व्यक्ति भी बहुत मानसिक तनाव में रहते हैं।

: 98 : काटना छोड़ दिया तो फुंकारते तो जाओ
(काटबो छोड़ दओ तो फुंकारत तौ जाओ)

एक घने जंगल में एक विशाल और विषैला सर्प रहता था। उसके डर से न तो कोई उस रास्ते से गुजरता, न ही आसपास के खेतों में काम करने जाता। उसका फुफकारना और डस लेना ही उसकी पहचान थी।

एक दिन, जंगल में एक साधु बाबा आए। वे शांत स्वभाव के थे और लोगों को अहिंसा का संदेश देते थे। सर्प ने साधु बाबा को देखा और उनके पास आकर बोला, "हे बाबा, मैं आपकी शिक्षा सुनना चाहता हूँ। लोग मुझसे डरते हैं और मुझे पापी मानते हैं। मैं इस स्थिति से बाहर निकलना चाहता हूँ।" साधु ने सर्प को उपदेश दिया, "डसने का काम छोड़ दो। किसी को नुकसान मत पहुँचाओ। यही सच्चा धर्म है।"

सर्प ने बाबा की बात मान ली। उसने प्रण किया कि अब वह किसी को नहीं डसेगा। कुछ समय बाद, गाँववालों को यह समझ में आ गया कि अब सर्प ने काटना बंद कर दिया है। अब वे बिना डर के उसके पास आने लगे। धीरे-धीरे लोग उसे तंग करने लगे। बच्चे उसे पत्थर मारते, बड़े उसकी पूंछ खींचते, और उसे परेशान करने का कोई मौका नहीं छोड़ते।

सर्प बेबस हो गया। वह हर दिन चोट खाता

और चुपचाप सहता रहा। आखिरकार, एक दिन वह बुरी हालत में, अपने गुरू साधु बाबा के पास पहुँचा। साधु बाबा ने उसका हाल देखा और पूछा, "यह क्या हाल बना रखा है?" सर्प ने दुखी होकर कहा, "बाबा, मैंने आपकी बात मानी और डसना बंद कर दिया। अब लोग मुझे परेशान करते हैं, पत्थर मारते हैं, और मेरी जान के पीछे पड़े रहते हैं।"

यह सुनकर साधु बाबा मुस्कुराए और बोले, "भाई, मैंने तुझे काटने से मना किया था, पर डर बनाए रखने के लिए फुफकारने से तो नहीं रोका था। तुझे थोड़ा-बहुत फुफकारना चाहिए, ताकि लोग तुझसे डरें और तुझे तंग न करें। इस दुनिया में डर बनाए बिना काम नहीं चलता।"

सर्प ने बाबा की बात समझ ली। अगले दिन से वह डसता तो नहीं था, लेकिन जब कोई उसे तंग करने की कोशिश करता, तो जोर से फुफकारता। उसकी फुफकार सुनते ही लोग फिर से उससे डरने लगे और उसे परेशान करना बंद कर दिया।

कहावत का अर्थ है कि दुनिया में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए थोड़ी कड़ी प्रतिक्रिया दिखाना जरूरी है।

: 99 : काली भली न सेत, दोनहूँ मारो एकहि खेत

एक बड़े राज्य का राजा था, जिसके दो रानियाँ थीं। राजा को अपने राजमहल और रानियों पर बड़ा गर्व था, लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि दोनों रानियाँ जादूगरनी थीं। वे दोनों अपनी शक्तियों से राजा को वश में करना चाहती थीं और आपस में ईर्ष्या करती थीं।

एक दिन दोनों रानियों के बीच झगड़ा इतना बढ़ गया कि वे अपनी असली शक्लें छोड़कर अपने जादुई रूप में आ गईं। एक ने काली चिड़िया का रूप धारण कर लिया, दूसरी सफ़ेद चिड़िया बन गई। दोनों चिड़ियाँ आकाश में उड़कर आपस में भयंकर लड़ाई करने लगीं।

राजा यह दृश्य देखकर हैरान रह गया। उसने अपने मंत्री को बुलाकर पूछा, "इन चिड़ियों की लड़ाई से राज्य में अशांति फैल रही है। इनमें से किसे मार डालूँ? काली को या सफ़ेद को?"

मंत्री बहुत बुद्धिमान था। उसने राजा से कहा, "महाराज, ये दोनों जादूगरनी हैं और खतरनाक हैं। इनमें से कोई भी आपके लिए सुरक्षित नहीं है। यदि आप केवल एक को मारेंगे तो दूसरी और ज्यादा शक्तिशाली होकर आपके लिए खतरा बन जाएगी। इसलिए मेरी सलाह है कि काली और सफ़ेद दोनों को एक साथ मार दीजिए। जब तक ये दोनों जिंदा हैं, राज्य में शांति संभव नहीं।"

राजा ने मंत्री की बात मानी। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे दोनों चिड़ियों को एक साथ घेरकर मार डालें। कभी-कभी इस कहानी में चार रानियों का उल्लेख भी किया जाता है, और तब यह कहावत होती है: "काली भली न कबरी, भूरी भली न सेत, चारों मारो एकहि खेत।"

कहावत का अर्थ है कि जब दोनों ही विकल्प खतरनाक हों तो दोनों से ही छुटकारा पा लेना चाहिए।

: 100 : काशी दुर्लभ ज्ञान पुंज, विश्वनाथ को धाम, मुअले पे गंगा मिले जीते लंगड़ा आम

यह कहानी है ज्ञान, धर्म और परंपराओं की भूमि काशी की। यहाँ के घाट, और यहाँ का बाबा विश्वनाथ मंदिर हमेशा से अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। लेकिन बनारस की एक और चीज है जो इसे और खास बनाती है–लंगड़ा आम। पुराने लोग लंगड़े आम को लंगड़ा बनारसी बोलते थे।

कहते हैं, कई सौ साल पहले, काशी में एक आम का पेड़ था, जिसके फल इतने मीठे थे कि उसकी चर्चा दूर-दूर तक थी। उस पेड़ का मालिक एक लंगड़ा साधु था। इसलिए इस अनोखे आम का नाम "लंगड़ा" पड़ गया।

रानी अहिल्याबाई होल्कर ने बाबा विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया था और तब से उन्होंने कई धार्मिक परंपराएँ शुरू कीं। उन्हीं में से एक थी–सावन कृष्ण पक्ष एकादशी के दिन बाबा विश्वनाथ को 551 लंगड़ा आमों का भोग लगाना। आज भी यह परंपरा पूरी श्रद्धा से निभाई जाती है।

इस कहावत का मतलब है कि काशी सिर्फ मरने पर मोक्ष का स्थान नहीं है, बल्कि यहाँ जीते जी भी जीवन का असली स्वाद मिलता है।

: 101 : किसान चाहे वर्षा, कुम्हार चाहे सूखा

एक महात्मा जी बड़े विद्वान और संत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनके दो बेटियाँ थीं–एक का विवाह एक किसान से हुआ था और दूसरी का एक कुम्हार के घर। दोनों अपने-अपने परिवारों के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही थीं।

एक दिन महात्मा जी ने सोचा, "चलो, अपनी बेटियों से भेंट कर आता हूँ।"

सबसे पहले वे अपनी बड़ी बेटी के घर पहुँचे। बेटी और किसान समधी ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया, लेकिन उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिख रही थीं। महात्मा जी के पूछने पर बेटी ने दुखी स्वर में कहा, "पिताजी, बहुत दिनों से बारिश नहीं हुई है। खेत सूख रहे हैं, फसलें बर्बाद होने की कगार पर हैं। आप कृपा करके भगवान से प्रार्थना कीजिए कि जल्दी ही वर्षा हो जाए, ताकि हमारी फसल बच सके।" महात्मा जी ने सिर हिलाया और मन ही मन वर्षा के लिए प्रार्थना करने लगे।

फिर वे अपनी दूसरी बेटी से मिलने चल पड़े। जब वे वहाँ पहुँचे, तो देखा कि आंगन में चारों ओर मिट्टी के बर्तन और घड़े सूख रहे थे। उनकी छोटी बेटी और दामाद बेहद खुश दिख रहे थे। बेटी दौड़ती हुई आई और बोली, "पिताजी, कितने अच्छे दिन चल रहे हैं! धूप तेज है, बारिश का कोई नाम-ओ-निशान नहीं। हमारे सभी मिट्टी के बर्तन अच्छी तरह सूख रहे हैं और बाजार में धड़ाधड़ बिक रहे हैं। बस आप भगवान से प्रार्थना कीजिए कि अभी एक-आध महीने और बारिश न हो, ताकि हमारा काम यूँ ही चलता रहे।"

कहावत का अर्थ है कि संसार में हर व्यक्ति केवल अपना ही हित चाहता है।

: 102 : किस्मत हर जगह साथ जाती है

किसी गांव में एक आदमी रहता था। उसे लगता था कि दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता। जो भी काम करता, उसमें बाधा आ जाती। धीरे-धीरे वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि शायद उसका गांव ही अशुभ है।

एक दिन उसने निश्चय किया कि वह गांव छोड़कर कहीं और जाकर बसेगा, ताकि उसकी किस्मत बदल सके। उसने अपने जूते पहने, लाठी उठाई और सिर पर गठरी रखकर नए गांव की ओर चल पड़ा।

जैसे ही वह गांव की सीमा से बाहर निकला, उसने देखा कि एक स्त्री सामने खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने आश्चर्य से पूछा, “तुम कौन हो और क्या चाहती हो?” स्त्री मुस्कुराकर बोली, “मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूँ।” वह और चकित हुआ, “मेरे साथ क्यों? आखिर तुम हो कौन?”

स्त्री ने शांत स्वर में उत्तर दिया, “मैं तुम्हारी किस्मत हूँ।” यह सुनकर वह ठिठक गया। कुछ क्षण सोचकर बोला, “जब तुम मेरे साथ ही जा रही हो, तो फिर गांव बदलने से क्या लाभ?” वह अपनी भूल समझ गया और वापस अपने घर लौट आया।

:103 : कुआँ बेचा है कुएं का पानी नहीं बेचा।

एक बनिया अपने घर के पास एक कुआँ खरीदना चाहता था। गाँव के ठाकुर के पास एक पुराना कुआँ था, जिसे बेचने के लिए वह तैयार हो गया। सौदा हो गया, दाम दे दिए गए और बनिया अपने नए कुएँ का मालिक बन गया।

अगले ही दिन, जब बनिया कुएँ से पानी निकालने पहुँचा, तो ठाकुर वहाँ आ धमका और अकड़कर बोला, "अरे बनिए! कुएँ से पानी क्यों निकाल रहे हो?" बनिया चौंक गया, "क्यों ठाकुर साहब? मैंने कुआँ खरीदा है, अब यह मेरा है।"

ठाकुर हँसते हुए बोला, "हाँ, कुआँ तो बेच दिया, पर उसमें भरा पानी नहीं बेचा! अगर तुम्हें पानी चाहिए, तो इसके लिए अलग से पैसा देना होगा।" बनिया यह सुनकर दंग रह गया। उसने बहुत समझाने की कोशिश की, पर ठाकुर टस से मस नहीं हुआ। आखिर में मामला गाँव की पंचायत में पहुँचा।

गाँव के सरपंच ने जब पूरी बात सुनी, तो उन्हें ठाकुर की चालाकी समझ में आ गई। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "ठाकुर साहब, अगर कुआँ बनिए का है और पानी आपका, तो आपको अपना पानी कुएँ में रखने का किराया बनिए को देना होगा। रोज़ के सौ रुपये।"

यह सुनते ही ठाकुर की बोलती बंद हो गई। वह समझ गया कि उसकी चालाकी उसी पर भारी पड़ गई है। वह शर्मिंदा होकर वहाँ से चला गया। कोई माल बेचने के बाद बेइमानी करे तो यह कहावत कही जाती है।

: 104 : कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना

एक गाँव में एक पिता और उसका बेटा रहते थे। उनके पास एक गधा था, जिसे वे बड़े प्यार से पालते थे। एक दिन वे किसी दूसरे गाँव जाने के लिए निकले। पिता और बेटा गधे की रस्सी पकड़कर पैदल चल रहे थे, और गधा मजे से टहलता हुआ जा रहा था।

रास्ते में कुछ लोग खड़े थे, जिन्होंने उन्हें देखकर हँसते हुए कहा, "कैसे मूर्ख लोग हैं! गधा होते हुए भी पैदल चल रहे हैं। भला, गधे को खाली ले जाने का क्या मतलब?" पिता ने यह सुना और बेटे से कहा, "बेटा, लोग ठीक ही कह रहे हैं। तुम गधे पर बैठ जाओ।" बेटा गधे पर बैठ गया और दोनों आगे बढ़ने लगे।

कुछ दूर चलने के बाद रास्ते में बैठे कुछ और लोगों ने उन्हें देखा और ताना मारा, "देखो, कैसा स्वार्थी बेटा है! खुद गधे पर सवार है और बेचारा बूढ़ा बाप पैदल चल रहा है। बेटे को शर्म आ गई। वह तुरंत गधे से उतर गया और बोला, "पिताजी, अब आप बैठ जाइए।" पिता गधे पर सवार हो गए और आगे बढ़ने लगे।

थोड़ी ही दूर गए थे कि कुछ और लोगों ने देख लिया और बोल पड़े, "कैसा जालिम बाप है! खुद मजे से गधे पर बैठा है और बेचारा लड़का पैदल चल रहा है।" पिता-पुत्र दोनों ने एक-दूसरे को देखा और बोले, "लगता है, हमें दोनों को ही बैठ जाना चाहिए!" अब दोनों गधे पर सवार हो गए और फिर से चलने लगे।

पर अब की बार कुछ और लोगों ने देखा और बोल उठे, "क्या जमाना आ गया है! दो हट्टे-कट्टे आदमी बेचारे गधे पर बैठ गए हैं। इस तरह तो गधा बेचारा मर ही

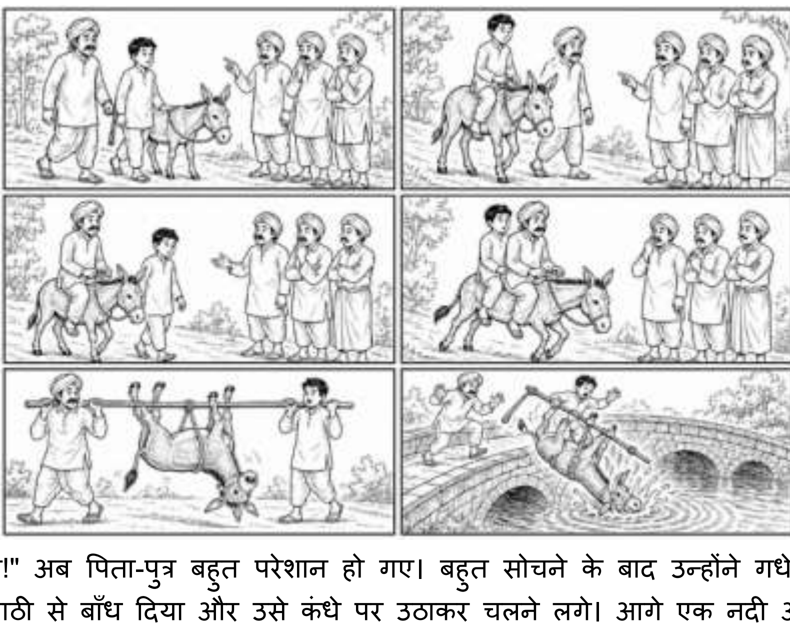

जाएगा!" अब पिता-पुत्र बहुत परेशान हो गए। बहुत सोचने के बाद उन्होंने गधे को एक लाठी से बाँध दिया और उसे कंधे पर उठाकर चलने लगे। आगे एक नदी आई। जैसे ही वे पुल पर पहुँचे, गधा अचानक जोर से उछला, उनकी पकड़ से छूट गया और सीधा नदी में जा गिरा।

कहावत का अर्थ है कि लोगों की बातें कभी खत्म नहीं होतीं। इसलिए, दूसरों की फालतू बातों पर ध्यान देने की बजाय, वही करना चाहिए जो सही हो।

: 105 : कुब्जा को कहा दोष, सखि अपनो श्याम खोटो

कहा जाता है कि जब श्रीकृष्ण और बलराम, कंस के आमंत्रण पर मथुरा पहुँचे, तो वहाँ पहुँचते ही उन्होंने अपने पराक्रम और चमत्कारों से सबको मोहित कर दिया। उनके कार्यों की चर्चा मथुरा की गलियों में और आस पास के गाँवों में फैलने लगी।

मथुरा में एक कुबड़ी स्त्री रहती थी, जिसे उसके कूबड़ के कारण 'कुब्जा' कहा जाता था। श्रीकृष्ण ने करुणा से प्रेरित होकर उसका स्पर्श किया, जिससे उसका कूबड़ दूर हो गया और वह अत्यंत सुंदर स्त्री में परिवर्तित हो गई।

यह समाचार वृंदावन तक पहुँचा। वहाँ की गोपियाँ यह सुनकर चिंतित और ईर्ष्यालु हो उठीं। उन्हें लगा कि कहीं ऐसा न हो कि श्रीकृष्ण मथुरा में सुंदर स्त्रियों के साथ रास रचाने लगें और उन्हें भूल जाएँ।

कहावत के द्वारा स्त्रियों की संकुचित और ईर्ष्यालु प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

: 106 : कुमानुस कहें काको, ससुराल में बसे बाको

एक बार की बात है। भगवान श्रीराम अपनी ससुराल जनकपुरी आए हुए थे। विवाह के बाद पहली बार सीता के संग आए राम को जनकपुर में बड़ा मान-सम्मान मिल रहा था। रानी सुनयना तो उन्हें अपने पुत्र समान स्नेह दे रही थीं।

दिन बीतते गए, इधर सास जी चाहती थीं कि दामाद कुछ और दिन ठहरें। उधर, दशरथ जी अयोध्या में अपने प्रिय पुत्र और पुत्रवधू के बिना बेचैन हो रहे थे।

लेकिन समस्या यह थी कि सीधे-सीधे श्रीराम को बुलाना मर्यादा के खिलाफ था। तब दशरथ जी ने एक चतुराई भरा पत्र जनक जी को भेजा। पत्र में सिर्फ़ इतना लिखा था, "कृपया एक कुमानुष हमारे यहाँ भेज दीजिए।"

जनक जी यह पत्र पढ़कर चकरा गए। सोचने लगे कि यह "कुमानुष" कौन होता है? दरबार बुलाया गया। तमाम समाज के लोग वहाँ उपस्थित हुए - डोम, बहेलिए, भिश्ती, जुलाहे, सफाईकर्मी, मल्लाह सभी को एक-एक कर पूछा गया, "क्या तुम कुमानुष हो?"

हर कोई कहने लगा, "राजन, हम तो समाज के लिए बहुत काम के हैं! भला हम कुमानुष कैसे हो सकते हैं?"

अब राजा जनक और भी उलझ गए। वे सोच में पड़ गए कि आख़िर यह कुमानुष कौन हो सकता है। तभी भीड़ में से एक अनुभवी व्यक्ति आगे आया और हंसते हुए बोला, "महाराज, कुमानुष कहें काको? ससुराल में बसे बाको!" जनक जी समझ गए कि यह संकेत श्रीराम की ओर है। उन्होंने स्नेहपूर्वक श्रीराम और सीता को विदा किया।

कहावत का अर्थ है कि दामाद को लम्बे समय तक ससुराल में नहीं रहना चाहिए।

: 107 : केसव केसन अस करी, जो अरिहू न कराहिं, मधुर वचन मृग लोचनी, बाबा कहि कहि जाहिं

केशवदास जी बड़े ही रसिक और सौंदर्य-प्रेमी कवि थे। परंतु विधि की विडंबना देखिए–उनके बाल जल्दी सफ़ेद हो गए।

एक दिन की बात है केशवदास जी किसी सरोवर के किनारे टहल रहे थे। अचानक कुछ युवतियाँ जल भरने आईं। केशवदास जी ने उनसे पानी पीने को मांगा तो उन्होंने, लो बाबा पानी पियो कह कर उन्हें पानी दिया और हँसते हुए चली गईं।

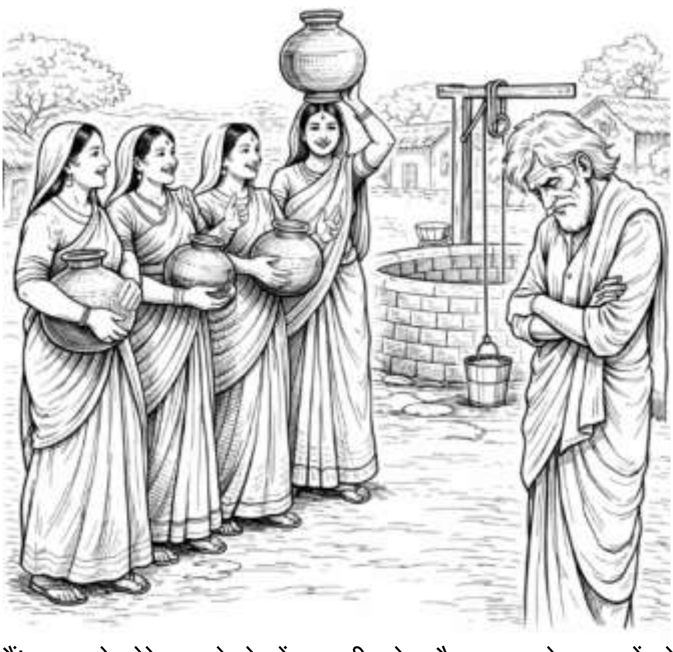

केशवदास जी का हृदय जैसे छलनी हो गया। वे सोचने लगे, "हाय, ये क्या हो गया? ये मृगनयनी सुंदरियाँ मुझे बाबा कह रही हैं! यह तो मेरे अपने केशों का ही दोष है। इन सफ़ेद बालों ने वह कर दिखाया जो मेरे शत्रु भी नहीं कर सकते थे!"

कहावत का अर्थ है कि कोई चाहे जितना भी सौंदर्य-प्रेमी हो, प्रकृति के नियम से बच नहीं सकता!

: 108 : कोख से जन्मा सांप भी माँ को प्यारा लगे

कहा जाता है कि एक बार बृहस्पति देव ने वन के सभी चौपायों के लिए यह घोषणा की कि वे अपने-अपने बच्चों को उनके समक्ष प्रस्तुत करें। जिनका बालक सबसे सुंदर होगा, उसे पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

इस घोषणा को सुनकर वन के सभी पशु अपने-अपने बच्चों को लेकर उपस्थित हुए। बंदर और बंदरिया भी अपने शिशु को साथ लेकर वहाँ पहुँचे। जब बंदरिया ने अपने गंजे और कुरूप मुख वाले बच्चे को बड़े स्नेह से सहलाते हुए देवता के सामने प्रस्तुत किया, तो अन्य पशु हँसने लगे।

यह देखकर बंदरिया ने गंभीर स्वर में कहा, “मैं यह नहीं कह सकती कि मेरा बच्चा पुरस्कार पाएगा या नहीं, किंतु एक माँ की दृष्टि में संसार का सबसे सुंदर बालक उसका अपना बच्चा ही होता है।”

कहावत का अर्थ है कि माँ को अपना बच्चा हमेशा प्यारा लगता है, चाहे वह कैसा भी हो।

:109 : कौआ चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया

एक कौवे ने एक हंस को बड़े ही सुंदर और गरिमामय ढंग से चलते देखा। उसकी चाल में एक विशेष आकर्षण था। कौवा यह देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने निश्चय किया कि वह भी हंस की तरह चलना सीखेगा।

इसके बाद वह कई दिनों तक हंस की चाल की नकल करने का प्रयास करता रहा। वह बार-बार उसी प्रकार चलने की कोशिश करता, परंतु वह वैसी चाल नहीं सीख सका।

धीरे-धीरे स्थिति यह हो गई कि वह हंस की चाल तो नहीं सीख पाया, अपनी स्वाभाविक चाल भी भूल गया। उसकी अपनी चाल भी बिगड़ गई और वह लड़खड़ाकर चलने लगा। इस प्रकार, दूसरों की नकल करने के प्रयास में उसने अपनी पहचान ही खो दी।

दूसरों की नकल करने के प्रयास में व्यक्ति अपनी मौलिकता और पहचान खो दे तो यह कहावत कही जाती है।

: 110 : कौवा कान ले गया

किसी गाँव में एक मूर्ख आदमी रहता था। एक दिन की बात है, वह आदमी गाँव के चौपाल पर बैठा था, तभी वहाँ से एक शरारती व्यक्ति गुज़रा। उसने मज़ाक करने के इरादे से ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "अरे! तेरा कान कौवा ले गया!"

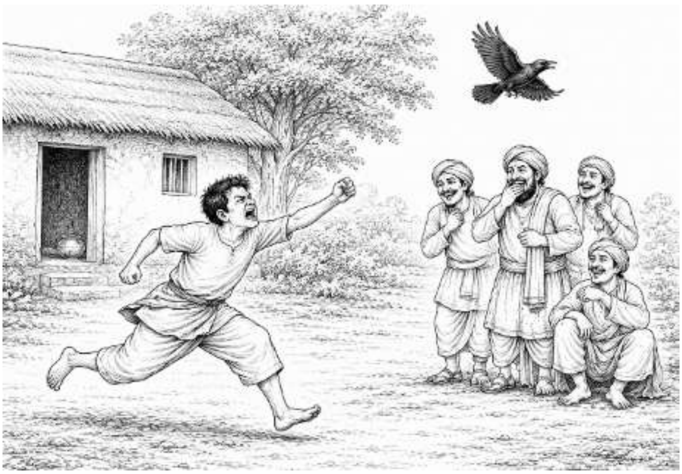

यह सुनते ही वह मूर्ख आदमी आनन-फानन में उठा और कौवे को पकड़ने के लिए इधर-उधर भागने लगा। रास्ते में लोगों ने उसे यूँ हड़बड़ाकर दौड़ते देखा तो पूछा, "अरे भाई, इतनी तेज़ कहाँ भाग रहे हो?"

वह हाँफते हुए बोला, "मेरा कान कौवा ले गया है! उसे पकड़कर अपना कान वापस लेना है!" लोग उसकी बात सुनकर हँसने लगे। किसी ने कहा, "अरे मूर्ख, पहले अपने कान तो टटोल कर देख!"

यह सुनकर उसने धीरे-धीरे अपने दोनों कानों को छूकर देखा, और पाया कि वे अपनी जगह पर सही-सलामत थे! अब वह लज्जित होने की बजाय गुस्से में आ कर उस शरारती व्यक्ति के पास गया और चीखते हुए बोला, "अरे तूने झूठ क्यों बोला? मेरा कान तो यहीं है!"

कहावत का अर्थ है कि बिना सोचे समझे किसी की बात पर विश्वास न कर के पहले स्वयं उस की सच्चाई को परखना चाहिए।

: 111 : कौवे से कवेलवा होशियार

एक दिन एक कौवा अपने बच्चे को जीवन की समझ सिखा रहा था। उसने कहा, “देखो बेटा, इंसानों से हमेशा सावधान रहना। अगर किसी को ढेला (पत्थर) उठाते देखो, तो तुरंत वहाँ से उड़ जाना, नहीं तो जान का खतरा हो सकता है।”

बच्चा ध्यान से सुन रहा था। उसने तुरंत एक प्रश्न किया, "ठीक है, लेकिन अगर किसी के हाथ में पहले से ही ढेला हो, तब क्या करेंगे?" कौवा कुछ क्षण के लिए चुप हो गया। फिर मुस्कुराकर बोला, "इसका उत्तर तुम ही बताओ, क्योंकि तुम तो मुझसे भी ज्यादा होशियार हो!"

व्यवहार में इस कहावत को तब प्रयोग करते हैं जब किसी चालाक व्यक्ति की संतान उससे अधिक चालाक हो।

: 112 : कौन कहे राजा जी नंगे हैं

एक राजा के दरबार में दो लोग आए और राजा से बोले कि वे देवताओं के वस्त्र बनाते हैं। राजा लोग भी कैसे कैसे मूर्ख होते थे, उस ने उन लोगों की बात पर विश्वास भी कर लिया। राजा ने उन से कहा कि मेरे लिए भी देवताओं जैसे वस्त्र बनाओ। उन्होंने राजा से एक महीने का समय माँगा और बहुत सा सोना, हीरे जवाहरात और रेशम, मखमल वगैरा ले कर महल के एक कमरे में काम शुरू कर दिया। एक महीने बाद वे दरबार में आए और राजा से कहा कि हम आप को देवताओं के वस्त्र अपने हाथ से पहनाएंगे। वस्त्र तो ऐसे बने हैं कि जो देखेगा देखता रह जाएगा लेकिन इन वस्त्रों की एक विशेषता यह है कि ये उन्हीं लोगों को दिखाई देते हैं जो अपने बाप से पैदा हैं। उन्होंने राजा के कपडे उतरवाए और खाली मूली हवा में ही एक एक चीज़ राजा को पहनाने लगे। लीजिये महाराज यह मलमल का जांघिया, यह रेशम की धोती, यह हीरे मोती जड़ा कुर्ता आदि आदि। राजा को कुछ नहीं दिख रहा था लेकिन वह यह कैसे कहे। उसने

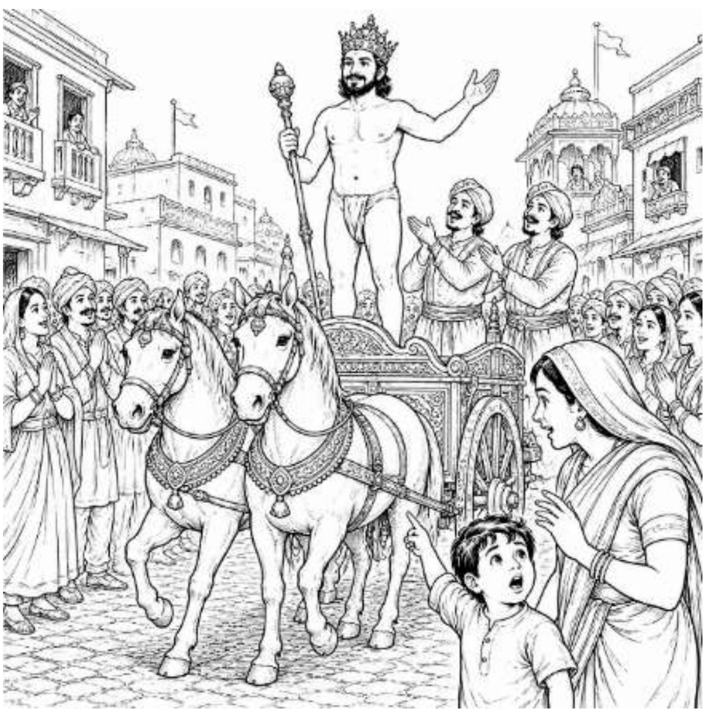

सोचा कि हो न हो मैं अपने पिता महाराज की औलाद न हो कर किसी द्वारपाल की औलाद हूँ जो मुझे ये वस्त्र दिखाई नहीं दे रहे हैं। राजा ने सब दरबारियों से पूछा कि कैसे लग रहे हैं मेरे नए वस्त्र? सब ने एक स्वर से कहा अद्वितीय महाराज, आप बिल्कुल देवता लग रहे हैं। राजा खुश हो गया और पूरे राज्य में जुलूस निकालने का ऐलान कर दिया!

राजा जब पूरे राज्य में जुलूस निकाल रहा था, तो प्रजा भी डर के मारे झूठी तारीफें कर रही थी–

"वाह! महाराज के वस्त्र तो कमाल के हैं!" हकीकत यह थी कि राजा बिल्कुल नंगा खड़ा था लेकिन कोई यह कह नहीं पा रहा था। लेकिन तभी एक छोटे बच्चे ने अपनी माँ से पूछा, "माँ, ये राजा नंगा क्यों घूम रहा है?"

बच्चे की मासूमियत ने सबका पर्दाफाश कर दिया। अब सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। दरबारी भी धीरे-धीरे फुसफुसाने लगे, "अरे हाँ! राजा तो सच में नंगा है!" राजा को जब अहसास हुआ कि वह पूरे राज्य के सामने मूर्ख बन गया है, तो वह शर्म से पानी-पानी हो गया!

जहाँ पर कोई गलत काम होता सब को दिख रहा हो पर कहने की हिम्मत कोई न जुटा पा रहा हो वहाँ यह कहावत कहते हैं।

: 113 : क्या कहूँ कछु कहा न जाए, बिन कहे भी रहा न जाए

बहुत समय पहले की बात है। एक बड़े राज्य का राजा शिकार खेलने जंगल में गया। लेकिन शिकार के दौरान वह अपने दल से अलग हो गया और रास्ता भटक गया। जंगल घना था, रास्ता अनजान और ऊपर से भूख-प्यास से बुरा हाल! राजा इधर-उधर भटक रहा था कि तभी एक चरवाहा मिला। चरवाहे ने देखा कि सामने एक अजनबी बड़ी परेशानी में है। उसने राजा को पानी पिलाया, उसे बैठाकर आराम कराया और फिर जंगल से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया।

राजा उसकी भलाई से इतना प्रसन्न हुआ कि तुरंत एक पत्ते पर अपने हाथ से लिख दिया, "इस चरवाहे को सात गाँव इनाम में दिए जाते हैं!" फिर उसने अपनी अंगूठी की मोहर से उस पत्ते को प्रमाणित किया और बोला, "जाओ, यह पत्ता राजदरबार में ले जाना। मंत्री इस पर अमल करेंगे और तुम सात गाँव के मालिक बन जाओगे।"

चरवाहा खुशी से झूम उठा। "वाह! मेरी मेहनत और भलाई का इतना बड़ा इनाम!" वह उछलता-कूदता, खुशी-खुशी अपने गाँव लौटा। जैसे ही वह गाँव पहुँचा, उसने सोचा कि "इतनी बड़ी खुशी अकेले नहीं मनाऊँगा! सब गाँव वालों को इकट्ठा करके बताऊँगा!"

वह दौड़ता हुआ अपने घर आया और पत्ते को एक किनारे रखकर गाँव वालों को बुलाने चला गया। पर जैसे ही चरवाहा बाहर गया, उसकी बकरी इधर-उधर घूमते हुए उस पत्ते तक पहुँच गई और मजे से चबा गई!

जब चरवाहा लौटकर आया और देखा कि राजा का लिखा हुआ इनाम बकरी के पेट में जा चुका है, तो उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया! वह जोर-जोर से रोने लगा और बोला, "क्या कहूँ, कछु कहा न जाए, बिन कहे भी रहा न जाए!" "मन की बात मन में ही रही, सात गाँव बकरी चर गई!"

गाँव वाले पहले तो कुछ समझे नहीं, लेकिन जब उन्हें सारी बात पता चली, तो सब अपना सिर पकड़कर बैठ गए! अप्रत्याशित रूप से किसी का बहुत बड़ा नुकसान होने पर यह कहावत कही जाती है।

: 114 : क्या खुदा तेरी खुदाई, मारनी थी गधी मर गई गाइ

किसी गाँव में मियाँ जी रहते थे। उनके पड़ोस में एक कुम्हार रहता था, जिसकी गधी दिन-रात ढेंचू-ढेंचू चिल्लाती रहती थी। मियाँ जी को गधी से बहुत चिढ़ थी और कुम्हार से उनकी बनती भी नहीं थी।

एक दिन गधी कुछ ज्यादा ही ढेंचू-ढेंचू करने लगी। मियाँ जी का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया! उन्होंने गुस्से में हाथ उठाया और सच्चे दिल से खुदा से दुआ माँगी, "या खुदा! ये गधी बहुत सताती है, इसे उठा ले!"

सुबह जब मियाँ जी उठे, तो उनकी गाय आँगन में मरी पड़ी थी! उन्हें पहले यकीन ही नहीं हुआ! लेकिन जब पड़ोस में झाँककर देखा, तो कुम्हार की गधी मस्त चारा खा रही थी और पहले से भी ज़ोर-ज़ोर से ढेंचू-ढेंचू कर रही थी!

अब मियाँ जी का गुस्सा और बढ़ गया और उन्होंने आसमान की ओर देखकर खुदा से शिकायती लहजे में कहा, "या खुदा! तुझे खुदाई करते हुए कितने युग बीत गए, लेकिन तुझे अभी तक गधी और गाय का फर्क भी नहीं पता?" मैंने पड़ोसी को गधी मारने के लिए अर्ज की थी और तूने मेरी ही गाय मार दी।

जो लोग अपना नुकसान होने पर ईश्वर को दोष देते हैं उनका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 115 : खतरा दो अंगुल, डर सौ अंगुल

एक व्यक्ति अपने घर की छत पर सीढ़ी लगाकर छप्पर ठीक कर रहा था। काम करते समय अचानक उसकी उंगली में कुछ चुभ गया और थोड़ा-सा खून निकल आया। उसने सोचा कि शायद कोई कील या नुकीली चीज चुभ गई होगी। उसने उंगली पर कपड़े की पट्टी बाँध ली और फिर अपने काम में लग गया।

करीब पंद्रह दिन बाद उसे फिर उसी स्थान पर छप्पर की मरम्मत करनी पड़ी। जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, एक मरा हुआ साँप ऊपर से गिरकर नीचे आ गया। साँप को

देखते ही उसे अचानक याद आया कि कुछ दिन पहले इसी जगह उसकी उंगली में कुछ चुभा था।

अब उसके मन में यह विचार आया कि कहीं उसे उस समय साँप ने तो नहीं काट लिया था! यह सोचते ही उसके मन में भय की तीव्र लहर दौड़ गई। वह इतना घबरा गया कि उसे जोर का सदमा लगा और उसकी हृदय गति रुक गई।

कहावत का अर्थ है कि किसी भी खतरे से अधिक खतरनाक स्वयं मनुष्य का डर होता है।

: 116 : खुदा की खुदाई को कौन जानता है

एक दिन मियाँ जी नमाज पढ़कर मस्जिद के बाहर बैठे थे। बड़े भाव-विभोर होकर उन्होंने आसमान की ओर देखा और बोले, "या खुदा! तेरी खुदाई को कौन जानता है?"

उसी वक्त पास ही एक गबरू जाट खड़ा था। उसने मियाँ जी की बात सुनी और तपाक से बोला, "मैं जानता हूँ!" मियाँ जी चौंके। बोले, "अरे, खुदा की खुदाई को जानने वाला तू कौन?" बस, फिर क्या था! दोनों में बहस छिड़ गई। मियाँ जी ने अपनी दलीलें दीं, जाट ने अपनी। मारपीट की नौबत आ गई और मामला इतना बढ़ गया कि दरबार तक जा पहुँचा!

दिल्ली के बादशाह ने दोनों की बातें सुनीं और कहा, "अगर जाट सच कहता है, तो उसे खुदा की खुदाई दिखानी होगी!" जाट मुस्कराया और बोला, "हुजूर, इसके लिए आपको मेरे साथ यमुना के किनारे चलना होगा!"

बादशाह, मियाँ जी और दरबारियों का काफिला यमुना किनारे पहुँचा। वहाँ जाकर जाट ने हाथ फैलाए और नदी की ओर इशारा किया, "हुजूर! देखिए, यह खुदा की खुदाई है, या इस मियाँ के बाप-दादों ने खुदाई है?"

यह सुनते ही दरबार में ठहाके लग गए! बादशाह को भी बड़ी हँसी आई। उन्होंने जाट के हक़ में फैसला दे दिया और मियाँ जी की नजरें झुक गईं।

बेवजह बहस करने वालों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 117 : खुदा ने गंजे को नाख़ून नहीं दिए हैं

किसी ज़माने की बात है, एक छोटे से गाँव में एक अनोखा बच्चा पैदा हुआ। गाँववालों ने देखा कि न तो उसके सिर पर बाल थे और न ही हाथ-पैर में नाख़ून!

लोगों को यह बहुत अजीब लगा। लोग कहने लगे, "ज़रूर किसी देवता का श्राप होगा!"

गाँव में एक बुज़ुर्ग सयाना था, जो हमेशा मज़ाक और हाज़िरजवाबी के लिए मशहूर था। जब उसने बच्चे को देखा, तो हँसकर बोला– "अरे भई, ख़ुदा ने इसे नाख़ून दिए होते, तो यह खुजा-खुजा कर अपनी खोपड़ी लहुलुहान कर लेता!" लोग पहले तो उसकी बात सुनकर हैरान हुए, फिर सब ठहाके लगाकर हँसने लगे!

धीरे-धीरे यह मज़ाक लोककथा बन गई, और फिर कहावत! (एक बहुत बिरली बीमारी होती है Anonychiya जिसमें जन्म से नाखून नहीं होते। ऐसे ही एक बीमारी होती है Alopecia totalis जिसमें सर पर या सारे शरीर पर बाल नहीं होते। ये बीमारियाँ जेनेटिक गड़बड़ी के कारण एक साथ भी हो सकती हैं। इस उदाहरण में ऐसा ही कुछ हुआ होगा।

: 118 : खूँटी हार लील गई

राजा विक्रमादित्य की बुद्धिमत्ता और न्यायप्रियता की कहानियाँ तो बहुत प्रसिद्ध हैं, लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि उन्हें शनि की साढ़ेसाती ने भी भयंकर कष्ट दिए थे।

एक बार विक्रमादित्य अपने दरबार में ग्रहों की महिमा पर चर्चा कर रहे थे। सभी ग्रहों को उचित सम्मान दिया जा रहा था, लेकिन शनि देव की महिमा को दरबारियों ने कम आंका।

शनि देव यह सब देख-सुन रहे थे। उन्होंने सोचा, "राजा! मैं तुम्हें अपनी शक्ति का अहसास करवाऊँगा!"

कुछ ही दिनों में विक्रमादित्य पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा– राज्य में अशांति फैली, शत्रुओं ने हमला किया और राजा को गद्दी छोड़कर भटकना पड़ा। वह दर-दर की ठोकरें खाते एक व्यापारी मित्र के घर पहुँचे।

व्यापारी ने उन्हें अपने घर में शरण दी। रात को जब सब सो गए, तब विक्रमादित्य जिस कमरे में रुके थे, वहाँ दीवार पर लगी खूँटी अचानक हिलने लगी। राजा ने आश्चर्य से देखा कि उस खूँटी पर टंगा एक बहुमूल्य हीरों का हार धीरे-धीरे उसमें समा गया!

सुबह जब व्यापारी की पत्नी ने देखा कि हार गायब है, तो सबसे पहला शक राजा विक्रमादित्य पर गया। राजा को पकड़कर कोतवाल के सामने पेश किया गया। राजा लाख समझाते रहे कि "हार खूँटी ने लील लिया है," लेकिन कौन यकीन करता? राजा पर चोरी का आरोप लगा और उन्हें कठोर दंड दिया गया। उन्हें गुलाम बनाकर दूसरे राज्य में भेज दिया गया, जहाँ उन्हें तेली (तेल निकालने वाले) के यहाँ चक्की चलाने का काम मिला।

जैसे ही साढ़ेसाती का अंतिम चरण पूरा हुआ, राजा विक्रमादित्य को न्याय मिलने लगा–कोई और अपराधी पकड़ा गया और राजा पर से चोरी का आरोप हटा दिया गया। खूँटी ने खुद ही हार उगल दिया और व्यापारी को सच्चाई पता चल गई। राजा को उनके राज्य में वापस बुलाया गया और उन्हें पुनः राजगद्दी मिली।

तब से यह कहावत प्रचलित हो गई–"खूँटी हार लील गई!" जब किसी पर झूठा इल्ज़ाम लगे और वह निर्दोष होते हुए भी फँस जाए, तो यह कहावत कही जाती है।

: 119 : खोदा पहाड़ निकली चुहिया

किसी पहाड़ी इलाके में एक गहरी गुफा थी, जिसे कुछ चोरों ने अपना ठिकाना बना रखा था। वे जब भी कहीं डाका डालते, लूट का माल इसी गुफा में छिपा देते। गुफा का रास्ता संकरा था और अंदर घना अंधेरा पसरा रहता था। इसलिए वहाँ बिना मशाल के जाना मुश्किल था।

एक दिन, जब सारे चोर किसी दूसरे गाँव में चोरी करने गए थे, तब एक चोर पहरेदारी के लिए गुफा में ही रुका। शाम के समय जब अंधेरा घना होने लगा, तो गुफा के अंदर से छन-छन की आवाज़ आई।

"ये आवाज़ कैसी?" चोर के मन में डर समा गया। उसने सोचा, "कोई छिपकर हमारी चोरी का माल तो नहीं चुरा रहा?" जब बाकी चोर लौटे, तो उसने यह बात सरदार को बताई। लेकिन सबने उसकी बात पर हँसी उड़ा दी, "अरे! तू अकेले में डर गया होगा। कोई गुफा में घुसकर चोरी कैसे कर सकता है?"

अगले दिन, पहरेदारी के लिए दूसरा चोर गुफा में रुका। रात ढलते ही फिर वही

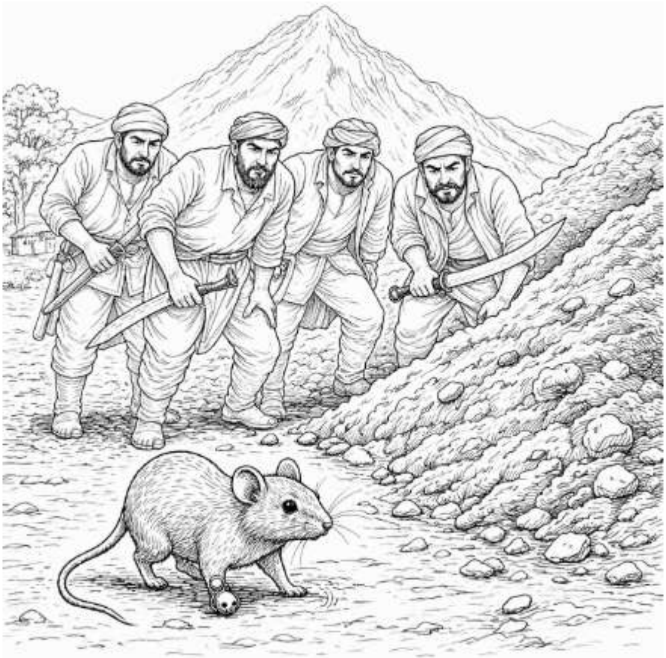

छन-छन की आवाज़ सुनाई दी। अब तो वह भी घबरा गया! "ये गुफा सच में कोई रहस्यमयी जगह है! कहीं यहाँ भूत-प्रेत तो नहीं रहते?" सुबह जब सरदार को यह बात बताई गई, तो वह भी सोच में पड़ गया।

सरदार ने कहा, "पुराने ज़माने में लोग अपना धन ज़मीन में गाड़ देते थे। ऐसा लगता है कि इस पहाड़ के नीचे कोई छुपा हुआ खजाना है, और वही अपनी जगह बदल रहा है। हमें इसे खोदना चाहिए!" बस फिर क्या था, सभी चोर जुट गए पहाड़ खोदने में।

खुदाई में घंटों बीत गए। कड़ी मेहनत के बाद भी कोई खजाना नहीं मिला। तभी एक चोर की निगाह इधर-उधर फुदकती एक छोटी सी चुहिया पर पड़ी। चुहिया के पैर में एक छोटा सा घुँघरू अटका हुआ था। उसी से छन-छन की आवाज़ आ रही थी! अब तक पसीने से लथपथ, थके-हारे चोरों ने जब यह देखा तो सर पीट लिया।

बहुत परिश्रम करने के बाद भी यदि किसी को बहुत कम उपलब्धि हो तो वह यह कहावत कहता है।

: 120 : गंगा आवनहार भगीरथ को जस

बहुत प्राचीन समय की बात है। राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे। एक बार उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। उनके यज्ञ का घोड़ा बीच में ही कहीं खो गया। घोड़े की खोज करते-करते वे कपिल मुनि के आश्रम तक पहुँच गए। वहाँ घोड़ा बंधा देखकर उन्होंने मुनि पर चोरी का आरोप लगा दिया। इससे क्रोधित होकर कपिल मुनि ने अपने तपोबल से सभी पुत्रों को भस्म कर दिया। राजा ने मुनि की बहुत अनुनय विनय की और अपने पुत्रों की मुक्ति का उपाय पूछा तो मुनि ने बताया कि स्वर्ग से

गंगा को लाकर उनके जल में यदि इन लोगों की भस्म प्रवाहित की जाए तो इनकी मुक्ति हो सकती है।

समय बीतता गया। इस असंभव कार्य को कोई न कर सका। कई पीढ़ियों बाद राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार का संकल्प लिया। उन्होंने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा को प्रसन्न किया। ब्रह्मा ने गंगा को पृथ्वी पर भेजने की अनुमति तो दे दी, परंतु उसके प्रचंड वेग को सहना पृथ्वी के लिए संभव नहीं था।

तब भगीरथ ने भगवान शिव की आराधना की। शिव जी ने प्रसन्न होकर गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया और उसके वेग को नियंत्रित किया। इसके बाद गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई और भगीरथ के रथ के पीछे-पीछे चलती हुई उस स्थान तक पहुँची जहाँ उनके पूर्वजों की अस्थियाँ थीं। गंगा जल के स्पर्श से सभी को मोक्ष प्राप्त हुआ।

यह तो है इस विषय पर उपलब्ध पौराणिक कहानी, लेकिन जहाँ अधिकतर लोग भगीरथ की कठोर तपस्या से प्रभावित हो कर किसी भी अथक प्रयास को “भगीरथ प्रयास” कहते हैं वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह कहते हैं कि गंगा को तो आना ही था भगीरथ को संयोगवश उसका श्रेय मिल गया। यह कहावत इसी प्रकार का सोच रखने वाले लोगों द्वारा बनाई गई है। कहीं पर कोई काम अपने आप हो जाए पर कोई चतुर व्यक्ति उस का श्रेय ले ले तो यह कहावत कही जाती है। जैसे भारत को आजादी तो उस समय की अनेक परिस्थितियों के संयोग से मिली, लेकिन कांग्रेस के लोगों ने बड़ी होशियारी से उसका पूरा श्रेय ले लिया।

: 121 : गंगा जी के घाट पर बामन वचन प्रमाण, गंगा जी की रेत को तू चंदन करके जान

गंगा जी के पवित्र घाट पर सुबह-सुबह का समय था। घाट पर श्रद्धालुओं की भीड़ थी–कोई स्नान कर रहा था तो कोई पूजा-पाठ में लीन था।

इसी भीड़ में एक सीधा-सादा जाट भी आया था, जो दूर किसी गाँव से गंगा स्नान के लिए आया था। उसने गंगा जी में डुबकी लगाई और जैसे ही वह पानी से बाहर आया, एक पंडा उसकी ओर बढ़ा, "अरे जाट यजमान! रुको, रुको! तुम्हारी शुद्धि अभी पूरी नहीं हुई। गंगा स्नान तभी सफल होता है जब बामन का आशीर्वाद मिले!"

जाट ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन चुप रहा। पंडा ने जल्दी से गंगा जल हाथ में लिया, कुछ उलटे-सीधे मंत्र बुदबुदाए, फिर गंगा जी की रेत उठाकर जाट के माथे पर तिलक लगा दिया। बोला "गंगा जी के घाट पर बामन वचन प्रमाण। गंगा जी की रेत को तू चंदन करके जान! अब तुम्हें इस बामन को गऊ दान करना होगा!"

अब जाट भी कोई भोला-भाला आदमी नहीं था। उसने अपनी पगड़ी ठीक की, मुस्कराया और गंगा किनारे से एक मेंढकी पकड़ ली। फिर उसने पंडा की आँखों में आँखें डालकर कहा, "सुनो जी ब्राह्मण देवता, गंगा जी के घाट पर जाट वचन प्रमाण। गंगा जी की मेंढकी तू गऊ करके जान!" और वह मेंढकी पंडे को पकड़ा दी।

किसी शातिर व्यक्ति को उस से भी अधिक शातिर व्यक्ति मिल जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 122 : गंवई के दाल-भात, शहरी की राम-राम

एक शहर के लाला किसी काम से देहात गए। वहाँ न तो होटल थे, न धर्मशालाएँ, इसलिए वे अपने एक दूर के परिचित देहाती के घर ठहर गए। देहाती ने बड़े स्नेह से उनकी आवभगत की। घर में जो भी था, सब प्रेम से खिलाया-पिलाया। काम पूरा होने पर लाला वापस शहर लौट आए।

कुछ समय बाद वही देहाती किसी काम से शहर आया और कचहरी में उसकी मुलाकात उसी लाला से हो गई। लाला ने दूर से ही हाथ जोड़कर कहा, “चौधरी, राम-राम!” देहाती ने भी आदर से राम-राम किया। लेकिन लाला ने न तो उसे घर चलने का निमंत्रण दिया, न ही खाने-पीने की कोई बात की।

देहाती को यह व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उसने अपने एक साथी से, जो शहर के तौर-तरीकों से परिचित था, इस बात का जिक्र किया। साथी मुस्कुराकर बोला, “अरे, तुमने वह कहावत नहीं सुनी, ‘गंवई के दाल-भात, शहरी की राम-राम।’

यह कहावत ग्रामीण और शहरी जीवन के स्वभाव का बड़ा सटीक चित्रण करती है। इसमें शहरी स्वार्थपरता और औपचारिकता पर हल्का-सा व्यंग्य भी निहित है।

: 123 : गए थे रोज़े छुड़वाने, नमाज़ गले पड़ी

कुछ लोग बादशाह के दरबार में पहुँचे। उन्होंने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि उन्हें रोज़े रखने की कठिनाई से मुक्ति दे दी जाए, क्योंकि वे इस नियम का पालन करने में असमर्थ हैं।

बादशाह ने उनकी बात ध्यान से सुनी और कुछ सोचने के बाद कहा, "ठीक है, तुम्हें रोज़े रखने से मुक्त किया जाता है, लेकिन इसके बदले अब तुम्हें दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़नी होगी।"

यह सुनते ही वे लोग घबरा गए। वे तो एक कठिनाई से छुटकारा पाने आए थे, पर उनके सामने उससे भी बड़ी जिम्मेदारी आ खड़ी हुई।

वे आपस में कहने लगे, "हम तो रोज़ों से छुटकारा पाने आए थे, पर यहाँ तो नमाज़ ही गले पड़ गई।"

कोई व्यक्ति एक परेशानी से बचने के प्रयास में दूसरी, और उससे भी बड़ी, परेशानी में फँस जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 124 : गतानुगतिको लोकः -- गडर प्रवाही लोक
(देखा देखी करत सब, भेड़ चाल संसार)

एक बार एक साधु कुछ धन लेकर यात्रा पर निकला। वह उज्जैन की ओर जा रहा था। रास्ते में वह नर्मदा नदी के किनारे पहुँचा। उसके मन में स्नान और पूजा करने की इच्छा हुई। अब समस्या यह थी कि अपने धन को कहाँ सुरक्षित रखे।

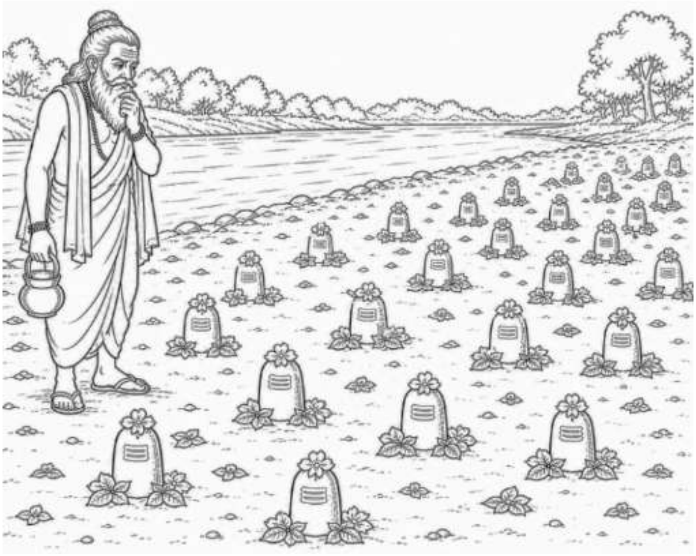

साधु ने उपाय सोचा। उसने रेत में एक छोटा-सा गड्ढा खोदा और उसमें अपना धन दबा दिया। फिर उस स्थान को पहचानने के लिए उसने ऊपर रेत से एक छोटा-सा शिवलिंग बना

दिया और उस पर बेलपत्र आदि चढ़ा दिए, ताकि देखने में लगे कि किसी ने वहाँ पूजा की है। यह सब करके वह नहाने चला गया।

इसी बीच वहाँ से कुछ लोग गुजरे। उन्होंने वह शिवलिंग देखा और सोचा, “शायद यहाँ इसी प्रकार पूजा करने का कोई विधान है।” उन्होंने भी वहीं पास में वैसा ही एक शिवलिंग बना लिया और उसकी पूजा कर दी।

फिर जो भी वहाँ से गुजरता, वह पहले के लोगों की देखादेखी वही करता। धीरे-धीरे वहाँ सैकड़ों शिवलिंग बन गए और सब पर पूजा हो गई। जब साधु स्नान करके वापस लौटा, तो यह दृश्य देखकर वह चकित रह गया। चारों ओर एक जैसे शिवलिंग दिखाई दे रहे थे। वह अपना बनाया हुआ शिवलिंग पहचान ही नहीं पाया और उसके साथ ही उसका गड़ा हुआ धन भी खो गया।

कहावत का अर्थ है कि कि संसार के लोग बिना सत्य जानने का प्रयास किये एक दूसरे का अन्धानुकरण करते हैं।

: 125 : गरीब को सरग में भी बेगार (चमार को अर्श पे भी बेगार।)

कहा जाता है कि एक गरीब मजदूर अपने सामान की गठरी सिर पर रखे कहीं जा रहा था। बोझ बहुत अधिक था, इसलिए वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था, “हे प्रभु, मुझे किसी सवारी का सहारा मिल जाए, ताकि मेरा यह कठिन सफर आसान हो सके।”

कुछ ही दूरी पर एक शाही सिपाही की घोड़ी ने बच्चे को जन्म दिया। सिपाही ने उस मजदूर को अपने पास बुलाया। मजदूर को कुछ आशा जगी कि सिपाही को शायद उस पर दया आ गई है और वह उसकी गठरी अपने घोड़े पर रखने के लिए कहेगा। लेकिन सिपाही ने उलटे उसे आदेश दिया, “इस बच्चे को अपने कंधे पर उठाओ और मेरे साथ चलो।”

मजदूर के पास कोई विकल्प नहीं था। उसे अपनी भारी गठरी के साथ उस नवजात घोड़े को भी उठाना पड़ा। अब उसका बोझ पहले से भी अधिक बढ़ गया।

कहावत का अर्थ है कि गरीब की सहायता कोई नहीं करता सभी उस पर बिना सोचे समझे अत्याचार ही करते हैं।

: 126 : गले पड़ी बाजे है

गाँव के एक कोने में एक गाने बजाने वाले का घर था। एक रात कुछ चोर दबे पाँव उसके घर में घुसे। लेकिन उन्हें कोई कीमती चीज़ नहीं मिली। चोरों ने सोचा, “कुछ तो उठाना पड़ेगा, वरना हमारी चोरी की इज़्ज़त ही चली जाएगी!"

उन्होंने वहाँ रखे संगीत के साज़ उठा लिए–एक ने ढोलक ले ली, दूसरे ने सारंगी पकड़ ली, और तीसरे ने इकतारा दबा लिया। जैसे ही वे बाहर निकलने लगे, अचानक घर के लोग जाग गए!

अब चोरों के पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं था। वे बगल के खेतों में घुस गए, जहाँ बाजरे की फसल लहलहा रही थी। लेकिन मुश्किल यह थी कि जिस चोर के गले में ढोलक पड़ी थी, वह जैसे ही आगे बढ़ता, बाजरे के सिट्टे ढोलक पर टकरा जाते और "ढम-ढम" की आवाज़ गूँजने लगती!

पीछे भागते चोरों में से एक ने फुसफुसाकर कहा, "अबे, ढोलक मत बजा, लोग हमारी तरफ दौड़े आ रहे हैं!" "अरे मैं कहाँ बजा रहा हूँ?" ढोलक वाले ने हाँफते हुए कहा, "ये तो खुद-ब-खुद बज रही है"

जब भी कोई मुसीबत या ज़िम्मेदारी गले पड़ जाए और कोई उससे बच न सके, तो यही कहावत कही जाती है।

: 127 : गाड़ी कुत्ते के बल नहीं चलती

गाँव के कच्चे रास्ते पर एक बैलगाड़ी चल रही थी। दो मजबूत बैल अपनी पूरी ताकत से जुतकर गाड़ी को खींच रहे थे। बैलगाड़ी के नीचे एक कुत्ता भी साथ-साथ चल रहा था। कुछ देर बाद कुत्ते के दिमाग में कीड़ा कुलबुलाने लगा। उसने सोचा– "हम्म।।। ये बैलगाड़ी मेरी वजह से ही चल रही है! मैं इतनी मेहनत क्यों कर रहा हूँ?

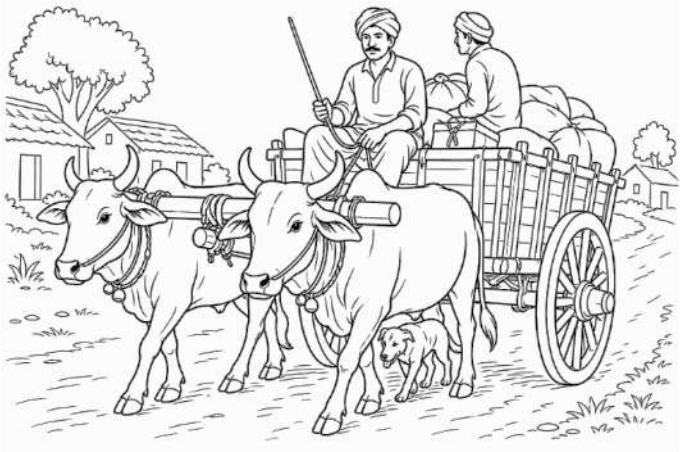

वह बीच रास्ते में खड़ा हो गया और सोचा– "अब देखता हूँ, गाड़ी कैसे चलती है!"

गाड़ी पहले की तरह चलती रही और आगे बढ़ गई। कुत्ते ने चौंक कर देखा–"अरे! ये तो बिना मेरे भी चल रही है!"

कोई व्यक्ति बिना किसी उपयोगिता के अपने आप को बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध करने की कोशिश कर रहा हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 128 : गिने गिनाए नौ के नौ

गाँव के नौ भोले-भाले बुनकरों ने महीनों की मेहनत से सुंदर वस्त्र बुने थे। अब वे इन कपड़ों को बेचने शहर जा रहे थे, ताकि अच्छी कीमत मिले और थोड़ी मौज-मस्ती भी हो जाए!

रास्ते में घना जंगल पड़ा। चलते-चलते उन्होंने एक झाड़ी देखी, जो रस भरे पके बेरों से लदी हुई थी! बस, फिर क्या था? सबने गठरियाँ नीचे रख दीं और बेर खाने में जुट गए। छककर बेर खाने के बाद मुखिया ने सोचा, चलो सबको गिन लें ताकि कोई पीछे न छूटे।

गिनती शुरू की, "एक, दो, तीन ..." आठ तक पहुँचते ही उसके हाथ कांप गए! "अरे! हम तो नौ थे! एक आदमी गायब हो गया!" एक एक कर के सबने गिनती की। जो भी गिन रहा था वह खुद को नहीं गिन रहा था। अब हड़कंप मच गया! सबने इधर-उधर देखा, झाड़ियों के पीछे झाँका, पेड़ों के ऊपर तक निगाहें दौड़ाईं। लेकिन न कोई भूत-प्रेत दिखा, न कोई चोर-डाकू!

सबके चेहरे सफेद पड़ गए, "हाय! हमारा एक साथी खो गया!" सब जोर जोर से रोने लगे। इसी अफरा-तफरी में एक घुड़सवार उधर से गुज़र रहा था। उसने देखा– कुछ हट्टे-कट्टे आदमी जंगल में रो रहे हैं! उसने पास आकर पूछा, "अरे भाई, क्या हुआ?" मुखिया ने सिसकते हुए पूरी कहानी सुनाई।

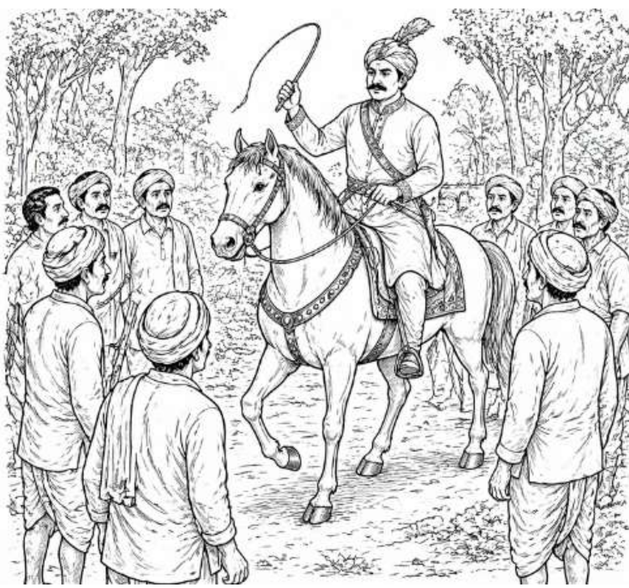

घुड़सवार ने पलक झपकते ही गिना "नौ।" उस ने मन ही मन हँसी दबाई और बोला– "अगर मैं तुम्हारा खोया हुआ आदमी ढूँढ़ दूँ, तो मुझे क्या इनाम दोगे?" बुनकरों ने कहा, "तू हमारा आदमी ढूँढ़ दे, तो हमारे बहुमूल्य वस्त्र तेरे!"

घुड़सवार ने सबको लाइन से खड़ा किया। फिर एक-एक कर हर बुनकर को हल्का सा कोड़ा मारा और ज़ोर से गिनने लगा–"एक, दो, तीन, चार, पाँच, छै, सात, आठ, नौ!

अब सबकी आँखें फटी की फटी रह गईं- "अरे! हम तो नौ ही हैं!" सब खुशी से उछल पड़े! "हमारा आदमी मिल गया!"

बुनकरों ने ख़ुशी-ख़ुशी अपने सारे कपड़े घुड़सवार को दे दिए और बिना कुछ कमाए गाँव लौट गए। गाँव पहुँचकर उन्होंने गर्व से बताया, "हम तो मरते-मरते बचे! हमारा एक आदमी जंगल में खो गया था, पर सौभाग्य से मिल भी गया!"

किसी मूर्खतापूर्ण काम की मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 129 : गीदड़ पट्टा

एक दिन एक मूर्ख सियार को जंगल में पड़ा पुराना कागज़ मिला। उसने उसे गौर से देखा, फिर आँखें मटकाते हुए सोचा, "क्यों न इसे 'गाँव का पट्टा' बताकर अपनी अक़्लमंदी का सिक्का जमाया जाए?" कुछ लोग अपना महत्व दिखाने के लिए कुछ भी उल्टा सीधा करने को तैयार हो जाते हैं।

वह उछलता-कूदता अपनी टोली के पास पहुँचा और गर्व से बोला–"भाइयों! देखो, यह गाँव का पट्टा है! मैंने गाँव खरीद लिया है! अब कोई कुत्ता हम पर भौंकने की हिम्मत नहीं करेगा!" सभी भोले सियार उसकी बातों में आ गए। उन्होंने सोचा– "वाह! अब हमें कोई खतरा नहीं!" मूर्ख सियार गर्व से सबसे आगे चलने लगा और सारे सियार उसके पीछे-पीछे गाँव की ओर बढ़ने लगे।

लेकिन गाँव में घुसते ही भौं-भौं करते हुए कुत्तों की टोली उन पर टूट पड़ी! सबने मुखिया सियार से पुकारकर कहा, "अरे भाई कुत्तों को समझाओ कि हम अब गाँव के मालिक हैं!" लेकिन मुखिया सियार तो पहले ही उल्टी दिशा में भाग रहा था! साथी चिल्लाए, "अरे! तू भाग क्यों रहा है?"

उसने भागते-भागते जवाब दिया, "अबे भागो! ये सारे अनपढ़ कुत्ते हैं! इन्हें पढ़ना नहीं आता! पट्टा दिखाने से कोई फायदा नहीं!"

बस फिर क्या था– सारे सियार अपनी जान बचाकर जंगल की ओर भागे और उस दिन के बाद किसी ने गाँव की तरफ मुँह भी नहीं किया!

मूर्खता और झूठ की पोल एक न एक दिन खुल ही जाती है! जब कोई बिना वजह अकड़ता है और दिखावा करता है तब यह कहावत कही जाती है।

: 130 : गुज़रो गवाही और बीते बराती, जे फिर नहीं पूछे जाते

एक सज्जन अपने मित्र के बेटे की बारात में शामिल होने गए। वहाँ कन्या के पिता ने उनका अत्यंत आदर-सत्कार किया। उनके रहने, खाने और अन्य सभी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया। विवाह संपन्न होने के बाद उन्हें बड़े सम्मान के साथ विदा किया गया।

लगभग पंद्रह दिन बाद, वही सज्जन एक अन्य समारोह में कन्या के पिता से मिले। इस बार उन्होंने केवल सामान्य-सा नमस्कार किया और बिना विशेष ध्यान दिए आगे बढ़ गए। यह व्यवहार उन सज्जन को कुछ अटपटा लगा, पर उन्होंने कुछ नहीं कहा।

कुछ समय बाद उनके गाँव में एक दबंग व्यक्ति ने एक सीधे-साधे व्यक्ति को पीट दिया। मामला पंचायत से होते हुए अदालत तक पहुँचा। ये सज्जन उस घटना के प्रत्यक्षदर्शी थे, इसलिए वादी पक्ष उन्हें गवाही के लिए साथ ले गया। इस दौरान उनके रहने, खाने और यात्रा की पूरी व्यवस्था बड़े ध्यान से की गई।

मुकदमा समाप्त हुआ और वादी पक्ष की जीत हो गई। कुछ दिनों बाद जब वही वादी उनसे कहीं मिला, तो उसने भी केवल औपचारिक नमस्कार किया और आगे बढ़ गया।

तब उन सज्जन को समझ में आया कि बुज़ुर्गों की कही बात बिल्कुल सही है, “गुज़रो गवाही और बीते बराती, फिर नहीं पूछे जाते।”

कहावत का अर्थ है कि काम निकल जाने के बाद लोग अक्सर उस व्यक्ति की उपेक्षा कर देते हैं, जो उनके लिए पहले बिलकुल महत्वपूर्ण रहा हो।

: 131 : गोनू झा की बिल्ली

पाटलिपुत्र के राजा के दरबार में एक गोनू झा नाम के दरबारी थे। उनकी चतुराई और हाज़िरजवाबी के किस्से दूर-दूर तक मशहूर थे। एक बार राजा ने एक अजीब चुनौती दी। राजा ने अपने सभी दरबारियों को एक-एक बिल्ली और एक ब्याई हुई भैंस दी और आदेश दिया, "एक महीने बाद सबको अपनी बिल्लियाँ लेकर आना है, जिसकी बिल्ली सबसे ज्यादा मोटी-ताजी होगी, उसे इनाम दिया जाएगा!"

अब सभी दरबारी बिल्लियों की सेवा में जुट गए। भैंसों का दूध बिल्लियों को पिलाने लगे ताकि उनकी बिल्लियाँ फूली-फूली दिखें।

लेकिन गोनू झा तो थे ही अलग! उन्होंने पहले ही दिन खौलते हुए दूध में बिल्ली का मुँह डुबो दिया! बेचारी बिल्ली का मुँह जल गया। अब वह दूध देखते ही भाग जाती! गोनू झा आराम से भैंस का दूध खुद पीते रहे।

निर्धारित दिन सभी दरबारी अपनी-अपनी बिल्लियों को लेकर दरबार पहुँचे। एक से एक तंदुरुस्त, मोटी-ताजी बिल्लियाँ!

लेकिन गोनू झा की बिल्ली एकदम दुबली पतली। राजा को आश्चर्य हुआ। उन्होंने गोनू झा से पूछा, "गोनू झा! ये क्या? तुम्हारी बिल्ली इतनी दुबली क्यों रह गई?"

गोनू झा बोले, "महाराज, मेरी बिल्ली दूध पीती ही नहीं! कितनी भी कोशिश कर लूँ, यह दूध के पास भी नहीं आती!"

राजा को यकीन नहीं हुआ। उन्होंने बिल्ली के सामने दूध रखवाया। लेकिन जैसे ही बिल्ली ने दूध देखा, वह सीधे दौड़कर दरबार से बाहर भाग गई!

राजा तुरंत गोनू झा की चालाकी समझ गए! "तो तुमने खुद भैंस का दूध पी लिया और बिल्ली को भूखा रखा?"

गोनू झा ने मुस्कुराते हुए सिर झुका लिया। राजा ने हँसकर कहा, "जो अपनी अक्ल से सबसे बड़ा लाभ उठाए, असली विजेता वही होता है!"

जब कोई अपनी अक्ल से परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढाल लेता है तब यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 132 : घर आए नाग न पूजें, बांबी पूजन जाएं

सनातन धर्म की एक विशेषता है कि इस में अग्नि, जल, वायु, नदी, पर्वत, पशु-पक्षियों और पेड़ों तक की पूजा की जाती है। वास्तव में प्रकृति के चक्र के लिए सभी पशु पक्षियों का कुछ न कुछ महत्व है। यदि हिरन न हों तो मांसाहारी पशुओं को भोजन कैसे मिलेगा? यदि मांसाहारी पशु न हों तो हिरन इतने अधिक हो जाएंगे कि सारा जंगल ही खा डालेंगे। यही बात साँपों के विषय में कही जा सकती है। सांप न हों तो चूहे इतने बढ़ जाएंगे कि फसल को खा डालेंगे। कुछ इस कारण से, कुछ

भय के कारण से और क्योंकि भगवान शंकर भी नागों को लिपटाए रहते हैं इसलिए भी लोग साँपों की पूजा करते हैं।

सांप की पूजा कितनी भी की जाए, घर में यदि सांप आ जाए तो कोई प्रसन्न नहीं होता। फ़ौरन उसे घर से भगाने या मारने का इंतजाम कर लिया जाता है।

कहने का मतलब यह है कि घर पर आए हुए नाग को कोई नहीं पूजता, न ही कोई दूध पिलाता है, वहीँ नाग पंचमी के दिन गाँव की महिलाएँ गांव के बाहर खेतों और पास के जंगलों में सांप की बांबियां पूजने जाती हैं और मिटटी के बर्तनों में दूध भर कर उन के लिए रख कर आती हैं। इसी पर किसी ने कहा है, “घर आए नाग न पूजें, बांबी पूजन जाएं।”

कहावत के द्वारा अंध विश्वासों पर व्यंग्य भी किया गया है और यह भी बताया गया है कि लोग अपने घर आए व्यक्ति या आसानी से उपलब्ध व्यक्ति को महत्व नहीं देते दूर के व्यक्ति को ही देते हैं।

: 133 : घर का घर में ही सुलट लिया

एक सियार और सियारी तालाब पर पानी पीने के लिये गये तो उन्होंने तालाव के किनारे एक शेर को बैठे देखा। दोनों बहुत प्यासे थे और प्यास के कारण उनकी जान निकली जा रही थी, इसलिये दोनों ने मिलकर एक युक्ति सोची। सियार को अपने पीछे लेकर सियारी ने शेर के पास जाकर स्त्रियोचित कोमलवाणी में कहा कि जेठजी आप हमारा न्याय कर दीजिये।

शेर के पूछने पर सियारी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुये कहा कि हम पति-पत्नी अपना-अपना हिस्सा अलग कर रहे हैं। हमारे तीन बच्चे है, जिनमें से दो को सियार लेना चाहता है। लेकिन मैंने बच्चों को जन्म दिया है, उन्हें कष्ट उठा कर पाला-पोसा है, अतएव मुझे दो बच्चे मिलने चाहिए और सियार को एक।

शेर ने सोचा कि दो तो ये हैं और तीन इनके बच्चे हैं, अतः पांचों को मिलाकर अच्छा नाश्ता हो जायेगा। इसलिये उसने सियारी से कि कहा तू जाकर तीनों बच्चों को यहाँ ले आ, मैं समुचित न्याय कर दूंगा। यह सुनकर सियारी वहाँ से चली और चलते समय पेट भरकर पानी भी पीती गई।

जब कुछ समय बीत गया और सियारी बच्चों को लेकर नहीं लौटी तो सियार ने नम्रता पूर्वक शेर से कहा कि हुज़ूर लगता है सियारी की नीयत में फर्क है। वह सोचती है कि जंगल के राजा जी कहीं सियार को दो बच्चे न दिलवा दें और इसीलिये वह बच्चों को लेकर यहाँ नहीं आई है। लेकिन मुझे आपसे न्याय की पूरी आशा है, अतः मैं जाकर अभी उन चारों को आपके पास ले आता हूँ। शेर ने आज्ञा दे दी और सियार भी पानी पीकर चलता बना।

कुछ देर तक तो शेर प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब भूख अधिक सताने लगी तो वह स्वयं ही चलकर सियार की मांद पर आया और दोनों को पुकार कर कहा कि तुम अपने तीनों बच्चों को लेकर शीघ्र आ जाओ, मैं अभी तुम्हारा न्याय कर देता हूँ। शेर की बात सुनकर दोनों

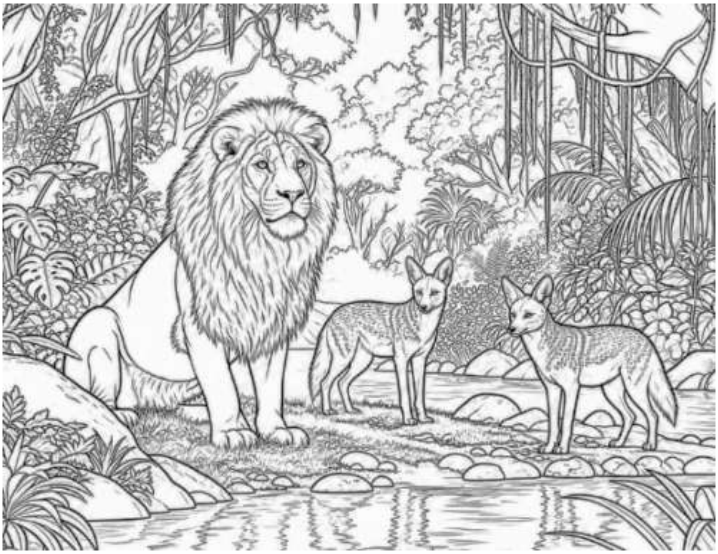

मन ही मन हँसे और सियारी ने मांद के अन्दर से ही जवाब दिया - जेठजी, हम ने तो अपने घर में ही मामला सुलटा लिया है। सियार दो बच्चे मांगता है तो इसे दो दे दूँगी और मैं एक पर ही सन्तोष कर लूंगी। आपने यहाँ तक ग्राने का कष्ट व्यर्थ ही किया, अब आप भले ही सिधार जाएँ।

सियारी की बात सुनकर शेर अपना सा मुँह लेकर चला गया। अपनी बुद्धिमानी से कोई किसी बड़ी मुसीबत से पार पा जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 134 : घर का भेदी लंका ढावे

लंका का राजा रावण बल, बुद्धि और शक्ति में अद्वितीय था। उसने कई देवताओं को भी अपने पराक्रम से परास्त कर दिया था। लेकिन अंततः उसका विनाश कैसे हुआ? उसके अपने ही घर के भेदी - विभीषण की वजह से!

लंका के युद्ध में भगवान श्रीराम की सेना ने रावण की विशाल सोने की नगरी को चारों ओर से घेर लिया था। रावण अपनी चतुराई और मायावी शक्तियों से युद्ध को लंबा खींच रहा था। लेकिन रावण के ही छोटे भाई विभीषण ने राम की सेना को कई महत्वपूर्ण रहस्य बताए, जिनके बिना रावण का वध संभव ही नहीं था!

मेघनाद (रावण का पुत्र) ने एक शक्तिशाली अस्त्र से लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया। पूरी वानर सेना चिंतित हो गई, क्योंकि लक्ष्मण जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहे थे। उसी समय विभीषण ने सुषेण वैद्य को बुलाने की सलाह दी।

विभीषण ने ही बताया था कि मेघनाद को मारने के लिए उसे उसके यज्ञ से पहले खत्म करना होगा, नहीं तो वह अजेय हो जाएगा!" लक्ष्मण ने यह जानकारी पाकर मेघनाद को उसी समय मार डाला।

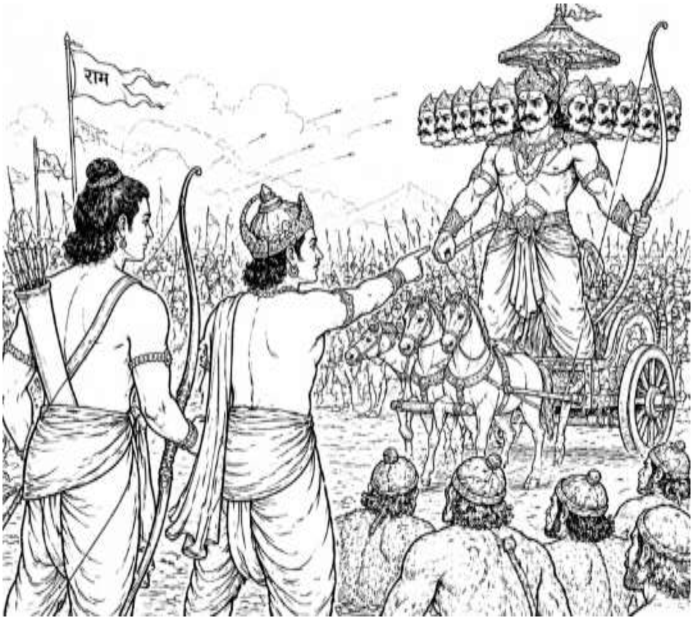

रावण की नाभि में अमृत था, जिसके कारण रावण को मारा नहीं जा सकता था। यह रहस्य भी विभीषण ने ही बताया! भगवान राम ने तब ब्रह्मास्त्र का उपयोग कर रावण की नाभि को निशाना बनाया और लंका का अंत हो गया।

अगर विभीषण रावण के रहस्य नहीं बताते, तो लंका को जीतना असंभव होता! इसीलिए जब अपने ही परिवार या समूह का व्यक्ति किसी का भेद खोलकर उसे बर्बाद कर देता है, तो यह कहावत कही जाती है। भारतीय सेनाएँ भी कई बार घर के भेदियों के कारण ही मुगलों और अंग्रेजों से हारी थीं।

: 135 : घर जल गया, तब चूड़ियां पूछीं

सुशीला को नई-नई चूड़ियां पहनने का बहुत शौक था। एक बार उसने अपनी सारी जमा पूँजी जोड़ कर और कुछ रूपये उधार ले कर सोने की चूड़ियां बनवाई। सुबह होते ही वह बड़ी उम्मीद से तैयार हुई। अपने हाथों को इधर-उधर घुमाकर, चूड़ियों की खनक से सबका ध्यान खींचने की कोशिश की। वह चाहती थी कि कोई तारीफ़ करे लेकिन दिन ढल गया, कोई कुछ नहीं बोला। पड़ोस की रामप्यारी आई, लेकिन उसने सब्ज़ी के भाव पूछे। मुंशीजी आए, लेकिन उन्होंने सिर्फ अपने चिट्ठी-पत्री की बात की। सुशीला को समझ नहीं आया कि उसकी चूड़ियों को कोई देख क्यों नहीं रहा।

शाम होते-होते उसका धैर्य जवाब दे गया। वह अंदर गई और घर के कोने में सूखी लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी। मोहल्ले में हड़कंप मच गया। "आग! आग!"

लोग दौड़ पड़े। कोई बाल्टी लेकर आया, कोई मिट्टी डालने लगा, कोई सिर्फ तमाशा देखता खड़ा रहा। लेकिन सुशीला को यही चिंता खाए जा रही थी कि कोई उसकी चूड़ियों को क्यों नहीं देख रहा है। वह बार बार हाथ उठा उठा कर जलते हुए घर की ओर इशारा करके कहने लगी - देखो मेरा घर जल रहा है।

इसी अफरा-तफरी में एक औरत की नज़र सुशीला के हाथों पर पड़ी। उसने आश्चर्य से पूछा, "अरी, बड़ी सुंदर चूड़ियां हैं, कब बनवाईं?"

सुशीला हल्की आवाज़ में बोली, "अगर तुमने यह सवाल सुबह ही पूछ लिया होता, तो मेरा घर क्यों जलता?" कोई व्यक्ति अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए मूर्खतापूर्ण हरकतें कर रहा हो तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 136 : घर में आए जोए, टेढ़ी पगड़ी सीधी होए

कहा जाता है कि एक युवक अत्यंत मनमौजी और लापरवाह स्वभाव का था। उसे न अपने आचरण की चिंता थी और न ही भविष्य की कोई परवाह। वह हमेशा अव्यवस्थित रहता और अपनी पगड़ी भी जान बूझ कर टेढ़ी-मेढ़ी ही बाँधता था। उसका अधिकांश समय इधर-उधर घूमने और व्यर्थ के कार्यों में बीतता था।

समय आने पर उसका विवाह हो गया और उसके घर में पत्नी का आगमन हुआ। अब उसके जीवन में नई ज़िम्मेदारियाँ आ गईं। घर-गृहस्थी संभालना और भविष्य के बारे में सोचना—इन सबने उसके स्वभाव में परिवर्तन ला दिया। उसका व्यवहार सुधरने लगा और यहाँ तक कि उसकी पगड़ी भी अब सीधी और सलीके से बँधी रहने लगी। गाँव के एक बुज़ुर्ग ने यह देख कर हँस कर कहा, “घर में जोरू आती है तो टेढ़ी पगड़ी भी सीधी हो जाती है।”

कहावत का अर्थ है कि जब जीवन में ज़िम्मेदारियाँ आती हैं, तो व्यक्ति का स्वभाव स्वयं ही सुधर जाता है।

: 137 : घर में जनाना पैर तो पड़ा

गंगा प्रसाद पूरे गाँव में अकेले आदमी थे जिनके कुँवारे होने की चर्चा हर नुक्कड़-चौराहे पर होती थी। उम्र निकलती जा रही थी, लेकिन बात कहीं तय नहीं हो पा रही थी। हर साल वे होली, दीवाली पर नए कपड़े पहनते, उम्मीद रखते कि शायद इस बार कोई लड़की पसंद कर ही ले, मगर अब तक उनका घर सूना ही था।

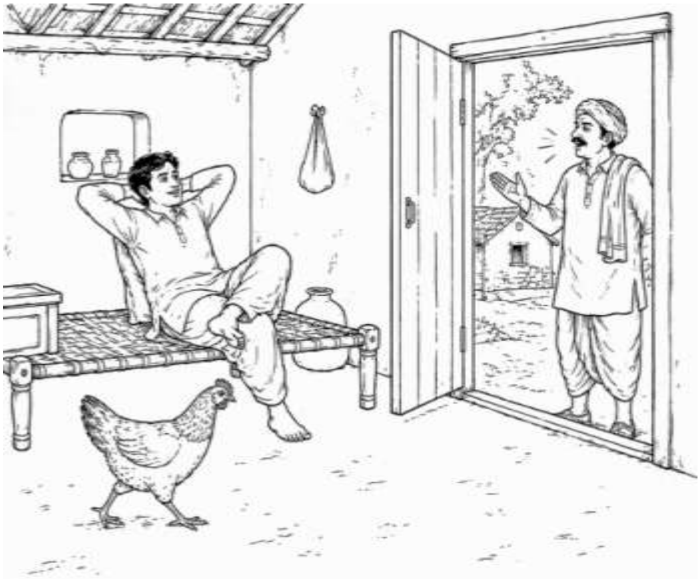

एक दिन दोपहर के समय, जब गंगा प्रसाद अपने दरवाजे पर बैठे मूंगफली फोड़ रहे थे, अचानक पड़ोस की मुर्गी फुदकती हुई उनके घर में घुस गई। पीछे-पीछे उसका मालिक लाठी लेकर भागा और गंगा प्रसाद को आवाज़ लगाई–"अरे ओ गंगा! तेरे घर में मेरी मुर्गी घुस गई है, इसके पहले कि वह कोई नुकसान कर दे, उसे जल्दी निकाल दे!" गंगा प्रसाद इत्मीनान से बैठे रहे, फिर लंबी सांस ले कर बोले, "अरे कोई बात नहीं! अच्छा शगुन है, घर में कोई जनाना पैर तो पड़ा!"

कोई अति आशावादी व्यक्ति नुकसान में भी फायदा देखने की कोशिश कर रहा हो तो मजाक में यह कहावत कही जाती है।

: 138 : घी संभाले तहरी, नाम बहू का होए

बहुत-सी महिलाओं की यह आदत होती है कि वे हर समय अपनी ही प्रशंसा सुनना चाहती हैं। दूसरों की तारीफ उन्हें अच्छी नहीं लगती, विशेषकर भाभी के सामने ननद की या सास के सामने बहू की प्रशंसा।

ऐसी ही एक महिला थी, जिसके घर में हमेशा उसी की तारीफ होती रहती थी। धीरे-धीरे वह स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने लगी।

कुछ समय बाद उसके बेटे की शादी हुई और घर में बहू आई। एक दिन घरवालों ने बहू से कहा कि वह अपने हाथ से कुछ बनाकर सबको खिलाए। बहू नई-नई आई

थी। उसे यह नहीं मालूम था कि घर में किस तरह का भोजन पसंद किया जाता है। उसने तहरी बनाई और उसमें खूब सारा घी डाल दिया।

घी अधिक होने के कारण तहरी बहुत स्वादिष्ट बनी। घर के सभी लोगों ने बहू की खुलकर प्रशंसा की। किसी ने सास से यहाँ तक कह दिया, "बहू ने तो आपसे भी अच्छी तहरी बनाई है!"

यह सुनते ही सास जल भुन कर ख़ाक हो गई। वह तुरंत बोली, "ज्यादा घी के कारण तहरी अच्छी बनी है, बहू की इस में क्या तारीफ़?"

जब कोई व्यक्ति दूसरों की सफलता या प्रशंसा को सहन नहीं कर पाता और उसकी चमक कम करने की कोशिश करता है, तब यह कहावत कही जाती है।

: 139 : घोड़ी के सींग थे

एक बार एक बनिये का छोटा-सा लड़का अपने खेत की रखवाली कर रहा था। तभी उसने देखा - एक आदमी तेजी से एक घोड़ी को लेकर खेतों के बीच वाले रास्ते से गुज़र गया। लड़के को कुछ गड़बड़-सी लगी, पर वह चुपचाप देखता रहा।

थोड़ी ही देर बीती थी कि धूल उड़ाते हुए कोतवाल अपने सिपाहियों के साथ वहाँ आ पहुँचा। उस ने लड़के से पूछा, "अरे लड़के! क्या तुमने इधर से किसी आदमी को घोड़ी ले जाते हुए देखा है?" लड़का भोला भाला था। अपनी नासमझी में वह बड़े अदब से बोला, "जी हुज़ूर, देखा तो है।"

कोतवाल तुरंत सतर्क हो गया, "तो चलो, हमारे साथ चलकर पहचान कर बताना पड़ेगा।" अब तो लड़का परेशान हो गया। उसने मन ही मन सोचा "यह तो बिना बात की आफ़त गले पड़ गई!"

लेकिन आखिर बनिये का लड़का था, अक्ल का इस्तेमाल करना जानता था। उसने तुरंत बात को मोड़ा और बड़े भोलेपन से बोला, "हुज़ूर, उस घोड़ी के तो बड़े-बड़े सींग थे, और आदमी ने उन्हीं सींगों में रस्सी बाँध रखी थी। वह इसी रास्ते से आगे गया है।"

कोतवाल ने यह सुना तो भौंहें चढ़ गईं, "अरे! घोड़ी के सींग?" उसे समझते देर न लगी कि लड़के ने घोड़ी नहीं, गाय देखी होगी। उसने समय न गँवाते हुए सिपाहियों से कहा, "चलो, आगे बढ़ो! यहाँ

समय बर्बाद करना बेकार है।" लड़का चैन की साँस लेकर फिर से अपने खेत की रखवाली करने लगा।

जब कोई व्यक्ति तुरत बुद्धि का उपयोग कर के किसी परेशानी को टाल दे तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 140 : चलत फिरत धन पाइए, बैठे पावे कौन

किसी गाँव में एक धनाढ्य व्यक्ति रहता था। उसके पास अच्छी खासी जमीन थी और बहुत सी गायें भी थीं पर वह न तो खेती पर ध्यान देता था और न ही अपनी गायों पर। उस के पास धन की हमेशा तंगी रहती थी और उसका स्वास्थ्य भी खराब रहता था।

एक बार उसके गाँव में एक महात्मा जी आए। वह उनके पास अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए कोई उपाय पूछने पहुँचा। महात्मा जी ने उसे बताया कि सुबह मुँह अँधेरे स्वर्ग से एक हंस इस धरती पर आता है। जो कोई उस हंस को एक बार देख लेता है उस के जीवन में कभी कोई संकट नहीं आता।

दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही वह व्यक्ति उठ कर उस हंस की तलाश में निकल पड़ा। गोशाला की ओर गया तो देखा कि ग्वाला गाय का दूध दुह कर अपने घर ले जा रहा है। मालिक को देख कर वह हड़बड़ा गया और क्षमा मांगने लगा। खलिहान के पास से निकला तो देखा कि उसका पुराना विश्वसनीय सेवक बोरी में अनाज भर रहा है। वह भी सिटपिटा गया और माफ़ी मांगने लगा।

पूरे सप्ताह वह हंस की तलाश में घूमता रहा और जहाँ भी वह गया वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ी होती मिली। उसको अपने स्वास्थ्य में भी बहुत परिवर्तन महसूस हुआ। वह फिर उन महात्मा से मिलने गया और उन्हें बताया कि हंस तो उसे नहीं मिला पर हंस की खोज में जाने से लाभ बहुत हुआ। महात्मा जी ने कहा कि वत्स! हंस तो तुम्हें मिल गया। परिश्रम ही वह हंस है।

: 141 : चार चोर चौरासी बनिया, एक एक कर लूटा

एक लंबी दूरी की ट्रेन के एक डिब्बे में तीर्थयात्रियों का समूह सफर कर रहा था। कोई खिड़की से बाहर भागते पेड़ों को निहार रहा था, कोई अपने साथ लाए पूड़ी-अचार का आनंद ले रहा था। कुछ लोग धीमे स्वर में भजन गुनगुना रहे थे, तो कुछ ताश के पत्तों में डूबे हुए थे। ऊपर की बर्थ पर कुछ यात्री गहरी नींद में थे।

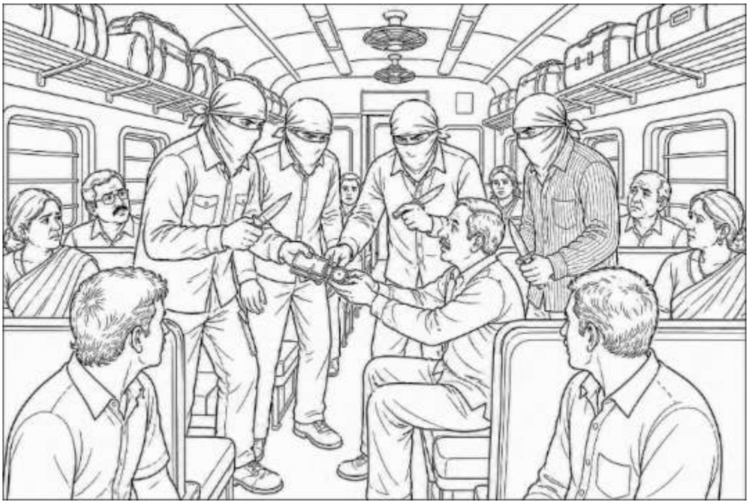

अचानक ट्रेन एक सुनसान जंगल के बीच कुछ देर के लिए रुक गई। चार अनजान चेहरे डिब्बे में चढ़ आए। उनके चेहरे पर कठोरता और इरादों में स्पष्ट दुष्टता झलक रही थी। असल में चारों डाकू थे।

ट्रेन चल पड़ी और उसके बाद चारों बदमाश धीरे-धीरे डिब्बे के एक सिरे से आगे बढ़ने लगे। वे एक-एक यात्री के पास जाते, उसे धमकाते, और उसके पास जो भी कीमती वस्तु या धन होता, छीन लेते। किसी ने विरोध करने की कोशिश नहीं की। हर कोई सोच रहा था, "मेरे अकेले के बोलने से क्या होगा? बेहतर है चुपचाप जो है दे दूँ, जान तो बची रहेगी।"

बदमाशों का हौसला बढ़ता गया। वे निश्चिंत होकर एक-एक सीट पर पहुँचते, और यात्री चुपचाप अपना सामान उनके हवाले कर देते। कुछ ही देर में वे डिब्बे के दूसरे छोर तक पहुँच गए। अंतिम यात्री को लूटकर उन्होंने चेन खींची और सरकती हुई ट्रेन से कूदकर जंगल में गायब हो गए।

कुछ देर बाद एक बुजुर्ग यात्री ने भारी स्वर में कहा, "हम इतने लोग थे... और वे केवल चार। यदि हम सब मिलकर खड़े हो जाते, तो क्या वे ऐसा कर पाते?"

वैसे तो यह कहावत बनियों के डरपोकपने पर व्यंग्य करने के लिए कही जाती है पर यह हमें सोचने पर मजबूर भी करती है। हमारा देश भी बार बार इसी कारण

से गुलाम हुआ क्योंकि हमारी सारी रियासतों के लोग मिल कर बाहरी हमलावरों का प्रतिकार नहीं करते थे।

: 142 : चार लठा के चौधरी, पांच लठा के पंच, जिनके घर में छह लठा, वो अंच गिनें न पंच

शहर में रहने वाले लोग इस बात को महसूस नहीं कर सकते कि गाँवों में आज भी कानून व्यवस्था का बुरा हाल है। अभी भी वहाँ काफी कुछ जिसकी लाठी उसकी भैंस की तर्ज पर काम होता है। कहा जाता है कि जिस घर के चार सदस्य लठैत हों वह गाँव का चौधरी बन जाता है, जहाँ पांच लाठी चलाने वाले हों वह पंच, जहाँ छह हों वह किसी को कुछ नहीं गिनता।

एक दिन गांव में मारपीट हो गई। कुछ दबंग लोगों ने कमजोर लोगों को पीटा और गालियाँ दीं। अगले दिन पंचायत बुलाई गई और उसमें दोनों तरफ के लोगों को बुलाया गया। जब एक-एक करके दोनों पक्षों को सुना गया।

पंच लोगों ने बैठकर आपस में तय किया कि जिसने गलती की है वह माफी मांगे। दबंग लोगों ने कहा कि हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे। और कहा, "जो कुछ हमारा कर मिले, कर लो।" कहावत का अर्थ है कि जिस के पास ताकत है वह कानून को अपने हिसाब से चला सकता है

: 143 : चाहने के नाम गधी ने खेत खाना छोड़ दिया

एक गधी पास के खेत में जाकर फसल खा जाया करती थी। खेत के मालिक ने उसे कई बार उसे डंडों से पीटा पर वह अपनी आदत से बाज़ नहीं आती थी।

एक दिन मालिक ने एक अलग उपाय सोचा। उसने गधी के पास जाकर धीरे से उसके कान में कहा, “मैं तुमसे बहुत मोहब्बत करता हूँ।” उस दिन के बाद गधी खेत में आती तो थी लेकिन उसने फसल खाना छोड़ दिया।

इस कहावत को इश्क करने वालों का

मजाक उड़ाने के लिए प्रयोग करते हैं। लोग मजाक में कहते हैं कि इश्क वो चीज है जो गधों तक के सर पे चढ़ के बोलता है।

: 144 : चील रंग सब कोई सियारी रंग कोई न
(चील्हो रंग सब कोय सियारो रंग कोय न)

बहुत समय पहले की बात है। जंगल में एक चील और एक सियारिन के बीच गहरी मित्रता थी। एक बार दोनों ने मिलकर "जीवित्पुत्रिका व्रत" किया, ताकि उनके होने वाले बच्चे लंबी उम्र पाएं और सुखी जीवन जिएं।

दिनभर का उपवास था। चील तो धैर्यपूर्वक पेड़ की शाखा पर बैठी रही, लेकिन सियारिन से भूख बर्दाश्त नहीं हुई। वह धीरे-धीरे अपनी माँद की ओर गई और कहीं से एक हड्डी-सहित माँस का टुकड़ा उठाकर खाने लगी। जैसे ही उसने खाने के लिए हड्डी तोड़ी, उससे कट-कट की आवाज़ आने लगी।

चील ने ऊपर से सुन लिया। उसने पूछा, "सखी, तुम्हारी माँद से यह कैसी कट-कट की आवाज़ आ रही है?"

सियारिन को डर था कि उसकी चोरी पकड़ न जाए, इसलिए उसने झूठ बोल दिया, "अरे, कुछ नहीं! भूख के मारे मेरे शरीर की हड्डियाँ पटपटा रही हैं।"

चील ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसे कुछ शक ज़रूर हुआ। समय बीतता गया। संयोग से अगले जन्म में चील एक रानी बनी और सियारिन एक वणिक (व्यापारी) स्त्री। दोनों के सात-सात पुत्र हुए।

लेकिन एक अजीब बात हुई–जब भी रानी के बेटे की शादी होती, उसी समय वणिक स्त्री का एक बेटा मर जाता।

शुरू में उस ने इसे संयोग समझा, लेकिन जब यह घटना बार-बार हुई, तो वह घबरा गई। आखिरकार, वह अपनी पुरानी सहेली रानी के पास गई और रोते हुए पूछा–

"सखी, ऐसा क्यों हो रहा है? जब भी तुम्हारे घर में खुशी आती है, मेरे घर में मातम छा जाता है। इसका क्या कारण है?"

रानी ने गंभीर स्वर में कहा, "सखी, यह सब तुम्हारे पूर्वजन्म के कर्मों का फल है। याद है, जब हमने जीवित्पुत्रिका व्रत किया था? तुमने भूख से तड़पकर माँस खा लिया और झूठ भी बोला। उसी व्रतभंग के पाप के कारण तुम्हारे पुत्रों की अकाल मृत्यु हो रही है।"

वणिक स्त्री अपनी गलती समझ चुकी थी, लेकिन अब पछताने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी।

बड़े बुज़ुर्ग लोग अपने से छोटों को ईमानदारी का उपदेश देने के लिए इस प्रकार की कहानियों और कहावतों का प्रयोग करते हैं।

: 145 : चूल्हे पर तलवार चलाई, तोऊ चुखरिया मार न पाई

एक राजकुमार अपनी बहादुरी की बड़ी-बड़ी डींगें मारा करता था। उसकी भाभी अक्सर उससे मजाक किया करती थी।

एक दिन रसोई में एक छोटी चुहिया सबको परेशान कर रही थी। भाभी ने राजकुमार को चुनौती दी कि वह युद्ध तो जीत सकता है, लेकिन इस चुहिया को नहीं मार सकता।

राजकुमार ने अहंकार में आकर तलवार निकाल ली और चुहिया पर वार करने की कोशिश की। चुहिया फुर्ती से कभी कहीं कभी कहीं छिप जाती।

राजकुमार का निशाना हर बार चूक जाता और उसकी तलवार कभी चूल्हे पर तो कभी बर्तनों पर लग जाती। अंत में, राजकुमार पसीने से लथपथ हो गया और चुहिया खुद ही भाग गई। राजकुमार की हालत देखकर भाभी खूब हँसी।

कोई व्यक्ति अपनी बहादुरी की डींगें मारता हो पर मौके पर कुछ न कर पाए तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 146 : चोर की दाढ़ी में तिनका

एक काजी का न्याय करने के मामले में दूर-दूर तक नाम था। एक बार उसके यहाँ एक अजीब मुकदमा आया। चोरी के शक में चार आदमियों को कचहरी में हाजिर किया गया था। गवाहों के बयान सुनने के बाद और सबूतों को देखने-समझने के बाद असली चोर का निर्णय नहीं हो पा रहा था।

काजी ने ये सारे मुजरिमों को गौर से देखा। अचानक एक उपाय उसके दिमाग में एक विचार कौंध गया। काजी ने देखा कि सब मुजरिमों की दाढ़ियाँ हैं। उसने अँधेरे में एक तीर छोड़ा। मुजरिमों की ओर इशारा करते हुए वह जोर से बोला "चोर की दाड़ी में तिनका।"

असली चोर ने सोचा कि कहीं मेरी दाढ़ी में तो तिनका नहीं है। यही सोचकर उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा। दाढ़ी पर हाथ फेरते ही काजी ने कहा, चोर यही है, इसे गिरफ्तार कर लिया जाए ।

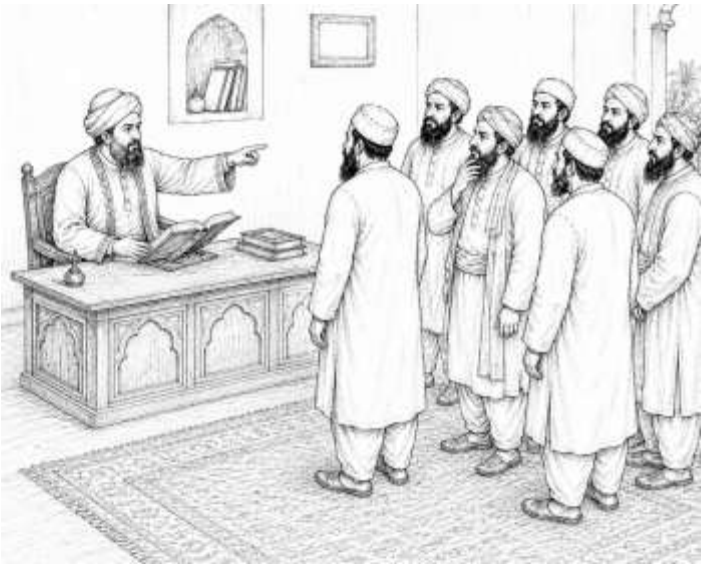

कहावत का अर्थ है कि चोर डरपोक होता है और उसे हमेशा इस बात का डर बना रहता है कि वह पहचान न लिया जाए।

: 147 : चोर के पैर कितने

एक गृहस्थ के घर में छोटा-सा मंदिर था। प्रतिदिन भोग के रूप में भगवान को मेवा का लड्डू चढ़ाया जाता था। एक दिन जब गृहस्वामिनी पूजा के लिए मंदिर में गईं तो देखा कि थाली से लड्डू गायब है। घर में नौकर-चाकर भी थे और उनके चार छोटे-छोटे बच्चे भी। गृहस्वामिनी ने पहले चारों बच्चों पर शिकंजा कसा। बच्चे भोले थे, दुनिया के छल-कपट और होशियारी से अनजान।

माँ ने प्रत्येक बच्चे के हाथ में एक-एक सींक दी और बोलीं, “देखो बच्चों, ये चारों सींकें बराबर हैं। तुम सब अपनी-अपनी सींक लेकर अलग-अलग कोनों में खड़े हो जाओ। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ। जिसने लड्डू चुराया है, उसकी सींक अपने-आप दो अंगुल लंबी हो जाएगी।”

बच्चे अपनी-अपनी सींक लेकर अलग खड़े हो गए। माँ मंदिर में जाकर हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं।

चारों में से ही एक बच्चे ने लड्डू चुराया था। उसके मन में डर बैठ गया, “अगर मेरी सींक सचमुच दो अंगुल लंबी हो गई तो मेरी चोरी पकड़ी जाएगी!” घबराहट में उसने चुपके से अपनी सींक दो अंगुल तोड़ दी, ताकि वह बाकी सींकों के बराबर ही रहे।

कुछ देर बाद माँ ने सभी को बुलाया और उनकी सींकें इकट्ठी कीं। एक सींक बाकी से छोटी निकली। माँ मुस्कुराईं और उसी बच्चे की ओर इशारा कर बोलीं, "चोरी तुमने ही की है।" बच्चा सकपका गया और सिर झुका लिया।

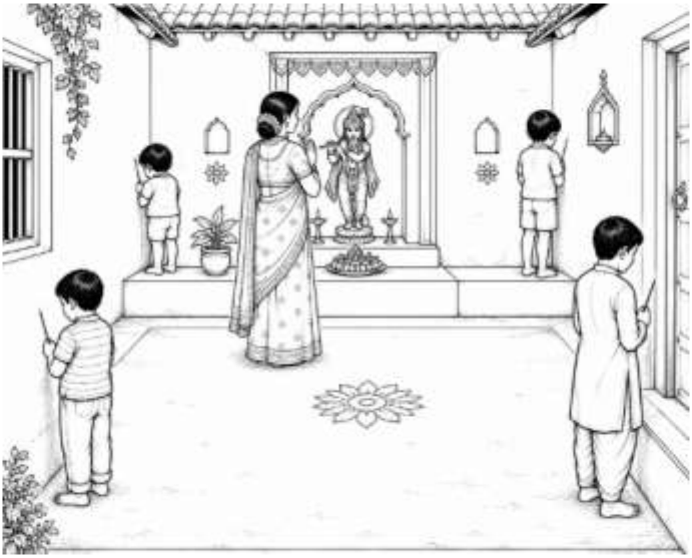

कहावत का अर्थ है कि कि चोर का मन हमेशा भय से भरा रहता है। वह स्वयं ही ऐसी भूल कर बैठता है जिससे उसका अपराध प्रकट हो जाता है।

: 148 : चोर चोरी से जाए, हेराफेरी से न जाए

बहुत समय पहले की बात है। एक कुख्यात चोर था, जो जीवनभर चोरी करता रहा। परंतु एक दिन उसके मन में पश्चाताप जागा। उसने सोचा, "अब तक मैंने बहुत बुरे कर्म किए हैं, अब साधु बनकर ईमानदारी की जिंदगी बिताऊँगा।"

बस, वह सब कुछ छोड़कर एक आश्रम में चला गया और साधु के वेश में रहने लगा। दिनभर पूजा-पाठ करता, सत्संग सुनता, और लोगों को धर्म की शिक्षा देता। लेकिन बहुत कोशिश के बाद भी उसकी चोर प्रवृत्ति अभी भी पूरी तरह मरी नहीं थी।

जब आश्रम के अन्य साधु गहरी नींद में होते, तब वह धीरे-धीरे उठता और एक साधु के सिर के नीचे रखी गठरी उठाकर दूसरे के सिर के नीचे रख देता, फिर दूसरी की पहली के पास रख देता। इसी तरह चीजों को इधर-उधर बदल देता। इससे उसे चोरी करने जैसी संतुष्टि मिल जाती थी!

एक रात, जब वह अपनी हेराफेरी में लीन था, तभी एक साधु की आँख खुल गई। उसने देखा कि यह नवनिर्मित साधु चुपचाप गठरियों को इधर-उधर कर रहा था। सभी साधु जाग गए और उसे पकड़कर पूछा,"अरे भाई! यह तुम क्या कर रहे हो?"

चोर-साधु ने पहले तो लज्जित होकर सिर झुका लिया, फिर हँसते हुए बोला, "क्या करूँ, आदत से मजबूर हूँ! चोर चोरी से जाए, पर हेराफेरी से नहीं जा सकता!"

कहावत का अर्थ है कि इंसान कितना भी बदलने की कोशिश करे, उसकी बुनियादी आदतें कभी न कभी उभर ही आती हैं!

: 149 : चोर लाठी दो जने, हम बाप-पूत अकेले

एक गाँव में एक ठाकुर साहब अपने जवान बेटे के साथ रहते थे। दोनों को अपनी बहादुरी के किस्से सुनाने का बड़ा शौक था। वे अक्सर गाँव वालों के सामने अपनी वीरता की डींगें हाँकते रहते थे। गाँव वाले अच्छी तरह जानते थे कि वास्तव में दोनों बड़े डरपोक हैं, लेकिन उन के मुँह पर कुछ नहीं कहते थे।

एक दिन गाँव के एक मसखरे व्यक्ति ने उनकी असलियत सामने लाने की ठान ली। एक सुनसान रास्ते पर, जब ठाकुर साहब और उनका बेटा जा रहे थे, तभी वह व्यक्ति चेहरे पर कपड़ा बाँधकर और हाथ में मोटी लाठी लेकर उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसने आवाज बदलकर कड़क स्वर में कहा, “जो कुछ भी तुम्हारे पास है, निकाल दो! नहीं तो इसी लाठी से सिर फोड़ दूँगा!”

पिता-पुत्र ने पहले थोड़ी अकड़ दिखाने की कोशिश की, “तुम जानते नहीं, हम कौन हैं! हम फलाँ गाँव के ठाकुर हैं!” यह सुनकर उस व्यक्ति ने लाठी हवा में घुमाई और, और भी जोर से डपटते हुए कहा, “निकालते हो या अभी करूँ सिर के टुकड़े!” अब तो दोनों के होश उड़ गए। उन्होंने तुरंत अपनी जेब से रूपये पैसे निकाले और उसके हाथ में देकर वहाँ से भाग खड़े हुए।

भागते-भागते वे गाँव की चौपाल में पहुँचे। हाँफते हुए और पसीने से तर-बतर देखकर लोगों ने पूछा, “क्या हुआ?” उन्होंने बात छिपाने के लिए कहा, “रास्ते में दो बदमाश मिल गए, इसलिए हमें भागना पड़ा!”

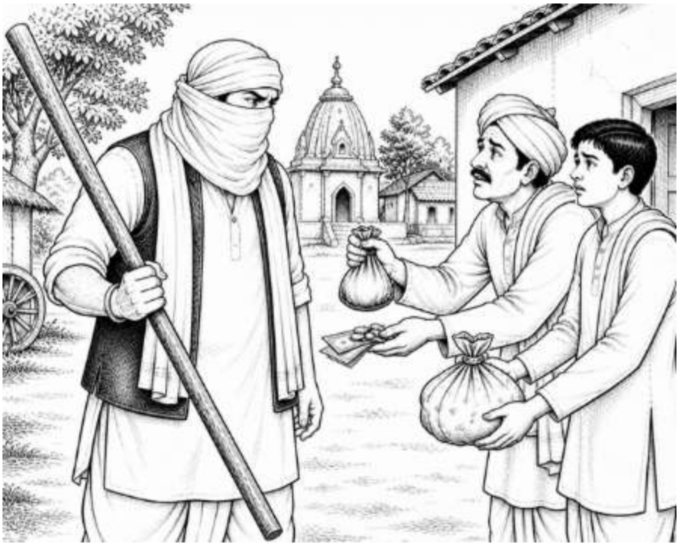

इतने में वह मसखरा व्यक्ति भी वहाँ आ गया और उसने पूरी सच्चाई सबको बता दी। अब अपनी इज्जत बचाने के लिए ठाकुर साहब बोले, “अरे, चोर और उसकी लाठी–दो जने थे, और हम बाप-पूत अकेले! इसलिए भागना पड़ा।”

कहावत का अर्थ है कि डरपोक व्यक्ति अपनी कायरता छिपाने के लिए अजीब-अजीब तर्क और बहाने गढ़ता है।

: 150 : चोरी का माल सब कोई खाए, चोर की जान अकारथ जाए

एक व्यक्ति ने बहुत सी चोरियाँ कीं लेकिन एक चोरी में वह पकड़ा गया। न्यायालय ने उसे अपराध का दोषी मानते हुए मृत्युदंड सुनाया। दंड दिए जाने से पहले उसकी अंतिम इच्छा के रूप में उसे अपनी माँ से मिलने का अवसर दिया गया। जब वह अपनी माँ के पास पहुँचा, तो उसने उसे पास बुलाया और अचानक उसके कान को काट लिया।

यह देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने उससे पूछा, “तुमने ऐसा क्यों किया?” उसने उत्तर दिया, “जब मैं बचपन में छोटी-छोटी चोरियाँ करता था, तब मेरी माँ ने मुझे कभी नहीं रोका। बल्कि वह चोरी के माल से ऐश करती रही। यदि उस समय मुझे सही राह दिखाई होती, तो आज मुझे यह दंड नहीं भुगतना पड़ता।”

कहावत का अर्थ है कि अपराध से मिलने वाले लाभ में कई लोग सहभागी होते हैं, पर उसके दुष्परिणाम और दंड अंततः अपराधी को ही भुगतने पड़ते हैं।

: 151 : चोरी को भी हुनर चाहिए

एक शातिर दिमाग वाले व्यक्ति को एक बार किसी नवाब के यहाँ दावत का निमंत्रण मिला। शानदार हाल में गोल मेज़ों पर कीमती मेज़पोश बिछे थे। उन पर चाँदी के चम्मच, बढ़िया बर्तन और तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन सजे हुए थे। उसने जी भरकर भोजन किया।

खाने के बाद उसके मन में लालच जागा–किसी तरह एक चाँदी का चम्मच जेब में रख लिया जाए। लेकिन डर था कि कहीं पकड़ लिया गया तो बेइज्जती हो जाएगी। तभी उसकी नज़र पास बैठे एक सज्जन पर पड़ी, जो चुपचाप एक चम्मच अपनी जेब में रख चुके थे। यह देखकर उसके दिमाग में एक तरकीब आई।

पास ही में बहुत से लोग एक मेज पर इकट्ठे थे। वह उनके पास गया और बोला, “मैं जादू का खेल दिखा सकता हूँ। आप लोग देखना चाहेंगे?” सब उत्सुक हो गए, “हाँ हाँ ज़रूर दिखाइए!” उसने हाथ में एक चम्मच लेकर कहा, “देखिए, इसे मैं अपनी जेब में डालता हूँ और यह सामने बैठे सज्जन की जेब से निकलेगी।”

सबकी निगाहें उधर टिक गईं। वह उन सज्जन के पास पहुँचा और बोला, “जनाब, मेरी चम्मच आपकी जेब में पहुँच गई है।” अब वह सज्जन क्या कहते! अगर मना करते तो उनकी अपनी चोरी पकड़ी जाती। उन्होंने चुपचाप अपनी जेब से चम्मच निकालकर मेज़ पर रख दी। सबने तालियाँ बजाईं।

जादूगर साहब मुस्कुराए, और फिर हाथ झाड़ कर सबको सलाम कर के आराम से चलते बने। एक चम्मच आराम से उनकी जेब में चला गया।

: 152 : छछूंदर के सर में, चमेली का तेल

एक सज्जन अपनी पत्नी की अत्यधिक फैशनपरस्ती से परेशान थे। पत्नी की शक्ल तो अजीब सी थी लेकिन वह अपने आप को बहुत सुंदर समझती थी। उसकी इस फिजूल खर्ची पर हल्के से भी टोक देने पर खूब क्लेश भी करती थी। और सब तरह के फैशन करने के अलावा उसको तरह तरह के इत्र लगाने का बहुत शौक था।

एक दिन उनकी पत्नी श्रृंगार करते-करते इत्र की शीशी खुली छोड़कर कुछ देर के लिए कहीं चली गई। इसी बीच एक छछूंदर वहां से निकली। छछूंदर के टकराने से इत्र की शीशी गिर गई और बहुत सारा कीमती इत्र छछूंदर के शरीर पर लग गया। वह सज्जन सांस रोक कर इस दृश्य को देख रहे थे।

तब तक उनकी पत्नी भी लौट कर आ गई और इस दृश्य को देखकर आग बबूला हो गईं। तब उन सज्जन ने लंबी सांस लेकर कहा - अजब तेरी कुदरत अजब तेरे खेल, छछूंदर भी डाले चमेली का तेल। सीधे सीधे तो उनकी कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी पर छछूंदर के बहाने उन्होंने पत्नी पर भी निशाना साध लिया।

किसी अयोग्य व्यक्ति को बहुत उच्च स्तरीय सुविधाएं मिल जाए तो लोग व्यंग्य में इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

: 153 : छोड़ झाड़, मुझे डूबन दे

एक गाँव में एक बड़ी नाटकबाज महिला रहती थी। उसकी आदत थी—बात-बात पर जान देने की धमकी देना! अगर घर में किसी ने उसकी बात नहीं मानी, तो वह कहती, "मैं जहर खा लूँगी!" अगर किसी से झगड़ा हो गया, तो बोलती, "मैं कुएँ में कूद जाऊँगी!" लोग उसकी धमकियों को ज़्यादा गंभीरता से नहीं लेते थे। एक दिन उसका पति बाजार से बिना उसकी पसंद की साड़ी लाए लौट आया। वह जोर-जोर से

रोने लगी, "अब इस जालिम दुनिया में रहने का कोई फायदा नहीं! मैं जाकर तालाब में कूद जाऊँगी!"

यह कहकर वह सचमुच तालाब की तरफ दौड़ पड़ी। गाँव के कुछ लोग उसके पीछे-पीछे भागे, यह देखने के लिए कि अब नया तमाशा क्या होने वाला है। वह एक तालाब में उतर गई, लेकिन सच में डूबने की हिम्मत कहाँ थी? उसने अंदर ही अंदर एक झाड़ी का सहारा पकड़ लिया और झाड़ी को पकड़कर चिल्लाने लगी, "अरे झाड़, मुझे छोड़ दे! मुझे डूबने दे!"

गाँव वाले यह देखकर हँस-हँसकर लोटपोट हो गए। लोग समझ गए थे कि वह हमेशा की तरह सिर्फ नाटक कर रही थी। सबने उसे वहीं छोड़ दिया और हँसते हुए अपने-अपने काम पर लौट गए। उस बेचारी को मजबूरी में खुद ही तालाब से निकलना पड़ा। यह कहावत नाटकबाज लोगों का मजाक उड़ाने के लिए इस्तेमाल की जाती है!

: 154 : जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तब जानी

पुराने समय की बात है। एक गाँव में एक किसान की एक कानी बेटी थी। उसकी शादी करवाने में बड़ी परेशानी हो रही थी, क्योंकि लोग उसकी कमी देखकर रिश्ता ठुकरा देते थे। किसान और उसके परिवार को डर था कि कहीं लड़की कुंवारी न रह जाए।

अंत में हताश हो कर किसान और उसके कुछ रिश्तेदारों ने एक चाल चली। उन्होंने दूल्हे वालों को लड़की की इस कमी के बारे में नहीं बताया और किसी तरह शादी की बात पक्की कर दी। लड़के वाले देखने आए तो लड़की का घूंघट करवा दिया गया और मीठी-मीठी बातें करके सबको मना लिया गया।

शादी से पहले दूल्हे के परिवार को इस धोखे की भनक लग गई। अब उन्होंने भी एक चालाकी की। वे असली दूल्हे की जगह एक लंगड़े लड़के को लेकर बारात में आ गए! शादी पूरी धूमधाम से हुई। कन्या का पिता बड़ा खुश था कि उसने अपनी कानी बेटी की शादी धूमधाम से कर दी और किसी को पता भी नहीं चला।

शादी के बाद कन्या के पिता ने गर्व से कहा, "जग जीता मोरी कानी!" तब दूल्हे के पिता ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "वर ठाढ़ होय तब जानी!" (दूल्हे को खड़ा तो होने दो, फिर देखना जीत किसकी हुई!)

जब दो शातिर लोग एक दूसरे को धोखा दें तो यह कहावत कही जाती है।

: 155 : जब किस्मत मारे जोर, तब खेत निराएं चोर

एक गरीब किसान था। वह दिन-रात मेहनत करता, लेकिन फिर भी उसके खेत का काम पूरा नहीं हो पाता। इस बार खेत की निराई का समय आ गया था, लेकिन वह अकेले सारा खेत निरा नहीं सकता था। मजदूरों को बुलाने के लिए पैसे नहीं थे।

एक दिन शाम को, कुछ चोर सिपाहियों से बचते हुए भागते-भागते उसके खेत में आ पहुँचे। वे छिपने की जगह ढूँढ रहे थे। किसान ने उन्हें देखा और ज़ोर से ललकारा–"कौन हो तुम लोग? क्या कर रहे हो मेरे खेत में?"

चोरों ने तुरंत हाथ जोड़ लिए और बोले, "भाई, हमें सिपाहियों से बचा लो! हम चोर हैं, अगर पकड़े गए तो मारे जाएंगे।"

किसान ने मौके को भाँप लिया। उसने मुस्कुराते हुए कहा–"ठीक है, मैं तुम्हें बचा सकता हूँ, लेकिन एक शर्त पर। तुम लोग जब तक यहाँ हो, मेरे खेत की निराई कर दो। अगर सिपाही आए, तो मैं कह दूँगा कि तुम मेरे मजदूर हो!" चोरों के पास कोई और चारा नहीं था। मजबूरी में वे जुट गए।

थोड़ी देर बाद, सिपाही सच में वहाँ आ गए और रामू से पूछा, "इधर से कुछ चोर भागते हुए तो नहीं आए?" रामू ने मुस्कान दबाते हुए कहा, "नहीं हुज़ूर, यहाँ तो सिर्फ मेरे मजदूर काम कर रहे हैं!"

सिपाही वहाँ से चले गए और चोरों ने राहत की साँस ली। खेत की निराई भी हो गई।

कहावत का अर्थ है कि कि कभी-कभी किस्मत ऐसा खेल खेलती है कि मुसीबत के समय मदद वहीं से मिल जाती है, जहाँ से कोई उम्मीद ही नहीं होती!

: 156 : जले पांव की बिल्ली

किसी गाँव में एक साहूकार रहता था। उसने अपने घर में एक बड़ी सी बिल्ली पाल रखी थी, जो हर समय घर में इधर-उधर घूमती रहती थी। एक दिन उस बिल्ली के पांव में चोट लग गई। साहूकार ने उसके जख्म पर मिट्टी के तेल में भिगोया हुआ कपड़ा लपेटकर पट्टी बाँध दी।

अब बिल्ली तो बिल्ली थी, वह रसोई में चली गई। वहाँ चूल्हा जल रहा था, जिससे पट्टी में आग लग गई! आग लगते ही बिल्ली घबराकर पूरे घर में इधर-उधर दौड़ने लगी। साहूकार का घर व्यापारियों का अड्डा भी था। वहाँ तरह-तरह के कपड़ों के गट्ठर और रुई के बोरे रखे थे। बिल्ली की भाग-दौड़ से उन्होंने भी आग पकड़ ली, और देखते ही देखते घर में हाहाकार मच गया।

दर्द और दहशत के मारे बिल्ली घर से बाहर भागी और गली-मोहल्लों में दौड़ने लगी। किसी कच्चे घर में घुसी, तो वहाँ आग की लपटें फैल गईं। बिल्ली पूरे गाँव के लिए आफत बन गई!

व्यवहार में यह कहावत किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग की जाती है जो अपनी धूर्तता द्वारा गाँव भर में घूम घूम कर झगड़े की आग लगा देता है

: 157 : जहां काम आवे सुई, कहा करे तलवार

गहरे जंगल में एक विशालकाय शेर रहता था। एक दिन वह अपनी मांद में चैन की नींद सो रहा था। तभी एक नन्हा-सा चूहा उस के ऊपर चढ़ गया। शेर की नींद खुल गई। गुस्से में आकर उसने अपने भारी-भरकम पंजों में उस चूहे को जकड़ लिया।

डर के मारे चूहे की जान सूख

गई। वह गिड़गिड़ाने लगा, "महाराज, कृपा कीजिए! मुझसे भूल हो गई। मुझे छोड़ दीजिए, शायद किसी दिन मैं आपके काम आ जाऊँ!"

शेर ज़ोर से हँस पड़ा। "तू? मेरे काम आएगा? हा हा हा! पर न जाने क्यों, शेर का दिल पसीज गया। उसने चूहे को छोड़ दिया और वापस सो गया।

समय का चक्र घूमा। कुछ दिनों बाद वही शेर जंगल में शिकार के लिए निकला। वह इधर-उधर घूम ही रहा था कि अचानक एक शिकारी के बिछाए जाल में फँस गया। उसने पूरी ताकत लगाकर खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन मजबूत जाल उसकी ताकत से नहीं टूटा।

अब शेर की दहाड़ें जंगल में गूंजने लगीं। उसकी आवाज सुनकर चूहा तुरंत दौड़ा-दौड़ा आया। उसने देखा कि शेर बुरी तरह फँसा हुआ है।

"महाराज, घबराइए मत! मैं अभी आपको छुड़ाता हूँ!" यह कहकर चूहे ने अपने पैने दाँतों से जाल को कुतरना शुरू किया। जल्दी ही उसने जाल में इतना बड़ा छेद कर दिया कि शेर आसानी से बाहर आ गया।

कहावत का अर्थ है कि छोटे लोगों को कभी भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए। रहीम कवि का कहा हुआ पूरा दोहा इस प्रकार है–"रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डार, जहां काम आवे सुई कहा करे तलवार।"

: 158 : जहाँ चाह, वहाँ राह

एक कौआ बहुत प्यासा था और पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। अंत में उसे एक घड़ा दिखाई दिया, लेकिन उसमें पानी बहुत नीचे था, जिसकी वजह से कौआ अपनी चोंच पानी तक नहीं पहुँचा पा रहा था। निराश होने के बजाय, कौए ने एक तरकीब सोची। उसने आसपास पड़े छोटे-छोटे पत्थरों को उठाकर घड़े में डालना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे पानी ऊपर आ गया और कौए ने पानी प्रयास कर अपनी प्यास बुझाई। कहावत का अर्थ है कि यदि

व्यक्ति में वास्तविक इच्छाशक्ति हो तो वह कठिन कामों के लिए भी रास्ता निकाल लेता है।

: 159 : जा को रखवाल गोपाल धनी, ता को बलदाऊ कहा करिहैं

महाभारत का युद्ध समाप्ति पर था। कौरवों की सेना लगभग समाप्त हो चुकी थी। युद्ध के अंतिम क्षणों में जब दुर्योधन ने देखा कि अब वह अकेला बचा है, तो वह रणभूमि छोड़कर एक झील में जाकर छिप गया। भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को उसकी छिपने की जगह बताई और दुर्योधन को युद्ध के लिए ललकारने भेजा।

ललकार सुन कर दुर्योधन पानी से बाहर निकला। वह अत्यंत कुशल गदाधारी था और बलराम जी का प्रिय शिष्य था। उसने कहा, "मैं पांडवों में से किसी एक से गदा युद्ध करूँगा। यदि मैं जीत गया, तो यह राज्य मेरा रहेगा!" पांडवों की ओर से भीमसेन आगे बढ़े। दोनों महायोद्धाओं के बीच भयंकर गदा युद्ध आरंभ हुआ। माता गांधारी के वरदान के कारण दुर्योधन का शरीर लोहे जैसा मजबूत हो चुका था इसलिए भीम की गदा उस का कुछ बिगाड़ नहीं पा रही थी।

तभी भगवान श्रीकृष्ण ने भीम को इशारे से दुर्योधन की जंघा पर प्रहार करने का संकेत दिया। कारण यह था कि दुर्योधन की जांघ ही कुछ कमजोर थी। भीम को भी याद आया कि द्रौपदी के चीरहरण के समय जब दुर्योधन ने द्रोपदी से सब के सामने अपनी जंघा पर बैठने के लिए कहा था, तब उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, "मैं इस का बदला अवश्य लूँगा और दुर्योधन की जंघा तोड़कर उसका वध करूँगा!" वैसे गदायुद्ध के नियमों के अनुसार जंघा पर वार करना मना होता है।

इसलिए, उन्होंने पूरी ताकत से अपनी गदा उठाई और सीधे दुर्योधन की जंघा पर भीषण प्रहार किया! दुर्योधन की जंघा टूट गई, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

जब बलराम को यह ज्ञात हुआ कि भीम ने युद्ध के नियमों को तोड़कर दुर्योधन की जंघा पर प्रहार किया, तो वे अत्यंत क्रोधित हो

उठे। वे स्वयं सर्वश्रेष्ठ गदाधर थे। उन्होंने तुरंत अपनी गदा उठाई और भीम की ओर लपके। आँखों में क्रोध की ज्वाला लिए वे बोले, "यह युद्ध धर्म के विरुद्ध हुआ है, भीम! आज मैं तुम्हें मृत्यु दंड दूँगा!"

तभी भगवान श्रीकृष्ण आगे आए। उन्होंने बलराम को उलाहना देकर शांत करते हुए कहा कि जब अभिमन्यु जैसे बालक का सात महारथियों ने घेर कर धोखे से वध किया था उस समय आप कहाँ थे।

इस वाक्य ने बलराम का क्रोध शांत कर दिया। वे समझ गए कि यह युद्ध नियति द्वारा तय था, और श्रीकृष्ण की लीला के अनुसार ही सब कुछ हो रहा था।

इस कहावत का अर्थ है कि चाहे कितने ही बड़े संकट आ जाएँ, यदि ईश्वर की कृपा हम पर है, तो कोई भी हमारा अहित नहीं कर सकता।

: 160 : जात-पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होय

एक बार बादशाह अकबर के दरबार में पाँच साधु आए। किसी ने उनसे पूछा, “आप लोग किस जाति के हैं?” साधुओं ने उत्तर दिया, “साधु की कोई जाति नहीं होती।” अकबर यह सुनकर सोच में पड़ गया। उसने मन ही मन कहा, “बात तो ठीक है कि साधु की कोई जाति नहीं होती, लेकिन साधु बनने से पहले तो ये किसी न किसी जाति के रहे ही होंगे।”

तभी बीरबल दरबार में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा, “हुजूर, मैं अभी इनकी जाति का पता लगा देता हूँ।” बीरबल ने उन साधुओं से कहा, “आप लोग ईश्वर के बारे में कुछ सुनाइए।”

पहले साधु ने कहा, “राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी, हरि का नाम मिश्री, घोल-घोल पी।” बीरबल ने कहा, “यह खाने-पीने की चीज़ों की बात कर रहा है, अवश्य ही यह ब्राह्मण होगा।“

दूसरे साधु ने कहा, “राम नाम की शमशीर पकड़कर, कृष्ण कटारा बाँध लिया, दया-धर्म की ढाल बनाकर, यम का द्वारा जीत लिया।” बीरबल ने कहा, “यह तलवार, कटारी और हार जीत की बात कर रहा है, यह क्षत्रिय है।“

तीसरे साधु ने कहा, “साहब मेरा बनिया, सहज करे व्यापारा, बिन डंडी, बिन पालड़े, तोल देय जग सारा।” बीरबल ने कहा, “यह तो पक्का ही वैश्य (बनिया) है।

चौथे साधु ने कहा, “राम झरोखा बैठ के, सबका मुजरा लेय, जैसी जिसकी चाकरी, वैसा उसको देय।” बीरबल ने कहा, “यह सेवा की बात करता है, यह शूद्र है।“

पाँचवाँ साधु बुद्धिमान था। वह बीरबल के मंतव्य को समझ गया। उसने कहा, “जात-पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होय।” यह सुनकर बीरबल समझ गए कि यह साधु सच्चे ज्ञान को प्राप्त है और जाति-पांति से ऊपर उठ चुका है।

: 161 : जाता हो तो ग़म न कीजिए

किसी व्याध (बहेलिए) ने जंगल में एक तीतर फँसाया। तीतर ने सोचा–यह पापी मुझे मार कर खाएगा; परंतु अक्ल लगाकर जान बचाने की कोशिश तो करनी चाहिए।

उसने व्याध से पूछा, "तुम मेरा क्या करोगे? मान लो कि बेचोगे, तो मुश्किल से मेरे बदले में चार-पाँच रुपये मिलेंगे। मारोगे तो सिर्फ पंख हाथ लगेंगे। लेकिन तुम मुझे छोड़ देने का वादा करो तो मैं तुम्हें तीन ऐसी नसीहतें दे सकता हूँ, जिनमें प्रत्येक का मोल लाख रुपये है।" व्याध ने कहा, "बतलाओ, मैं तुम्हें तुरंत छोड़ दूँगा।"

तीतर बोला, "पहली नसीहत, बात कोई भी हजार सुनाए, कीजिए वही, जो समझ में आए।" "दूसरी नसीहत, बुरा हो तो कीजिए न गफलत, संकट में हो तो हारिए न हिम्मत।" "तीसरी नसीहत, "आता हो तो हाथ से न दीजिए, जाता हो तो उसका ग़म न कीजिए।" व्याध ने जैसे ही सुना "जाता हो तो ग़म न कीजिए", उसने तीतर को छोड़ दिया।

तीतर तुरंत उड़कर पेड़ पर जा बैठा और बड़ी चालाकी से व्याध से कहने लगा, "मैंने जो तीन नसीहतें तुझे बताई हैं, उनका उदाहरण भी दे देता हूँ। देख, मैं कैसी आफ़त में था, पर मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी बातों के बल पर तेरे चंगुल से छूट गया। अफसोस है कि तूने बातों में आकर मेरे जैसे बहुमूल्य पक्षी को छोड़ दिया। मेरे पेट में एक लाख कीमत का एक लाल है।"

यह सुनकर व्याध पछताने लगा और तीतर को फिर पकड़ने की कोशिश करने लगा। तीतर पेड़ की ऊँची डाल पर बैठकर बोला, "मूर्ख! तू मेरी पहली नसीहत पर ध्यान देता तो मेरी बातों में न आता, और दूसरी पर ध्यान देता तो मुझे छोड़ता ही नहीं। अब ज़रा अक्ल से काम ले, तीतर के पेट में लाल कहाँ से आ गया?

मेरी बातों में आकर तूने मुझे छोड़ दिया और फिर मेरी ही बात से मुझे पकड़ने को दौड़ पड़ा। अपनी अक्ल से काम लेना सीख। जो कोई कुछ कहे, उसी पर चलने लगेगा तो तेरा मनोरथ कभी सफल नहीं हो सकेगा।"

: 162 : जान बची तो लाखों पाए

एक रियासत में एक नाई और एक पंडित अपनी चालाकी के लिए जाने जाते थे। राजा तक उनसे तंग आ चुका था। एक दिन उसने उन्हें एक दूर की रियासत में किसी काम के लिए जाने का आदेश दिया, जिसका रास्ता घने जंगल से होकर जाता था। दोनों समझ गए कि उनसे हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए राजा ने ऐसा कहा है, फिर भी मजबूरी में चल पड़े।

जंगल में कुछ दूर जाने पर सामने एक शेर आ गया। पंडित डर के मारे काँपने लगा, लेकिन नाई ने हिम्मत नहीं हारी। उसने चालाकी से शेर को डराया–कहा कि

राजा ने उसे दो शेर पकड़ने भेजा है, एक तो उसकी जेब में है और दूसरा वह। शेर को विश्वास दिलाने के लिए उसने शीशा दिखाया, जिसमें शेर को अपनी ही परछाईं दिखाई दी। वह घबरा गया और जान बचाने के बदले उन्हें अपनी गुफा के कीमती गहने दे दिए।

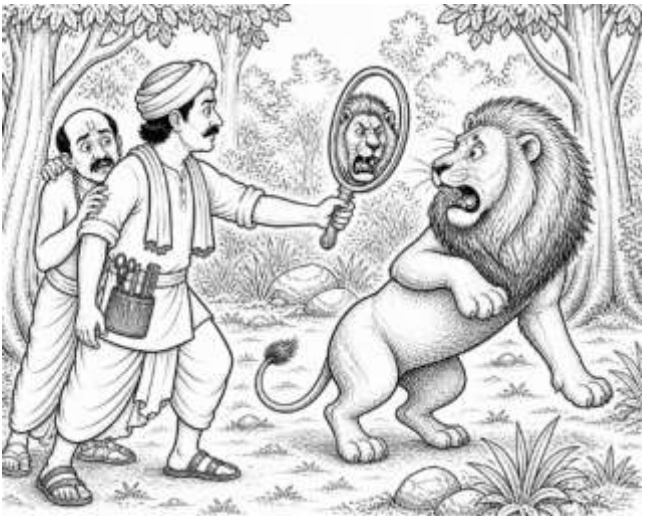

दोनों आगे बढ़े ही थे कि अचानक शेरों का एक झुंड दिखाई दिया। वे बचने के लिए पेड़ पर चढ़ गए। लेकिन थोड़ी ही देर में सभी शेर उसी पेड़ के नीचे इकट्ठा हो गए। पंडित का साहस जवाब दे गया और वह घबराकर शेरों के सरदार के ऊपर जा गिरा।

स्थिति गंभीर थी, पर नाई ने तुरंत सूझ-बूझ से काम लिया और जोर से बोला, “पकड़ लो इसी को!” इतना सुनते ही शेरों का सरदार डर गया और भाग खड़ा हुआ। उसके पीछे-पीछे सारे शेर भी भाग गए।

अब दोनों ने राहत की साँस ली। जंगल से सुरक्षित बाहर निकल कर नाई ने मुस्कराकर पंडित से कहा, “जान बची तो लाखों पाए।”

बहुत से लोग पूरी कहावत इस प्रकार बोलते हैं - जान बची तो लाखों पाए, लौट के बुद्धू घर को आए। कोई व्यक्ति बड़े जोश में कोई काम करने के लिए घर से निकले और संकट में पड़ने पर अपनी सम्पत्ति गंवा कर जान बचा कर वापस भाग आए तो उसका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत इस प्रारूप में कही जाती है।

: 163 : जिन पायन पनही नहीं, उन्हें देत गजराज, विष देते विषया मिले, साहब गरीब नवाज

(पायन - पैरों में, पनहीं - जूता)

कहावत का शाब्दिक अर्थ है - जिनके पांव में जूता नहीं उसे भगवान हाथी देते हैं और जिसे विष देने को कहा जाता है, उस से लड़की का विवाह करवा देते हैं।

किसी नगर में एक धनवान सेठ रहता था। उसके पास अथाह संपत्ति थी लेकिन उसके मन में गरीबों के लिए कोई दया नहीं थी। उसी नगर में एक भिखारी भी था,

जो रोज़ाना भीख मांगकर अपना पेट भरता था। उसकी स्थिति ऐसी थी कि पैरों में जूते तक नहीं थे, वह रोज सेठ की दुकान के सामने भीख मांगने आ जाता।

सेठ को वह भिखारी फूटी आँखों न भाता था। एक दिन वह गुस्से से भर गया। उसने एक पर्ची पर लिखा, "इसे विष दे दो!" और वह पर्ची अपने व्यापार में काम करने वाले आढ़ती को भिजवा दी। अब आढ़ती के यहाँ सेठ की यह चिट्ठी पहुँची। संयोग से आढ़ती की बेटी का नाम "विषया" था। वह समझा कि सेठ जी ने लिखा है कि विषया का विवाह इस भिखारी से कर दो।

आढ़ती सेठ का बहुत सम्मान करता था। उसने इसे सेठ की आज्ञा मानकर बड़े धूमधाम से अपनी बेटी विषया का विवाह उसी भिखारी से कर दिया! जो कल तक नंगे पैर था वह आज हाथी पर सवार था, और जिसे विष देने के लिए कहा गया उसे विषया मिल गई।

ईश्वर कृपा से किसी बहुत दीन हीन व्यक्ति को बिना प्रयास किए अचानक बहुत बड़ा लाभ हो जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 164 : जिस कारण मूंड मुंडाया, वही दुःख आगे आया

एक गाँव में एक अत्यंत आलसी आदमी रहता था। उसे कोई काम करना पसंद नहीं था। घर में उसके इस स्वभाव के कारण उसे रोज़ डाँट-फटकार सुननी पड़ती थी। एक दिन परेशान होकर उसने अपने जैसे ही एक दोस्त से सलाह मांगी कि इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाया जाए।

दोस्त ने कहा, “तू सिर मुंडवाकर किसी बैरागियों की जमात में शामिल हो जा। वहाँ बिना काम किए खाने-पीने का इंतज़ाम हो जाएगा।” आलसी को यह उपाय बहुत आसान लगा। उसने तुरंत सिर मुंडवाया और एक बैरागी जमात के महंत के पास पहुँच गया।

महंत ने उसे देखकर पूछा, “क्या काम जानते हो? यहाँ रहने के लिए कुछ न कुछ सेवा तो करनी होगी।” यह सुनकर वह चौंक गया और बोला, “अगर काम ही करना होता, तो मैं घर छोड़कर यहाँ क्यों आता?”

अत्यंत आलसी और कामचोर लोगों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 165 : जिस की लाठी उस की भैंस

एक ब्राह्मण को किसी यजमान ने एक भैंस दान में दी। उसे लेकर वह घर की ओर रवाना हुआ। सुनसान रास्ते में उसे एक चोर मिला। उसके हाथ में मोटी लाठी

थी और शरीर से भी वो अच्छा तगड़ा था। उसने ब्राह्मण को देखते ही कहा - "क्यों ब्राह्मण देवता, दक्षिणा अच्छी मिली लगती है, पर यह भैंस तो मेरे साथ जाएगी।"

ब्राह्मण ने झट कहा - "क्यों भाई ?" चोर बोला- "क्यों क्या? जो कह दिया सो करो। भैंस छोड़ कर चुपचाप यहाँ से चलते बनो, वरना लाठी देखी है, तुम्हारी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।"

अब तो ब्राह्मण को काटो तो खून नहीं। वैसे शारीरिक बल में वह चोर से कम नहीं था। पर खाली हाथ वह करे भी तो क्या करे? ऐसे विपरीत समय में उसने बुद्धिबल से काम लिया।

ब्राह्मण बोला- "ठीक है भाई, भैंस भले ही ले लो, पर ब्राह्मण की चीज यों छीन लेने से तुम्हें पाप लगेगा। बदले में कुछ देकर भैंस लेते तो पाप से बच जाते । " चोर बोला, "यहाँ मेरे पास देने को धरा क्या है?" ब्राह्मण ने झट कहा, " और कुछ न सही, भैंस के बदले में लाठी ही दे दो।"

चोर ने खुश हो कर लाठी ब्राह्मण को पकड़ा दी और भैंस पर दोंनो हाथ रख कर खड़ा हो गया। तभी ब्राह्मण कड़क कर बोला, "चल हट भैंस के पास से, नहीं तो अभी खोपड़ी के दो टुकड़े कर दूंगा "

चोर ने पूछा, " क्यों ?" ब्राह्मण बोला, " क्यों क्या ? जिस की लाठी उस की भैंस।" चोर को अपनी बेवकूफी समझ आ गयी और उसने वहाँ से भागने में ही भलाई समझी। कहावत का अर्थ है कि जहाँ कानून का राज न हो वहाँ जिस के पास बल होता है वही संपत्ति पर अधिकार कर लेता है।

: 166 : जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डंडा बाजे

किसी गाँव में एक धोबी रहता था। उसके पास एक गधा और एक कुत्ता था। धोबी का काम कपड़े धोना और उन्हें गाँव भर में पहुँचाना था, जिसमें उसका गधा उसकी बहुत मदद करता था। कुत्ता घर की रखवाली करता था और अजनबियों को देखकर जोर-जोर से भौंकता था।

एक दिन धोबी किसी बात पर नाराज़ हो गया और कुत्ते को बुरी तरह पीट दिया। गुस्से में उसने उसे खाना भी नहीं दिया। कुत्ते को यह बहुत बुरा लगा। उसने सोचा, "जब मालिक को मेरी ज़रूरत ही नहीं, तो मैं क्यों उसकी रखवाली करूँ?"

उसी रात, कुछ चोर धोबी के घर में घुस आए। कुत्ते ने उन्हें देख लिया, लेकिन उसने सोचा जब मालिक ने मुझे पीटा है और भूखा रखा है, तो अब वह खुद ही देखे!"

गधे ने चोरों को देख लिया और कुत्ते से कहा, "भाई, जल्दी भौंककर मालिक को जगा दो! घर लुट जाएगा!" पर कुत्ते ने मुँह फेर लिया।

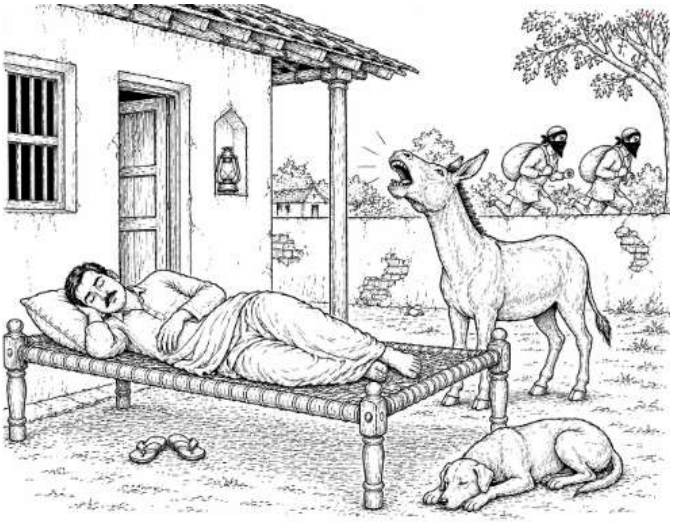

गधा परेशान हो गया। उसने सोचा, "अगर कुत्ता नहीं भौंकेगा, तो मुझे ही कुछ करना पड़ेगा!" गधे ने मालिक को जगाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से रेंकना शुरू कर दिया–ढेंचू! ढेंचू!

चोर यह देखकर घबरा गए और भाग निकले। लेकिन धोबी की नींद खराब हो गई। उसे कुछ पता ही नहीं चला कि चोर आए थे, वह बस यह देख रहा था कि उसका गधा आधी रात को शोर मचा रहा था! गुस्से में धोबी ने लट्ठ उठाया और गधे की जमकर पिटाई कर दी।

कहावत का अर्थ है कि हर किसी को वही काम करना चाहिए, जो उसके हिस्से का हो। स्वभाव के विपरीत काम करने वाले को परेशानी ही झेलनी पड़ती है।

: 167 : जिसको ना दे मौला उसको दे आसफ़-उद-दौला

अवध के नवाब आसफ़-उद-दौला के बारे में कहा जाता है कि उनकी रियासत में कोई भूखा नहीं सोता था। उसकी रियासत में जब किसी भिखारी को देखा जाता तो लोग उसे नवाब के पास जाकर कुछ मांगने की सलाह देते। जो लोग नवाब के पास जाते, उनकी इच्छा पूरी हो जाती तो वो भी यही कहते फिरते कि "जिसको न दे मौला उसको दे आसफ़-उद-दौला"

एक बार बादशाह के कारिंदे शहर में गश्त लगा रहे थे उन्होंने एक फ़क़ीर को इधर उधर भटकते देखा। वो फ़क़ीर के पास गए और उस से नवाब के पास जाकर कुछ मांगने को कहा। उस ने उनकी बात बहुत इत्मीनान से सुनी और हँसने लगा। उसे हँसते देखकर कारिंदों ने पूछा - कि हँस क्यों रहे हो ? तो उस फ़क़ीर ने कहा, "जिसे न दे मौला उसे क्या देगा आसफ़-उद-दौला" ?

नवाब के कर्मचारी को ये बात सुनकर बड़ा अचरज हुआ, उस ने ये पूरा वाकया जाकर नवाब को कह सुनाया। नवाब को इसमें अपनी तौहीन लगी। अपनी शोहरत को और ज़्यादा बढ़ाने के इरादे से नवाब ने एक योजना बनाई।

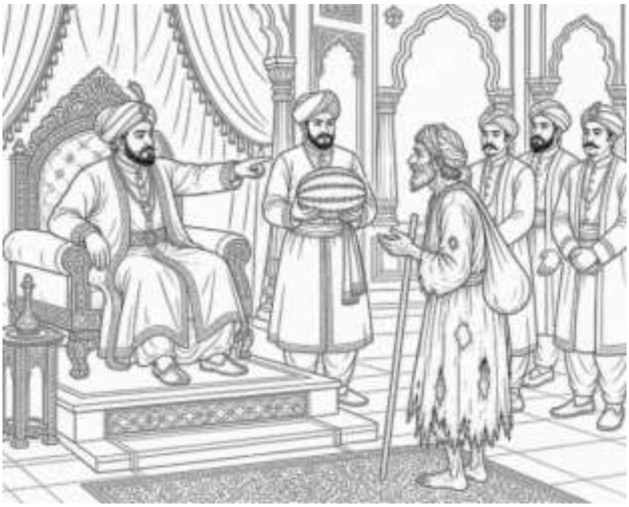

अगले दिन नवाब अपने लाव-लश्कर के साथ उसी जगह पर गया और ख़ैरात बांटने लगा। उस दिन वो तरबूज़ बाँट रहा था। जब उस फ़क़ीर की बारी आई तो कारिंदे ने नवाब को बताया कि यह वही फकीर है। नवाब ने एक बड़ा सा तरबूज़ उस फ़क़ीर को दे दिया। फ़क़ीर उस तरबूज़ को लेकर आगे बढ़ गया। उसके बाद जिस व्यक्ति की बारी थी उसे नवाब ने छोटा तरबूज़ दिया। फ़क़ीर उसके पीछे गया तो देखा उसका तीन लोगों का परिवार था।

एक छोटे से तरबूज़ से तीन लोगों का पेट कैसे भरेगा यही सोचकर फ़क़ीर ने अपना तरबूज़ उस व्यक्ति से एक्सचेंज कर लिया। अगले दिन नवाब ख़ैरात बाँटने फिर उसी जगह पहुंचा तो उसे उस फ़क़ीर को वहाँ देखकर बहुत हैरानी हुई। नवाब ने उससे पूछा कि तुम्हें तो मैंने चांदी के सिक्कों से भरा तरबूज़ दिया था फिर तुम आज भीख क्यों मांग रहे हो? ये सुनकर फ़क़ीर बहुत ज़ोर से हँसा, उसे हँसते देखकर नवाब आसफ़-उद-दौला और उसके कारिंदे हैरत में पड़ गए। तब उस फ़क़ीर ने नवाब को तरबूज बदलने वाली बात बताई। कहावत का अर्थ है कि जिस पर ईश्वर की कृपा न हो उस के भाग्य को कोई नहीं बदल सकता।

: 168 : जिसने भोंकना सिखाया, उसी को काटने दौड़ा

कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने किसी साहूकार से कर्ज़ लिया, पर उसे वापस नहीं किया। जब साहूकार बार-बार अपने पैसे माँगने आने लगा, तो कर्ज़दार ने अपने एक दोस्त से इस मुसीबत से पीछा छुडाने का उपाय पूछा। मित्र ने उसे सलाह दी कि तुम पागल होने की एक्टिंग करो।

कर्ज़दार ने वैसा ही किया। उसने गाँव में यह मशहूर करा दिया कि उसे कुत्ते ने काट लिया है। जैसे ही साहूकार उसके घर आता, वह पागल कुत्तों जैसा भोंकने लगता।

यह देखकर साहूकार को लगा कि वह व्यक्ति पागल हो गया है, इसलिए उसने अपने पैसे की मांग करना छोड़ दिया।

संयोग से उस दोस्त से भी उसी कर्ज़दार ने कुछ धन उधार लिया हुआ था।

जब दोस्त ने कर्ज़दार से पैसे वापस माँगे, तो उस ने वही उपाय अपनाया और कुत्तों की तरह भोंकने लगा और काटने को दौड़ा।

यह देखकर दोस्त झुंझला गया और बोला, "वाह भाई! यह तरीका तो मैंने ही तुम्हें सिखाया था, अब तुम इसे मुझ पर ही आजमा रहे हो!" यदि कोई व्यक्ति भलाई करने वाले के साथ बुरा व्यवहार करे और उपकार का प्रतिदान कृतघ्नता से दे तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 169 : जीभ की सी कहूँ या तलवे की सी

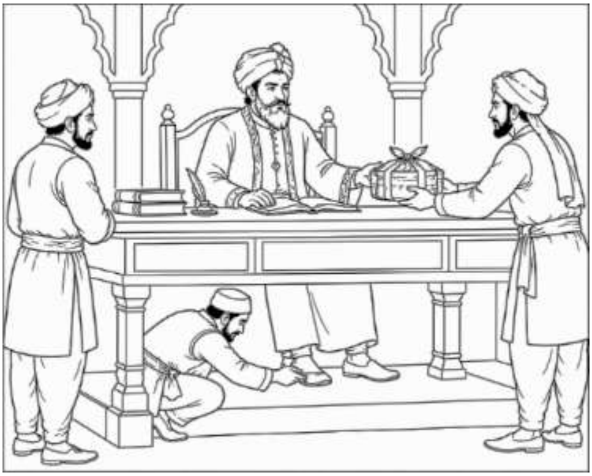

दो व्यक्तियों के बीच ज़मीन का विवाद था। दोनों पक्ष अपनी-अपनी दलीलें लेकर काजी की अदालत में पहुँचे। लेकिन इंसाफ से पहले, दोनों ने अपनी-अपनी चालें भी चल दीं। पहले व्यक्ति ने सोचा कि काजी को खुश करने का सबसे अच्छा तरीका है उन्हें मिठाई खिलाना। उसने शहर की सबसे उम्दा पाँच सेर मिठाई काजी के घर भिजवा दी। काजी को मिठाई बहुत पसंद आई, और वह मन ही मन सोचने लगा कि फैसला इसी के पक्ष में देना चाहिए।

पर दूसरी ओर, दूसरा व्यक्ति भी कम चालाक नहीं था। जब वह अदालत में पहुँचा, तो उसने बड़ी चालाकी से काजी के जूते के नीचे एक सोने की मोहर रख दी। काजी को जैसे ही इस बात का एहसास हुआ, उनके मन का पलड़ा तुरंत झुक गया।

अंततः, काजी ने दूसरे व्यक्ति के पक्ष में फैसले की घोषणा की। अब पहला व्यक्ति, जिसने मिठाई भिजवाई थी, बहुत नाराज़ हुआ। वह तुरंत काजी के पास पहुँचा और बोला, "हुजूर, आपको मेरी मिठाई याद है ना?" काजी मुस्कुराए, फिर धीरे से बोले, "अब तुम ही बताओ, मैं जीभ की सी कहूँ या तलवे की सी?"

एक और कहावत है - अदालत में दीवारें भी पैसे मांगती हैं। न्यायालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर इस प्रकार की कहावतें बनाई गई हैं।

: 170 : जुलाहा क्या जाने जौ की कटाई

एक गाँव में एक जुलाहा रहता था। वह कपड़ा बुनने में माहिर था–लेकिन और कोई काम उसे नहीं आता था। उसने गाँव के महाजन से काफी कर्ज ले रखा था! महाजन बड़ा सख्त आदमी था। जब उसे लगा कि जुलाहा कर्ज चुकाने में देर कर रहा है, तो उसने जुलाहे से कहा कि उधार चुकाने के लिए मेरे खेत में काम करो।

जुलाहे की इनकार करने की हिम्मत नहीं थी। उसने सिर हिलाया और दराँती लेकर खेत की ओर चल दिया। खेत में जौ की बालियाँ झुकी हुई थीं। जुलाहे ने जब उन्हें देखा, तो उसकी बुनाई वाली आदत जाग गई। उसने दराँती से काटने के बजाय बालियों को पकड़-पकड़कर सीधा करना शुरू कर दिया–ऐसे जैसे उलझे हुए सूत को सुलझा रहा हो।

कुछ समय बाद *महाजन* आया और यह अजीब नज़ारा देखकर गुस्से से चीख पड़ा, "अरे! ये तुम क्या कर रहे हो?" जुलाहा मासूमियत से बोला, "बालियाँ बहुत उलझी हुई थीं, पहले इन्हें सुलझा लूँ, फिर काटूँगा!"

कहावत का अर्थ है कि जो काम व्यक्ति के अनुभव और हुनर से जुड़ा है, वह उसे ही अच्छी तरह कर सकता है।

: 171 : जुलाहे की अक्ल गुद्दी पीछे होती है

(यहाँ जुलाहे का अर्थ किसी जाति विशेष से न हो कर एक सामान्य अनपढ़ व्यक्ति से है)

कहा जाता है कि एक जुलाहा अपनी रोटियाँ दीवार पर रखकर आराम से खाने की तैयारी कर रहा था। उसी समय दीवार के पीछे से एक कुत्ता आया और उसकी रोटियाँ उठाकर ले जाने लगा। जुलाहा यह सब देखता रहा, पर उसने उसे रोकने का कोई प्रयास नहीं किया। कुत्ता रोटियाँ ले कर भागा और कुछ दूर बैठ कर सारी रोटियाँ खा गया।

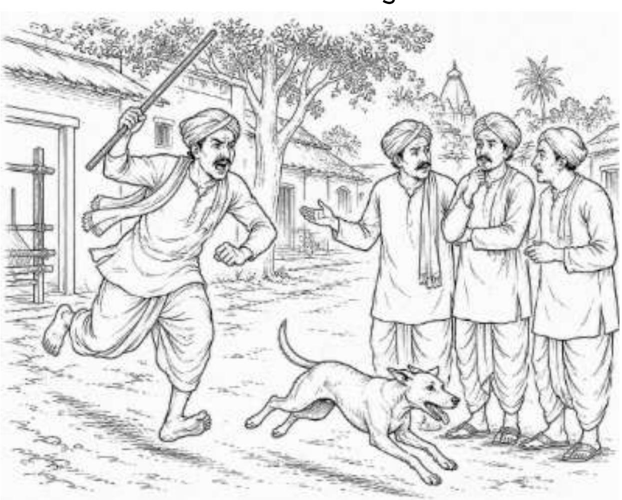

जब सभी रोटियाँ समाप्त हो गईं, तब जुलाहे ने तुरंत लाठी उठाई और कुत्ते को

मारने के लिए उसके पीछे दौड़ा। यह देखकर लोगों ने उससे पूछा, “जब कुत्ता रोटियाँ ले जा रहा था, तब तुमने उसे रोका क्यों नहीं?”

जुलाहे ने उत्तर दिया, “अरे, जब तक वह पूरी तरह गलती न कर ले, तब तक उसे दंड कैसे देता?” कहावत का अर्थ है कि मूर्ख व्यक्ति को कोई बात देर से समझ आती है इसलिए वह समय पर निर्णय नहीं ले पाता।

: 172 : जैसा करोगे, वैसा भरोगे

एक बहू अपनी बूढ़ी सास को टूटी हुई कठौती में खाना दिया करती थी। सास बेचारी चुपचाप उसी में भोजन कर लेती थी। संयोग से एक दिन सास के हाथ से वह कठौती छूट गई और गिरकर टूट गई।

उसी समय उसका बेटा बाहर से घर आया। कठौती के टूटने पर उसने अपनी माँ को जोर से डाँट दिया। बेचारी माँ को बहुत आश्चर्य हुआ। वह तो सोच भी नहीं सकती थी कि इतने छोटे से नुकसान पर बेटा उसे डाँटेगा। वह दुखी होकर रो पड़ी।

उधर बहू यह देखकर मन ही मन खुश हो रही थी। उसे लगा कि आज पहली बार उसके पति ने अपनी माँ को डाँटा है। वह सोचने लगी, “मैं ही अकेली सास को बुरा नहीं समझती, बेटा भी अपनी माँ से परेशान है। मेरी सास सच में खोटी है।”

उधर जब माँ से रहा नहीं गया तो उस ने अपने बेटे से पूछा, “बेटा, तुमने मुझे क्यों डाँटा?” बेटे ने भावुक होकर कहा, “माँ, क्या तुम समझती हो कि मैंने तुम्हें इस कठौती के टूटने पर डाँटा है?

असल बात यह है कि तुमने एक परंपरा तोड़ दी है। यह कठौती तब तक घर में रहनी चाहिए थी, जब तक तेरी बहू की बहू घर में न आ जाती। वह देखती कि सास को किस तरह के बर्तन में खाना दिया जाता है, और फिर वह भी अपनी सास के साथ वैसा ही व्यवहार करती। यह सारी बातें बहू पास में खड़ी सुन रही थी। कहावत सुनते ही उसकी आँखें खुल गईं और उसे अपना भविष्य सामने दिखाई देने लगा।

: 173 : जैसा दिया वैसा पाया

एक गाँव में एक चालाक अहीर रहता था। एक दिन उसने पाँच सेर की एक मटकी ली, उसमें नीचे साढ़े चार सेर गोबर भर दिया और ऊपर से आधा सेर बढ़िया, देशी घी फैला दिया। ऊपर से देखने पर लगता था जैसे पूरी मटकी घी से भरी हो।

अहीर मटकी उठाकर बाजार की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसकी नज़र एक आदमी पर पड़ी, जो हाथ में चमकती हुई तलवार लिए जा रहा था। इतनी खूबसूरत तलवार देख कर अहीर के मन में लालच आ गया–अगर यह तलवार उसके हाथ लग जाए तो मजा आ जाए।

उसने उस आदमी से कहा, "भाई, मैं घी बेचने जा रहा हूँ और तलवार खरीदने का भी इरादा है। लेकिन सौदा घी बिकने के बाद ही करूँगा।" तलवार वाले ने भी अहीर की मटकी देखी और सोचा, "अगर मुझे घी की पूरी मटकी मिल जाए तो मज़ा आ जाए। घी-खिचड़ी का मजा लूँगा।" वह खुद भी बहुत चालाक था। असल में उसकी तलवार लकड़ी की थी, जिस पर उसने रुपहली पत्ती चिपका रखी थी।

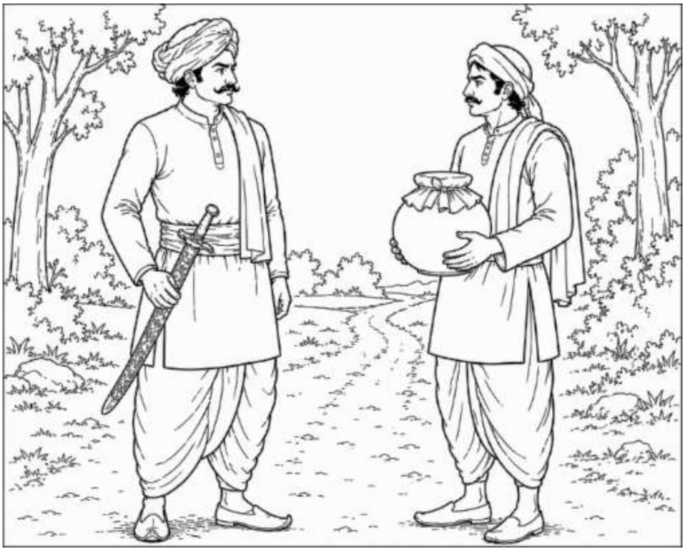

उसने मुस्कुराकर कहा, "अरे भाई, मैं भी अपनी तलवार बेचकर घी ही लेने वाला था। चलो, हम दोनों का काम बन सकता है। आओ, सौदा कर लेते हैं–तुम्हारी मटकी मेरे हवाले, और मेरी तलवार तुम्हारे।"

दोनों ने मन ही मन सोचा, "वाह! मैंने सामने वाले को उल्लू बना दिया!" और खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गए।

घर पहुँचकर अहीर ने जब तलवार को ध्यान से देखा तो उसकी आँखें फटी रह गईं–वह तो लकड़ी की निकली! इधर तलवार वाले ने मटकी में हाथ डाला तो घी की जगह गोबर मिला!

कहावत का अर्थ है कि किसी को धोखा देने की कोशिश करना अंततः खुद को ही नुकसान पहुँचाता है।

: 174 : जैसा देवे वैसा पावे, पूत भतार के आगे आवे

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक साधु ठहरा हुआ था। वह ईश्वर की भक्ति में लीन रहता, लोगों को भला-बुरा समझाता और अपना जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत करता। लेकिन उसी गाँव में एक स्त्री थी, जिसे साधु का वहाँ रहना बिल्कुल पसंद नहीं था। वह सीचती थी कि उसका पति इस साधु की ज्ञान भरी बातों में आ कर कहीं उससे विमुख न हो जाए।

एक दिन उसने साधु से छुटकारा पाने का उपाय सोचा। उसने दो रोटियाँ बनाईं और उनमें ज़हर मिला दिया। फिर वह साधु के पास गई और बोली, "महाराज, आपके

लिए रोटियाँ बनाई हैं, कृपया इन्हें स्वीकार करें।"

साधु निश्छल हृदय का था। उसने रोटियाँ ले कर अपनी कुटिया में रख दीं। कुछ ही समय बाद, संयोग से उसी स्त्री का पति और पुत्र कहीं यात्रा से लौट रहे थे। वे भूख-प्यास से बेहाल थे और चलते-चलते उसी साधु की कुटिया तक आ पहुँचे।

उन्होंने साधु से विनम्रता से कहा, "महाराज, हम बहुत थके हुए हैं, कृपया हमें थोड़ा पानी दे दीजिए।"

साधु को लगा कि वे भूखे भी होंगे। उसने कुटिया में रखी रोटियाँ उनकी ओर बढ़ा दीं और साथ में पानी भी दे दिया। दोनों भूख से बेहाल थे, उन्होंने तुरंत वे रोटियाँ खा लीं। कुछ ही देर में दोनों की तबीयत बिगड़ गई, और देखते ही देखते उन्होंने दम तोड़ दिया।

जब यह खबर गाँव पहुँची और स्त्री को अपने पति और पुत्र की मृत्यु का कारण पता चला, तो वह जोर-जोर से रोने लगी। कहावत का अर्थ है कि दूसरों का बुरा चाहने वाले लोग अनजाने में अपना ही बुरा कर बैठते हैं।

: 175 : जैसे को तैसा

एक जंगल में लोमड़ी और सारस रहते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। सारस सरल स्वभाव का था जबकि लोमड़ी काफी धूर्त थी।

एक दिन लोमड़ी ने सारस को भोजन पर आमंत्रित किया। उसने शोरबा एक चौड़ी थाली में परोसकर सारस के सामने रख दिया। सारस अपनी लंबी चोंच के कारण उस थाली से शोरबा नहीं पी सका, जबकि लोमड़ी ने बड़े स्वाद से सारा शोरबा चाट कर खत्म कर दिया।

फिर लोमड़ी ने हँसते हुए सारस से पूछा, “ कहो मित्र! भोजन कैसा लगा?” सारस को लोमड़ी की इस धूर्तता पर गुस्सा तो बहुत आया पर वह कुछ बोला नहीं।

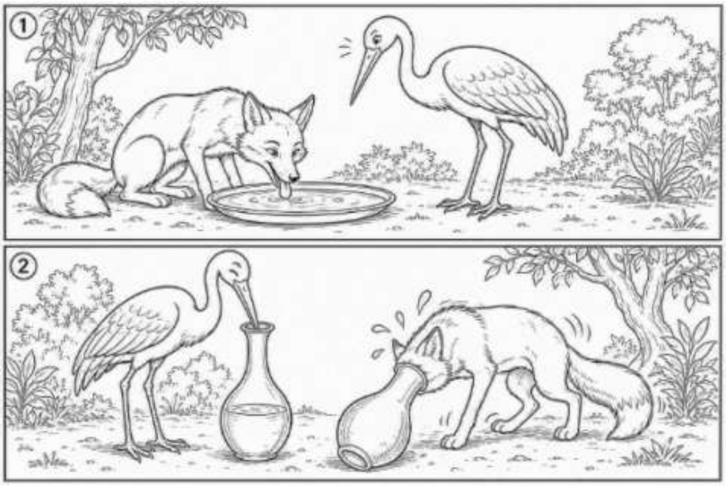

कुछ दिनों बाद सारस ने भी लोमड़ी को भोजन पर बुलाया। उसने शोरबा एक संकरी गर्दन वाली सुराही में डालकर परोसा। सारस ने अपनी लंबी चोंच से आराम से शोरबा पी लिया, पर लोमड़ी ने अपना मुँह सुराही में डाला तो उस का मुँह सुराही में फंस गया और वह छटपटाने लगी। तब सारस ने उस का मुँह सुराही में से निकाला। अपना बदला पूरा करने के बाद सारस ने लोमड़ी से मित्रता खत्म कर दी।

जब किसी दुष्ट व्यक्ति को उसी की भाषा में जवाब दिया जाए तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 176 : जैसे को तैसा मिला, ज्यों बामन को नाई, उनने आशीर्वाद कही, उन्ने आरसी काढ़ दिखाई

पुराने समय में अधिकतर ब्राह्मणों के पास जीविका का कोई विशेष साधन नहीं होता था। वे लोगों के यहाँ पूजा-पाठ, कर्मकांड आदि कराकर जीवनयापन करते थे। उस समय यह प्रथा थी कि ब्राह्मण किसी को आशीर्वाद देते और बदले में दक्षिणा की अपेक्षा रखते थे।

उसी प्रकार समाज में नाई भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वे केवल बाल काटने और दाढ़ी बनाने का ही काम नहीं करते थे, बल्कि कई धार्मिक कर्मकांडों में ब्राह्मणों के साथ मिल कर कई महत्वपूर्ण कार्य करते थे इसलिए उन्हें भी लोग दान-दक्षिणा देते थे।

इसके अलावा उस समय दर्पण (आईना) बहुत महंगे होते थे, इसलिए सामान्य लोगों के पास उपलब्ध नहीं होते थे। नाई के पास एक छोटा-सा दर्पण होता था, जिसे

आरसी कहा जाता था। यदि किसी को अपनी शक्ल देखनी होती, तो वह नाई के पास जाकर उसी आरसी में देखता और बदले में नाई को कुछ न कुछ दे देता।

कहावत में एक ऐसे ही प्रसंग का वर्णन है। एक चतुर ब्राह्मण ने एक नाई को आशीर्वाद दिया, इस आशा से कि उसे बदले में दक्षिणा मिलेगी। लेकिन नाई भी कम चालाक नहीं था। उसने दक्षिणा देने के बजाय अपनी आरसी निकालकर ब्राह्मण के सामने कर दी।

दोनों ही एक-दूसरे को मात देने की कोशिश में लगे थे, और अंततः बात बराबरी पर छूट गई। जब दो चालाक व्यक्ति आपस में टकराते हैं और दोनों एक-दूसरे को मात देने की कोशिश करते हैं तो यह कहावत कही जाती है।

: 177 : जैसे को तैसा मिला, मिली खीर में खाँड़, तू जात की बेड़नी, मैं जात का भाँड़

गाँव के एक कोने में एक वैश्या रहती थी। एक दिन पितृ पक्ष के अवसर पर उसके मन में एक पवित्र इच्छा जागी—वह चाहती थी कि किसी ब्राह्मण को अपने घर बुलाकर श्रद्धापूर्वक भोजन कराए, ताकि पितरों का आशीर्वाद मिले। लेकिन मुश्किल यह थी कि गाँव का कोई भी ब्राह्मण उसके घर आने को तैयार नहीं था।

थक-हारकर जब वह वापस लौट रही थी, तो रास्ते में उसकी नज़र एक ब्राह्मण पर पड़ी जो उस गाँव का नहीं था। वह तिलक-छापा लगाए था और गले में तुलसी की माला पहने हुए था। वैश्या के मन में आशा की किरण जगी। वह उसके पास गई और अपना परिचय छिपा कर हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, कृपया मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। मैं पितृ पक्ष में किसी ब्राह्मण को भोजन कराना चाहती हूँ।"

ब्राह्मण ने कुछ देर सोचा और फिर मुस्कुराकर बोला, "ठीक है! चलो!"

वैश्या ने बहुत श्रद्धा और प्रेम से उसकी सेवा की। बढ़िया भोजन खिलाया—खीर, पूरी, पकोड़े, और घी में तरबतर पकवान। ब्राह्मण ने भी खूब तृप्त होकर खाया, मानो आज ही वर्षों की भूख मिटा रहा हो।

भोजन समाप्त होने के बाद, वैश्या ने उसे दक्षिणा दी और हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, कृपया मेरा अपराध क्षमा करें। मैं जाति की बेड़नी हूँ, पर ब्राह्मण भोजन कराने की बड़ी इच्छा थी, इसलिए आपको ले आई।"

यह सुनकर ब्राह्मण हँस पड़ा और बोला, "कोई बात नहीं! तू जात की बेड़नी है तो मैं भी जात का भाँड़ हूँ। ब्राह्मण का वेष धरकर इसलिए घूम रहा था जिससे बढ़िया भोजन मुफ्त में मिल जाए।"

दो चालाक लोगों के बीच शह मात का खेल चल रहा हो यो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 178 : जैसे को तैसा मिले सुन रे राजा भील, लोहे को चूहा खा गया लड़का ले गई चील

बहुत समय पहले की बात है। एक नगर में दो मित्र रहते थे। दोनों में बड़ी गाढ़ी दोस्ती थी, लेकिन एक मित्र थोड़ा चालाक और स्वार्थी था, जबकि दूसरा निश्छल और ईमानदार।

एक दिन, चालाक मित्र ने अपने ईमानदार मित्र से कुछ लोहे के बड़े बर्तन उधार लिए और वादा किया कि कुछ समय बाद लौटा देगा। ईमानदार मित्र ने बिना किसी संकोच के अपने बर्तन उसे दे दिए।

कई महीने बीत गए, लेकिन बर्तन वापस नहीं मिले। जब ईमानदार मित्र ने अपने उधार दिए गए बर्तनों की याद दिलाई, तो चालाक मित्र बिना शर्माए बोला, "भाई, क्या बताऊँ! बहुत बुरा हुआ, तुम्हारे बर्तनों को चूहे खा गए!"

ईमानदार मित्र समझ गया कि उसके मित्र के मन में खोट आ गया है, लेकिन वह चुप रह गया और मुस्कुराकर बोला, "अरे! यह तो बड़ी अनोखी बात है, लेकिन चलो, जो हुआ सो हुआ!" लेकिन मन ही मन उसने एक तरकीब सोच ली।

कुछ दिनों बाद, उसी चालाक मित्र का बेटा उसके घर आया। उस ने उसे अपने घर में रोक लिया। जब शाम तक लड़का घर नहीं पहुँचा, तो उसका पिता परेशान हो गया और अपने मित्र के पास पहुँचा।

"भाई, मेरा बेटा कहाँ है?" उसने घबराकर पूछा। ईमानदार मित्र ने बड़े ही शांत स्वर में जवाब दिया, "ओह! बहुत बुरा हुआ, तुम्हारा बेटा तो चील ले गई!"

"क्या?! यह कैसा मज़ाक है?" चालाक मित्र गुस्से से चिल्लाया। "चील किसी लड़के को कैसे उठा सकती है?"

बात बढ़ गई तो मामला पहले कोतवाली और फिर राजा के दरबार तक पहुँचा। उस समय राज्य में राजा भील का शासन था। उसने दोनों की बातें ध्यान से सुनीं और फिर मुस्कुराकर फैसला सुनाया, "जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा! यदि लोहे को चूहे

खा सकते हैं, तो लड़के को चील भी उड़ा सकती है।" राजा ने चालाक मित्र को फटकार लगाई और आदेश दिया कि वह अपने मित्र के बर्तन तुरंत लौटाए।

किसी धूर्त व्यक्ति को जब उसी की भाषा में जवाब मिलता है तो यह कहावत कही जाती है।

: 179 : जो जैसी करनी करे सो तैसो फल पाए, बेटी पहुँची राजमहल साधु बंदरा खाए

एक बार की बात है। एक साधु राजा के दरबार में पहुँचा। उसका वेश तो साधु का था, लेकिन मन में कपट भरा हुआ था। वह बातें बनाने में बड़ा माहिर था। राजा ने बड़ी श्रद्धा से उसका स्वागत किया और उस से महल में ठहरने का निवेदन किया।

इसी बीच दुष्ट साधु की दृष्टि राजा की सुंदर कन्या पर पड़ी। वह उस पर बुरी तरह मोहित हो गया और उसे पाने की योजना बनाने लगा। वह जानता था कि सीधे-सीधे उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकती, इसलिए उसने एक चाल चली।

एक दिन अवसर देख कर वह राजा से बोला, "महाराज, आपकी पुत्री बड़ी ही

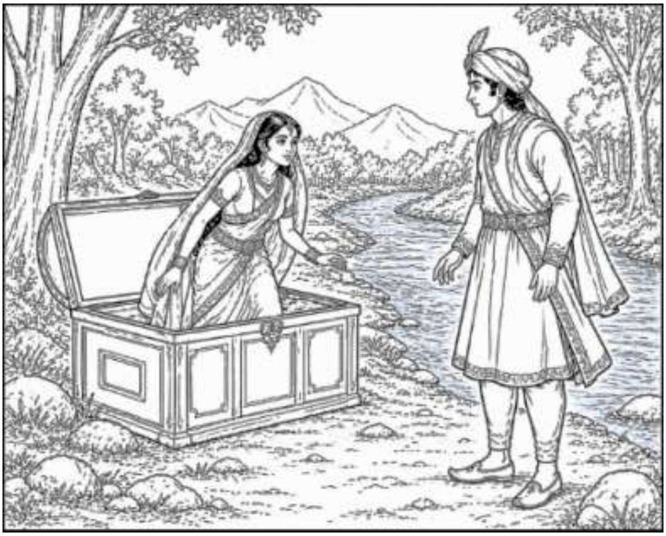

अशुभ है! अगर इसे महल में रखा गया तो पूरे राजवंश का नाश हो जाएगा।" राजा यह सुनकर घबरा गया और साधु से उपाय पूछने लगा।

साधु ने गंभीर स्वर में कहा, "राजन, अगर आप अपने कुल को बचाना चाहते हैं, तो इस कन्या को लकड़ी के बक्से में रखकर नदी में प्रवाहित कर दो। इससे आपका राज्य सुरक्षित रहेगा।" राजा साधु के झांसे में आ गया। भारी मन से उसने अपनी पुत्री को एक सुंदर बक्से में रखवाया और उसे नदी में बहा दिया।

लेकिन साधु का इरादा तो कुछ और ही था! उसने पहले से ही योजना बना रखी थी कि वह तेज़ चल कर छोटे रास्ते से अपने आश्रम पहुँचेगा और वहाँ नदी किनारे बहकर आने वाले बक्से को निकालकर राजकुमारी को अपने कब्जे में कर लेगा। जैसे ही राजा ने बक्सा नदी में डाला, साधु तुरंत अपने आश्रम की ओर दौड़ पड़ा।

उधर, जंगल में शिकार के लिए निकले एक राजकुमार की नज़र नदी में बहते हुए बक्से पर पड़ी। उत्सुकतावश उसने बक्से को बाहर निकालकर खोला, तो उसमें से सुंदर राजकुमारी निकली। राजकुमारी बहुत डरी हुई थी, लेकिन जब राजकुमार ने उसे सांत्वना दी, तो उसने साधु की पूरी चालबाज़ी बताई। राजकुमार को साधु की कुटिलता पर बहुत क्रोध आया। उसने तुरंत एक तरकीब सोची। राजकुमार ने एक जंगली, कटखना बंदर पकड़ा और उसे उसी बक्से में बंद करके फिर से नदी में बहा दिया। राजकुमारी को वह अपने राजमहल में ले गया।

उधर साधु बेसब्री से नदी किनारे अपने आश्रम में खड़ा था। जैसे ही बक्सा पास आया, उसने खुशी से झपटकर उसे निकाल लिया और जल्दी से खोला। जैसे ही बक्सा खुला, अंदर से एक उग्र बंदर निकल आया। बंदर को भी जैसे अपनी कैद का बदला लेना था। वह साधु पर टूट पड़ा और काटना, नोचना, खरोंचना शुरू कर दिया! वह चिल्लाता रहा, इधर-उधर भागता रहा, लेकिन बंदर ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया।

कहावत का अर्थ है कि दूसरों के लिए षड्यंत्र रचने वाला व्यक्ति स्वयं ही अपने बिछाए जाल में फंस जाता है।

: 180 : जो तुम्हें कह गया, वह मुझे भी कह गया

एक समय की बात है। एक बुढ़िया अपनी गठरी उठाए, थके कदमों से सड़क पर चल रही थी। धूप तेज थी, सफर लंबा था, और ज्यादा देर तक भारी बोझ उठाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

उसी समय, एक घुड़सवार युवक उसी राह से गुजरा। बुढ़िया ने सोचा कि अगर यह सज्जन मेरी गठरी घोड़े पर रख ले, तो मेरा सफर आसान हो जाएगा। उसने घुड़सवार को आवाज़ दी, "बेटा, मेरी गठरी घोड़े पर रख लो। तुम्हारा कुछ नहीं जाएगा, पर मुझे बड़ा सहारा हो जाएगा!"

लेकिन घुड़सवार ने ज़रा भी रुचि नहीं ली और उपेक्षापूर्वक हंसकर बोला, "अरी माई, घोड़े की चाल और तेरी क्या जोड़ी? तुझे अपना बोझ खुद ही उठाना पड़ेगा!" यह कहकर वह आगे बढ़ गया।

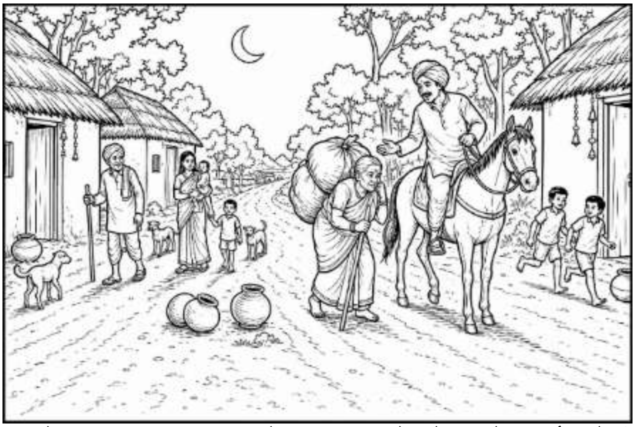

कुछ दूर जाने के बाद, घुड़सवार को एक लालच भरा विचार आया–"बुढ़िया की गठरी में शायद कुछ कीमती सामान हो। अगर मैंने उसकी गठरी ले ली होती, तो बड़ी आसानी से उसे लेकर भाग सकता था!" अब वह अपने व्यवहार पर पछताने लगा! उसने घोड़ा मोड़ा और तेज़ी से बुढ़िया की ओर वापस आ गया।

जब वह बुढ़िया के पास पहुँचा, तो मीठी मुस्कान के साथ बोला, "अरी माई! तुझे बड़ा कष्ट हो रहा होगा। ला, तेरी गठरी घोड़े पर रख देता हूँ।"

इधर बुढ़िया के मन में भी विचार आया कि अगर उसने घुड़सवार को अपनी गठरी दे दी होती और वह उसे लेकर भाग जाता, तो वह क्या कर सकती थी? उसने युवक को सिर से पैर तक देखा और हल्की मुस्कान के साथ बोली, "बेटा, जो तुम्हें कह गया, वह मुझे भी कह गया!"

यानी, "जिस ने तुम्हें अक्ल की बात बताई है उस ने मुझे भी बताई है!" कहावत की सीख है कि राह चलते अनजान आदमियों से मदद नहीं मांगनी चाहिए।

: 181 : जो धावे सो पावे, जो सोवे वो खोवे

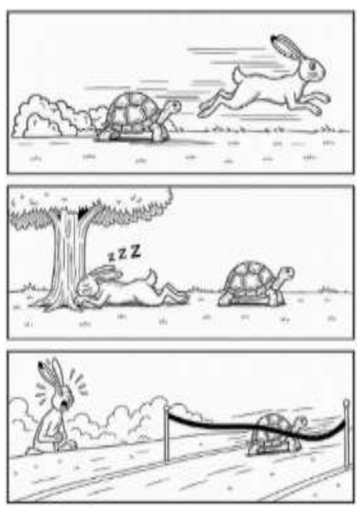

एक खरगोश को अपनी तेज़ दौड़ने की क्षमता पर बहुत घमंड था। एक दिन बात बात में कछुए ने उस को दौड़ की चुनौती दे दी। खरगोश इस बात ठहाका मार कर हँसा और सहर्ष तैयार हो गया।

दौड़ शुरू होते ही खरगोश बहुत तेज़ भागा और कुछ ही समय में कछुए को बहुत पीछे छोड़ दिया। अब उसने सोचा–"थोड़ी देर आराम कर लेता हूँ।" यह सोचकर वह एक पेड़ के नीचे सो गया।

उधर कछुआ धीरे-धीरे, लेकिन बिना रुके लगातार चलता रहा। उसने न तो हिम्मत हारी और न ही आराम किया।

कुछ समय बाद जब खरगोश की नींद खुली, तो वह घबरा गया और पूरी ताकत से दौड़ा। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी—कछुआ लक्ष्य रेखा पार कर चुका था और दौड़ जीत चुका था।

कहावत का अर्थ है कि निरंतर प्रयास करने वाला व्यक्ति, भले ही धीमा हो, अंततः सफलता प्राप्त कर लेता है, जबकि घमंड और आलस्य करने वाला व्यक्ति, चाहे कितना ही सक्षम क्यों न हो, अवसर खो देता है।

: 182 : जो नंगी नाचै, सोई पूतै खाय

किसी गाँव में एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ थीं—बड़ी और छोटी। बड़ी पत्नी की गोद में छह महीने का प्यारा सा बेटा खेलता था। छोटी पत्नी को बड़ी की यह खुशी फूटी आँखों नहीं सुहाती थी।

ईर्ष्या ने उसे अंधा कर दिया। एक दिन मौका देखकर, उसने मासूम बालक का गला दबा दिया और दुनिया के सामने झूठा रोना रोने लगी, "बड़ी ने मुझे बदनाम करने के लिए अपने ही बेटे को मार डाला!"

बड़ी पत्नी ने विलाप किया, "कोई माँ अपने ही बेटे को मार सकती है भला? लेकिन छोटी अपनी बात को इतने आत्म विश्वास से कह रही थी कि लोग पशोपेश में पड़ गए। सच और झूठ की पहचान करना मुश्किल हो गया।

मामला गाँव के मुखिया के पास पहुँचा। वह बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने दोनों स्त्रियों को बुलाया और कहा, "मैं अभी इस बात का फैसला करता हूँ कि इस मासूम को किसने मारा।" सभी लोग ध्यान से सुनने लगे। मुखिया ने कहा, "तुम दोनों में से जो भी गाँव के सामने नंगी होकर नाचेगी, उसे निर्दोष माना जाएगा।"

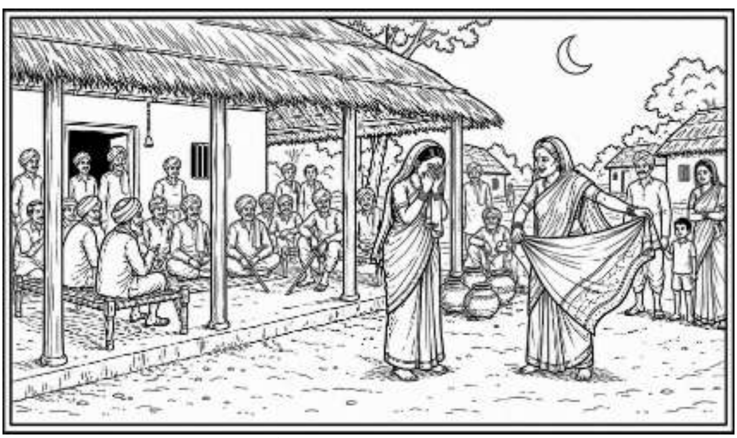

बड़ी पत्नी सन्न रह गई! उसने क्रंदन करते हुए कहा, "मेरा बेटा तो चला गया, अब अपनी लाज भी खो दूँ? भले ही आप मुझे अपराधी मान लें, लेकिन यह मैं नहीं कर सकती!"

लेकिन छोटी तुरंत तैयार हो गई। उसने गर्व से कहा, "जब मैंने कुछ गलत किया ही नहीं, तो मुझे नंगी होकर नाचने में क्या संकोच?" जैसे ही उसने कपड़े उतारने की

तैयारी की, मुखिया ने हाथ उठाकर उसको रोक दिया और गंभीर स्वर में कहा, "बस, फैसला हो गया! यही असली अपराधिनी है!"

कहावत का अर्थ है कि जो ओछा व्यक्ति अपनी इज्ज़त की परवाह नहीं करता, वह किसी भी प्रकार का नीच काम कर सकता है।

: 183 : जो बोले सो कुंडी खोले

एक बार कुछ दोस्त एक कमरे में बैठकर ताश खेल रहे थे। खेल के साथ हंसी-मजाक का दौर भी चल रहा था। बीच-बीच में कोई जोरदार ठहाका लगा देता।

तभी अचानक दरवाजे की कुंडी खटखटाने की आवाज आई। सबने सुना, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर बाद फिर आवाज आई–इस बार कुछ तेज। फिर तीसरी और चौथी बार भी कुंडी खटखटाई गई और बाहर से आवाज आई, “दरवाजा खोलो!” अब सब दोस्त झुंझला गए–सोचने लगे कि यह कौन आ गया जो मज़ा खराब कर रहा है। तभी बाहर वाले ने और जोर से दरवाजा पीटते हुए कहा, “अरे, दरवाजा खोलो! बहुत जरूरी काम है।” एक दोस्त से रहा नहीं गया, वह झुंझलाकर बोल पड़ा, “कौन है?” बाहर से आवाज आई, “मैं रमेश हूँ, जल्दी दरवाजा खोलो।” अब बाकी दोस्तों ने उसी से कहा, “जा भाई, तू ही खोल दे दरवाजा।”

वह थोड़ा झेंप गया और मुस्कुराते हुए बोला, “अरे वाह, यह भी कोई बात हुई! जो बोलेगा, उसी को उठाना पड़ेगा?” तभी सब हंस पड़े और किसी ने कहा, “हाँ भई, कहावत है, जो बोले सो कुंडी खोले!”

कहावत का अर्थ है कि जो व्यक्ति किसी काम के लिए सबसे पहले बोलता या आगे आता है, वही उस काम की जिम्मेदारी उठाने को भी बाध्य हो जाता है।

: 184 : जो बोले, सो घी को जाय

किसी गाँव में चार मूर्ख रहते थे। एक दिन उन्होंने मिलकर रसोई बनाने की सोची। लेकिन जब घी लाने की बात आई, तो हर कोई अपनी जगह जमकर बैठ गया। किसी का भी घी लाने के लिए जाने का मन नहीं था। काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने एक अजीब फैसला किया–जो पहले बोलेगा, वही घी लाने जाएगा! अब चारों मौन साधकर बैठ गए।

संयोग से, वहाँ से एक सिपाही गुज़रा। उसने देखा कि चार लोग चुपचाप बैठे हैं, जैसे किसी अनहोनी की साजिश रच रहे हों। सिपाही को शक हुआ और वह पूछने लगा, "तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?" "किस गाँव के रहने वाले हो?" "यहाँ इस तरह चुप क्यों बैठे हो?"

पर चारों ने अपनी ज़ुबान बंद रखी, क्योंकि बोलने का मतलब था घी लाने जाना! सिपाही को गुस्सा आ गया। उसे लगा कि ये जरूर कोई संदिग्ध लोग हैं, इसलिए चारों को पकड़कर कोतवाली ले गया।

कोतवाल ने भी उनसे सवाल किए, लेकिन चारों मूर्ख पत्थर की मूरत बने बैठे रहे। अब कोतवाल को भी गुस्सा आ गया। उसने सिपाहियों से कहा, "लगाओ कोड़े! जबान तभी खुलेगी!" जैसे ही पहले मूर्ख की पीठ पर कोड़ा पड़ा, वह दर्द से चीख उठा, "अरे बाप रे!"

बस, यह सुनते ही बाकी तीनों उछल पड़े और चिल्ला उठे, "अरे! तू बोल पड़ा? चल अब घी लेने जा!" पूरी बात मालूम पड़ी तो कोतवाल और सिपाही अपना माथा पीटने लगे, और गाँव भर में यह बात मज़ाक का कारण बन गई।

: 185 : टके वाली का बालक झुनझुना बजाएगा

गाँव का एक आदमी मेले में जाने को तैयार हुआ। पड़ोस की औरतों को पता चला, तो हर कोई अपनी फरमाइशें लेकर आ गई, "भइया, मेरे मुन्ना के लिए एक लाल रंग की टोपी लेते आना!" "अरे, मेरी बिटिया के लिए एक सुंदर सी गुड़िया मत भूलना!" "भाईसाहब, मेरे बच्चे को मिठाई बहुत पसंद है, थोड़े लड्डू लेते आना!"

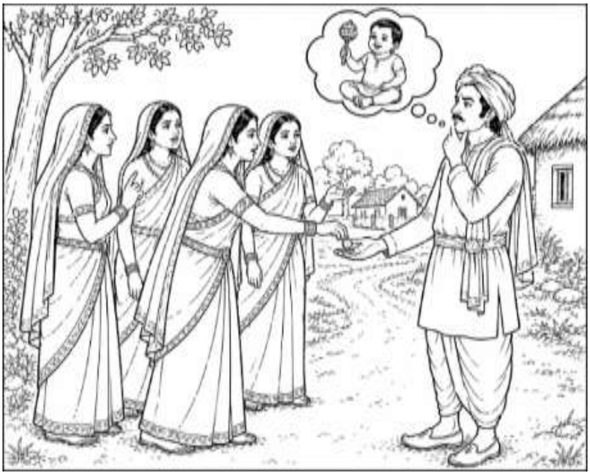

लेकिन मज़े की बात यह थी कि सबने अपनी अपनी माँग तो रखी, मगर किसी ने पैसे नहीं दिए। आदमी सबकी बातें सुनता रहा और मन ही मन मुस्कुराता रहा। तभी एक समझदार औरत ने आगे बढ़कर उसकी हथेली पर एक टका रख दिया और बोली, "भइया, मेरे बच्चे के लिए एक झुनझुना लेते आना!"

आदमी ने हँसते हुए कहा, "बाकी सबकी चीज़ें आएँगी या नहीं, यह नहीं कह सकता, मगर तेरा मुन्ना झुनझुना जरूर बजाएगा!" कहावत का अर्थ है कि जो आगे बढ़ कर पैसा खर्च करता है उसी का काम होता है।

: 186 : टेढ़ी खीर

एक दिन गाँव के एक आदमी ने एक अंधे को अपने घर खीर खाने की दावत दी। अंधे ने उत्सुकता से पूछा, "भाई, ये खीर कैसी होती है?" आदमी ने जवाब दिया,

"मीठी-मीठी और सफेद रंग की!"

अंधे को सफेद रंग की कोई समझ नहीं थी, उसने फिर पूछा, "अच्छा, ये सफेद रंग कैसा होता है?" आदमी ने समझाने के लिए कहा, "बिल्कुल बगुले जैसा!" अब बेचारा अंधा और उलझन में पड़ गया, "बगुला कैसा होता है?" आदमी ने थोड़ा सोचकर कहा, "लंबी-लंबी, टेढ़ी गर्दन वाला!"

अंधे को यह बात समझ में नहीं आई, तो उसने फिर सवाल किया, "अच्छा, ये लंबी-लंबी टेढ़ी गर्दन कैसी होती है?" आदमी ने अपने हाथ को मोड़कर चुल्लू जैसा बनाया और कहा, "ऐसी होती है!"

अंधे ने उसके हाथ को टटोलकर देखा और डरकर बोला, "अरे बाप रे! अगर खीर ऐसी होती है, तो मैं नहीं खाऊंगा, मेरे गले में फँस जाएगी!"

कोई काम बहुत मुश्किल हो, और उसमें फँसने का डर हो, तो कहावत के तौर पर उसे टेढ़ी खीर कहा जाता है!

: 187 : ठीकरा हाथ में और उसमें बहत्तर छेद

मिर्ज़ा ग़ालिब अपने मज़ाकिया और तीखे अंदाज़ के लिए मशहूर थे। उनका नौकर उन से भी बढ़ कर था। एक दिन उन्होंने अपने नौकर को देखा कि वह एक ठीकरा (फूटा हुआ मिट्टी का बरतन) लेकर चिलम में अंगारे रख रहा था और बड़बड़ाता भी जा रहा था। ग़ालिब ने हँसते हुए पूछा, "अरे भाई, तू इस ठीकरे से क्या बातें कर रहा था?"

नौकर ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "हुज़ूर, इससे अपना दुखड़ा सुना रहा था। आठ महीने से तनख्वाह नहीं मिली, सोच रहा हूँ कि आखिर खाऊँ क्या?" ग़ालिब ने शरारत भरी मुस्कान के साथ फिर पूछा, "तो फिर इस ठीकरे ने तुझे क्या जवाब दिया?"

नौकर ने एक लंबी आह भरी और बोला, "हुज़ूर, इसने कहा कि फिक्र मत कर, मैं तेरे साथ हूँ। मुझे हाथ में लेकर तू भीख माँग सकता है! लेकिन फ़िक्र इस बात की है कि इस ठीकरे में भी बहुत सारे छेद हैं"

किसी की आर्थिक हालत बहुत खराब हो तो वह मजाक मजाक में अपनी हालात बताने के लिए इस कहावत का प्रयोग करता है।

: 188 : डाह किए बनीं पतिबरता, मूसल खाए भरता

एक स्त्री बड़े पवित्र भाव से दिन रात अपने पति की सेवा किया करती थी। एक दिन वह ओखली में धान कूट रही थी। तभी उसके पति ने उसे पानी लाने के लिए पुकारा। उस समय उसके हाथ में मूसल ऊपर उठा हुआ था। उसने मूसल को उसी अवस्था में छोड़ा और तुरंत दौड़कर पति को पानी देने चली गई।

कहते हैं, उसका पतिव्रत इतना प्रबल था कि मूसल हवा में ही स्थिर रह गया। लोगों ने आश्चर्य से इसका कारण पूछा, तो वह बोली, “यह मेरे पतिव्रत धर्म का प्रभाव है।” यह बात एक दूसरी स्त्री ने भी सुन ली। वह मन ही मन ईर्ष्या से भर उठी और बोली,“यह तो मैं भी कर सकती हूँ।”

अगले दिन उसने भी वैसा ही करने का निश्चय किया। बात यह तय हुई कि वह भी इसी प्रकार धान कूटेगी और उसका पति उसे बुलाएगा। तब वह भी यही करतब कर के दिखाएगी। वह धान कूटने लगी और पति के बुलाने का इंतज़ार करने लगी।

लेकिन संयोग से उस दिन उसका पति उसे बुलाना ही भूल गया। वह घंटों तक धान कूटती रही। उसके हाथों में छाले पड़ गए, शरीर थककर चूर हो गया। अंत में गुस्से से भरी वह मूसल लेकर गई और पति के सिर पर दे मारा!

यह कहावत बताती है कि ईर्ष्या में आकर किसी की नकल करना अक्सर उल्टा परिणाम देता है।

: 189 : डूबते हाथी को मेंढक भी लात मारता है

कहा जाता है कि दिल्ली का कोतवाल अत्यंत कठोर और अत्याचारी स्वभाव का था। उसके भय से लोग उसके सामने आने से भी कतराते थे और उसका नाम तक लेने में संकोच करते थे।

किन्तु जब वह अपने पद से हटाया गया और साधारण व्यक्ति की तरह घर लौटने लगा, तो वही लोग, जो पहले उससे भयभीत रहते थे, उस पर टूट पड़े। उन्होंने उसे बुरी तरह पीटा और यहाँ तक कि उसका सारा सामान भी छीन लिया।

कहावत का अर्थ है कि सत्ता या अधिकार छिन जाने के बाद व्यक्ति का सम्मान भी समाप्त हो जाता है। यह कहावत यह शिक्षा भी देती है कि उच्च पद पर बैठे व्यक्ति को अहंकार नहीं करना चाहिए इस से मिलती जुलती कहावतें हैं - उतरा हाकिम कुत्ते बराबर (उतरा हाकिम चूहे बराबर)।

: 190 : ढंग से करो तो गेंडे को भी गुदगुदी होती है

गेंडा बेचारा यूँ ही बदनाम है। उसकी खाल मोटी जरूर होती है, पर इतना भी नहीं कि उसे गुदगुदी ही न होती हो। बस बात यह है कि उसे गुदगुदी करने वाला भी हुनरमंद होना चाहिए। कुछ मनुष्य भी गेंडे जैसे ही होते हैं–खासतौर पर वे लोग, जिनकी जेबें भारी होती हैं।

होली का मौसम था। मोहल्ले के बच्चे मिल कर एक बड़ा कार्यक्रम करना चाह रहे थे, पर सपनों और हकीकत के बीच वही पुरानी समस्या खड़ी थी - पैसा कहाँ से आयगा? बच्चे चंदा लेने निकले। बच्चों की टोली घर-घर घूम रही थी। कहीं दस रुपये मिले, कहीं बीस, कहीं “कल आना”।

तभी चर्चा छिड़ी मोहल्ले के प्रसिद्ध सेठ जी की–जिनकी कंजूसी की कहानियाँ लोककथाओं में दर्ज होने लायक थीं। एक बच्चे ने मुँह बनाते हुए कहा, “उनके यहाँ जाने का मतलब है–समय की बर्बादी।” दूसरा बोला, “अरे, वो तो ऐसे हैं कि अगर कुत्ता भी उनके घर में घुस जाए, तो निकलते समय हिसाब देकर जाए!” सब हँस पड़े।

तभी मोहन नाम का एक दुबला-पतला, पर तेज दिमाग वाला लड़का बोला, “तुम लोग सीधा जाकर माँगते हो, इसलिए खाली हाथ लौटते हो। ढंग से कोशिश करो... तो गेंडे को भी गुदगुदी होती है।” बच्चों ने कहा, “ठीक है तुम हमारे लीडर बन कर चलो।“

वे सब सेठ जी के दरवाजे पर पहुँचे। बच्चों को देखते ही उनकी भौंहें सिकुड़ गईं। “क्या है?” उन्होंने ऐसे पूछा, मानो शब्द भी उधार दे रहे हों। बाकी बच्चे तो सहम गए, पर मोहन आगे बढ़ा। उसने पूरे आदर और मिठास के साथ कहा, “प्रणाम सेठ जी! आपके पास इसलिए आए हैं क्योंकि पूरे मोहल्ले में आपकी सबसे अलग पहचान है।” सेठ जी कुछ नरम पड़े। बोले, “क्यों भई! ऐसा क्यों?”

मोहन ने अँधेरे में तीर छोड़ा, "सब कहते हैं कि आप बेवजह एक पैसा भी खर्च नहीं करते... पर जहाँ सही जगह हो, वहाँ सबसे बड़ा हाथ आपका ही होता है।" सेठ जी का सीना ऐसे फूल गया जैसे वे मोहल्ले के वित्त मंत्री हों। उन्होंने खंखारते हुए कहा, "हाँ... ये तो सही है। फिजूलखर्ची मुझे पसंद नहीं। लेकिन अच्छा काम हो तो मैं पीछे भी नहीं हटता।"

मोहन ने तुरंत मौका पकड़ा, "बस सेठ जी, इसी लिए होली के चंदे के लिए हम सब से पहले सीधे आपके पास आए हैं–ताकि मोहल्ले में आपकी मिसाल दी जा सके।"

अब तक सेठ जी पूरी तरह "गुदगुदाए" जा चुके थे। वे अंदर गए। जब लौटे, तो उनके हाथ में सौ रूपये का नोट था। कहावत का अर्थ है कि युक्ति पूर्वक बात करने से कठोर से कठोर हृदय व्यक्ति को भी वश में किया जा सकता है।

: 191 : ढाक तले की चकती, लेखा ज्यों का त्यों

एक व्यक्ति ने एक महाजन से कुछ धन उधार लिया था। बार-बार कहने पर भी वह व्यक्ति ऋण नहीं चुका पाया। एक दिन महाजन ने उसे जंगल के रास्ते में पकड़ लिया। वह व्यक्ति उसे पास के एक ढाक के पेड़ के नीचे ले गया और अपनी कठिन परिस्थिति बताते हुए बोला कि वह धन तो नहीं चुका सकता, पर उसके बदले अपनी एक छोटी-सी जमीन उसे दे सकता है।

महाजन यह सुनकर प्रसन्न हो गया। उसने तुरंत कागज़ तैयार किया और उस व्यक्ति से उस पर हस्ताक्षर करवा लिए, ताकि वह जमीन उसके नाम हो जाए।

लेकिन जब वह व्यक्ति जाने लगा, तो महाजन ने उसे रोककर कहा, "भाई, यह जो छोटी-सी जमीन तुमने दी है, वह तो ठीक है, पर मेरा पुराना हिसाब तो अभी भी वैसा ही बना हुआ है।"

कहावत उस स्थिति में प्रयोग की जाती है जब मामला सुलझाने का प्रयास करने पर भी स्थिति वैसी की वैसी बनी रहे। महाजन लोग किस प्रकार से गरीब लोगों का

शोषण करते हैं यह भी इस में दर्शाया गया है। इस से मिलती जुलती कहावत है - लेखा जौ जौ, बख्शी सौ सौ।

: 192 : तक तिरिया को आपनी, पर तिरिया मत ताक, पर नारी के ताकने, पड़े सीस पर ख़ाक

लंका का सम्राट रावण, असीम बल, अपार ज्ञान और अकूत सम्पदा का स्वामी था। उसने देवताओं तक को परास्त किया था। उसके दरबार में देवता उसकी चाकरी करते थे। परन्तु कहते हैं–मनुष्य चाहे कितना भी महान क्यों न हो, एक छोटी-सी भूल भी उसे विनाश की ओर ले जा सकती है।

एक दिन रावण की दृष्टि सीता पर पड़ी। सीता की सुंदरता ने उसके मन में आसक्ति जगा दी। वह यह भूल गया कि वह एक पराई स्त्री है, और उस पर कुदृष्टि डालना ही अधर्म है। अहंकार और वासना में अंधा होकर रावण ने सीता का अपहरण कर लिया और उन्हें लंका ले आया। यहीं से उसके पतन की शुरुआत हो गई।

भगवान राम ने सीता की खोज की, वानर सेना एकत्र की और लंका पर चढ़ाई कर दी। भयंकर युद्ध हुआ। रावण के बल, विद्या और धन संपत्ति सब व्यर्थ हो गए। अंततः युद्धभूमि में वह सपरिवार सर्वनाश को प्राप्त हुआ।

कहावत का अर्थ है कि अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री पर बुरी दृष्टि डालना न केवल अधर्म है, बल्कि अंततः विनाश का कारण भी बनता है।

: 193 : तजी प्रतिज्ञा मोर, मैं तोर प्रतिज्ञा काज

महाभारत के युद्ध से पहले श्रीकृष्ण ने एक प्रतिज्ञा की, “मैं युद्ध में शस्त्र नहीं उठाऊँगा, केवल सारथी बनूँगा।”

उधर भीष्म पितामह कौरवों की ओर से सेनापति बने। वे अपराजेय योद्धा थे, पर हृदय से धर्म के पक्षधर। भीतर से उनका स्नेह पांडवों के साथ था, लेकिन कर्तव्य उन्हें कौरवों के लिए लड़ने को बाध्य करता था।

एक दिन दुर्योधन ने उनको इस बात के लिए बहुत बुरा भला कहा तो क्रोध में आकर उन्होंने कहा ठीक है मैं आज पांडवों की सेना का नाश कर दूंगा या श्री कृष्ण को शस्त्र उठाने पर मजबूर कर दूंगा।

अगले दिन युद्ध में भीष्म का रौद्र रूप चरम पर था। पांडवों की सेना में हाहाकार मच गया। यह देखकर श्रीकृष्ण का धैर्य टूट गया। अचानक–वे रथ से कूद पड़े, पास पड़ा टूटा हुआ रथ का पहिया उठाया,और क्रोध में भरे हुए भीष्म की ओर दौड़ पड़े।

भीष्म पितामह ने यह दृश्य देखा तो उन्होंने अपने शस्त्र नीचे रख दिए, रथ से उतर कर दोनों हाथ जोड़ लिए और बोले, "आइए प्रभु! आपके हाथों मृत्यु प्राप्त करना ही मेरे जीवन का परम सौभाग्य होगा।"

इधर अर्जुन घबरा गए। वे दौड़कर आए और श्रीकृष्ण को रोकते हुए बोले, "हे माधव! आप अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ें। मैं अब पूरी शक्ति से युद्ध करूँगा।" कृष्ण लौट आए–पर यह स्पष्ट हो गया कि धर्म की रक्षा के लिए वे अपनी प्रतिज्ञा भी त्याग सकते हैं।

बाद में, जब पांडवों ने भीष्म से उनकी पराजय का उपाय पूछा, तो उन्होंने स्वयं मार्ग बताया, "यदि शिखंडी को सामने रखकर अर्जुन मुझ पर बाण चलाएँगे, तो मैं प्रत्युत्तर नहीं दूँगा।"

इस कहावत में एक गहन सीख छिपी हुई है कि महानता केवल अपनी प्रतिज्ञा निभाने में नहीं, बल्कि उचित समय पर उसे छोड़ने में भी है।

: 194 : तबेले की बला बंदर के सिर

एक मान्यता है कि घोड़ों के अस्तबल के पास बन्दर पाले जाएं तो घोड़ों पर आने वाली बला बंदरों पर आ जाती है। इसके पीछे एक कहानी कही जाती है। बहुत समय पहले की बात है। एक राजा के तबेले के पास बंदरों का एक झुंड रहता था। इनमें कुछ युवा बंदर बड़े ही शरारती थे। वे सैनिकों का सामान चुरा लेते, अस्तबल में उछल-कूद मचाते और तरह तरह के तमाशे किया करते। सयाने बंदर बार-बार उन्हें

समझाते, "अरे, राजा के आदमियों से पंगा मत लो, वरना किसी दिन बड़ी मुसीबत में फँस जाओगे!" लेकिन शैतान बंदरों को कौन रोक सकता था!

एक दिन, उन्हीं में से एक शरारती बंदर को कहीं से जलती हुई लकड़ी मिल गई। शरारत सूझी तो उसने वो लकड़ी घुड़साल के पास रखी एक सूखी झोंपड़ी में फेंक दी। पल भर में आग भड़क उठी और राजा के कीमती घोड़े आग की चपेट में आ गए। राजा को जब इस घटना का पता चला, तो उसने अपने वैद्य को बुलवाया। वैद्य ने बताया कि घोड़ों के घावों पर अगर बंदर के मांस का लेप किया जाए, तो वे

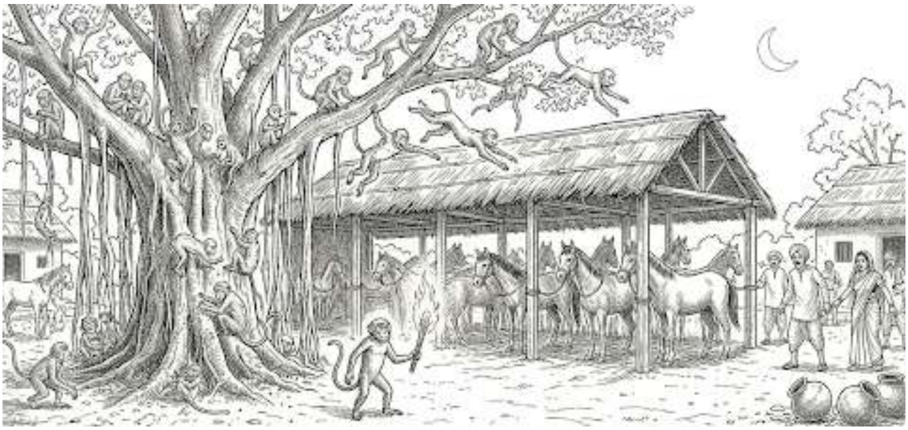

जल्दी ठीक हो सकते हैं।

बस फिर क्या था! राजा के सैनिकों ने घुड़साल के आसपास के सारे बंदरों को पकड़ना शुरू कर दिया। कुछ निर्दोष बंदर भी शरारती बंदरों के किए की सजा भुगतने लगे। किसी और की गलती की सजा किसी निर्दोष को भुगतनी पड़े, तो यह कहावत कही जाती है!

: 195 : तेरा तो घड़ा ही फूटा, मेरा तो बना-बनाया घर ही ढह गया

पुराने जमाने की बात है। एक तेली अपने सिर पर तेल से भरा घड़ा रखे शहर की ओर चला जा रहा था। सूरज सिर पर चढ़ आया था और तेली थककर चूर हो चुका था। तभी उसकी नजर एक हट्टे-कट्टे आदमी पर पड़ी। वह कोई और नहीं, बल्कि शेखचिल्ली था।

तेली ने कहा, "भाई, मेरा यह घड़ा उठा लो और शहर तक पहुँचा दो, मैं तुम्हें दो आने दूँगा।" दो आने उस जमाने में दो आने बहुत बड़ी रकम थी। उसने फौरन घड़ा कंधे पर लाद लिया और चल पड़ा।

रास्ते में शेखचिल्ली का दिमाग दौड़ने लगा, "इन दो आनों से अंडे खरीदूँगा, उन अंडों से ढेर सारी मुर्गियाँ निकलेंगी, फिर उन मुर्गियों को बेचकर एक बकरी खरीदूँगा,

बकरी के बच्चे होंगे, उन्हें भी बेचकर भैंस ले आऊँगा, भैंस का दूध बेचकर खूब पैसा कमाऊँगा, फिर शादी करूँगा, फिर मेरे ढेर सारे बच्चे होंगे।"

सोचते-सोचते वह ऊँची आवाज़ में बोलने लगा, "अगर मेरे बच्चे मेरा कहना नहीं मानेंगे, तो मैं उन्हें ऐसे उठाकर पटक दूँगा!" इतना कहते ही उसने सचमुच घड़ा उठा कर ज़मीन पर पटक दिया! "धड़ाम!"

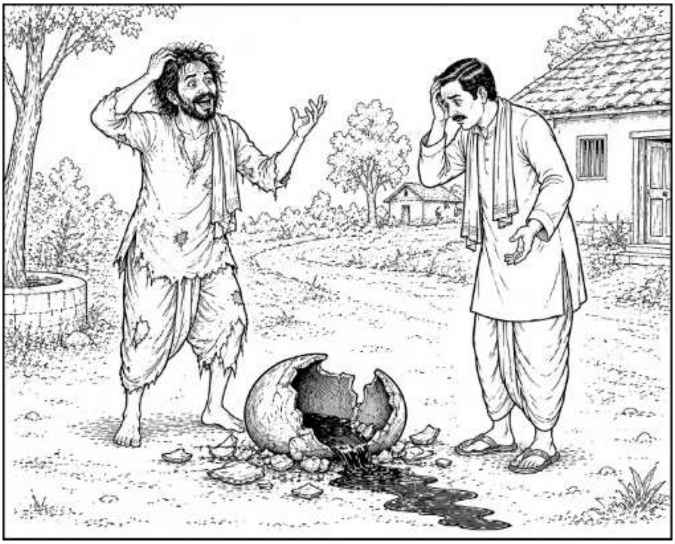

तेल से भरा घड़ा फूट गया और सारा तेल धरती पर बह गया। तेली हक्का-बक्का रह गया। उसने माथा पकड़ लिया और गुस्से में बोला, "अरे मूर्ख! तूने मेरा तेल से भरा घड़ा क्यों फोड़ दिया?"

शेखचिल्ली उदास होकर बोला, "अरे भाई! तेरा तो बस घड़ा ही फूटा है, पर मेरा तो बना-बनाया घर ही उजड़ गया!" जब कोई मूर्ख आदमी अपनी नादानी से किसी दूसरे को बहुत बड़ा नुकसान पहुँचा दे तो यह कहावत कही जाती है।

: 196 : तसलवा तोर कि मोर (तसला तेरा है या मेरा)

यह बात उन दिनों की है, जब भोजपुरी इलाके में कुछ ऐसे लोग हुआ करते थे जिन्हें न कानून का डर होता था, न समाज की लाज–बस जिसकी लाठी, उसकी भैंस!

ऐसे ही एक दबंग का गाँव में बड़ा नाम था। जहाँ से निकलता, लोग रास्ता छोड़ देते। एक दिन उसने देखा कि एक सीधा-सादा आदमी अपनी एक कीमती चीज़ सँभालकर लिए जा रहा है। उसने आदमी को रोककर बड़े रौब से पूछा, “ए बताओ, यह चीज़ किसकी है?”

वह बोला, “हुज़ूर, यह मेरी है।” बस फिर क्या था! दबंग हँसा, और बोला, “अरे, अब ये ज़्यादा दिन तुम्हारे पास नहीं रहेगी, चलो, हमें दे दो।” और देखते-देखते वह चीज़ उससे छीन ली।

कुछ दिनों बाद वह दबंग फिर उसी आदमी से मिला। उसके हाथ में अब की बार भी कोई कीमती चीज़ थी। दबंग ने वही सवाल दोहराया, "ए, यह बताओ... यह किसकी है?"

इस बार उस बेचारे ने कहा, "हुजूर आपकी ही है।" दबंग तुरंत बोला, "अच्छा! जब मेरी ही है, तो मुझे दे दो!"

दबंग लोगों की गुंडई और मनमानी पर यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 197 : तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार

सिंह सुवन, सत्पुरुष वचन, कदली फलै इक बार, तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार। (अर्थ है - सिंह एक ही बार संतान को जन्म देता है। सच्चे लोग बात को एक ही बार कहते हैं। केला एक ही बार फलता है। स्त्री को एक ही बार तेल एवं उबटन लगाया जाता है अर्थात उसका विवाह एक ही बार होता है। ऐसे ही राव हमीर का हठ है। वह जो ठानते हैं, उस पर दुबारा विचार नहीं करते।)

इस कहावत की पृष्ठभूमि में एक ऐतिहासिक घटना छिपी है। अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात पर आक्रमण किया और वहां से अकूत धन-संपत्ति लूटकर दिल्ली ले जा रहा था। इस लूट के धन के बंटवारे को लेकर खिलजी की सेना में फूट पड़ गई, और कुछ विद्रोही सेनानायक रणथंभौर के राजा राव हम्मीरदेव की शरण में आ गए।

अलाउद्दीन ने अपने विद्रोही सेनानायकों को वापस भेजने का संदेश भेजा। लेकिन राजपूती आन-बान और क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए राव हम्मीरदेव ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "शरण में आए व्यक्ति को धोखा नहीं दिया जाता!"

इससे क्रोधित होकर अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर चढ़ाई कर दी। जब युद्ध हुआ तो राव हम्मीर ने वीरगति प्राप्त की, परंतु अपनी प्रतिज्ञा से एक इंच भी पीछे नहीं हटे।

यह कहावत भारतीय इतिहास के वीर क्षत्रिय शासक राव हम्मीरदेव की अडिग प्रतिज्ञा और अटल संकल्प को दर्शाती है।

: 198 : तिरिया से राज छिपे न छिपाए

एक व्यक्ति को अपनी पत्नी से बहुत प्रेम था। वह उस पर पूरा विश्वास करता था। वह जानता था कि उसके माता-पिता कितने सीधे और सरल हैं, लेकिन जब कोई मौका आता, तो वह पत्नी का ही पक्ष लेता था। वह उनको कोई राज की बात नहीं बताता था पर अपनी पत्नी को सब-कुछ बता देता था।

एक दिन वह घूमता हुआ गांव के एक अनुभवी व्यक्ति के पास गया जिनको वह काका बोलता था। उसने काका से अपनी पत्नी की प्रशंसा की और बताया कि जो भी राज की बात होती है वह माता पिता को नहीं बताता पर पत्नी को अवश्य बताता है। वह पूरे परिवार को शक की नजर से देखता था।

काका ने कहा, जो तुम कर रहे हो, यह सही नहीं है। अपनी पत्नी तुम्हें विश्वास अवश्य करना चाहिए, पर याद रखना, स्त्रियाँ कोई राज की बात छिपा कर नहीं रख पाती हैं। किसी समय परीक्षा लेकर देखो। कभी-कभी सच्चा प्रेम करने वाला भी नासमझी में अपने प्रिय का अहित कर बैठता है।

यह सुनकर वह अधीर हो उठा। उसने जल्दी से जल्दी पत्नी की परीक्षा लेनी चाही। काका ने उससे एक नाटक रचने को कहा और उसे विस्तार से समझा दिया। एक दिन रात के समय वह एक कटा तरबूज अंगोछे में लपेट कर लाया। उसकी पत्नी ने देखा अंगोछे में कोई गोल चीज़ है जिस से टपककर लाल बूंदे गिर रही हैं।

यह अपनी पत्नी से बोला, देख किसी से कहना मत। मैंने एक आदमी का सिर काट लिया है। इसे छिपाना है, नहीं तो मुझे सिपाही पकड़ लेंगे और मुझे फांसी की सजा मिलेगी। उसने अपनी पत्नी से एक फावड़ा मंगवाया और घर के पिछवाड़े में एक पेड़ के नीचे गड्ढा खोदा और उसमें उस तरबूज को अंगोछे सहित गाड़ दिया। ऊपर से मिट्टी डालकर वह जगह समतल बना दी।

उसकी पत्नी इस घटना से बेचैन हो उठी। उसने अपने पति से कुछ नहीं कहा, पर अंदर-ही-अंदर वह बहुत घुटन महसूस कर रही थी। एक दिन जब उससे रहा नहीं गया तो उसने अपनी पक्की दोस्त पड़ोसन को यह बात सुना दी और कहा, देख बहन, किसी से कहना मत, नहीं तो मेरे पति को फांसी हो जाएगी। उस महिला को भी वह बात नहीं पची। उसने अपनी पक्की दोस्त पड़ोसन महिला को यह घटना सुनाई और कहा, देख बहन, किसी से कहना मत। नहीं तो उसके पति को फांसी हो जाएगी। इसी

प्रकार यह खबर पूरे गांव में फैल गई। बहुत-सी औरतों ने यह घटना अपने आदमियों से भी कही।

एक दिन ऐसा आया जब यह खबर इलाके के थाने में पहुंच गई। फिर क्या था? सुबह तड़के दरोगा और सिपाही उसके घर जा पहुंचे। जब गांव वालों को पता चला तो गांव के तमाम लोग भी आ गए। काका भी उसके घर पहुंच गए थे। दरोगा ने सबसे पहले उसकी औरत को धमकाकर पूछा, बता तेरे आदमी ने सिर कहां गाड़ा है? उसने डर के मारे वह स्थान इशारा करके दिखा दिया। जब उस स्थान को खोदा गया तो अंगोछे में लिपटा हुआ एक कटा तरबूज निकला।

कहावत का अर्थ है कि स्त्रियों के पेट में कोई बात नहीं पचती है।

: 199 : तीन बुलाए तेरह आए, देओ दाल में पानी

एक गाँव में एक सादा-स्वभाव का व्यक्ति रहता था। एक दिन उसने अपने तीन खास मित्रों को घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसकी पत्नी ने भी उसी हिसाब से तैयारी की– थोड़ी दाल, कुछ सब्ज़ी और सीमित रोटियाँ।

निश्चित समय पर दरवाज़ा खटखटाया गया। उसने दरवाज़ा खोला तो देखा कि उसके तीनों मित्र तो आए ही हैं, साथ में उनके रिश्तेदार और मित्र भी चले आए हैं। देखते-देखते मेहमानों की संख्या तीन से बढ़कर तेरह हो गई।

अब घर में हलचल मच गई। इतनी कम तैयारी में इतने लोगों को कैसे खिलाया जाए? गृहस्वामी थोड़ी देर के लिए घबरा गया, पर उसकी पत्नी समझदार थी। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो, दाल में पानी और डाल देते हैं, और मिर्च तेज कर देते हैं, सबका काम चल जाएगा।"

उसने दाल को थोड़ा पतला किया, रोटियों का साइज़ थोड़ा छोटा किया और सबको प्रेमपूर्वक परोस दिया। मेहमान भी खुश हुए और किसी को कमी का अहसास नहीं हुआ। जब कोई व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार जुगाड़ करता है तो यह कहावत प्रयोग की जाती है। इस को आपसी मजाक में अधिक प्रयोग करते हैं।

: 200 : तीन में न तेरह में

पुराने समय की बात है। एक मशहूर गणिका थी, जिसके कई प्रेमी थे। उसने अपने चाहने वालों को अलग-अलग श्रेणियों में बांट रखा था – पहली श्रेणी में तीन व्यक्ति थे, जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी। दूसरी श्रेणी में तेरह व्यक्ति थे, जो उसे महंगे उपहार दिया करते थे। तीसरी श्रेणी में वे थे, जिनकी गिनती वह सेर भर सुतली में गांठें लगाकर किया करती थी।

सबसे अंत में वे साधारण व्यक्ति थे, जिनसे मिलने के बाद वह उनके नाम का राई का एक दाना करवे में डाल दिया करती थी।

एक सेठ का बेटा उस गणिका को बहुत चाहता था, यह समझता था कि वह भी उसे बहुत प्यार करती है। संयोग से उसे व्यापार के काम से लंबे समय के लिए परदेश जाना पड़ा। वहाँ से उसने उस गणिका के लिए एक कीमती उपहार किसी के हाथ भिजवाया और संदेश दिया, "यह उस व्यक्ति की ओर से है, जो तुम्हें सबसे अधिक चाहता है!"

जब वह कीमती तोहफा उस गणिका के पास पहुँचा, तो उसने अपने नौकर को बुलाकर पूछा, "देखो तो, यह नाम हमारी किस सूची में आता है?"

नौकर ने पुरानी सूची को टटोला, एक-एक नाम देखा, पर उस सेठ के बेटे का नाम कहीं नहीं मिला। फिर वह बोला, "मालकिन, यह न तीन में है, न तेरह में, न सेर भर सुतली में, न करवा भर राई में!"

गणिका ने जोर से ठहाका लगाया और उपहार को बिना देखे ही किनारे रख दिया। इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति अपनी अहमियत को जरूरत से ज्यादा आँकता है, लेकिन वास्तव में उसकी कोई गिनती नहीं होती!

: 201 : तीन में न तेरह में, मृदंग बजावें डेरा में

बानपुर के महाराज मर्दनसिंह बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें दूर-दूर के ठाकुरों को आमंत्रित किया गया, बुंदेला, पंवार और धंधेरे - ये तीन कुलों के ठाकुर श्रेष्ठ माने जाते थे। इनके अलावा तेरह अन्य कुलों के ठाकुर भी होते थे, जिन्हें विशेष सम्मान प्राप्त था।

अब हुआ यूँ कि यज्ञ में इन तीन और तेरह कुलों के ठाकुरों के अलावा एक और सज्जन भी आ धमके। वे किसी विशेष कुल के नहीं थे, पर खुद को बड़ा मानते थे। जब भोज का समय आया, तो बड़ी समस्या खड़ी हो गई, "इन्हें कहाँ बिठाया जाए?" अगर इन्हें तीन और तेरह कुलों के ठाकुरों के साथ बिठाया जाता, तो यह बाकी ठाकुरों का अपमान होता। परन्तु, उन्हें खुलेआम भी नकारना भी ठीक नहीं लगता था।

बहुत सोच-विचार के बाद फैसला हुआ, "इन्हें मुख्य आयोजन से दूर, डेरा (शिविर) में ही भोजन कराया जाए!" अब यह साहब मुख्य यज्ञ मंडप में बैठ नहीं सकते थे, तो क्या करें? उन्होंने अपना खुद का मृदंग उठाया और डेरे में ही जोर-जोर से बजाने लगे।

इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति बिना बुलाए अपनी राय देने और खुद को महत्वपूर्ण साबित करने में लगा हो।

: 202 : तीसरा मुझको मारेगा

पुराने समय की बात है, जब न रेल थी, न तार। एक लाला जी को किसी दूसरे शहर व्यापार के काम से जाना था। रास्ता घने जंगल से होकर गुजरता था, इसलिए उन्हें चोर-डाकुओं का बड़ा भय था। लेकिन कमाई के लालच में उन्होंने हिम्मत की और पीठ पर बक्सा बाँधकर चल पड़े।

रास्ते भर उनका मन भय से भरा रहा। ज़रा-सी आहट पर भी वे घबरा जाते।

इसी बीच सामने से दो घुड़सवार आते दिखाई दिए। लाला जी ने सोचा–अब तो मारे गए! वे घबराकर बहुत झुककर बोले, “सरदार, किधर पधार रहे हैं?”

घुड़सवारों ने बताया कि वे राजा के सिपाही हैं और उसी शहर जा रहे हैं जहाँ लाला जी को जाना है। यह सुनकर लाला जी की जान में जान आई। उन्होंने विनती की, “मुझे भी अपने साथ ले चलिए, रास्ता बड़ा डरावना है।” सिपाहियों ने सहर्ष उन्हें साथ ले लिया। अब वे दोनों सिपाहियों के बीच चलने लगे।

कुछ दूर जाने पर सामने से तीन घुड़सवार आते दिखाई दिए। लाला जी फिर काँप उठे, “अबकी तो पक्के डाकू हैं, अब तो जान गई!” एक सिपाही बोला, “डरो मत, हम भी हथियारबंद हैं। एक को तो मैं मार गिराऊँगा।” दूसरा बोला, “और एक को मैं संभाल लूँगा।”

यह सुनकर भी लाला जी का डर कम न हुआ। वे घबराकर बोले, “आप लोग तो दो को मार देंगे, लेकिन तीसरा मुझको मारेगा!”

बहुत डरपोक व्यक्तियों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 203 : तुझे हुकहुकी आवे तो मुझे डुबडुबी आवे

किसी जमाने में एक सियार और एक ऊँट में बड़ी गहरी दोस्ती थी। ऊँट भोला-भाला और सीधा-सादा था, जबकि सियार बड़ा चालाक और धूर्त। वह हमेशा अपने स्वार्थ के लिए ऊँट को बहला-फुसलाकर अपना काम निकालता था।

नदी के उस पार खरबूजे का एक हरा-भरा खेत था। सियार का मन करता कि खूब खरबूजे खाए, लेकिन बेचारा नदी पार नहीं कर सकता था। उसने ऊँट से मीठी-मीठी बातें करके उसे मना लिया, "दोस्त, तू मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार करा दे, फिर हम दोनों मिलकर पेट भर खरबूजे खाएंगे!"

ऊँट मन का सच्चा था, उसने सियार की बात मान ली और उसे अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार करा दिया। दोनों ने खेत में घुसकर खूब खरबूजे खाए। अब जैसे ही सियार का पेट भर गया, वह बोला, "मुझे हुकहुकी आ रही है!"

ऊँट ने चौंककर पूछा, "भाई, यह हुकहुकी क्या होती है?" सियार बोला, "मुझे ज़ोर-ज़ोर से हुआ-हुआ करने का मन कर रहा है!" ऊँट घबरा गया, "अरे भाई, ऐसा

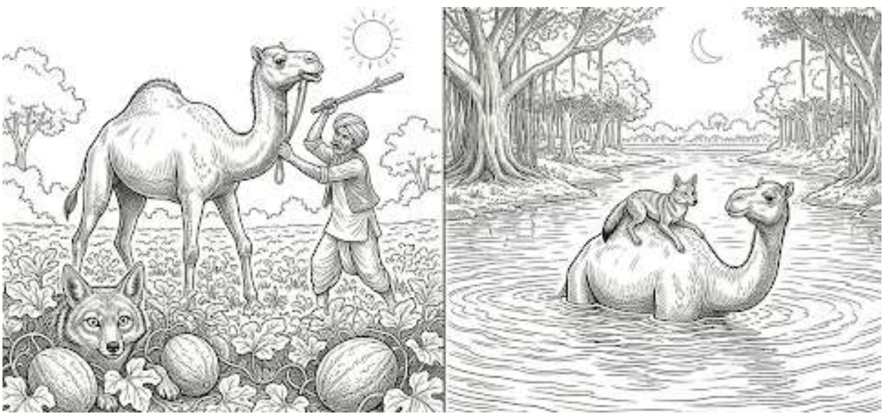

मत करना! खेत का मालिक आ जाएगा और हम दोनों को पीट देगा!"

लेकिन धूर्त सियार कहाँ मानने वाला था? उसने जोर-जोर से हुआ-हुआ करना शुरू कर दिया। खेत के रखवाले डंडे लेकर दौड़े और सियार तो झाड़ियों में छिप गया, लेकिन ऊँट आसानी से पकड़ा गया और रखवालों ने उसे डंडों से खूब पीटा।

ऊँट गुस्से से जल-भुन गया, लेकिन कुछ बोला नहीं। अब जब वे वापस लौटने लगे, तो ऊँट नदी के बीच में पहुंचा और बोला, "मुझे डुबडुबी आ रही है!" सियार घबरा गया, "भाई, यह डुबडुबी क्या होती है?" ऊँट मासूमियत से बोला, "मुझे बार-बार डुबकी लगाने का मन कर रहा है!"

सियार गिड़गिड़ाने लगा, "अरे भाई, ऐसा मत करना! मैं तो मर जाऊँगा!" लेकिन ऊँट ने भी उसकी बात अनसुनी कर दी और झट से नदी में डुबकी लगा दी। सियार तेज धार में बह गया।

इसका उपयोग तब किया जाता है जब किसी धूर्त व्यक्ति को उसी के तरीके से सबक सिखाया जाए।

: 204 : तुम तो मुझे छेड़ोगे

एक गाँव में एक औरत अपने सिर पर खाली घड़ा रखे जा रही थी। वह बहुत नाज-नखरे वाली महिला थी, जो हमेशा झूठमूठ का नखरा करती थी। इस बार भी वह रास्ते में बड़ी इठला कर चल रही थी।

रास्ते में एक पुरुष मिला, जो दो कबूतर अपने दोनों हाथों में पकड़े हुए आ रहा

था। उस महिला ने उसे देखते ही चिढ़ते हुए कहा, "देखो जी, मुझे छेड़ना मत!" पुरुष ने झेंपते हुए जवाब दिया, "ऐसा तो मेरा कोई इरादा नहीं है! और मैं यह कैसे कर सकता हूँ, देखो तो सही, मेरे दोनों हाथों में तो कबूतर हैं!"

लेकिन महिला ने मुस्करा कर कहा, "मैं सब जानती हूँ, तुम क्या सोच रहे हो। तुम अपने दोनों कबूतरों को मेरे घड़े में रख दोगे और फिर मुझे छेड़ोगे।" अपने आप को ज्यादा सुंदर समझने वाली और फ़ालतू के नखरे दिखाने वाली स्त्रियों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 205 : तुर्कनी के खाने में क्या दोष

हमें अपने बचपन की कई बातें आज भी स्पष्ट रूप से याद हैं। खाने के समय एक सख्त नियम था कि कोई बोलता नहीं था। अगर कभी दाल या सब्ज़ी में नमक कम हो जाता, तो हमारे बाबा कुछ कहते नहीं थे। वे बस हल्की सी “ऊँ... ऊँ...” की

आवाज़ करते और उंगली से अपनी थाली की ओर इशारा कर देते। हमारी माँ तुरंत समझ जातीं और उनके सामने नमक रख देतीं। बड़ों का कहना था कि खाते समय बोलने से भोजन गलत नली में जा सकता है, जिससे खतरा हो सकता है। शायद इसी कारण यह नियम बनाया गया था।

घर की एक और परंपरा थी—पूरा भोजन बनने के बाद पहले भगवान को भोग लगाया जाता था, उसके बाद ही कोई उसे ग्रहण करता था। इसलिए महिलाएँ खाना बनाते समय उसे चखती नहीं थीं जिससे वह अशुद्ध न हो जाए। ऐसे में यदि कभी खाना बनाते समय नमक कम रह जाए या कोई चीज़ अधपकी रह जाए, तो उन्हें इसका पता नहीं चल पाता था। जब भोजन परोसा जाता, तब ही उसकी कमी सामने आती।

इसके विपरीत, मुस्लिम घरों में ऐसी कोई बाध्यता नहीं थी। वहाँ की महिलाएँ खाना बनाते समय बीच-बीच में चखकर देख लेती थीं। इसलिए उनका बनाया हुआ भोजन परोसते समय ठीक होता था।

इसी बात को लेकर लोगों में यह कहावत प्रचलित हो गई। यहाँ "तुर्कनी" शब्द का प्रयोग सामान्यत मुस्लिम स्त्री के लिए किया गया है, जैसा कि उस समय की बोलचाल में प्रचलित था। यह कहावत उस समय की सामाजिक मान्यताओं की ओर संकेत करती है।

: 206 : तू खेला आन से, हम खेली मान से, कुत्ता खेला पिसान से

एक समय की बात है, एक घर में एक पति-पत्नी रहते थे, दोनों ही अपनी दुश्चरित्रता के कारण बहुत चर्चित थे। पति का दिल प्रेमिकाओं में और पत्नी का दिल अपने प्रेमी में बसता था। दोनों अपने-अपने आनंद में मस्त रहते थे और घर के कामकाज से कोई वास्ता नहीं रखते थे।

एक दिन, पत्नी अपने घर के आँगन में बैठकर आटा गूंध रही थी, और पति वहीं पास में बैठा कुछ सोच रहा था। तभी उसकी प्रेमिका रास्ते से गुजरी। प्रेमिका को देखते ही पति तुरंत अपनी जगह छोड़कर उसके पीछे चल पड़ा। यह देखकर पत्नी भी अपने प्रेमी से मिलने के लिए निकल पड़ी। इस बीच में घर में एक कुत्ता घुस आया और वह आटा खा गया।

कुछ देर बाद जब पति घर लौटा तो उसने देखा कि आटा गायब था। उसने पत्नी से पूछा, "यह आटा कहाँ गया?" पत्नी ने मुँह चिढ़ाते हुए जवाब दिया, "तुम अपने खेल में मस्त थे, और मैं अपने खेल में। इसी दौरान कुत्ता आटे के साथ खेल गया।"

यह कहावत उन लोगों के लिए बोली जाती है जो अपने-अपने आनंद में मस्त रहते हैं और घर की जिम्मेदारियों पर ध्यान नहीं देते।

: 207 : तेते पांव पसारिए, जेती लांबी सौर

अकबर के दरबार में कुछ दरबारी बीरबल से ईर्ष्या करते थे। वे कहते थे कि बादशाह उन्हें जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं। इस पर बीरबल की परीक्षा लेने के लिए एक दिन अकबर ने दरबार में एक छोटी चादर मंगवाई।

उन्होंने सब दरबारियों से कहा कि इस चादर से उनका पूरा शरीर ढककर दिखाएं। एक-एक कर सभी ने कोशिश की, लेकिन जब सिर ढकते तो पैर बाहर रह जाते और जब पैर ढकते तो सिर खुल जाता। कोई भी सफल नहीं हुआ।

अंत में बीरबल को बुलाया गया। उन्होंने चादर देखकर तुरंत विनम्रता से कहा, “जहाँपनाह, जितनी लंबी चादर है, उतने ही पांव पसारिए।” अकबर ने अपने पैर समेट लिए, और उसी चादर से उनका पूरा शरीर ढक गया। सभी दरबारी बीरबल की बुद्धिमानी को देख कर निरुत्तर रह गए।

कहावत का अर्थ है कि जितने साधन हों, उसी के अनुसार खर्च या व्यवहार करना चाहिए।

: 208 : तेरी मेरी बोली में बस इतना ही फरक, तू तो कहे था फ़रिश्ता, मैं कहूँ था जरख

(जरख - लकड़बग्घा)।

किसी मुसलमान की मृत्यु होने पर घर वालों ने उसे पूसे रीति रिवाज के साथ कब्र में दफनाया और अपने अपने घर चले गये। कब्रिस्तान के पास में ही जंगल था। रात में कब्र खोद कर लकडबग्घा उस की लाश को ले गया।

एक जाट ने यह देख लिया। उसने जब मुसलमान के घरवालों को यह बात बताई तो पहले तो वे सोच में पड़ गये फिर बात बनाते हुए बोले कि वह तो लकड़बग्घे की शक्ल में फ़रिश्ता था जो उन साहब को सीधे जन्नत ले गया है।

कहावत का अर्थ है कि जब किसी के धार्मिक अंधविश्वास पर चोट की जाती है तो वह उस की कुछ न कुछ सफाई दे कर अपने अंधविश्वास का बचाव करने की कोशिश करता है।

: 209 : तेल देखो, तेल की धार देखो

बहुत समय पहले की बात है, एक राजकुमार था जिसके चार मित्र थे - एक सिपाही, एक ब्राह्मण, एक ऊंट पालने वाला (उंटेरा), और एक तेली। जब राजकुमार का पिता मरा, तो राजकुमार गद्दी पर बैठा। उसने अपने चारों मित्रों को अपने मंत्रियों के रूप में नियुक्त किया, क्योंकि उसे उन पर पूरा विश्वास था। पड़ोस के एक राजा ने जब उसे मूर्ख मंत्रियों से घिरा और भोग-विलास में डूबा पाया, तो उस पर चढ़ाई कर दी।

राजकुमार ने अपने मंत्रियों को बुलाया और उनसे इस बारे में राय मांगी, ताकि वह समझ सके कि क्या करना चाहिए।

सिपाही, जो एक निडर योद्धा था, उसने तुरंत कहा, "लड़ाई करनी चाहिए। हमें इन लोगों को चुनौती देनी चाहिए और उनका सामना करना चाहिए!" ब्राह्मण, जो शांतिपूर्ण व्यक्ति था, उसने सुझाव दिया, "नहीं, हमें सुलह करनी चाहिए। किसी भी तरह से शांति स्थापित करनी चाहिए।"

अब बारी थी उंटेरे की। उसकी समझ केवल ऊँट तक ही सीमित थी। उसने कहा, "हम क्यों जल्दबाजी करें? देखिए, ऊंट किस करवट बैठता है। सबसे दिलचस्प राय दी तेली ने। वह कहने लगा, "अभी तेल देखिए, तेल की धार देखिए!" यानी जो जैसा होता है वह उस से ऊपर कुछ सोच ही नहीं सकता।

: 210 : थोथा चना बाजे घना

एक गाँव के विद्यालय में एक बुद्धिमान छात्र ने अपने गुरु से पूछा, "गुरुजी, 'थोथा चना बाजे घना' का क्या अर्थ है?" गुरुजी मुस्कराए और बोले, "बेटा, इसका उत्तर मैं तुम्हें विद्यालय के बाद समझाऊँगा।"

विद्यालय समाप्त होने के बाद गुरुजी उसे पास के एक चने के खेत में ले गए। खेत में चने की फसल पककर तैयार खड़ी थी। वहाँ उन्होंने खेत की रखवाली कर रहे किसान से पूछा, "भाई, तुम कैसे पहचानते हो कि किस पौधे में चना अच्छा और भरा हुआ है और किसमें कमजोर है?"

किसान ने उत्तर दिया, "हम पौधे को हल्का-सा हिलाकर देखते हैं। जिस चने के दाने भरे हुए और मजबूत होते हैं, वे कसे रहते हैं, इसलिए हिलाने पर कोई आवाज नहीं होती। लेकिन जिनमें दाने छोटे या कमजोर होते हैं, वे ढीले होते हैं और हिलाने पर खनकने लगते हैं।"

यह सुनकर छात्र तुरंत समझ गया। उसने गुरुजी से कहा, "इस कहावत का अर्थ है कि जो व्यक्ति अंदर से खाली होता है, वही अधिक शोर करता है। और जो वास्तव में गुणी और ज्ञानी होता है, वह कम बोलता है।" गुरुजी ने संतोषपूर्वक सिर हिलाया।

इस कहावत का अर्थ और भी है। जो स्त्रियाँ ज्यादा फैशन करती हैं और सुन्दर न होने पर भी बेतुका श्रृंगार कर के इतराती हैं उनका मजाक उड़ाने के लिए इस से मिलती जुलती एक कहावत कही जाती है - चार बिछिये टन टन बाजें, नौ मन काजल नैन बिराजे, झीना घूँघट नखरा घना, थोथा चना बाजे घना।

: 211 : दगा किसी का सगा नहीं, कर के देखो भाई

एक पंडित नित्य राजा को कथा सुनाने जाया करता था। एक दिन राजा ने पंडित से कहा कि आज कथा सुनने के लिए मेरे पास अधिक समय नहीं है इसलिये आप मुझे सार रूप में ही कथा सुना दें। पंडितजी सार रूप में दो बातें कह दीं - दगा किसी का सगा नहीं, करंता सो भोगंता। राजा उसे सोने की एक मोहर दे दी। फिर जब भी कभी राजा के पास समय नहीं होता तो पंडित उसे यही दो पंक्तियाँ सुनाता और राजा उसे एक मोहर दे देता। यह देख कर राजा के नाई को बड़ी डाह हुई।

अगले ही दिन उसने पंडित को बरगलाने के लिए कहा कि तुम काहे के पंडित हो? राजा मांस खाता है, शराव पीता है और तुम उसके मुँह में मुँह दिये रहते हो। जब राजा तुमसे बात करता है तो उसके मुँह की हवा तुम्हारे मुंह में जाती है, जिससे तुम्हारा भी धर्म भ्रष्ट होता है। इसलिए कल से मुंह पर पट्टी बांध कर आया करो। पंडित को नाई की बात उपयुक्त लगी।

उधर नाई ने राजा से कहा कि महाराज! आपने यह कैसा पंडित रख रखा है? यह तो कहता है कि राजा के मुँह से बड़ी दुर्गन्ध आती है, इसलिए कल से मुँह पर पट्टी बांध कर आया करूंगा। अगले दिन पंडित अपने मुँह पर पट्टी बांध कर आया। यह बात राजा को बड़ी बुरी लगी और उसने पंडित को दण्ड देने का निश्चय कर लिया।

जब पंडित कथा सुना कर जाने लगा तो राजा ने उसे एक की बजाय दो मोहरें दीं और साथ ही उसे एक चिट्ठी भी दी कि यह चिट्ठी अभी कोतवाली जाकर कोतवाल को दे देना। पंडित बाहर निकला तो दरवाजे के बाहर ही उसे नाई मिला। उसने एक मोहर नाई को दे दी और उससे कहा कि यह चिट्ठी तुम कोतवाल को दे आओ। नाई खुश हो गया और चिट्ठी लेकर कोतवाली गया। कोतवाल ने चिट्ठी पढ़ी और नाई को पकड़ कर झट से उसकी नाक काट ली, क्योंकि चिट्ठी में राजा ने यही आदेश लिखा था कि चिट्ठी लाने वाले की नाक तुरन्त काट ली जाए। इस प्रकार नाई को दगा करने का फल मिल गया।

कहावत का अर्थ है कि किसी को धोखा दे कर आप फायदा नहीं उठा सकते।

: 212 : दस पाँच लड़के एक संतोस, गदहा मारे कबहूँ न दोस

यह कहानी एक छोटे से गाँव की है, जहां कुछ लड़कों ने खेलते-खेलते एक गदहे को मार डाला। यह घटना गाँव में फैल गई और लड़कों के माता-पिता घबराते हुए पण्डित जी के पास पहुँचे। वे जानना चाहते थे कि गदहे को मारने का क्या पाप है, और इसके लिए किस तरह की मुक्ति की आवश्यकता होगी।

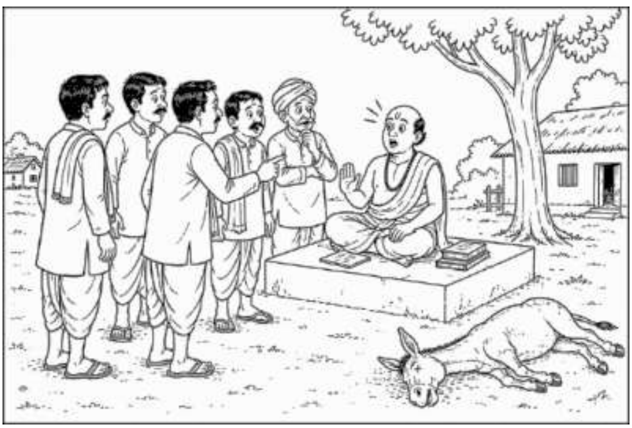

पण्डित जी बड़ी गंभीर मुद्रा में बोले, "यह बहुत बड़ा पाप है। इसके लिए लंबी पूजा-अर्चना, व्रत और अन्य धार्मिक उपायों की जरूरत पड़ेगी, ताकि इस महापाप से मुक्ति मिल सके।" सभी माता-पिता उनके आदेश के अनुसार उपायों की जानकारी लेने लगे, लेकिन तभी एक शरारती लड़के ने कहा, "पण्डित जी, आपका लड़का संतोष भी तो उन लड़कों में शामिल था, जिन्होंने गदहा मारा।"

यह सुनते ही पण्डित जी की आँखें खुल गईं। वे तुरंत बोले, "अरे नहीं, नहीं! गदहा मारने में कोई ख़ास दोष नहीं है।"

इस कहावत के द्वारा पंडित लोगों द्वारा अपने लाभ के लिए फैलाए गए भ्रम जाल पर व्यंग्य किया गया है।

: 213 : दिखावें परमारथ, सिद्ध करें स्वारथ

एक सराय में एक अजीब आदमी रहता था, जिसे लोग "नीबू निचोड़" कहते थे। उसका काम बड़ा निराला था–हाथ में एक नींबू और छुरी लिए वह सराय में घूमता रहता। जहाँ भी किसी मुसाफिर को खिचड़ी या दाल-रोटी खाते देखता, तुरंत उसके पास पहुँच जाता और कहता, "अरे, बिना नींबू के खिचड़ी का क्या स्वाद! और बिना नींबू के तो दाल खाई ही नहीं जा सकती है?"

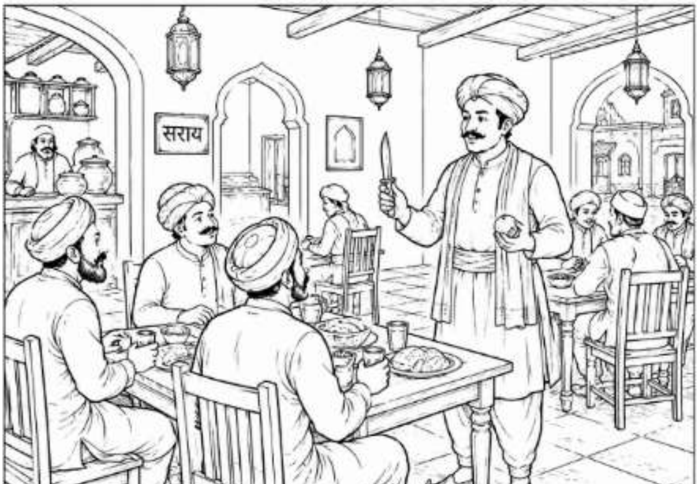

इतना कहकर वह बिना पूछे ही अपने नींबू का रस उसकी थाली में निचोड़ देता। बेचारे मुसाफिर को शिष्टाचार में कहना पड़ता, "अच्छा, आप भी थोड़ा साथ में खा लीजिए।"

वह आदमी बनावटी संकोच दिखाते हुए कहता, "मुझे भूख तो नहीं है, लेकिन आपका आग्रह कैसे टालूँ? मैं तो थोड़ा ही खाऊँगा।" और फिर वह आराम से थाली का अच्छा-खासा हिस्सा खा जाता।

धीरे-धीरे सराय के लोग उसकी इस चालाकी को समझ गए। अब उसे देखते ही लोग सावधान हो जाते और अपनी थाली में नींबू डालने से रोक देते। फिर भी कभी-कभी कोई नया मुसाफिर उसके झाँसे में आ ही जाता और वह अपना काम निकाल लेता।

यह कहावत ऐसे लोगों पर कटाक्ष करती है जो ऊपर से भलाई (परमार्थ) का दिखावा करते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

: 214 : दिल्ली में बारह वर्ष रहे, लेकिन भाड़ ही झोंका

एक आदमी को दिल्ली में बारह बरस बिताने के बाद संयोग से देहात में रहना पड़ा। उसे अपने दिल्ली में बारह बरस बिताने का बड़ा अभिमान था। जहाँ भी बैठता, दिल्ली की ही बातें करता, “अरे दिल्ली में तो यह है, दिल्ली में तो वह है... वहाँ के तौर-तरीके, इमारतें, स्कूल-कॉलेज, नाटक, सिनेमा–आप क्या जानें बड़े शहरों की बात!”

एक दिन किसी व्यक्ति ने उसकी डींगें सुनकर कहा, “भाई, दिल्ली हमने भी देखी है, दो-चार बार गए हैं। ऐसा क्या अनोखा है उसमें?” वह तुरंत बोला, “तुम वहाँ रहे कितने दिन? मैं तो पूरे बारह साल दिल्ली में रहा हूँ!”

तभी पास खड़ा एक व्यक्ति, जो उसकी असलियत जानता था, मुस्कुराकर बोला, “यह तो बताओ कि उन बारह सालों में तुमने किया क्या?

वह बात टालने लगा, तो उस व्यक्ति ने खुद ही कह दिया, “भाई, सच्चाई यह है कि तुम दरीबे में एक भड़भूजे के यहाँ भाड़ झोंकते थे।”

यह कहावत उन लोगों पर व्यंग्य करती है जो बड़े-बड़े दावे तो करते हैं, लेकिन उनके पास वास्तव में कोई ठोस उपलब्धि नहीं होती।

: 215 : दुख मरें बी फातिमा, कौवे मेवे खाएं

कहा जाता है कि बी फातिमा नाम की एक स्त्री ने अपने बाग़ में बड़े परिश्रम से अंगूर की बेलें लगाईं और उनकी देखभाल की। उसने दिन-रात मेहनत करके उन्हें सींचा, सँवारा और रखवाली कर के उन्हें सुरक्षित रखा।

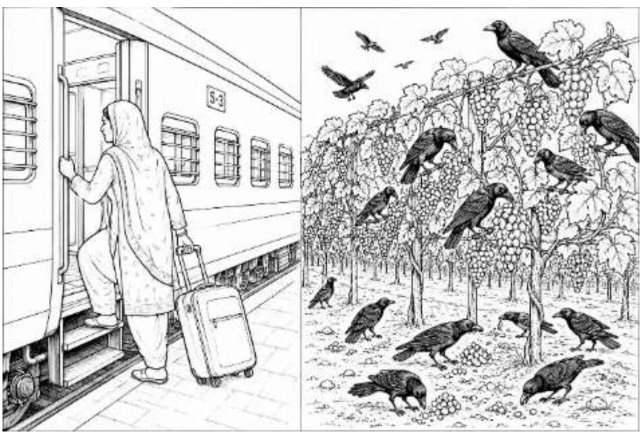

समय आने पर अंगूर पककर तैयार हो गए। एक दिन उसे किसी आवश्यक कार्य से घर से बाहर जाना पड़ा।

इसी बीच कुछ कौवे वहाँ आ गए और उन्होंने उन पके हुए अंगूरों को खाना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में वे अधिकांश अंगूर खाकर उड़ गए।

जब बी फातिमा वापस आई, तो उसने देखा कि उसकी मेहनत का फल नष्ट हो चुका है। कहावत का अर्थ है कि शरीफ लोग मेहनत करते हैं और धूर्त लोग मौज करते हैं।

: 216 : दूतों से भीतें हिल जाती हैं

मंथरा की कहानी हम सब ने सुनी है। जब राजा दशरथ ने अपने बड़े पुत्र राम को अयोध्या की राजगद्दी देने की घोषणा की और सब तैयारी कर ली गई तब मंथरा ने कैकेई को खूब भड़काया और राजा दशरथ से उनके वचन के अनुसार दो वरदान मांगने को राजी कर लिया। इसके फल स्वरुप भरत को गद्दी और राम को वनवास मिल गया।

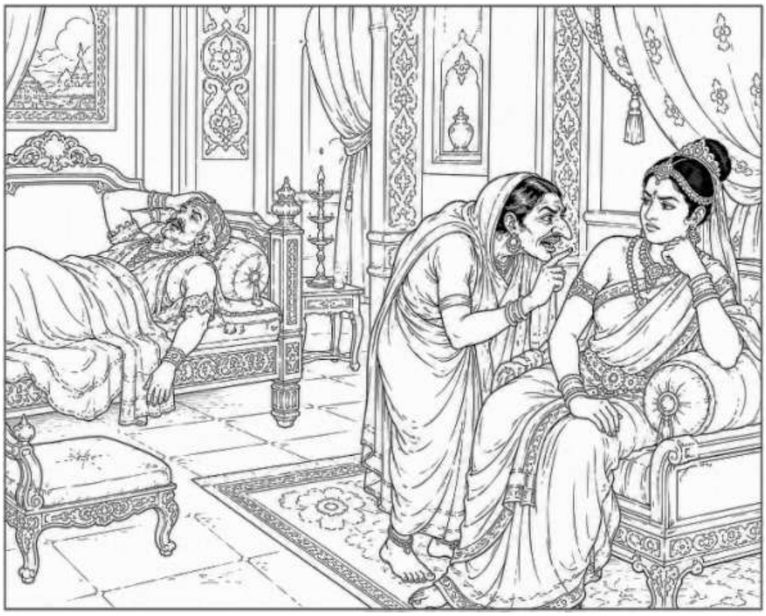

कहावत का अर्थ है कि बहुत बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ भी यह परंपरा रही है कि चुगलखोर और धूर्त कर्मचारी राज्य की नीवें हिला सकते हैं। इसी पर यह कहावत बनी है।

: 217 : दूध का दूध और पानी का पानी

एक गाँव में एक दूधवाली गूजरी रहती थी। देखने में सीधी-सादी, पर अक्ल की बड़ी तेज़। वह रोज़ दूध बेचने जाती, मगर दूध में आधा पानी ज़रूर मिला देती। दाम पूरे वसूलती और मन ही मन खुश होती।

एक दिन वह अपने सारे रुपयों की पोटली बाँधकर कहीं जा रही थी। रास्ते में एक नदी आई। धूप तेज़ थी, थकान भी लग रही थी। नदी किनारे एक बड़ा-सा पेड़ दिखा, तो वह उसकी छाँव में बैठ गई, बैठते ही उसकी आँख लग गई।

इसी बीच पेड़ पर बैठी एक चंचल बंदरिया की नज़र उस पोटली पर पड़ गई। मौका पाते ही वह झपट कर पोटली उठा ले गई और फुर्ती से पेड़ की डाल पर जा बैठी। बंदरिया ने पोटली खोली...

वह उसमे से रूपये निकालती...एक नदी में डाल देती, दूसरा ज़मीन पर फेंक देती। नींद खुली तो दूधवाली ने देखा–उसकी मेहनत की कमाई यूँ लुट रही है! वह जोर-जोर से रोने लगी, "हाय मेरी कमाई! मेरी पोटली!"

पास ही खड़ा एक समझदार आदमी यह तमाशा देख रहा था। उसने मुस्कराते हुए कहा, "रो मत गूजरी! यह बंदरिया बड़ी सयानी है। यह दूध की कमाई तुझे दे रही है और पानी की कमाई पानी में डाल रही है।"

: 218 : दूल्हे को मिली दुल्हन, समधी को मिला दहेज, बुड़बक बाराती क्यों करें परहेज

एक गाँव के चौधरी के बेटे की शादी थी। पूरे गाँव में धूमधाम थी–शानदार बाजा, रोशनी, और बढ़िया सजावट। लोगों में यह चर्चा भी थी कि लड़की वालों ने भरपूर दहेज दिया है। चौधरी का मान-सम्मान ऐसा था कि पूरे गाँव को बारात में न्योता दिया गया था।

बारात बड़े ठाठ से पहुँची। द्वारचार की रस्म पूरी हुई और बारातियों के लिए पंडाल में स्वादिष्ट भोजन की मेजें सजा दी गईं। तरह-तरह के पकवान सामने थे, लेकिन किसी ने बारातियों को खाने के लिए औपचारिक रूप से कहा ही नहीं। उधर लड़के-लड़की के घरवाले आगे की रस्मों में व्यस्त हो गए, और इधर बारातियों के पेट में भूख से "चूहे कूदने" लगे।

आखिर कुछ मनचले युवकों से रहा नहीं गया। उन्होंने प्लेटें उठाईं और खाना शुरू कर दिया। कुछ बुजुर्गों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने टोका, "ऐसी जगह पर जब तक बुलाया न जाए, खाना शुरू नहीं करना चाहिए।"

तभी उन युवकों में से एक ने हँसते हुए जवाब दिया–

"दूल्हे को दुल्हन मिल गई, समधी को दहेज मिल गया, बाराती क्या बेबकूफ हैं कि भूखे मरते रहें।" यह कहानी हल्के-फुल्के व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक व्यवहार और औपचारिकताओं पर चुटकी लेती है।

: 219 : देख तिरिया के चाले, सिर मुंडा मुंह काले, देख मर्दों की फेरी, मां तेरी कि मेरी

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में एक बड़ी चालाक औरत रहती थी। वह बात-बात पर अपनी ज़िद मनवाती थी। अपनी सास से वह विशेष दुश्मनी मानती थी। एक दिन वह बीमारी का बहाना बनाकर खाट पर लेट गई। कराहते हुए पति से बोली, "मेरी तबीयत बहुत खराब है। मुझे सपने में स्वर्गीय गुरु जी ने बताया है कि जब तक तुम अपनी माँ को सिर मुड़ाकर, मुँह काला कर के, गधे पर बैठा कर मेरे सामने नहीं लाओगे, तब तक मैं ठीक नहीं हो सकती।"

पति मन ही मन मुस्कराया और बोला– "ठीक है, जैसा तुम कहो वैसा ही होगा।" वह सीधा अपनी ससुराल पहुँचा। वहाँ जाकर सास से बड़े दुखी स्वर में बोला, "अम्मा, आपकी बेटी बहुत बीमार है। गुरूजी ने कहा है कि अगर आप सिर मुड़ाकर, मुँह काला कर के और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुँच जाएँ, तभी उसकी जान बचेगी।"

माँ तो माँ होती है। बेटी की बात आई, तो उस ने सिर भी मुड़वा लिया, मुँह पर कालिख भी पुतवा ली और गधे पर बैठने को भी तैयार हो गई। कुछ ही देर में वह उसी हालत में बेटी के दरवाज़े पर पहुँची। अंदर खाट पर पड़ी बेटी ने खिड़की से झाँका। उस हालत में अपनी माँ को पहचान न पाई।

उसे लगा, "अरे! सच में मेरी चाल चल गई। सास को तो मैंने नीचा दिखा ही दिया!" मन ही मन खुश होकर वह बोल उठी, "देख तिरिया के चाले, सिर मुंडा, मुँह काले!"

इतने में पति आगे बढ़ा और ठहाका लगाकर बोला, "देख मर्दों की फेरी, माँ तेरी कि मेरी?"

बस, इतना सुनते ही औरत का चेहरा उतर गया। उसकी सारी चालाकी धरी की धरी रह गई। इस कहावत का अर्थ यही है कि अक्ल की लड़ाई में चालाकी का जवाब चालाकी से ही देना चाहिए।

: 220 : देखना है ऊंट किस करवट बैठता है

एक गांव में हर सात दिन बाद हाट (बाजार) लगती थी। हाट में सब तरह का सामान बिकने आता था। पास के एक गांव से एक कुंजड़ा और कुम्हार भी अपना सामान हाट में ले जाते थे। कुंजड़ा फल-सब्जिया आदि ले जाता था और कुम्हार अपने मिट्टी के बरतन। इनको सामान का भाड़ा इतना देना पड़ता कि मुनाफा बहुत कम रह जाता था। उसी गांव में एक ऊंटवाला भी था जो हाट में दुकानदारों का सामान लाता ले जाता था।

कुंजड़ा और कुम्हार ने तय किया कि हम अपना सामान ऊंट पर रख कर ले चलते हैं जो किराया आएगा उसको आधा-आधा बाँट लेंगे। बचत होती देखकर दोनों तैयार हो गए। हाट के दिन ऊँट की गौन में एक ओर कुम्हार ने अपने बरतन लादे और दूसरी ओर कुंजड़े ने अपनी सब्जियाँ। दोनों हाट को चल दिए। ऊंटवाला रस्सी पकड़े आगे-आगे जा रहा था और ये दोनों साथ-साथ पैदल चल रहे थे।

ऊंट ने एक बार अपनी गरदन पीछे की और घुमाई, तो उसे सब्जी के पत्ते लटकते दिखाई दिए। ऊंट ने पीछे गरदन करके सब्जी के कुछ पत्ते खींच लिए और खा गया। जब ऊंट ने दोबारा सब्जियों के पत्तों में मुंह मारा तो कुंजड़े ने कहा, "ऊंटवाले भैया, डोरी जरा खींचकर रखो। ऊंट सब्जियों में मुह मार रहा है।" लेकिन ऊँट कहाँ मानने वाला था। ऊंटवाले के ध्यान रखने के बाद भी ऊंट सब्जियों में से कुछ-न-कुछ खींच लेता था। कुंजड़े का नुकसान देखकर कुम्हार हँसते हँसते लोटपोट हुआ जा रहा था।।

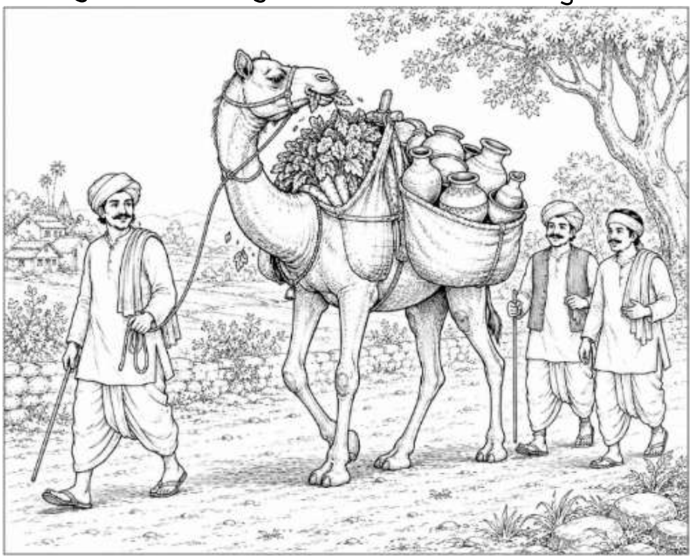

ऊँट के हाट तक पहुँचते पहुँचते सब्जियाँ काफी कम हो गईं, इसलिए कुम्हार के बर्तन बोझ के कारण दूसरी ओर लटक गए। सुविधा के अनुसार ऊंट उसी करवट बैठा। ऊँट के बोझ से दब कर कुम्हार के बहुत से बरतन टूट गए।

जब यह तय न हो कि आने वाले समय में परिस्थितियाँ क्या मोड़ लेंगी तब यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 221 : देखो खेल खुदाई का, क्या-क्या पलटे रंग, खानजादा खेती करें, तेली चढ़ें तुरंग

एक नवाब ने एक तेली की अत्यंत सुंदर लड़की से विवाह कर लिया। लड़की केवल सुंदर ही नहीं, बहुत चतुर और महत्वाकांक्षी भी थी। विवाह के बाद उसने धीरे-धीरे अपनी चालाकी और प्रभाव का उपयोग करते हुए दरबार के महत्वपूर्ण पदों पर अपने मायके के लोगों को नियुक्त करवा दिया।

समय बीतने के साथ स्थिति इतनी बदल गई कि नवाब के अपने बेटे और भतीजे उपेक्षित हो गए। उन्हें राजसी ठाट-बाट से दूर होकर खेती करके गुजारा करना पड़ा। दूसरी ओर, लड़की के खानदान के लोग ऊँचे पदों पर आसीन होकर घोड़े पर सवार होकर ऐशो-आराम का जीवन जीने लगे।

इसी अनुभव के आधार पर पुराने लोग विवाह में समान कुल, गोत्र और सामाजिक स्तर का विचार करने की सलाह देते थे। तभी यह कहावत भी प्रचलित हुई– “बराबरी में कीजिए बैर, प्रीत और ब्याह।” समय की मार से तुच्छ लोग महत्वपूर्ण पदों पर पहुँच जाएँ या कुलीन लोग महत्वहीन हो जाएँ तो यह कहावत कही जाती है।

: 222 : दो घर बिगड़ते एक घर बिगड़ा

एक लड़की बचपन से ही बड़े लड़ाका स्वभाव की थी। जब छोटी थी तब अपने भाई बहनों से और साथ के बच्चों से लड़ती थी। थोड़ी बड़ी हुई तो पड़ोसियों से लड़ने लगी।

संयोग से उसका विवाह एक ऐसे आदमी से हुआ जो शराबी और बहुत झगड़ालू किस्म का था। शादी के बाद उन दोनों में अक्सर लड़ाई मारपीट और सर फुटौवल होती रहती थी। पास पड़ोसियों को उनके घर से हमेशा तेज आवाज में लड़ने और बर्तन फेंकने आदि की आवाज़ आया करती थी।

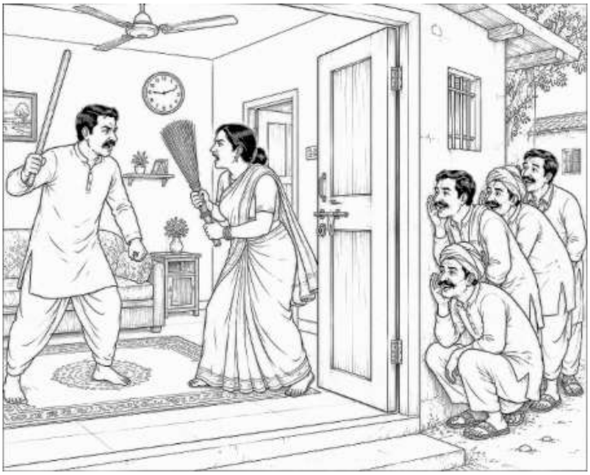

तब पड़ोस के किसी बुज़ुर्ग ने कहा कि अच्छा हुआ इन दोनों की आपस में शादी हो गई, जिससे एक ही घर बिगड़ा। अगर इनकी शादियां अलग अलग हुई होतीं तो दो घर बिगड़ते।

: 223 : दो जोरुओं का खसम, फूंके चूल्हा

एक गाँव में एक मौलवी साहब रहते थे। वे बड़े सीधे-साधे और भले इंसान थे। दिनभर मदरसे में बच्चों को पढ़ाते और शाम को थके-हारे घर लौटते। लेकिन उनकी एक परेशानी थी—उनकी पत्नी बहुत नाज-नखरों वाली थीं। हर समय किसी न किसी बात को लेकर मौलवी साहब को उलझाए रखतीं।

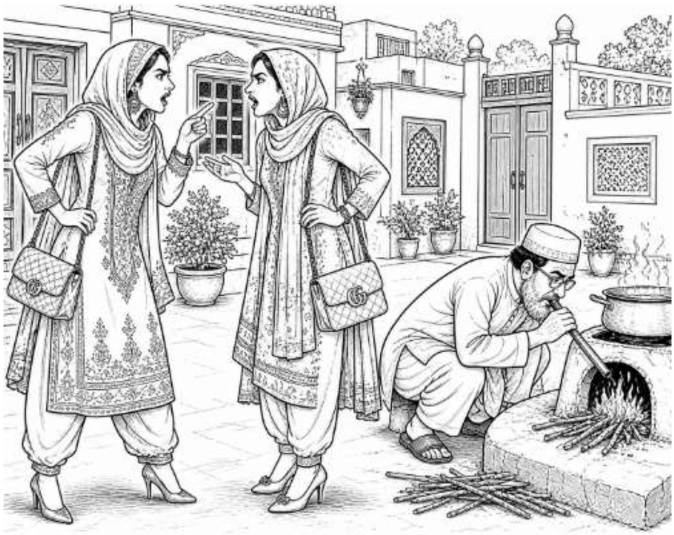

बेचारे मौलवी साहब दिनभर शरारती बच्चों से जूझते और घर आकर अपनी पत्नी के नखरे सहते। फिर भी एक सुकून की बात थी कि उनकी पत्नी समय पर खाना बनाकर खिला देती थीं।

समय बीतता गया, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं हुई। संतान की इच्छा में मौलवी साहब ने दूसरी शादी करने का निश्चय किया। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। दूसरी पत्नी पहली से भी ज्यादा नखरे वाली निकली। अब घर में नई समस्या खड़ी हो गई। दोनों पत्नियाँ आपस में इस बात को लेकर झगड़ने लगीं कि खाना कौन बनाएगा।

एक कहती—"तुम बनाओ, मौलवी साहब तुमसे ज्यादा लगाव रखते हैं।" दूसरी जवाब देती—"नहीं, तुम बनाओ, तुम्हीं उनकी पहली पसंद हो!"

इस खींचतान में कोई भी खाना बनाने को तैयार नहीं होता। नतीजा यह हुआ कि बेचारे मौलवी साहब को मदरसे से लौटकर खुद ही चूल्हा जलाना पड़ता और खाना बनाना पड़ता।

उनकी यह हालत देखकर गाँव का एक हँसमुख आदमी हँसते हुए बोला, "अरे भई, दो जोरुओं का खसम, फूंके चूल्हा!" धीरे-धीरे यह बात कहावत बनकर मशहूर हो गई। इससे भी बढ़ कर एक कहावत और है - तिनब्याहे का बढ़िया भाग, दो ले जाएँ अरथी और इक ले जाए आग। जो आदमी तीन शादियाँ करे उसका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है। कहावत में यह मान लिया गया है कि ऐसा व्यक्ति जीते जी मर जाता है।

: 224 : दो लड़ें तीसरा ले उड़े

बहुत समय पहले की बात है। एक दिन दो बिल्लियों को कहीं से एक नरम-नरम रोटी मिल गई। रोटी देखते ही दोनों की आँखें चमक उठीं। पहली बोली, "यह रोटी मुझे मिली है, मैं खाऊँगी!" दूसरी झट से बोली, "नहीं-नहीं! यह मुझे मिली है, मैं खाऊँगी!"

दोनों उसे खाने के बजाय काफी देर तक लड़ती रहीं। अंत में दोनों ने सोचा, "क्यों न किसी तीसरे से फैसला करा लिया जाए।"

दोनों रोटी उठाकर पहुँचीं बंदर के पास और सारी बात उसे बता दी। बंदर ने गंभीर होकर कहा, "अरे बहनों! लड़ो मत। रोटी दोनों को मिली है, तो आधी-आधी बाँट लो। मैं खुद बँटवारा कर देता हूँ।"

बंदर थोड़ी देर में एक तराजू लेकर आया। उसने जानबूझकर रोटी के इस तरह से दो टुकड़े किए कि एक थोड़ा बड़ा था और एक थोड़ा छोटा। दोनों टुकड़े तराजू के पलड़ों में रखे।

तराजू एक ओर झुक गया। बंदर बोला, "अरे! यह तो बराबर नहीं है।" उसने बड़े टुकड़े में से थोड़ा-सा तोड़ा... और मुँह में डाल लिया। अब दूसरा पलड़ा भारी हो गया। बंदर फिर बोला, "अब यह वाला बड़ा हो गया।"

उसने दूसरे टुकड़े में से भी थोड़ा-सा तोड़ा... और खा लिया। अब फिर पहला टुकड़ा बड़ा लगने लगा। बंदर ने फिर उसमें से एक हिस्सा तोड़ा... और खा गया। इस तरह– कभी इधर से, कभी उधर से–हिस्सा-हिस्सा करके बंदर ने पूरी रोटी ही साफ़ कर दी।

अंत में उसने मुँह पोंछते हुए कहा, "बहनों, यह रोटी तो खत्म हो गई।

अब तुम लोग एक और रोटी ढूँढ़ कर लाओ, उसमें से बराबर हिस्से कर दूँगा।" बिल्लियाँ एक-दूसरे का मुँह ताकती रह गईं।

इतिहास भी यही सिखाता है। जब भारतीय राजा आपस में लड़ते रहे, तो दुष्ट अंग्रेजों ने मौका देखकर पूरा भारत ही हड़प लिया। और आज भी - राजनीति हो या अदालत, लोग आपस में उलझे रहते हैं और कोई तीसरा अपना उल्लू सीधा करके सब कुछ ले उड़ता है।

: 225 : दौलत अंधी होती है

समरकंद के बादशाह तैमूरलंग के दरबार में एक दिन एक अंधा गवैया पहुँचा। बादशाह ने उससे उसका नाम पूछा। गवैये ने विनम्रता से उत्तर दिया, “हुज़ूर, मेरा नाम दौलत है।”

तैमूर ने मुस्कुराते हुए मज़ाक किया, “अरे! कहीं दौलत भी अंधी होती है?” गवैये ने बिना झिझके तुरंत जवाब दिया, “जहांपनाह, अगर दौलत अंधी न होती, तो लंगड़े के घर क्यों आती?”

दरबार में सन्नाटा छा गया। गवैये का उत्तर चतुराई भरा भी था और सटीक भी, क्योंकि बादशाह तैमूर स्वयं एक पैर से लंगड़ा था, इसी कारण उसे तैमूरलंग कहा जाता था। किसी मूर्ख व्यक्ति के पास अधिक धन सम्पत्ति हो तो जो लोग बुद्धिमान होते हुए भी गरीब होते हैं, वे कुढ़ कर ये कहावत बोलते हैं।

: 226 : धन्ना सेठ और लहरों की गिनवाई

एक बार एक लम्बी लड़ाई के कारण अकबर का शाही ख़ज़ाना ख़त्म हो रहा था। अब उसे चिंता सताने लगी कि शाही ख़ज़ाने को वापस कैसे भरा जाए? जब अकबर ने बीरबल के सामने अपनी चिंता व्यक्त की तो बीरबल ने सुझाव दिया - धन्ना सेठ से ले लेते हैं।

ये सुनकर अकबर को बड़ी हैरानी हुई। वह धन्ना सेठ से मिला। धन्ना सेठ ने बेफ़िक्री से कहा, “आपको जितनी चाहिए उतनी ले जाइए।” सुनकर अकबर यह पूछे बिना नहीं रह पाया कि धन्ना सेठ ने इतनी दौलत कहाँ से और कैसे इकट्ठी की?

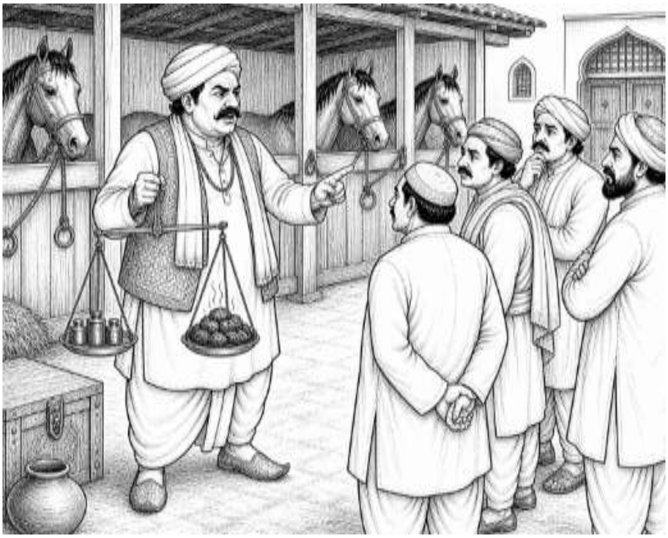

धन्ना सेठ ने झिझकते हुए सच बोल दिया कि उसने वो सारा धन अनाज और मसालों में मिलावट करके कमाया है। ये सुनकर अकबर को बहुत गुस्सा आया और उसने धन्ना सेठ की सारी संपत्ति ज़ब्त कर ली और उसे शाही अस्तबल

में घोड़े की लीद इकठ्ठा करने का काम सौंप दिया। धन्ना और क्या करता उसे राज़ी होना पड़ा, अब धन्ना सेठ अस्तबल का कर्मचारी बन गया।

सालों बीत गए, फिर से एक लम्बा युद्ध छिड़ा, और फिर से शाही ख़ज़ाना ख़ाली होने लगा और फिर से अकबर को चिंता सताई और इस बार फिर से बीरबल ने उसे धन्ना सेठ के पास जाने की सलाह दी। ये सुनकर अकबर को हंसी आ गई और उसने कहा, "बीरबल भूल गए! धन्ना सेठ को तो मैंने सरकारी अस्तबल में काम पर लगाया था, वहां वो कैसे धन कमायेगा?" फिर भी वह बीरबल की बात रखने के लिए धन्ना सेठ के पास गया।

धन्ना ने इस बार भी अकबर को बहुत बड़ी रक़म दी। अकबर के पूछने पर धन्ना ने कहा, "मैं घोड़ों की लीद को तोलता था और अस्तबल के प्रभारी और अश्व सेवक को धमकी देता था कि मैं बादशाह से शिकायत करूंगा कि उन्होंने घोड़ों को भरपूर चारा नहीं खिलाया, इसलिए घोड़े की लीद की मात्रा कम थी। वे लोग मुझे चुप रहने के लिए रिश्वत देते थे उसी से मैंने इतना पैसा कमाया।

ये सुनकर अकबर को आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया। उसने इस बार धन्ना को सज़ा के तौर पर समंदर की लहरों को गिनने के काम पर लगा दिया।

इसी तरह समय बीत गया, एक और भयानक युद्ध लड़ा गया, एक बार फिर से अकबर का ख़ज़ाना ख़ाली हुआ और इस बार फिर से बीरबल ने उसे धन्ना के पास जाने की सलाह दी। अकबर जब वहां पहुंचा तो फिर से धन्ना के पास इतना धन देख कर उसे बेहद हैरानी हुई और उसने फिर धन्ना से पूछा कि उसने इतना धन कैसे कमाया?

धन्ना ने कहा, "बहुत ही आसानी से", "मैं व्यापारी के जहाजों और नावों को समंदर के किनारे से बहुत दूर रोक देता था। मैं उन्हें आपका आदेश दिखाता था कि मैं लहरों की गिनती कर रहा हूं और उनके जहाज और नाव लहरों को तोड़ देंगी इसलिए वो किनारे से दूर रहे। लेकिन इससे व्यापारियों का नुकसान होता था और उससे बचने के लिए व्यापारी मुझे रिश्वत देते थे ताकि उन्हें किनारे तक पहुँचाया जा सके और उनका माल उतार दिया जाए।"

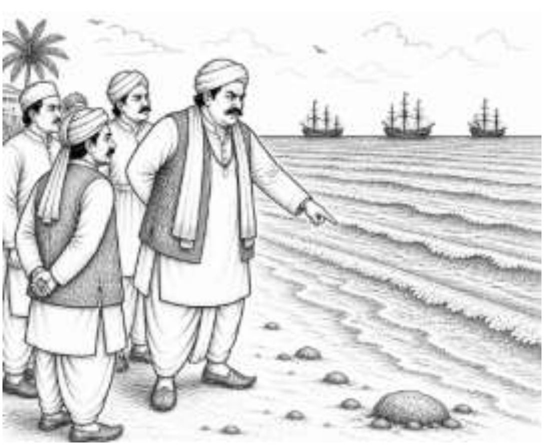

रिश्वतखोर लोगों पर व्यंग्य करने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 227 : धेले के नोन को जाऊँ, ला मेरी पालकी

कहा जाता है कि एक मालिक ने अपने कहारों से नमक लाने के लिए कहा। कहारों ने यह कहकर मना कर दिया कि वे केवल पालकी उठाने का काम करते हैं, इस प्रकार के छोटे काम उनके दायरे में नहीं आते।

मालिक ने कुछ नहीं कहा, बल्कि स्वयं पालकी में बैठ गया और कहारों से उसे बाजार ले चलने को कहा। वे सब उसे लेकर बाजार पहुँचे। वहाँ जाकर मालिक ने नमक खरीदने में बहुत देर तक मोल-भाव किया। अंततः उसने धेले का नमक खरीदा और पालकी में बैठकर वापस घर आ गया। उसको इतनी देर लादे लादे कहार थक कर चूर हो गये। जरा से काम को मना करने का खामियाजा कहारों को इस तरह भुगतना पड़ा।

उधर बाजार में भी जब लोगों ने देखा कि एक सेठ पालकी में बैठ कर धेले का नमक लेने आया है तो इस की नगर में खूब चर्चा हुई और तभी से यह कहावत बन गई।

कोई व्यक्ति छोटे से काम के लिए अत्यधिक दिखावा करता हो तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 228 : धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का

एक धोबी के परिवार में पति-पत्नी और उनके दो छोटे बच्चे थे। धोबी ने अपने काम में सहायता देने के लिए एक गधा और एक कुत्ता पाल रखे थे। जब धोबी गधों पर कपड़े लादकर घाट पर जाता, कुत्ता कभी घर पर रह जाता और कभी धोबी के साथ घाट पर चला जाता।

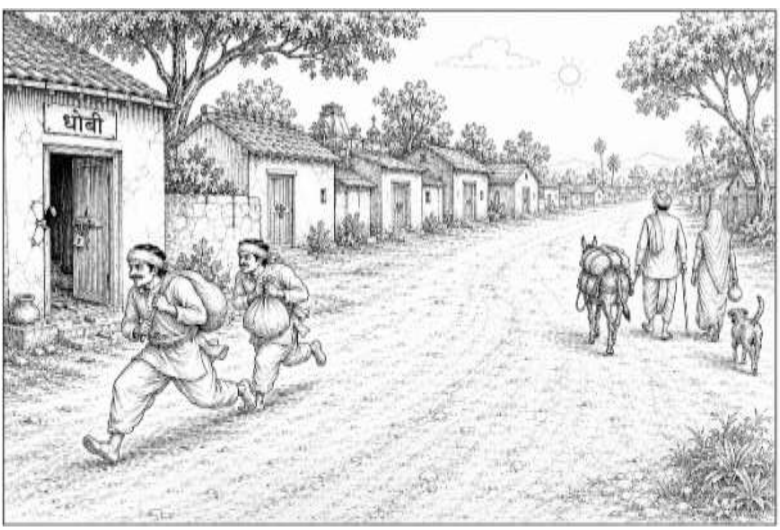

गर्मी के दिनों में दोपहर को गलियों में सन्नाटा रहता है लिहाजा किसी ने धोबी के घर चोरी कर ली। जब धोबी काम से वापस आया तो उसे घर का ताला टूटा मिला। घर का सामन इधर-उधर बिखरा पड़ा था।

धोबी ने कोतवाली में रपट लिखवाई तो वहां से दरोगा और सिपाही आए। उन्होंने सब लोगों से पूछ-ताछ की। लोगों ने बताया कि दिन के समय पुरुष लोग अपने-अपने काम पर चले जाते हैं और औरतें गर्मी की वजह से घर से निकलती नहीं हैं, इसलिए किसी को चोरी का पता ही नहीं चल पाया।

तब तक दरोगा की नजर धोबी के कुत्ते पर पड़ी। उस ने पूछा, "यह कुत्ता क्या कर रहा था?" तो धोबी ने बताया कि कुत्ता कभी घर पर रहता है कभी घाट पर उसके साथ। पीछे से एक बुजुर्द हँस कर बोले, **"धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का।"**

किसी व्यक्ति के लिए कोई विशेष भूमिका नियत न हो और इस कारण से उसकी कोई पूछ न हो, तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 229 : ना इतना मीठा बन कि चट कर जाए भूखे, ना इतना कड़वा बन कि जो चक्खे वह थूके

रामदीन गाँव के स्कूल में शिक्षक था। वह स्वभाव से अत्यंत परोपकारी और मीठी वाणी वाला व्यक्ति था। उसकी इसी सरलता और भलमनसाहत के कारण गाँव के सभी लोग उससे स्नेह करते थे। कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, किसी भी काम के लिए उसके पास पहुँच जाता और रामदीन बिना ना-नुकुर किए मदद के लिए तैयार हो जाता।

स्कूल के बाद वह बच्चों को निःशुल्क पढ़ा देता, किसी बुजुर्ग का सरकारी काम अटका हो तो उसके लिए दौड़-धूप करता, और कोई बीमार पड़ जाए तो दवा दिलाने तक में सहायता करता। लेकिन उसकी इसी आदत का एक नकारात्मक पक्ष भी था– वह ये कि लोग उसे जरूरत से ज्यादा घेरने लगे और हर छोटी-बड़ी बात में उसे परेशान करने लगे।

जब तक रामदीन अविवाहित था, तब तक यह सब किसी तरह चलता रहा। पर विवाह के बाद उसकी पत्नी आई, जो स्वभाव से बिल्कुल विपरीत थी–कर्कश, कटु और कुछ ईर्ष्यालु भी। वह न तो खुद किसी की मदद करती और न ही रामदीन को दूसरों के काम करने देती। धीरे-धीरे गाँव के लोग उससे अत्यधिक नफरत करने लगे।

इस परिस्थिति से परेशान होकर रामदीन ने एक दिन गाँव के एक बुजुर्ग से सलाह ली। बुजुर्ग ने समझाते हुए कहा, "देखो बेटा, हर चीज की अति बुरी होती है। अगर तुम बहुत अधिक मीठे बनोगे, तो लोग तुम्हारा फायदा उठाएंगे और तुम्हें चैन

से नहीं रहने देंगे। और यदि बहुत कड़वे बनोगे, तो लोग तुमसे दूर भागेंगे और नफरत करेंगे। इसलिए जीवन में संतुलन बनाए रखना ही सबसे अच्छी नीति है।"

: 230 : न चलनी में पानी आएगा, न चोकर की रस्सी बनेगी

यह कथा है भोजपुरी क्षेत्र की प्रसिद्ध लोकगाथा लोरिकायन के वीर नायक लोरिक की। उस समय की बात है, जब लोरिक धूमधाम से अपनी बरात लेकर कन्या के घर पहुँचे। पर कन्या के पिता अपनी बेटी का हाथ यूँ ही किसी को सौंप देने वाले नहीं थे। उन्होंने सोचा, "पहले इनकी बुद्धि और समझ की परीक्षा ली जाए।"

उन्होंने बारातियों के सामने एक के बाद कुछ कठिन शर्तें रखीं। कहा, "अगर तुम लोग इन शर्तों को पूरा कर दोगे, तभी मेरी बेटी की विदाई होगी।" लोरिक के पक्ष के लोगों ने एक एक कर के सभी शर्तों को पूरा किया।

अंत में उन्होंने गेहूँ का महीन चोकर मँगवाया और बोले, "इस चोकर से एक मजबूत रस्सी बनाकर दिखाओ।" कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। तभी लोरिक के पक्ष के एक समझदार व्यक्ति ने आगे बढ़कर शांत स्वर में कहा, "यह काम हो सकता है लेकिन एक शर्त पर, आप हमें एक चलनी में पानी भरकर दे दीजिए, तभी हम चोकर से रस्सी बना पाएँगे।"

यह सुनते ही कन्या के पिता हँस पड़े और बोले, "अरे! चलनी में पानी कैसे आ सकता है?" तभी बरातियों ने बड़े संयम से उत्तर दिया, चलनी में पानी आएगा, तभी चोकर की रस्सी बनेगी।"

यह कहावत तब कही जाती है, जब सामने वाले की चाल का जवाब उतनी ही समझदारी से दे दिया जाए।

: 231 : नदी किनारे दी है साखी, सोलह में तीन दिए तेरह बाकी

एक भोले भाले मल्लाह ने अपना टैक्स दे दिया था लेकिन पटवारी ने उसे रसीद नहीं दी थी। पटवारी की आदत थी कि वह जानबूझ कर रसीद नहीं देता था, जिससे वह अपने तरीके से लोगों से और पैसे वसूल सके।

एक बार पटवारी को नदी पार करनी थी। मल्लाह ने कहा कि वह पटवारी को तब तक नदी पार नहीं कराएगा जब तक उसे रसीद नहीं दी जाती। धूर्त पटवारी ने एक कागज पर लिखा और मल्लाह को दे दिया। कागज पर लिखा था - नदी किनारे दी है साखी, सोलह में तीन दिए तेरह बाकी। मल्लाह बेचारा यह नहीं समझ पाया कि इस रसीद की कोई कीमत ही नहीं है।

जब अनपढ़ और भोले लोग सरकारी शोषण का शिकार होते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

: 232 : न बच्चा दिया कहेगा, न सोना होगा

एक गाँव में एक सज्जन रहते थे। एक दिन वे घर के एक कोने में छह महीने के छोटे बच्चे को गोद में लेकर बैठे थे। काफी देर तक वे उससे कुछ कहते जा रहे थे, मानो उसे कोई खास बात सिखा रहे हों।

घर की महिलाओं को यह बात अजीब लगी। उन्होंने सोचा–आख़िर यह इतने छोटे बच्चे से क्या बात कर रहे हैं? जिज्ञासा के कारण एक महिला चुपके से उनके पास गई और देखने लगी कि मामला क्या है।

वहाँ का दृश्य देखकर वह हैरान रह गई। सज्जन ने बच्चे के हाथ में एक मिट्टी का दिया पकड़ा रखा था और बार-बार कह रहे थे, "बेटा, बोलो दिया... बोलो दिया... बोलो दिया..." छह महीने का बच्चा भला क्या बोलता! वह बेचारा कभी उन्हें और कभी दिए को देखे जा रहा था।

महिला यह दृश्य देखकर तुरंत वापस गई और बाकी सभी महिलाओं को यह

बात बताई। यह सुनकर सब ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं। तभी उनमें से एक बुज़ुर्ग महिला ने मुस्कुराते हुए बताया कि एक लोक-विश्वास है–अगर छह महीने का बच्चा अपने मुँह से "दिया" बोल दे, तो मिट्टी का दिया सोने का हो जाता है।

अब सबको समझ में आया कि ये सज्जन इतने समय से क्या कर रहे थे। वे तो उस मिट्टी के दिए को सोने का बनाने की कोशिश में लगे थे।

यह कहावत तब कही जाती है जब किसी काम के लिए ऐसी असंभव शर्त रख दी जाए, जो कभी पूरी ही नहीं हो सकती–और इसलिए काम भी नहीं हो पाता।

: 233 : न बात बिरानी कैये, न ऐंचा तानी सैये

एक बार किसी सियार की स्त्री ने एक खाली मांद में जाकर बच्चे दे दिये। उस को यह नहीं मालूम था कि वह एक शेर की मांद थी। उस समय शेर बाहर था। परन्तु, जब वह लौट कर आया तो सियार और सियारनी बड़े घबराये। अंत में कोई

और उपाय न देख सियार ने सियारनी से कहा- देख, अब तू एक काम कर, किसी प्रकार बच्चों को रुला दे। इस गुफा में आवाज गूँजती है। मैं आवाज बदल कर पूछूंगा- रानी चकचुइया, बच्चे रोते क्यों हैं? तुम कहना - राजा शालिवाहन, वे भूखे हैं, शेर का ताजा मांस खाने को माँगते हैं। मैं कहूँगा - अच्छी बात है, इस जंगल में शेरों की क्या कमी। एक नहीं, अभी दस मार कर लाता हूँ।

माँद के निकट आकर शेर ने उन दोनों की जो इस प्रकार की बातचीत सुनी तो डर के मारे उल्टे पैरों भाग खड़ा हुआ। रास्ते में एक दूसरे सियार से उसकी भेंट हुई। उसके पूछने पर कि महाराज आप इस तरह तेजी से कहाँ भागे जा रहे हैं, शेर ने सारा किस्सा बताया। सुन कर सियार ने हँस कर कहा, “महाराज आप भी किसकी बातों में आ गए, वह तो हमारी बिरादरी का ही एक सियार है। उसकी स्त्री ने वहाँ बच्चे दिये हैं। विश्वास न हो तो चल कर देख लीजिए।”

परन्तु शेर को इसका विश्वास नहीं हुआ। तब सियार ने कहा अच्छी बात है। आप अगर समझते हो कि मैं आपको धोखा दे रहा हूँ तो मैं आपकी पूँछ से अपनी पूंछ बाँध लेता हूँ जिसमें मैं कहीं भागकर जा न सकूं। बात झूठ निकले तो आप जो समझो सो करना।

शेर इस बात पर राजी हो गया। एक दूसरे की पूंछ से अपनी पूंछ बाँध कर दोनों माँद की तरफ चल पड़े। इधर पहले सियार ने जब उनको इस प्रकार आते देखा तो पहले तो वह घबरा गया। पर फिर उसने तुरत बुद्धि से काम लिया और मांद के भीतर से ही चिल्ला कर कहा - शाबाश भाई, शाबाश, तुम अच्छे मौके से आये। मैं स्वयं शेर के शिकार के लिए जा ही रहा था। बच्चे बड़ी देर से भूखे रो रहे हैं। परन्तु यह क्या? मैंने तुमसे दो शेर पकड़ कर लाने को कहा था। परन्तु तुम एक ही लाये?

सियार की यह बात सुन कर शेर वहाँ से प्राण लेकर भागा। दूसरा सियार चिल्लाता ही रहा कि महाराज! ठहरिये, ठहरिये, मुझे कम से कम अपनी पूँछ तो छुड़ा लेने दें। परन्तु शेर ने एक नहीं सुनी, बराबर भागता ही गया और सियार भी उसके पीछे-पीछे बड़ी दूर तक घिसटता गया। लगातार झटके लगने से बेचारे की पूंछ टूट गयी और कई जगह सिर में चोट भी आयी।

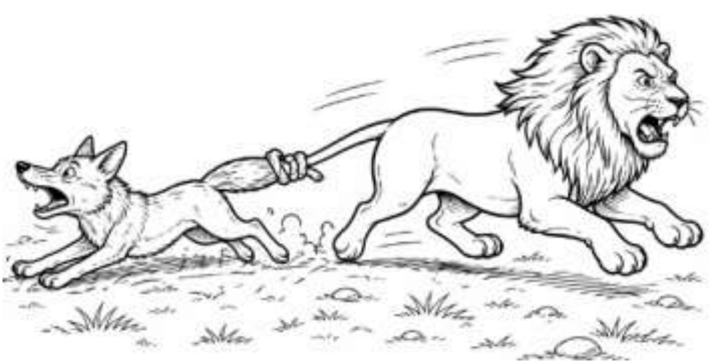

दूसरों की परेशानी में जबरदस्ती टांग अड़ा कर अपनी दुर्दशा कराने वालों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है। इस कहावत को इस प्रकार से भी कहा गया है - इंचा खिंचा वह फिरे, जो पराए बीच में पड़े।

: 234 : न बेटा न बेटी, बेट होए

यह कहानी एक ढोंगी महात्मा की है। एक दिन एक गर्भवती स्त्री अपने पति के साथ महात्मा जी के पास गई। महिला का मन बहुत बेचैन था। उसके पास पहले से दो बेटियाँ थीं। उसे यह जानने की उत्सुकता थी कि उसके घर में आने वाला अगला बच्चा बेटा होगा या बेटी। महात्मा जी थे तो बहुत प्रसिद्ध, लेकिन कोई भी यह नहीं जानता था कि उनके पास कोई विशेष ज्ञान नहीं था। वह केवल गोल मोल बातें कर के लोगों को बेबकूफ बनाया करते थे।

महिला ने महात्मा जी से पूछा, "महात्मा जी, कृपया मुझे बताइए, मेरा अगला बच्चा बेटा होगा या बेटी?"

महात्मा जी के चेले ने पहले ही महिला को बता दिया था कि आज महात्मा जी मौन व्रत रखे हुए हैं और वह केवल दो शब्द बोलेंगे। महात्मा जी ने बड़े ही गंभीरता से अपनी आँखें बंद की और फिर बोले, "बेट होए।"

जब कोई व्यक्ति बिना किसी सटीक जवाब के कुछ गोल-मोल कहता है तब यह कहावत कही जाती है।

: 235 : नकलची बंदर

बहुत समय पहले की बात है। एक टोपी बेचने वाला गाँव-गाँव घूमता हुआ शहर

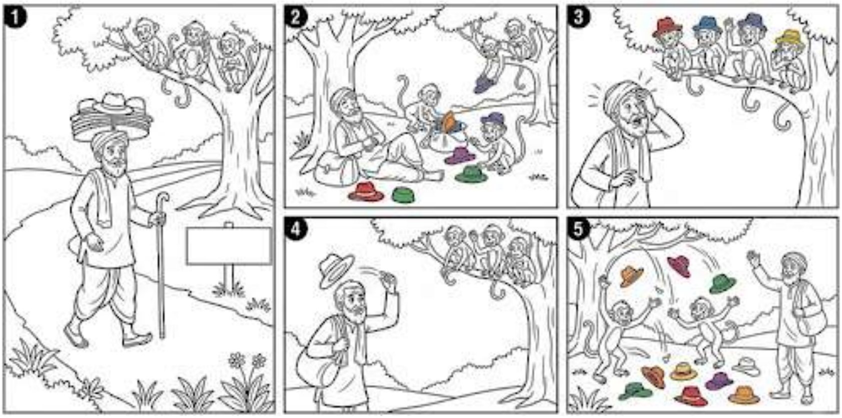

की ओर जा रहा था। अपनी टोपियाँ उसने एक गठरी में बाँध रखी थीं।

रास्ता लंबा था, धूप तेज़ थी। चलते-चलते वह थक गया। उसे एक बड़ा-सा पेड़ दिखा। सोचा, "थोड़ी देर यहीं आराम कर लूँ।" वह पेड़ की छाँव में लेटा और कब उसकी आँख लग गई, उसे पता ही न चला।

उस पेड़ पर ढेर सारे बंदर रहते थे। बंदरों की नज़र टोपी वाले की गठरी पर पड़ी। बस फिर क्या था, किसी ने गठरी खोली, किसी ने टोपी उठाई, और देखते-देखते हर बंदर के हाथ में एक टोपी थी।

कुछ देर बाद टोपी वाला जागा। जैसे ही उसने ऊपर देखा, उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। पेड़ की हर डाल पर बैठे बंदर हाथों में टोपी लिए उसे घूर रहे थे! टोपी वाले का सिर चकरा गया। वह सोचने लगा, "अब क्या करूँ? तभी उसे याद आया कि बंदरों की आदत होती है, इंसान की नकल करना।

उसने एक टोपी अपने सर पर लगा ली। उसकी देखा देखी बंदरों ने भी अपने सरों पर टोपी लगा ली। फिर उस ने अपने सिर की टोपी उतार कर जोर से जमीन पर फेंक दी।

पेड़ पर बैठे बंदरों ने यह देखा तो उन्होंने भी अपनी-अपनी टोपियाँ सिर से उतार कर नीचे फेंक दीं। टोपी वाले ने फौरन सारी टोपियाँ बीनीं और गठरी में बाँध कर ख़ुशी ख़ुशी वहाँ से चलता बना।

कोई व्यक्ति या कोई बच्चा किसी की नकल उतार रहा हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 236 : नमक गिराओगे तो नरक में पलकों से उठाना पड़ेगा

बचपन में हममें से कई लोगों ने अपने बड़ों–दादा-दादी या नाना-नानी–से यह बात सुनी होगी कि यदि कोई व्यक्ति नमक गिरायेगा, तो उसे नरक में पलकों से नमक उठाना पड़ेगा। यह सुनकर मन में एक भय-सा उत्पन्न होता था और हम नमक को संभालकर रखने का प्रयास करते थे।

वास्तव में ऐसे बहुत से लोक-विश्वासों के पीछे कोई न कोई व्यावहारिक कारण होता था। प्राचीन समय में नमक आज की तरह आसानी से उपलब्ध नहीं था। समुद्र से नमक बनाने की सुविधा नहीं थी, बल्कि पहाड़ों से कठिन परिश्रम के बाद सेंधा नमक लाया जाता था।

उस समय वस्तुएँ अपेक्षाकृत सस्ती थीं, फिर भी नमक हर व्यक्ति के लिए आवश्यक होने के कारण यह समझाया गया कि लोग इसे व्यर्थ न करें और इसका सम्मान करें। यह एक लोक-विश्वास है, जिसके माध्यम से लोगों को आवश्यक वस्तुओं के प्रति सम्मान का भाव सिखाया जाता था। समाज में इस प्रकार के विश्वास प्रचलित किए गए, ताकि संपन्न लोग भी नमक को नष्ट करने से बचें और सभी में आवश्यक वस्तुओं के प्रति आदर और कृतज्ञता का भाव बना रहे।

ऐसे ही यदि किसी के हाथ से रुपया-पैसा या कोई पुस्तक गिर जाए तो उसे आदरपूर्वक उठा कर माथे से लगाते थे। यह भी आवश्यक वस्तुओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का तरीका था।

: 237 : नाच न जाने, आंगन टेढ़ा

एक जमाने में शादी ब्याह में पास पड़ोस की और रिश्तेदारी की महिलाएँ जुटती थीं तो लोक गीत गा कर और उन पर नृत्य कर के खूब धमाल करती थीं। कई दिनों तक उत्सव का सा माहौल रहता था। अब तो डीजे और फ़िल्मी गानों ने सारा माहौल ही खराब कर दिया है। संगीत का कार्यक्रम भी एक दिन का ही रह गया है।

गाँवों में अभी भी कहीं कहीं पुराना माहौल देखने को मिल जाता है। ऐसे ही एक स्थान पर लड़के की शादी से पहले घर में रोज़ शाम को नृत्य और गीत का माहौल जम रहा था। रिश्तेदारों और पड़ोस की महिलाओं के बीच एक बुआ थीं–सजी-धजी, बातूनी और हर किसी के नाच में कमी निकालने वाली।

आखिरी दिन बहुओं और लड़कियों ने सोचा कि आज बुआ को ही नचाया जाए। सबने मिलकर उन्हें उठाया। पहले तो बुआ ने टालना चाहा, पर ज़िद के आगे खड़ी हो गईं। उन्हें न नाचना आता था, न कभी नाची थीं। जैसे-तैसे दो-तीन चक्कर लगाए वह गिरते गिरते बचीं, इसलिए तुरंत बैठ गईं।

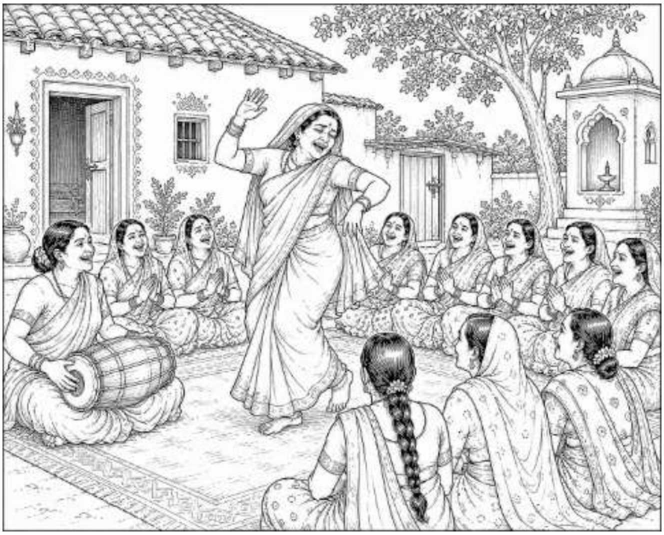

सब हँसने लगीं। किसी ने कहा, "बुआ नाच नहीं रहीं, कूद रही हैं!" बुआ झेंप गईं और बोलीं, "यहाँ नाचने की जगह ही ठीक नहीं, आंगन टेढ़ा है।" भीड़ में बैठी एक बुज़ुर्ग महिला मुस्कराकर बोली, **"चल कलमुंही! नाच न जाने, आंगन टेढ़ा।"** कहावत का अर्थ है अपनी कमी छिपाने के लिए परिस्थितियों या दूसरों पर दोष मढ़ना। इसी भाव की एक और कहावत है, "अंगनवा न टेढ़, बहुरिया टेढ़।"

: 238 : नासे काल बिनासे बुद्धि

मिथिला में एक आदमी रहता था, जिसका नाम था डाक। कहते हैं कि जब वह छोटा था, तब ज्योतिषियों ने उसकी कुंडली देखकर एक अजीब भविष्यवाणी की। उन्होंने कहा, "इसकी मृत्यु स्नान करते समय सिर के बाल उलझ जाने से होगी।"

डाक जब बड़ा हुआ तो यह सुनकर घबरा गया। वह अपनी जान बचाने के लिए हर संभव कोशिश करने लगा। उसने बाल रखना ही छोड़ दिया। सिर के सभी बाल मुंडवा दिए, लेकिन शिखा के रूप में एक लंबा बाल अपने सर पर छोड़ दिया, क्योंकि वह इसे शुभ मानता था। इसके अलावा, उसने यह पक्का कर लिया कि वह कभी नदी या तालाब में स्नान नहीं करेगा। वह नहाने के लिए केवल घर पर ही बाल्टी के पानी का इस्तेमाल करता था।

लेकिन कहते हैं न, "जब काल पास आता है, तो बुद्धि साथ छोड़ देती है।" एक दिन, डाक को लगा कि पास के एक छोटे से पोखरे में स्नान करना बिल्कुल सुरक्षित होगा। पोखरा इतना छोटा और उथला था कि उसमें डूबने का तो सवाल ही नहीं उठता। उसने सोचा, ऐसा छोटा सा पोखरा मुझे क्या नुकसान पहुंचाएगा?

डाक पोखरे में गया और स्नान करने लगा। जैसे ही उसने अपने सिर को पानी में डुबोया, उसका वह लंबा बाल पोखरे की काई जमी दीवार में फंस गया। उसने बाल छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जैसे-जैसे वह संघर्ष करता गया, बाल और गहराई से उलझता गया और उसी छोटे से पोखरे में डूबकर उसकी मृत्यु हो गई। किसी बुजुर्ग ने इस घटना पर कहा - ई नहिं बूझो डाक निबुद्धि, नासै काल बिनासे बुद्धि।

यह कहावत हमें सिखाती है कि कोई व्यक्ति चाहे कितना भी सतर्क और चतुर क्यों न हो, जब विनाश का समय आता है, तो उसकी बुद्धि साथ छोड़ देती है।

: 239 : नित चंदन, नित पानी, सालिगराम धुल गये तो हम का जानी

बहुत समय पहले की बात है। एक कस्बे में एक सेठ जी रहते थे। धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी, पर उनको एक सनक थी–शालिग्राम जी की भक्ति।

सुबह हो या शाम, दिन हो या रात, सेठ जी का ज़्यादातर समय पूजा-पाठ में ही बीतता था। नित चंदन लगाते, नित जल से स्नान कराते, घंटों तक पूजा करते रहते। उनकी पत्नी यह सब देख-देखकर तंग आ चुकी थी। घर-गृहस्थी की बात हो या ज़रूरी काम। सेठ जी का जवाब एक ही होता, “पहले पूजा हो जाए।”

एक दिन स्त्री ने सोचा, “कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा, वरना इनकी पूजा कभी कम होने वाली नहीं।” एक दिन, जब सेठ जी बाहर गए हुए थे, स्त्री ने चुपचाप शालिग्राम की मूर्ति हटाई और उसकी जगह एक बड़ा-सा काला जामुन रख दिया। बिल्कुल वैसा ही चिकना और गोल, जैसा शालिग्राम दिखाई देता है।

अगली सुबह सेठ जी रोज़ की तरह पूजा करने बैठे। जल चढ़ाया, नहलाने लगे, और जैसे ही उँगली से हल्का-सा रगड़ा लगाया, जामुन घुलने लगा। सेठ जी घबरा गए। उनके हाथ काँपने लगे। दौड़कर पत्नी को बुलाया, “अरे भाग्यवान! देखो, आज हमारे शालिग्राम जी को क्या हो गया!”

पत्नी ने पास आकर देखा और बड़ी सहजता से बोली, “हो क्या गया? दिन भर नहलाओगे तो घुलेंगे नहीं।” फिर हल्की मुस्कान के साथ बोली, “इतनी पूजा ठीक नहीं होती। थोड़ी कम किया करो।”

कोई भी व्यक्ति किसी काम की अति कर रहा हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 240 : निन्यानवे के फेर में जो पड़ा वो दीन दुनिया से गया

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक नेक लकड़हारा रहता था। रोज़ जंगल जाता, लकड़ियाँ बीनता, पैसा दो पैसा कमाता और उन्हीं से अपने परिवार का पेट पालता था। घर में धन नहीं था, पर मन में संतोष भरा था। काम करते हुए भी उसके मुँह से हर समय भगवान का नाम निकलता रहता। वह हँसता-खेलता, गरीबी में भी खुश रहता।

एक दिन भगवान विष्णु ने नारद जी से कहा, “देखो नारद, यह मेरा सबसे सच्चा भक्त है। इतनी कठिन ज़िंदगी में भी न शिकायत है, न लालच–बस संतोष और भक्ति।” अब नारद जी तो नारद ठहरे। बोले– ठीक है प्रभु, कल से नहीं रहेगा।” उसी रात नारद जी एक थैली में निन्यानवे रुपये रखकर चुपचाप लकड़हारे के आँगन में डाल आए।

सुबह हुई। लकड़हारा और उसकी पत्नी उठे तो आँगन में पड़ी थैली देखकर चौंक गए। खोली तो इतने सारे रुपये देख कर दोनों की आँखें चमक उठीं। जल्दी जल्दी गिनना शुरू किए। एक दो तीन . . . निन्यानवे। कई बार गिने लेकिन निन्यानवे ही

निकले। अब खुशी के साथ दोनों के मन में एक कसक भी आ गई, “अरे! एक रुपया कम रह गया! पूरे सौ होते तो कितना अच्छा होता”

अब क्या था–भजन छूटा, भगवान का नाम पीछे रह गया। दिन-रात बस एक ही चिंता, “किस तरह एक-एक पैसा जोड़कर ये निन्यानवे से सौ हो जाएँ?”

कहावत का अर्थ है कि थोड़ा सा और मिल जाए यह लालच हर किसी पर हावी रहता है चाहे वह छोटा आदमी हो या बड़ा। इसी को निन्यानवे का फेर कहते हैं।

: 241 : नौ सौ चूहे खाय बिलाई, बैठी तप पे

एक बिल्ली थी जो काफ़ी बूढ़ी हो चली थी। दाँत घिस गए थे, फुर्ती पहले जैसी नहीं रही थी, तो उसने सोचा, “अब मुझसे शिकार तो हो नहीं पाएगा। भूखों मरने से बचने के लिए कुछ और उपाय करना पड़ेगा।”

वह जाकर गंगा जी के तट पर भगवा कपड़े पहन कर सिर के बल आँखें मूँद

कर खड़ी हो गई। लोगों से कहने लगी, “मैंने जीवन भर बहुत पाप किए हैं। अब संसार से विरक्त होकर उनका प्रायश्चित करना चाहती हूँ।”

उस इलाके में कुछ चूहे भी रहते थे। उन्हें उस बिल्ली पर विश्वास हो गया और उनहोंने बिल्ली से कहा कि आप छोटे मोटे शत्रुओं से हमारी रक्षा करें, हम भी आपकी यथाशक्ति सेवा करेंगे।

बिल्ली ने आँखें खोलीं, चेहरे पर करुणा लाई और बोली, “ठीक है। तुम में से रोज़ दो चूहे मुझे शाम को गंगा जी के तट तक पहुँचा दिया करो। मैं वहाँ संध्यावंदन करके लौट आऊँगी। बाकी समय तुम सबकी रक्षा मेरी ज़िम्मेदारी।” चूहे खुश हो गए।

अब क्या था– रोज़ दो चूहे बिल्ली को लेकर जाते...और बिल्ली रास्ते में या लौटते समय किसी न किसी चूहे पर चुपचाप हाथ साफ़ कर लेती। इसी तरह दिन बीतते गए।

एक दिन एक बूढ़ा, समझदार चूहा सबको इकट्ठा करके बोला, “भाइयो, कुछ तो गड़बड़ है। बिल्ली मोटी हो रही है और हम लोग दिन पर दिन कम होते जा रहे हैं।” सबको बात समझ में आ गई। देर किए बिना वे रातों-रात वहाँ से भाग गए।

सुबह हुई। बिल्ली ने आँखें खोलीं–न कोई चूहा, न कोई सेवा। कोई आदमी जीवन भर गलत काम करता रहा हो और अंत में पवित्र बनने का ढोंग करे तो यह कहावत कही जाती है। इस कहावत को इस प्रकार से भी कहा गया है - नौ सौ चूहे खाए बिलैया हज को चली।

: 242 : पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली ही सही

एक गाँव में दो व्यक्ति श्यामलाल और मकबूल रहते थे। श्याम लाल ने कुछ मुर्गियाँ पाली हुई थीं। इधर कुछ दिनों में उसकी कुछ मुर्गियाँ गायब हो गईं। चोर का पता लगाने के लिए एक रात वह मुर्गीबाड़े के पास झाड़ी में छिप कर बैठ गया। देखा आधी रात में मकबूल उसकी एक मुर्गी को ले कर चुपचाप बाड़े में से निकल रहा है। उसके ललकारने पर वह मुर्गी को छोड़ कर भाग गया। दूसरे दिन श्याम लाल ने पंचायत में शिकायत की कि उसकी मुर्गियाँ मकबूल ने चुराई हैं। लेकिन मकबूल एक नम्बर का शातिर था। उसे इस बात का अंदाज़ था कि श्यामलाल पंचायत में जाएगा। उसने पंचों को पहले से ही सेट कर लिया था।

मकबूल ने कहा कि श्यामलाल की मुर्गियाँ जंगली बिल्ली ने चुराई हैं, उसने खुद बिल्ली को मुर्गी मुँह में दबाए भागते हुए देखा है। पंचों ने कहा मकबूल निर्दोष है, मुर्गियों को बिल्ली ने ही चुराया होगा।

श्यामलाल समझ गया कि पंचों के विरुद्ध जाने का कोई लाभ नहीं। उसने गहरी सांस ली और हाथ जोड़कर कहा -"अगर पंच कहें बिल्ली है, तो बिल्ली ही सही!"

जब किसी मजबूरी या विपरीत स्थिति के कारण किसी गलत या अतार्किक बात को भी स्वीकार करना पड़े, तब यह कहावत कही जाती है।

: 243 : पंडित जी ने कौआ हग दिया

गाँव के पंडित जी बड़े विद्वान माने जाते थे। एक दिन की बात है, पंडित जी जंगल में शौच के लिए गए। उन्होंने एक घने पेड़ के नीचे बैठकर निवृत्त होने का मन बनाया। संयोग से उसी पेड़ की डाल पर एक कौआ बैठा था। पंडित जी निश्चिंत होकर अपने काम में लगे थे कि अचानक ऊपर से एक बड़ा सा कौए का पंख उनके मल के ऊपर आ गिरा।

पंडित जी की नज़र जैसे ही अपने मल पर पड़ी, उन्होंने देखा कि उसमें एक काला पंख पड़ा हुआ था। बस, उनका दिमाग उलझ गया, "अरे, ये क्या! मेरे पेट से

कौए का पंख कैसे निकला?" उन्होंने घबरा कर जल्दी से अपने कपड़े संभाले और सीधा घर लौट आए।

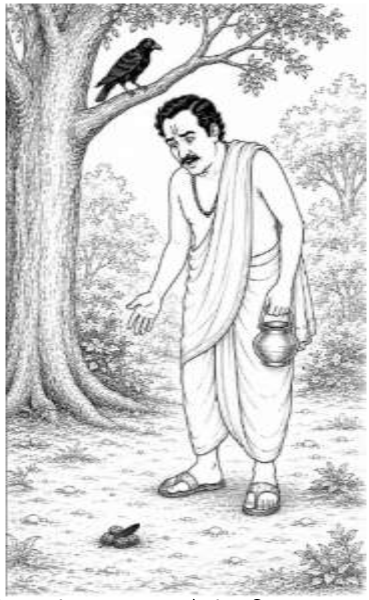

घर पहुँचते ही उन्होंने पंडितानी से कहा, "भाग्यवान! आज तो गजब हो गया! मैंने कौए के पंख वाला मल त्याग किया है। ये क्या हो गया मेरे साथ?" पंडितानी को भी यह अजीब लगा, लेकिन चूंकि यह बात उनके पति, यानी पंडित जी ने कही थी, तो इस पर शक करने का सवाल ही नहीं था।

उनकी कामवाली बाई वहाँ झाड़ू लगा रही थी। उसने सुना कि पंडित जी कुछ अनहोनी की बात कर रहे हैं। उसकी समझ में यह बात आई कि पंडित जी के मल में कौआ निकला है।

कामवाली ने यह बात जाते ही पड़ोस की औरतों को सुना दी, "अरे, तुम लोगों को पता है? पंडित जी मल में कौआ निकला है।" अब यह सुनकर पड़ोस की महिलाएँ चौंक गईं। वे आपस में चर्चा करने लगीं, "हाय राम! पंडित जी ने कौआ हग दिया!" गाँव में यह खबर आग की तरह फैल गई।

कोई व्यक्ति बिना बात के बतंगड़ बना रहा हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 244 : पजामे का कोई ज़िक्र नहीं

एक शहर में एक सज्जन रहते थे। एक दिन सुबह एक दूर शहर में रहने वाला उनका मित्र उनके घर आया। मित्र को उस शहर में कुछ लोगों से मिलना था। रास्ते में कीचड़ था जिससे मित्र का पजामा गंदा हो गया था। इन सज्जन ने मेज़बान होने का फ़र्ज़ निभाया और झट से कहा, “कोई बात नहीं, मेरा नया पजामा पहन लो।”

मित्र ने पजामा पहन लिया और दोनों घर से निकल पड़े।

रास्ते में चलते-चलते मेज़बान को लगने लगा– अरे! इस पर तो मेरा पजामा बड़ा अच्छा लग रहा है और मैंने जो खुद पहन रखा है, वह तो बिल्कुल फीका लग रहा है!" वह कुछ बोले नहीं, पर मन ही मन कसमसाते रहे।

दोनों महानुभाव पहले सज्जन के घर पहुँचे। मेज़बान ने बड़े गर्व से परिचय कराया, "ये मेरे मित्र हैं, अमुक शहर से आपसे मिलने आए हैं और ये जो पजामा पहने हैं, वह मेरा है।" मित्र ने बाहर निकलकर कहा, "यार, यह बताने की क्या ज़रूरत थी कि पजामा तुम्हारा है?"

दूसरे घर पहुँचे। अब मेज़बान ने सोचा, "इस बार बात संभाल लूँ।" बोले, "ये मेरे मित्र हैं, फलाँ शहर से आपसे मिलने आये हैं, और जो पजामा इन्होंने पहना है, वह इनका ही है।" बाहर आते ही मित्र फिर बोला, "भाई, किसी को इससे क्या लेना कि पजामा मेरा है या तुम्हारा?"

तीसरे घर पहुँचे। अब मेज़बान साहब और उलझ गए। परिचय कराते हुए बोले, "ये मेरे मित्र हैं, फलाँ शहर से आपसे मिलने आये हैं, और जो पजामा पहने हैं, वह न इनका है, न मेरा।" अब तो मित्र सचमुच बिगड़ गया। बोला, "अरे भाई! तुम्हें पजामे से ही क्या दुश्मनी है? हर जगह उसका ज़िक्र क्यों कर रहे हो?"

अब मेज़बान को अक्ल आई। चौथे घर पहुँचे तो उन्होंने बड़े सधे हुए ढंग से कहा, "ये श्रीमान फलाने हैं, अमुक शहर से आपसे मिलने आए हैं... और भाई, पजामे का कोई ज़िक्र नहीं।"

जहाँ कोई व्यक्ति बिना किसी ज़रूरत के बार-बार अपना महत्व जताने लगे, वहाँ मज़ाक में कहा जाता है–"भाई, पजामे का कोई ज़िक्र नहीं।

: 245 : पढ़ाया लिखाया बेटा वानर हो गया

एक पंडित जी ने अपने कुछ रुपए गाँव के साहूकार के पास धरोहर के रूप में रख दिए। कुछ महीनों बाद जब पंडित जी ने अपने पैसे वापस माँगे, तो साहूकार ने आँखें बड़ी करके कहा, "पंडित जी, वो रुपया तो कोयला हो गया!"

पंडित जी को बहुत गुस्सा आया, लेकिन उन्होंने झगड़ा नहीं किया। कुछ ही दिनों बाद, साहूकार ने अपने बेटे को पढ़ाने के लिए पंडित जी के पास भेजा। पंडित जी ने लड़के को कहीं छिपा दिया और उसकी जगह एक बंदर को पकड़कर साहूकार के बेटे के कपड़े पहना कर बाँध दिया।

कुछ समय बाद साहूकार अपने बेटे को लेने आया। पंडित जी ने बड़े ठंडे स्वर में कहा, "अरे साहूकार जी, आपका बेटा तो पढ़-लिखकर बहुत तेज़ हो गया है। देखिए, वह कैसे दीवार पर चढ़ रहा है!"

साहूकार ने चौंककर देखा—उसका बेटा तो कहीं दिख नहीं रहा था, उसकी जगह एक बंदर उछल-कूद कर रहा था। साहूकार हक्का-बक्का रह गया और गुस्से में बोला, "पंडित जी, ये क्या मज़ाक है? मेरा बेटा कहाँ है?"

पंडित जी मुस्कराए और बोले, "अरे साहूकार जी, आपका लड़का पढ़-लिखकर वानर बन गया!"

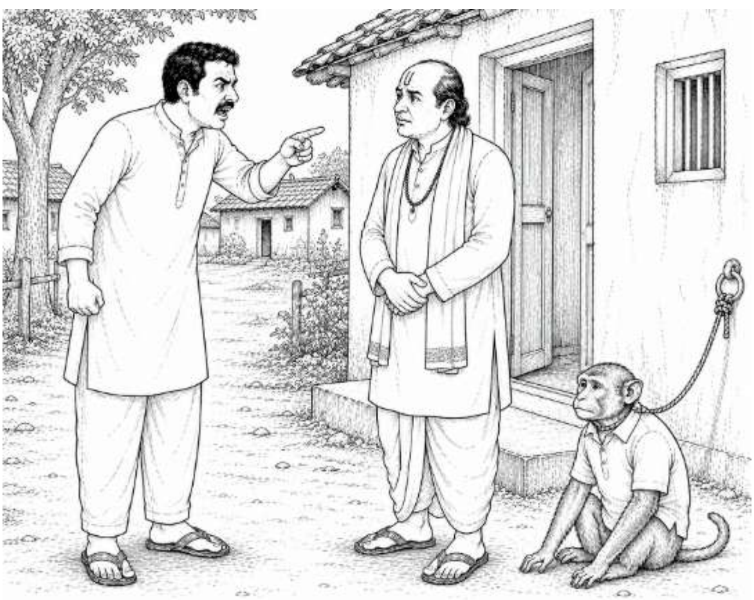

मामला गाँव के मुखिया तक पहुँचा। मुखिया ने दोनों की बात सुनी और साहूकार को हुक्म दिया कि पंडित जी का सारा रुपया ब्याज समेत वापस करे। जैसे ही साहूकार ने पैसे लौटाए, पंडित जी ने उसका बेटा भी सही-सलामत उसे सौंप दिया।

यह कहावत तब कही जाती है जब कोई व्यक्ति किसी को धोखा देने की कोशिश करता है, लेकिन अंत में खुद ही उसी जाल में फँस जाता है।

: 246 : पढ़े तो हैं, पर गुने नहीं

किसी राज्य में एक प्रसिद्ध राज पुरोहित थे, जिनका बेटा पढ़ने में तेज़ माना जाता था। पिता ने उसे काशी भेज दिया ताकि वह वहाँ जाकर वेद, शास्त्र, गणित और तर्कशास्त्र का गहन अध्ययन करे। कई वर्षों तक कड़ी मेहनत करने के बाद वह लौटा, तो पूरे राज्य में चर्चा होने लगी कि अब राज्य को एक महान विद्वान मिल गया है।

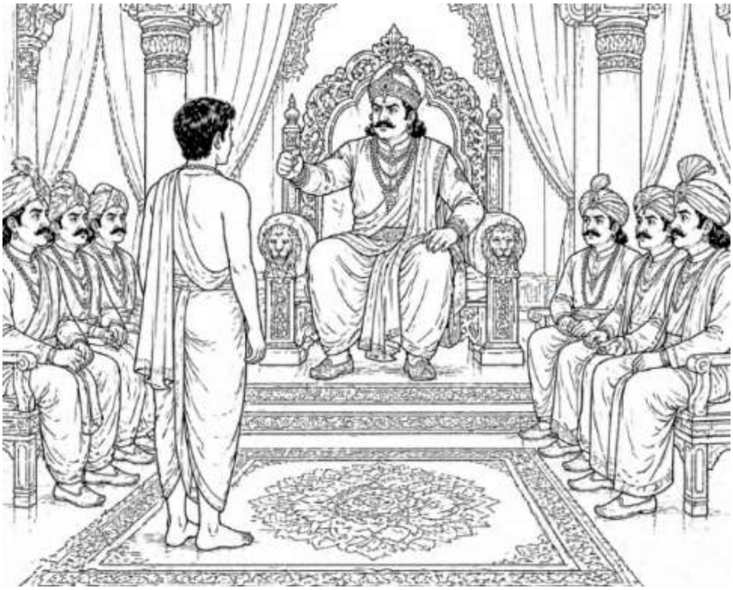

राजा को भी इस नवयुवक की विद्वत्ता की परीक्षा लेने की जिज्ञासा हुई। उन्होंने उसे दरबार में बुलाया और कहा, "अगर तुम सच में इतने बड़े विद्वान हो, तो बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है?"

विद्वान युवक ने अपनी सारी सीखी हुई विद्या का उपयोग किया। उसने ध्यान लगाया, शास्त्रों की बातें याद कीं, ज्योतिष के हिसाब से गणना की, फिर बोला, "राजन, आपकी मुट्ठी में कोई गोल चीज़ है, सफेद रंग की है और उसके बीच में छेद है!"

राजा मुस्कराए, फिर पूछा, "तो बताओ, यह क्या हो सकता है?" युवक सोच में पड़ गया। उस ने बहुत सोचा और अंत में बोला, "राजन, आपके हाथ में चक्की का पाट होगा!"

यह सुनकर दरबार में ठहाके गूंज उठे। राजा ने हँसते हुए अपनी मुट्ठी खोली– उसमें एक छोटा-सा मोती था! राजा ने कहा, "विद्या अच्छी बात है, लेकिन यदि व्यवहारिक ज्ञान न हो तो सारी पढ़ाई बेकार हो जाती है!"

इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति खूब पढ़ा-लिखा तो हो, लेकिन व्यवहारिक ज्ञान न होने के कारण मूर्खतापूर्ण बातें कर बैठे।

: 247 : पहले आप पहले आप में गाड़ी छूटी
(तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर)

लखनऊ शहर में दो शरीफ़ और संकोची स्वभाव के बुजुर्ग रहते थे। बात-बात पर शिष्टाचार निभाना उनकी आदत थी। एक दिन दोनों को एक ही गाड़ी में सफर करना था। वे समय से पहले स्टेशन पहुँच गए, टिकट ले लिया और प्लेटफॉर्म पर इत्मीनान से खड़े हो गए।

थोड़ी देर बाद रेलगाड़ी आ गई। दोनों ट्रेन के डिब्बे के सामने खड़े हो गए। पहले बुजुर्ग ने बड़े अदब से कहा, "हुज़ूर, आप पहले तशरीफ़ ले जाइए।" दूसरे ने झुककर जवाब दिया, "अरे नहीं, पहले आप।"

पहले बुजुर्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, "नहीं जनाब, आप पहले बैठिए।" दूसरे बुजुर्ग भी कहाँ पीछे रहने वाले थे, बोले, "अजी हुज़ूर, मैं भी यही कहने वाला था कि पहले आप।"

यह "पहले आप- पहले आप" का तकल्लुफ़ चलता रहा, तब तक ट्रेन सीटी देकर आगे बढ़ गई। इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब ज़रूरत से ज़्यादा तकल्लुफ़ या संकोच के कारण कोई महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाए।

: 248 : पाँच सवारों में नाम लिखवाया

एक बार दिल्ली में शहर के बाहरी हिस्से में बाहर से आए चार शाही घुड़सवार खड़े थे। उसी समय उनके पीछे-पीछे एक कुम्हार भी अपने गधे पर सवार होकर वहाँ आ पहुँचा।

तभी एक राहगीर ने उन घुड़सवारों से पूछा, “क्या आप लोगों ने रास्ते में कहीं कोई ऊँट चरते देखा है?”

घुड़सवार अभी उत्तर देने ही वाले थे कि उससे पहले ही कुम्हार बोल पड़ा, “हम पाँचों सवारों ने कोई ऊँट-वूँट नहीं देखा!”

कुम्हार का यह जवाब सुनकर सब लोग हँस पड़े। वह न तो शाही सवार था और न ही उससे किसी ने कुछ पूछा था, फिर भी उसने अपने आपको उन्हीं के बराबर गिनते हुए बात में शामिल कर लिया।

जब कोई व्यक्ति बिना किसी योगदान के भी अपने आपको महत्वपूर्ण दिखाने या किसी काम में अपना नाम जोड़ने की कोशिश करता है, तब यह कहावत कही जाती है।

: 249 : पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होतीं

यह कहावत बताती है कि संसार में सभी लोग एक जैसे नहीं होते। हर व्यक्ति का स्वभाव, क्षमता और गुण अलग-अलग होते हैं।

एक गाँव में एक किसान के पाँच बेटे थे। किसान चाहता था कि उसके सभी बेटे एक जैसे मेहनती और समझदार बनें। लेकिन ऐसा नहीं था। कोई बेटा बहुत परिश्रमी था, कोई आलसी; कोई बुद्धिमान था, तो कोई सीधा-सादा। वे आपस में एक दूसरे पर दोषारोपण करते रहते थे कि मैं ज्यादा काम करता हूँ, तू कम करता है वगैरह वगैरह।

किसान को यह देखकर चिंता होती थी। वह सोचता था कि उसके सभी बेटे एक जैसे क्यों नहीं हैं। वह अपनी परेशानी का हल जानने के लिए एक महात्मा जी के पास गया। महात्मा जी ने उसे समझाया कि दुनिया में कोई भी दो

व्यक्ति एक से नहीं हो सकते। समझदारी इस में है कि हम एक दूसरे को उन की क्षमता में ही स्वीकार करना सीखें और मिल कर रहने का प्रयास करें। किसान की समझ में बात आ गई।

एक दिन उसने अपने बेटों को बुलाया और हाथ दिखाकर कहा– “देखो, इस हाथ की पाँचों उंगलियाँ एक जैसी नहीं हैं–कोई छोटी है, कोई बड़ी, कोई मोटी, कोई पतली। सबकी क्षमता अलग अलग है। लेकिन अलग अलग इनमें कोई ताकत नहीं है। जब ये सब मिलकर काम करती हैं तो हाथ को मजबूत बनाती हैं।”

बेटों को बात समझ में आ गई। उन्होंने सोचा कि भले ही वे अलग-अलग हैं, लेकिन मिल-जुलकर रहेंगे तो परिवार मजबूत बनेगा। उस दिन के बाद सभी भाई एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार कर के साथ रहने लगे।

: 250 : पानी पीकर जात क्या पूछनी

बात उस समय की है जब समाज में अत्यधिक जात पाँत का भेदभाव और छुआछूत व्याप्त थे। एक ब्राह्मण को मार्ग में चलते समय अत्यधिक प्यास लगी। प्यास से व्याकुल होकर वह एक कुएँ के पास पहुँचा, जहाँ एक व्यक्ति पानी भर रहा था। ब्राह्मण ने उससे पानी माँगा। उस व्यक्ति ने सहर्ष उसे पानी पिला दिया। ब्राह्मण ने अपनी प्यास बुझाई और कुछ राहत महसूस की।

पानी पीने के बाद ब्राह्मण ने उस व्यक्ति से उसकी जाति पूछी। उसने उत्तर दिया, “मैं कोली हूँ।” कोली जाति के लोगों को उस समय अछूत माना जाता था। इसलिए यह सुनकर ब्राह्मण को बहुत पछतावा हुआ, पर अब कुछ भी करना संभव नहीं था, क्योंकि वह पहले ही उसके हाथ से पानी पी चुका था।

तभी लोगों ने समझाया कि जो कार्य हो चुका हो, उसके बाद ऐसी बातों पर विचार करना व्यर्थ है।

कहावत का अर्थ है कि किसी कार्य के पूरा हो जाने के बाद उसकी जाँच-पड़ताल करना निरर्थक है। इसी प्रकार संबंध स्थापित होने के बाद उसमें दोष निकालने से कोई लाभ नहीं होता।

: 251 : पार उतरूं तो बकरा दूं

एक मियाँ नाव पर सवार होकर नदी पार कर रहे थे। नदी का बहाव तेज़ था, ऊपर से अचानक बीच धारा में पहुँचने पर ज़बरदस्त तूफ़ान आ गया। लहरें ऊँची उठने लगीं, नाव हिचकोले खाने लगी और ऐसा लगा कि कभी भी पलट सकती है। मियाँ साहब के प्राण हलक में अटक गए। मौत को सामने देखकर उन्होंने आँखें बंद

कीं और एक मन्नत मांगी, "या पीर बाबा! अगर सकुशल पार पहुँचा तो एक बकरा चढ़ाऊँगा!"

कुछ ही देर में तूफ़ान शांत हो गया और नाव किनारे की ओर बढ़ने लगी। जब जान का खतरा टल गया, तो मियाँ साहब सोचने लगे, "बकरा? अरे, बकरा तो बहुत महंगा पड़ेगा! चलो, उसकी जगह मुर्गी चढ़ा दूँगा!"

नाव किनारे के और करीब पहुँची, तो उन्हें लगा कि मुर्गी भी बहुत बड़ी कुर्बानी होगी। उन्होंने फिर मन में सोचा, "अरे, मुर्गी क्यों? कुछ और सस्ता हल निकालना चाहिए।"

जैसे ही नाव किनारे लगी और वे सकुशल नीचे उतरे, उन्होंने अपने कपड़े झाड़े और उसी में से एक चीलर (जूं) निकाली। उसे मसलते हुए बोले,

"लो पीर बाबा! जान के बदले में जान दे ही दी!"

इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब कोई इंसान संकट में तो बड़े-बड़े वादे करता है, लेकिन मुसीबत टलते ही उससे मुकर जाता है।

: 252 : पाप का बाप - लोभ

बहुत समय पहले की बात है। एक युवक ने काशी में रह कर शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। अपनी पूरी शिक्षा पूरी करके जब वह घर लौटा, तो माता-पिता ने बिना देर किए उसकी शादी करा दी। शादी के कुछ ही दिनों बाद पत्नी ने मुस्कराते हुए उससे एक प्रश्न पूछ लिया–"बताइए, पाप का बाप कौन है?"

यह सुनकर वह विद्वान चौंक गया। कहने लगा, "मैंने शास्त्र पढ़े हैं, पाप के प्रकार पढ़े हैं, पर यह पाप का बाप कौन है–यह कहीं नहीं पढ़ा।" अब प्रश्न पत्नी का था, तो उत्तर ढूँढना भी ज़रूरी था। उत्तर जानने के लिए वह अपने गुरुजी के पास चल पड़ा।

रास्ते में चलते-चलते एक वेश्या का घर पड़ा। वह बाहर बैठी थी। उसने यूँ ही सम्मान से कहा, “राम-राम महाशय! कहाँ जा रहे हैं?” विद्वान ने सच-सच कह दिया, “अपने गुरु से यह पूछने जा रहा हूँ कि पाप का बाप कौन है।”

वेश्या मुस्कराई और बोली, “यह तो मैं भी आपको बता सकती हूँ।” विद्वान अचंभे में पड़ गया, “अगर आप बता सकती हैं तो इससे अच्छा क्या होगा! कृपया बताइए।”

वेश्या ने कहा, “बता तो दूँगी, लेकिन आपको मेरे यहाँ भोजन करना पड़ेगा।” विद्वान तुरंत पीछे हट गया, “नहीं-नहीं! वेश्या के घर भोजन करना पाप है। मैं गुरुजी से ही पूछ लूँगा।” वेश्या ने शांति से कहा, “अगर यहाँ भोजन करोगे, तो मैं तुम्हें एक सोने का सिक्का दूँगी।”

सिक्का देखते ही विद्वान के मन में कुछ संकोच हुआ, पर आखिरकार लोभ जीत गया। वह भोजन करने को तैयार हो गया। थोड़ी देर बाद, वेश्या भोजन बनाकर लाई और बोली, “अगर आपको आपत्ति न हो, तो मैं अपने हाथों से आपको भोजन करा दूँ?”

विद्वान फिर हिचकिचाया, “यह तो और भी अनुचित है।” वेश्या ने बिना कुछ कहे एक और सोने का सिक्का उसके सामने रख दिया। अब विद्वान की झिझक पूरी तरह हार गई। वह उसके हाथ से खाना खाने को भी तैयार हो गया।

वेश्या ने भोजन का एक निवाला उठाया, विद्वान के मुँह की ओर बढ़ाया। जैसे ही उसने मुँह खोला—एक ज़ोरदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा। वेश्या बोली, “यही है पाप का बाप – ‘लोभ’। अगर लोभ न होता, तो न तुम यहाँ आते, न सिक्का लेते, न यह पाप करने को तैयार होते।”

: 253 : पुराना सो सयाना

(इस कहानी को समझने के लिए पहले यह समझना होगा कि पुराने जमाने में जब बैंक नहीं होते थे तो लोग बड़ी धनराशि को नकद इधर से उधर ले जाने के स्थान पर हुंडियों का प्रयोग करते थे। यह एक प्रकार का बैंक ड्राफ्ट होता था। किसी एक बड़े सेठ के यहाँ रूपये जमा कर के उससे हुंडी लिखवा ली जाती थी और दूसरे स्थान पर जा कर दूसरे सेठ के यहाँ उस का भुगतान ले लिया जाता था। वे सेठ लोग अपने आपसी व्यापार में उनका जमा खर्च कर लेते थे। मियादी हुंडी का भुगतान हुंडी में लिखी मियाद पूरी होने पर किया जाता था, लेकिन दर्शनी हुंडी का भुगतान तत्काल करना होता था। यदि कोई सेठ हुंडी का भगतान न कर पाए तो बाजार में उसकी भद पिट जाती थी और सेठ दीवालिया घोषित हो जाता था। हुंडी के गुम हो जाने या नष्ट हो जाने पर उसकी पैठ लिखी जाती थी जोकि एक प्रकार की सर्टिफाइड कॉपी होती थी।

एक समय की बात है। एक बड़े सेठ थे, जिनका विदेशों तक फैला हुआ कारोबार था। जब सेठ का देहांत हुआ तो कारोबार की बागडोर उनके जवान बेटे के हाथ में आ गई। उस में जोश तो था लेकिन अनुभव की कमी थी।

बेटे ने सोचा, "ये पुराने मुनीम क्या जानें नए ज़माने का व्यापार!" और एक-एक करके सारे पुराने अनुभवी मुनीमों को छुट्टी दे दी। उनकी जगह रख लिए नए-नए लोग–जो नई चीजें पढ़ कर आए थे पर बाज़ार की चाल नहीं समझते थे। नतीजा वही हुआ जो होना था। कारोबार धीरे-धीरे चौपट होने लगा।

एक दिन एक बड़ा संकट आ खड़ा हुआ। एक बड़ी दर्शनी हुंडी आ गई। दर्शनी हुंडी–मतलब तुरंत भुगतान। रोकड़ में रुपये थे नहीं। हुंडी न देने का मतलब था–दिवालिया घोषित हो जाना और बाज़ार में नाक कट जाना।

सेठ का बेटा घबरा गया। अब उसे माँ की याद आई। माँ ने कहा, "बेटा, पुराने लोग यूँ ही नहीं रखे जाते।" माँ के कहने पर उसने एक पुराने मुनीम को बुलवाया। जाड़े की ऋतु थी। मुनीम बहुत वृद्ध हो चुका था। ठंड से काँप रहा था। सेठ ने कहा, "अंगीठी मँगवाओ, मुनीम जी ठंड से काँप रहे हैं।"

अभी अंगीठी जली ही थी कि हुंडी वाले का आदमी भुगतान लेने आ पहुँचा। वृद्ध मुनीम ने हुंडी हाथ में ली। आँखों पर चश्मा चढ़ाया। काँपते हाथों से हुंडी पढ़ने लगा। और पढ़ते-पढ़ते–अरे! हुंडी उसके हाथ से फिसलकर सीधे अंगीठी में जा गिरी। देखते ही देखते हुंडी जलकर राख हो गई।

सेठ का बेटा सन्न रह गया। हुंडी वाला भी चौंका। तभी मुनीम ने बड़े शांत स्वर में कहा, "अफ़सोस हुआ भैया। हुंडी तो आग में जल गई। अब तुम इसकी पैठ (नकल) मँगवा लो।" हुंडी वाले ने कहा, "कोई बात नहीं। पैठ मंगवा ली जाएगी।"

बस यही तो मुनीम चाहता था। इस छोटी-सी चतुराई से सेठ के बेटे को रुपये जुटाने के लिए कीमती समय मिल गया। कारोबार की साख भी बच गई और खुद की इज़्ज़त भी।

कहावत का अर्थ है कि नया जोश ज़रूरी है, पर पुराना अनुभव भी कम क़ीमती नहीं होता है।

: 254 : प्रविसि नगर कीजे सब काजा, हृदय राखि कोसलपुर राजा

हनुमान जी जब लंका में प्रवेश करने लगे तो लंकिनी नामक लंका की प्रहरी राक्षसी ने उन्हें ललकारा और कहा कि हे मूर्ख वानर! जिस लंका में पक्षी भी पर नहीं मार सकता वहां घुसने की हिम्मत तू कैसे कर रहा है?

इस पर हनुमान जी ने उसके जबड़े पर मुष्टिका से प्रहार किया, जिससे वह रक्त वमन करती हुई गिर पड़ी। तब उसे याद आया की ब्रह्मा जी ने उसको बताया था कि जब तू एक वानर के मारने से व्याकुल हो जाए तो समझ लेना की लंका का अंत निकट आ गया है। वह हाथ जोड़कर बोली कि मैं समझ गई आप कौन हैं। अपने हृदय में भगवान राम को धारण करके लंका में प्रवेश कीजिए और जो आपकी इच्छा हो वैसा कार्य कीजिए।

जब हम किसी कार्य पर निकलते हैं तो उसके पहले भगवान को स्मरण करके उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए इस चौपाई को कहावत के रूप में प्रयोग करते हैं।

: 255 : फ़ारस गए फ़ारसी पढ़ आए बोले वहीं की बानी, आब आब कह पुतुआ मर गए खटिया तरे धरो रहो पानी

मुगलों के जमाने में पढ़े लिखे लोग फ़ारसी पढ़ा करते थे (फ़ारसी एक प्रकार की उच्च शिक्षा थी, जैसे आजकल इंग्लिश है)। फ़ारसी में पानी को आब कहते हैं। तब के वक्त किसी गाँव में एक नवाबज़ादे बड़े शौक़ से फ़ारस (आज का ईरान) पढ़ने गए। वहाँ उन्होंने फ़ारसी ज़ुबान में ख़ूब महारत हासिल कर ली। जब लौटकर अपने गाँव आए, तो अपनी फ़ारसी का रौब जमाने लगे। अब वे आम

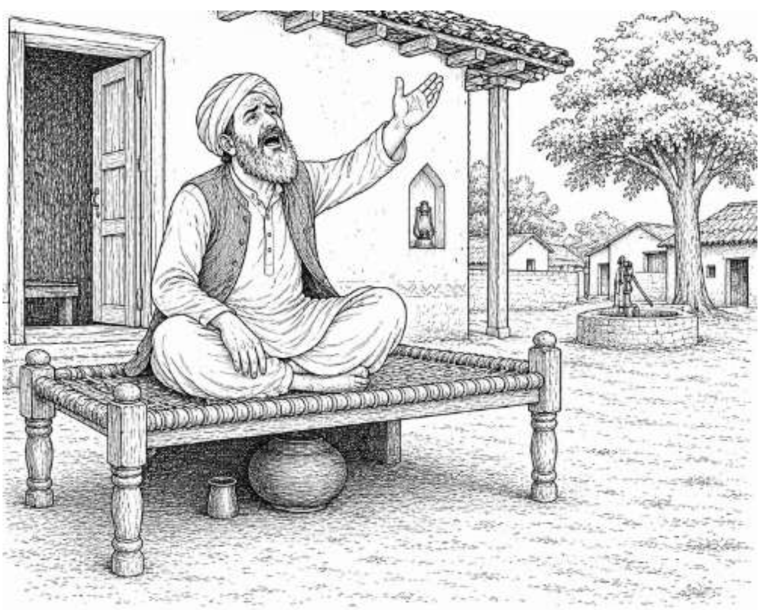

बोलचाल में भी फ़ारसी के शब्द इस्तेमाल करने लगे, जिससे गाँव के सीधे-साधे लोग अक्सर परेशान हो जाते।

एक दिन की बात है, नवाबज़ादे को तेज़ प्यास लगी। संयोग से उस दिन गाँव में कोई नहीं था जो उनकी 'उच्च शिक्षा' को समझता। प्यास के मारे उनका हलक सूखने लगा और उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया–

"आब! आब!"

लेकिन गाँव के भोले-भाले लोग यह नहीं समझ पाए कि वे 'पानी' मांग रहे हैं। सब सोचने लगे कि शायद कोई जादू-मंतर कर रहे हैं! कोई हकीम बुलाने दौड़ा, कोई तावीज़ लेने गया, लेकिन किसी ने पानी देने की नहीं सोची।

बेचारे नवाबज़ादे प्यास से बेहाल होकर गिर पड़े और वहीं दम तोड़ दिया। और विडंबना देखिए! उनकी खाट के नीचे ही एक घड़ा पानी रखा था, लेकिन भाषा के गुमान में वे अपना दुख ही न कह सके।

आजकल इंग्लिश बोलने में अपनी शान समझने वालों पर भी यह कहावत लागू की जा सकती है।

: 256 : बंद है मुठ्ठी तो लाख की, खुल गई तो फिर ख़ाक की

बहुत समय पहले की बात है। एक राज्य में एक प्रसिद्ध मंदिर था, जहां दूर-दूर से भक्त पूजा करने आते थे। एक दिन राजा ने घोषणा की कि वह अमुक दिन इस मंदिर में पूजा करने आएगा।

मंदिर के पुजारी को लगा कि राजा के आने से दान-दक्षिणा खूब मिलेगी। उसने मंदिर को भव्य रूप से सजाने की ठानी। इसके लिए उसने छह हजार रुपये उधार लिए और पूरे मंदिर को दीपों, फूलों और वस्त्रों से सजा दिया।

वह दिन भी आ गया जब राजा मंदिर पहुंचे। बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत हुआ। पूजा-अर्चना के बाद जब आरती की थाली राजा के सामने लाई गई, तो उन्होंने उसमें सिर्फ चार आने रखे और उठकर चले गए।

पुजारी को बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा, "इतना बड़ा राजा और दक्षिणा में सिर्फ चार आने? उसे यह चिंता भी सताने लगी कि वह अपना क़र्ज़ कैसे भरेगा।

बहुत सोच समझ कर उसने एक तरकीब निकाली। उसने आस पास के गाँवों में ऐलान करवा दिया कि राजा की दी हुई अमूल्य वस्तु की नीलामी होगी। लेकिन जब लोग नीलामी में आए, तो पुजारी ने अपनी मुठ्ठी बंद कर ली और कहा, "यह राजा की दी हुई वस्तु है, जो सबसे ऊंची बोली लगाएगा, वही इसे पाएगा!"

लोगों ने सोचा कि राजा ने जरूर कोई बेशकीमती चीज़ दी होगी। बोली लगनी

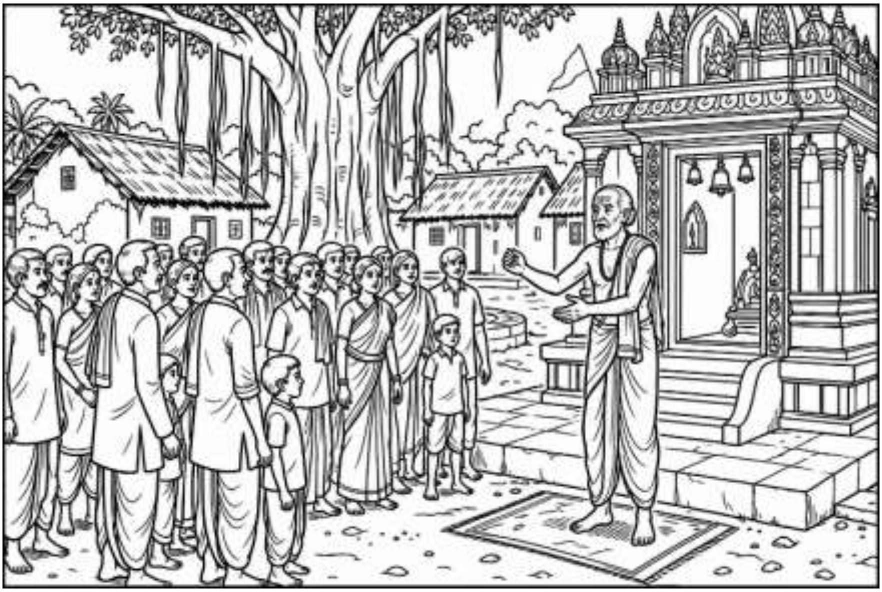

शुरू हुई—दस हज़ार!, बीस हज़ार!, पचास हज़ार!

पुजारी ने जब देखा कि बोली इतनी ऊँचाई तक पहुंच गई है, तो उसने घोषणा की कि नीलामी अब अगले दिन होगी और बोली पचास हज़ार से आगे शुरू होगी।

इस बात की ख़बर राजा तक भी पहुंच गई। वह सोचने लगा, "पुजारी मेरी दी हुई चीज़ को नीलाम कर रहा है! अगर लोग देखेंगे कि मैंने सिर्फ चार आने दिए थे, तो यह मेरी इज़्ज़त का सवाल बन जाएगा!"

राजा ने तुरंत सैनिकों को भेजा और पुजारी को दरबार में बुलवाया। उसने पुजारी से कहा, "नीलामी मत करो, मैं तुम्हें इसके बदले में एक लाख रुपये दूंगा!"

तभी से यह कहावत प्रचलित हो गई—"बंद है मुठ्ठी तो लाख की, खुल गई तो फिर ख़ाक की!"

: 257 : बंदर एक निशाचरी लाया कर अपनी अर्धांगी, लाल दास रघुनाथ कृपा से पैदा हुए फिरंगी

अंग्रेजों के शासनकाल में भारत के देशभक्त लोग अंग्रेजों से अत्यंत घृणा करते थे और उनका मज़ाक उड़ाने के लिए तरह-तरह की कहानियाँ और उक्तियाँ प्रचलित थीं। ऐसी ही एक यह मजेदार कथा लोगों में कही जाती थी। कहा जाता है कि जब भगवान राम ने लंका पर विजय प्राप्त की और अयोध्या लौटने की तैयारी करने लगे,

तब उनके साथ युद्ध में सहयोग करने वाले वानर उनसे मिलने आए। वानरों ने विनम्रता से कहा–

"हे प्रभु! सबको तो कुछ न कुछ प्राप्त हुआ। आपको माता सीता मिल गईं, विभीषण को लंका का राज्य मिल गया, सुग्रीव को किष्किंधा का राज मिल गया, परंतु हमें क्या मिला?"

वानरों की यह बात सुनकर भगवान राम मुस्कुराए और बोले, "ठीक है, मैं तुम्हें एक वरदान देता हूँ। कलयुग में तुम्हारे वंशज संसार पर राज्य करेंगे।"

कथा के अनुसार, इस वरदान को पूर्ण करने के लिए एक वानर ने एक निशाचरी (राक्षसी) को अपनी अर्धांगिनी बना लिया। उनके वंश से जो संतान उत्पन्न हुई, वही आगे चलकर 'फिरंगी' (अंग्रेज) कहलाए, जिन्होंने एक समय विश्व के बड़े हिस्से पर शासन किया।

: 258 : बकरी खाए न खाए, पर मुँह तो ज़रूर मारे

बकरी की एक बड़ी मशहूर आदत होती है। उसका पेट चाहे जितना भर जाए, अगर उसके सामने हरे-हरे पत्ते रख दो, तो वह मुँह ज़रूर मारती है–भले ही खाए न। इसी बात को लेकर एक दिन अकबर के दरबार में बड़ी बहस छिड़ गई।

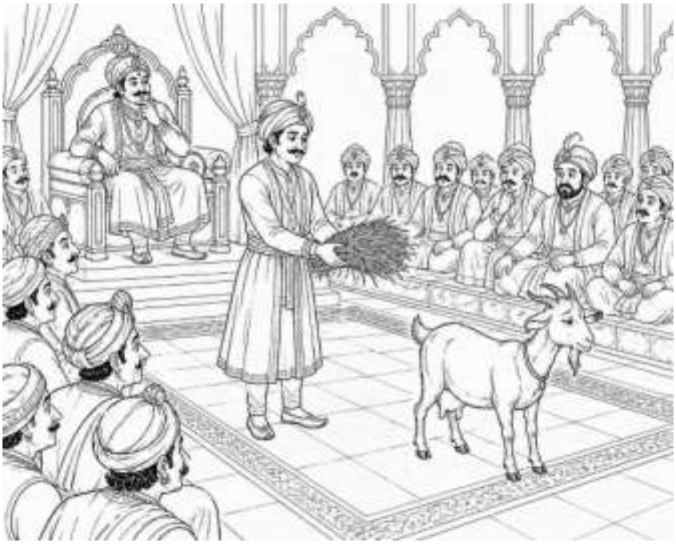

सभी दरबारी एक स्वर में कहने लगे, "जहाँपनाह! बकरी की यह आदत कोई नहीं बदल सकता।"

बादशाह अकबर ने यह सुना और हल्की मुस्कान के साथ बीरबल की ओर देखा। बोले, "बीरबल! क्या तुम ऐसी कोई बकरी ढूँढ़ सकते हो जो पत्तों में मुँह ही न मारे?" बीरबल ने सिर झुकाकर कहा, "जहाँपनाह, मुझे एक सप्ताह का समय दीजिए।"

दरबार में खुसर-पुसर शुरू हो गई, "अबकी बार तो बीरबल फँस ही गए!"

पूरा एक सप्ताह बीत गया। सातवें दिन बीरबल दरबार में एक बकरी लेकर हाज़िर हुए। बकरी के सामने ताज़े हरे पत्तों का ढेर लगा दिया गया। सारे दरबारी मन ही मन खुश, "अब देखिए, आज बीरबल की हार तय है।"

लेकिन घोर आश्चर्य! बकरी ने पत्तों की ओर देखा...और मुँह दूसरी तरफ मोड़ लिया। पूरा दरबार सन्न रह गया। किसी को आँखों पर यक़ीन नहीं हुआ। अकबर ने आश्चर्य से पूछा, "बीरबल! शर्त तो तुम जीत गए, पर यह बताओ–यह हुआ कैसे?"

बीरबल मुस्कराए और बोले, "जहाँपनाह, इसका राज़ है संटी उपचार।" "मैं बकरी के सामने एक लंबी-सी संटी लेकर बैठ जाता था। पहले उसे भरपेट घास खिलाता, फिर उसके सामने पत्ते रख देता। जैसे ही बकरी पत्तों में मुँह मारती, मैं उसके मुँह पर कस के संटी मार देता।" बीरबल ने आगे कहा, "धीरे-धीरे बकरी को समझ आ गया कि घास वह जितनी चाहे खा सकती है, पर पत्तों को मुँह लगाना उसके लिए खतरनाक है।"

कुछ लोगों की आदत होती है कि हर चीज को हाथ में ले कर देखते जरूर हैं चाहे वह उनके मतलब की हो या न हो। ऐसे लोगों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

इस कहावत से एक संभावना और उजागर होती है - जो लोग बहुत समझाने पर भी शराब या तम्बाखू आदि का सेवन नहीं छोड़ते वे संटी उपचार से ठीक किए जा सकते हैं।

: 259 : बख़्शो बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जियेगा

(लंडूरा माने बिना पूँछ का)।

एक बार एक बिल्ली ने किसी चूहे को पकड़ लिया। बिल्ली से छूटकर चूहा बिल में घुस गया, पर उसकी पूंछ टूटकर बिल्ली के मुंह में रह गई।

चूहे को अपने जाल में फंसाने के लिए बिल्ली चूहे से बोली, "मैं तो खेल खेल रही थी। तुम डरो नहीं, बाहर निकल आओ, मैं तुम्हारी पूंछ जोड़ दूंगी।"

इस पर चूहे ने कहा, “रहने दो बड़ी बी, मैं बिना दुम के ही जी लूँगा”

कोई शातिर व्यक्ति किसी सीधे साधे परन्तु समझदार व्यक्ति को फंसाने के लिए लालच दे रहा हो तो वह जवाब में यह कहावत कहता है।

: 260 : बगल में छोरा, नगर ढिंढोरा

गाँवों में अभी भी बच्चे अक्सर काफी काफी देर तक पड़ोस के बच्चों के साथ उन के घरों पर खेलते रहते हैं। माँ बाप उन के पीछे पीछे हर समय नहीं घूमते। ऐसे ही सर्दियों की एक शाम को कुछ महिलाएँ बैठी बातें कर रही थीं और अपना कुछ काम भी करती जा रही थीं। उनके बच्चे आसपास के घरों में खेल रहे थे।

शाम ढलने लगी तो उन में से एक महिला को एहसास हुआ कि उसका लड़का स्कूल से आने के बाद यहीं आस पास ही खेल रहा था लेकिन अब नहीं दिख रहा है। उसका बस्ता भी यहीं पड़ा है, पता नहीं कहाँ चला गया!

रात होने को थी इसलिए उसे चिंता हुई। उसने पड़ोस में खोजा, पर लड़का कहीं नहीं मिला। धीरे-धीरे बात फैल गई। घरवालों और पड़ोसियों ने पहले आस पास और फिर दूर दूर तक तलाश शुरू कर दी, कोतवाली में खबर कर दी गई। लेकिन लड़का नहीं मिला। घर में सब उदास बैठे थे। सभी के मन में अशुभ विचार आ रहे थे।

इसी बीच सर्दी बढ़ी तो माँ चादर लेने सबसे अंदर वाले कमरे में गई। चादर उठाते ही देखा–लड़का वहीं आराम से सो रहा था! वह उसे उठाकर आंगन में लाई, उस की आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

थोड़ी ही देर में यह खबर फैल गई कि लड़का मिल गया। जब पूछा गया कि कहाँ मिला, तो पता चला–वह तो घर के कमरे में ही सो रहा था। तभी किसी ने मुस्कराकर कहा, “बगल में छोरा, नगर ढिंढोरा।”

: 261 : बड़गांव की भागवत शुरू ही से (बड़गाँव के भागवत जरिये से)

कहावत का अर्थ है कि बड़गाँव का भागवत है, जो आरम्भ ही होता रहेगा।

चंपारण जिले में एक गाँव है–बड़गांव। एक बार वहाँ एक प्रसिद्ध कथावाचक आए और उन्होंने पूरे गाँव में घोषणा करवाई कि वे श्रीमद्भागवत की कथा सुनाएँगे। गाँववाले बड़े उत्साहित थे। कथा सुनने के लिए लोग जुटने लगे, और पंडितजी ने पूरे श्रद्धा-भाव से कथा का आरम्भ किया।

कुछ ही देर बाद गाँव के एक प्रतिष्ठित बाबू साहब वहाँ पहुँचे। उन्होंने पंडितजी से विनती की– "पंडितजी, मैं ज़रा देर से आया हूँ। कृपया कथा शुरुआत से ही कहिए।"

पंडितजी को क्या करना था? उन्होंने उनकी बात रखी और कथा को फिर से आरम्भ किया।

थोड़ी देर बाद, गाँव के एक और बड़े साहब वहाँ पहुँचे। उन्होंने भी वही आग्रह किया– "पंडितजी, मैं कथा के आरम्भ से ही सुनना चाहता हूँ।" अब पंडितजी ने फिर से कथा की शुरुआत कर दी।

यह सिलसिला चलता ही रहा। कोई कथा में देरी से आता, तो वह पंडितजी से आरम्भ से सुनाने को कहता। पंडितजी हर बार लोगों की इच्छा का मान रखते हुए फिर से कथा शुरू कर देते। नतीजा यह हुआ कि कई दिनों तक कथा का आरम्भ ही होता रहा, और वह आगे बढ़ ही नहीं पाई।

अगर कोई काम बार-बार शुरू होता रहे, लेकिन कभी आगे न बढ़ पाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 262 : बड़न की बात बड़े पहचाना

एक समय की बात है। एक धुनिया (जो रुई धुनने का काम करता था) अपने औज़ार–(रुई धुनने वाले धनुष नुमा औजार)–को कंधे पर टाँगे जंगल के रास्ते जा रहा था। वह बेखबर था, लेकिन जंगल में एक सियार उसकी तरफ़ बड़ी ध्यान से देख रहा था।

सियार ने पहली बार किसी इंसान को कंधे पर धनुष जैसा औजार लिए देखा था। उसे लगा कि यह कोई बड़ा शिकारी है जो उस का शिकार करने आया है। सियार चापलूसी करने के लिए धुनिया के पास आया और बड़े आदर से बोला– "कांधे धनुष, हाथ में बाना, कहाँ चले दिल्ली सुल्ताना?"

(अर्थात, "ओ दिल्ली के सुल्तान धनुर्धारी वीर, आप कहाँ जा रहे हैं?")

धुनिया बेचारा तो एक साधारण इंसान था, लेकिन उसने भी पहले कभी सियार नहीं देखा था। उसे लगा हो न हो यह जंगल का राजा होगा। अब डर तो दोनों को लग रहा था, लेकिन चापलूसी का खेल ज़ोरों पर था! धुनिया ने भी झट से अपनी जान बचाने के लिए सियार की तारीफ़ में कह दिया–

"बन के राव, विकट के राना, बड़न की बात बड़े पहचाना!"

(अर्थात, "हे जंगल के महान सम्राट, बड़े लोगों की बात बड़े ही पहचान सकते हैं!")

इस कहावत को मज़ाक में अधिक प्रयोग करते हैं (जैसे यदि दो मूर्ख लोग एक दूसरे की बड़ाई कर रहे हों तो तीसरा आदमी यह कहावत बोलता है)।

: 263 : बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटो बनड़ो घणों सुहाग

एक सेठ अपने बेटे की शादी से बहुत परेशान था। एक दिन उसने अपने पड़ोसी से कहा, “भाई, मेरे लड़के की शादी में बड़ा धोखा हो गया।” पड़ोसी ने पूछा, “कैसा धोखा?” सेठ बोला, “मेरी बहू उम्र में मेरे बेटे से बड़ी है।”

पड़ोसी हँसमुख स्वभाव का था। उसने मुस्कुराकर कहा, “अरे, इसमें बुरा क्या है? इसे तो अपना सौभाग्य समझो। बड़ी बहू जल्दी घर-गृहस्थी संभाल लेगी, अनुभव भी ज्यादा होगा। कहते हैं न ‘बड़ी बहू बड़ा भाग।’”

कुछ दिनों बाद वही पड़ोसी अपने दूसरे मित्र से मिला। वह दुखी होकर कहने लगा, “भाई, मेरी लड़की की शादी में बड़ी भूल हो गई।” पड़ोसी ने पूछा, “क्या हुआ?” उसने कहा, “लड़का उम्र में मेरी लड़की से छोटा है।”

पड़ोसी ने फिर हँसते हुए कहा, “अरे, तुम भी न! इसमें चिंता की क्या बात है? सुनी नहीं मारवाड़ी कहावत, ‘छोटो बनड़ो घणों सुहाग।’

लड़का छोटा है, तो लंबी उम्र पाएगा, और तुम्हारी लड़की अधिक समय तक सुहागिन रहेगी।” यह कहावत बताती है कि समझदार व्यक्ति हर परिस्थिति में सकारात्मक पक्ष ढूँढ लेता है।

: 264 : बधिया मरी तो मरी, आगरा तो देखा

कहा जाता है कि एक व्यापारी अपने बीमार बैल पर बहुत सारा नमक लादकर आगरा की मंडी में बेचने के लिए निकला। बैल पहले से ही कमजोर था, ऊपर से व्यापारी ने उस पर अधिक बोझ लाद दिया।

आगरा पहुँचते पहुँचते रास्ते में तेज गर्मी और थकान के कारण बैल की मृत्यु हो गई। व्यापारी को अपने बैल के मरने का दुःख तो हुआ ही, साथ ही उसे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ा।

जब वह आगरा पहुँचा, तो उसने सोचा कि अब जबकि वह यहाँ तक आ ही गया है, तो शहर को देख लेना चाहिए। उसने आगरा का भ्रमण किया और वहाँ के बाजारों तथा प्रसिद्ध स्थानों को देखा।

इस प्रकार, नुकसान के बावजूद उसे यह संतोष रहा कि उसने एक नए स्थान को देखने का अनुभव प्राप्त कर लिया।

कहावत का अर्थ है कि हानि होने पर भी यदि कोई अनुभव या लाभ मिल जाए, तो आदमी उस में संतोष कर के अपने को बहला लेता है।

: 265 : बनिए का बहकावा और जोगी का फिटकारा

एक व्यक्ति के पास एक अशर्फी थी, जिसे वह बेचकर कुछ पैसे प्राप्त करना चाहता था। वह बाजार में गया। एक बनिए की नजर उस पर पड़ी। उसने उस व्यक्ति से कहा–"भाई, यह अशर्फी मुझे दे दो, मैं इसके पाँच रुपए दूँगा।" व्यक्ति ने मना कर दिया।

बनिए ने धीरे-धीरे दाम बढ़ाना शुरू किया–छह, आठ, दस, बारह और अंत में चौदह रुपए तक पहुँच गया। अब उस व्यक्ति के मन में संदेह पैदा हुआ–"जब यह बनिया चौदह रुपए तक देने को तैयार है, तो अवश्य ही यह अशर्फी इससे कहीं अधिक मूल्य की होगी।" उसने कहा–"मैं इसे सर्राफ को दिखाकर ही बेचूँगा।"

यह सुनकर बनिए ने तुरंत अपना तरीका बदला और आत्मीयता दिखाते हुए बोला, "भाई, यह तो तीस रुपए की चीज है, इससे कम में मत बेचना।"

अब वह व्यक्ति पूरे बाजार में अशर्फी लेकर घूमता रहा और सब से तीस रुपए माँगता रहा, पर किसी ने भी इतनी कीमत नहीं दी। अंततः थक-हार कर और निराश होकर वह फिर उसी बनिए के पास आया और चौदह रुपए में अशर्फी बेच दी। इस प्रकार बनिए ने अपनी चालाकी और बहकावे से उस व्यक्ति को उलझाकर सस्ते में अशर्फी प्राप्त कर ली।

कोई व्यक्ति बनिए की बातों में आ कर अपना नुकसान कर बैठे तो यह कहावत कही जाती है।

: 266 : बनिए का बेटा कुछ देख ही के गिरता है

एक बनिए का लड़का सिर पर तेल का घड़ा रखकर बाजार जा रहा था। रास्ते में अचानक उसका पैर फिसला और वह गिर पड़ा। उसके साथ ही तेल का घड़ा भी टूट गया और सारा तेल बह गया।

यह देखकर लोगों ने सोचा कि लड़के को भारी नुकसान हुआ है। किसी ने जाकर उसके पिता को यह खबर दी।

बनिए ने यह सुनकर बिना घबराए कहा, "मेरा लड़का यूँ ही नहीं गिरा होगा, उसने रास्ते में जरूर कुछ देखा होगा।" लोगों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। वे वापस उस स्थान पर पहुंचे तो मालूम हुआ कि वहाँ बनिए के लड़के को सचमुच एक अशर्फी पड़ी मिली थी।

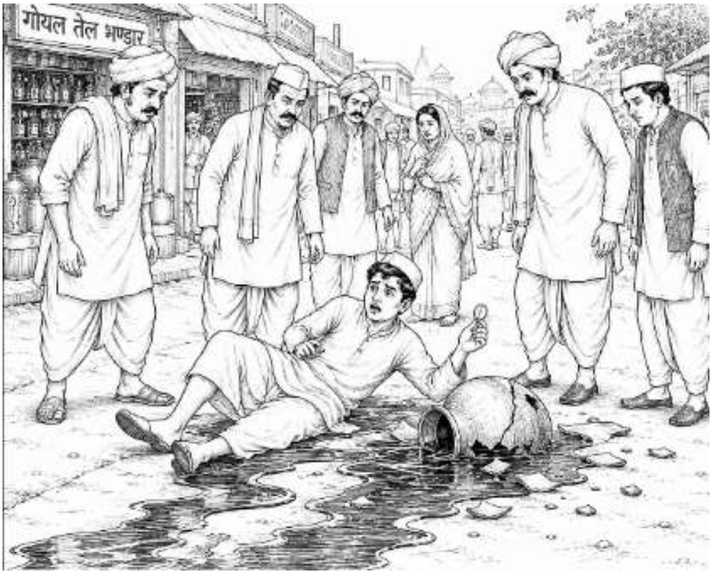

तब सबको समझ में आया कि लड़का उस अशर्फी को उठाने के लिए ही झुका होगा, और उसी चक्कर में गिर पड़ा। इस प्रकार, नुकसान होने के बावजूद उसने उससे अधिक लाभ कमा लिया। बनियों की चालाकी के विषय में प्रचलित बहुत सी कहावतों में से यह भी एक कहावत है।

: 267 : बनिज करेंगे बनिया और करेंगे रीस, बनिज करी जो जाट ने रह गए सौ के तीस

गाँव में एक बनिया और एक जाट रहते थे। बनिया एक अनुभवी व्यापारी था, जबकि जाट खेती-बाड़ी करता था। एक दिन जाट ने सोचा कि वह भी बनिया बनकर व्यापार करेगा और खूब पैसा कमाएगा।

उस ने बनिए से कहा, " बनिए भाई, तुम तो सालों से व्यापार कर रहे हो और लोगों को चूना लगा रहे हो। अब मैं भी व्यापार करूँगा। सुना है कि सौ रुपये में माल खरीदकर डेढ़ सौ में बेच देते हो।" बनिया हँसते हुए बोला "अरे भाई, व्यापार करना आसान नहीं, इसमें होशियारी चाहिए। अगर समझदारी से नहीं किया, तो सौ के तीस ही बचेंगे!"

लेकिन जाट ने उसकी बात अनसुनी कर दी और अपनी सारी पूँजी लेकर व्यापार करने निकल पड़ा। उसने शहर जाकर सौ रुपये में सामान खरीदा और गाँव में बेचने

लगा। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि सामान को कैसे तौलना है, कितना मुनाफा रखना है, और ग्राहकों से सही तरीके से सौदा कैसे करना है।

गाँव के लोग चालाक थे, उन्होंने जाट को बातों में उलझा लिया। किसी ने ज्यादा माल तौल लिया, किसी ने उधारी ले ली और किसी ने तो नकली सिक्के ही भिड़ा दिए। जब जाट ने दिन के अंत में हिसाब लगाया, तो उसके सौ रुपये के माल में से सिर्फ तीस रुपये ही बचे!

वह सिर पकड़कर बैठ गया और सोचने लगा - अरे बाप रे! बनिया सही कह रहा था!"

: 268 : बराबरी से कीजिए, बैर, प्रीत अरु ब्याह

एक चिड़िया और एक भैंस में बड़ी गहरी मित्रता थी। चिड़िया दिनभर भैंस की पीठ पर फुदकती, उसकी सींगों पर बैठकर चहचहाती और कभी उसकी पूँछ पर झूलती। भैंस को भी चिड़िया की संगति अच्छी लगती। दोनों खूब हँसी-मज़ाक करते और अपनी दोस्ती पर बड़ा गर्व करते।

एक दिन चिड़िया बोली, "भैंस बहन, मुझे बीट करनी है, मैं ज़रा होकर आती हूँ।" भैंस हँसकर बोली, "अरे, इसमें क्या! कर दो मेरी पीठ पर ही।" चिड़िया को यह सुनकर बड़ा मज़ा आया। उसने वहीं भैंस की पीठ पर बीट कर दी और खुशी-खुशी फुदकने लगी।

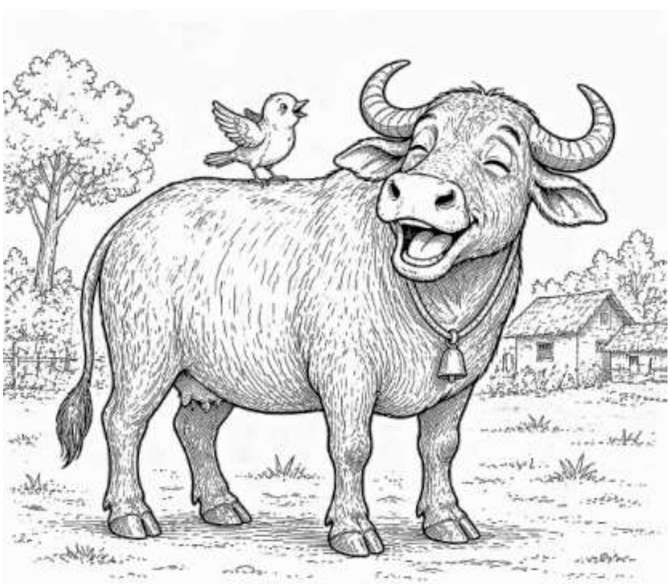

थोड़ी देर बाद भैंस को भी गोबर करने की जरूरत महसूस हुई। वह मज़ाक में बोली, "अरी चिड़िया, तूने मेरी पीठ पर कर दिया, अब मैं भी तेरे ऊपर कर लूँ?" चिड़िया को भी मज़ाक सूझा, "हाँ-हाँ, मैं ज़मीन पर बैठ जाती हूँ, कर दो मुझ पर!"

अब भैंस तो भैंस थी, उसने ज़रा भी सोचे बिना अपना भारी-भरकम गोबर कर दिया। लेकिन यह क्या! बेचारी नन्हीं चिड़िया गोबर के नीचे दबकर मर गई!

कहावत का अर्थ है कि मित्रता, शत्रुता और विवाह संबंध अपनी बराबरी वालों से ही करना चाहिए।

: 269 : बहन बत्तीस तो भाई छत्तीस

पुराने समय की बात है। एक भाई अपनी बहन के घर मिलने के लिए गया। उसके मन में बहुत दिनों बाद बहन से मिलने की खुशी थी, लेकिन बहन बड़ी कंजूस थी। जब भोजन का समय आया, तो बहन ने एक थाली में कुछ गेहूं के दाने और एक लोटा पानी रखकर भिजवा दिया।

भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "बहन, यह क्या? न रोटी, न दाल, न सब्जी?" बहन ने बड़ी चतुराई से जवाब दिया, "भाई! सारी चीजें गेहूं से ही बनती हैं– रोटी, दलिया, हलवा, सब कुछ। यह गेहूं ले लो, और समझो कि मैंने तुम्हें सब कुछ खिला दिया!"

भाई उस समय कुछ नहीं बोला। कुछ समय बाद बहन की बेटी की शादी तय हुई। भाई को "भात भरने" के लिए बुलाया गया। भाई आया, लेकिन साथ में क्या लाया? एक थाली में थोड़ी-सी धुनी हुई रूई रखकर बहन को दे दी!

बहन भौचक्की रह गई–"अरे भाई, यह क्या? घाघरा, ओढ़नी, चूड़ी-कंगन कुछ नहीं लाए?" भाई मुस्कुराया और बोला "अरी बहन! सारे कपड़े रूई से ही बनते हैं– घाघरा, ओढ़नी, दुपट्टा, रूमाल।।। सब कुछ! यह रूई ले लो और समझो कि मैंने सब दे दिया!"

कहावत का अर्थ है कि ज्यादा होशियारी दिखाने वाले लोग समय आने पर बहुत बुरी तरह मुँह की खाते हैं।

: 270 : बाल मराल के मंदर लेहीं।

सीता स्वयंवर में जब बड़े-बड़े राजा शिव धनुष को टस से मस नहीं कर सके तब मुनि विश्वामित्र ने राम से कहा कि वह धनुष को उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाएँ। जब राम धनुष की ओर बढ़े तो वहां बैठी हुई जनकपुर निवासी महिलाएं शंका करने लगी कि जिस धनुष को इतने बड़े-बड़े योद्धा नहीं हिला सके उसको यह सुकुमार बालक कैसे उठाएगा? इसकी उपमा गोस्वामी तुलसीदास जी ने बड़े सुंदर ढंग से की है। वे इस स्त्रियाँ आपस में बात कर रही हैं - क्या कोई हंस का बालक मंदराचल पर्वत को उठा सकता है।

जब किसी छोटे और कमजोर व्यक्ति से कोई बहुत बड़ा और कठिन कार्य करने के लिए कहा जाता है तो लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

: 271 : बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए, काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हँसाए

एक गाँव में एक पति-पत्नी अपने छोटे से बच्चे के साथ रहते थे। पति को अक्सर काम से बाहर जाना पड़ता था, इसलिए घर-गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी पत्नी पर ही थी।

अकेलापन दूर करने के लिए उसने एक नेवला पाल लिया था। वह नेवला बहुत समझदार था और और उस की बात को काफी कुछ समझता था। विशेषकर वह बच्चे के पास ही रहता और उसकी रक्षा करता।

एक दिन स्त्री पानी भरने तालाब पर गई। उस समय उसका छोटा बच्चा पालने में सो रहा था और नेवला पास ही बैठा था। जब वह पानी भरकर वापस लौटी, तो उसने देखा कि नेवला घर के बाहर खड़ा है और उसके मुँह पर खून लगा हुआ है।

यह दृश्य देखते ही वह घबरा गई। उसके मन में तुरंत यह विचार आया, "हाय! इसने मेरे बच्चे को मार डाला!" क्रोध और दुख में अंधी होकर उसने बिना कुछ सोचे-समझे सिर पर रखा मटका नेवले पर दे मारा।

घबराई हुई स्त्री तुरंत घर के अंदर भागी। वहाँ जाकर उसने जो देखा कि बच्चा तो पालने में सुरक्षित सो रहा था, और पास ही एक साँप के टुकड़े पड़े थे।

अब उसे सारा सच समझ में आ गया– नेवले ने उसके बच्चे को बचाने के लिए साँप को मार डाला था। यह सोचते ही वह पछतावे से भर गई। वह दौड़कर बाहर आई, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। नेवला मर चुका था। वह फूट-फूटकर रोने लगी– "हाय! मैंने अपने ही रक्षक को मार डाला!" आस-पड़ोस की स्त्रियाँ भी वहाँ इकट्ठी हो गईं। पूरी बात जानकर वे उसे उलाहना देने लगीं।

कहावत का अर्थ है कि जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे, जल्दबाज़ी में निर्णय लेता है, वह बाद में पछताता है, अपना नुकसान करता है और लोग भी उस पर हँसते हैं।

: 272 : बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

किसी ज़माने की बात है, एक पुराने मकान में चूहों का बड़ा झुंड रहता था। वे बड़े मज़े में इधर-उधर उछल-कूद करते और घर का अनाज कुतरते रहते। लेकिन एक दिन अचानक वहाँ एक बिल्ली आ गई!

बिल्ली को देखते ही चूहों के होश उड़ गए। जब भी कोई चूहा ज़रा सा बाहर निकलता, बिल्ली झपट्टा मारती और उसे दबोच लेती। धीरे-धीरे चूहों का जीना मुहाल हो गया।

चूहों ने इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए एक सभा बुलाई। सभी को मिलकर कुछ न कुछ उपाय निकालना था। एक चूहे ने सुझाव दिया, "हमें किसी बड़े जानवर से मदद लेनी चाहिए।" लेकिन ऐसा कोई जानवर समझ नहीं आया।

तभी एक जवान चूहा उछलकर खड़ा हुआ और बोला, "समस्या का हल बहुत आसान है! हमें बस बिल्ली के गले में एक छोटी सी घंटी बाँध देनी है। जब भी बिल्ली चलेगी, घंटी बजेगी और हम तुरंत सतर्क हो जाएंगे!"

उसकी बात सुनकर सभी चूहे खुशी से झूम उठे। "वाह! कमाल की तरकीब है!" सबने मिलकर ताली बजाई। लेकिन तभी एक बूढ़ा, अनुभवी चूहा धीरे-धीरे खड़ा हुआ और बोला, "बिल्कुल सही! लेकिन एक सवाल है–बिल्ली के गले में घंटी बांधेगा कौन?"

इतना सुनते ही पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। चूहे एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। और तभी।।। अचानक से बिल्ली के पैरों की हल्की आहट सुनाई दी! "बचाओ!" एक चूहा डरकर चिल्लाया, और पलक झपकते ही सभी चूहे अपनी-अपनी बिलों में घुस गए।

जब कोई भी व्यक्ति किसी खतरे वाले काम को करने के लिए आगे बढ़ने को तैयार न हो तो यह कहावत कही जाती है।

: 273 : बिल्ली वाली चाल तो सिखलाई ही नहीं (बिलईया एक दांव तो बचा कर राखे)

बहुत समय पहले की बात है। जंगल की एक शेरनी के पास एक नन्हा शावक था। शेरनी चाहती थी कि उसका बेटा एक दिन जंगल का सबसे ताकतवर और चतुर शिकारी बने। बहुत सोच-विचार के बाद वह बिल्ली मौसी के पास गई। बिल्ली चालाक थी, फुर्तीली थी, और शिकार के सभी दांव-पेंच जानती थी। शेरनी ने कहा, बहन! मेरे बेटे को शिकार करना सिखा दो। उसे जंगल का सबसे तेज और चतुर शिकारी बनाना है!"

बिल्ली ने शेरनी की बात मान ली। वह बड़े मन से शेर के बच्चे को सिखाने लगी–कैसे दबे पांव चलना है, कैसे शिकार पर झपटना है, कैसे खुद को छुपाना है, और कब हमला करना चाहिए। धीरे धीरे शेर का बच्चा बड़ा हो गया और एक कुशल शिकारी बन गया।

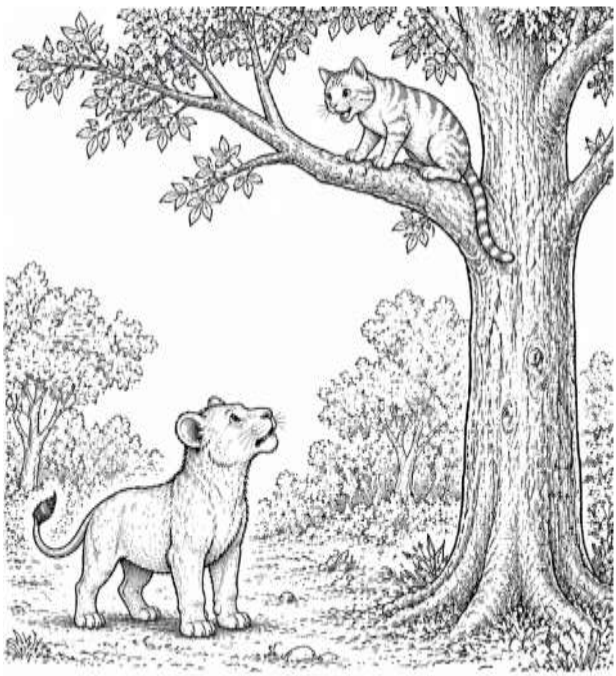

लेकिन तभी उसके मन में घमंड आ गया। उसने सोचा, "अब मैं जंगल का राजा बनने के लायक हूँ! मुझसे ताकतवर कोई नहीं। एक दिन मौका देखकर वह बिल्ली मौसी पर झपट पड़ा! लेकिन बिल्ली भी कम चतुर नहीं थी। वह फुर्ती से उछली और देखते ही देखते पास के पेड़ पर चढ़ गई। शेर का बच्चा नीचे खड़ा रह गया।

उसने नाराजगी के स्वर में बिल्ली से कहा कि मौसी, तूने यह चाल तो मुझे सिखलाई ही नहीं। इस पर बिल्ली ने उत्तर दिया कि बेटा मैंने इसी दिन के लिए इसे रोक कर रखा था।

कहावत का अर्थ है कि हम किसी का कोई भी काम करें हमें अपनी सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम रखना चाहिए।

: 274 : बीननहारी बीन कपास, तेरी मेरी एक ही सास

गर्मियों के दिन थे। एक आदमी किसी गाँव में मेहमान बनकर गया। खेतों में किसान काम में जुटे थे, और गाँव के बाहर कुछ महिलाएँ कपास के खेत में कपास बीन रही थीं।

वह आदमी खेत के पास से गुज़रा तो उसकी नज़र एक महिला पर पड़ी। उसने तुरंत पहचान लिया कि यह उसकी पत्नी की भाभी थी, यानी उसकी सलहज, लेकिन वह महिला उसे नहीं पहचानती थी।

वह आदमी मुस्कुराया और धीरे से बोला, "बहन जी, आपका घर कहाँ है?" महिला ने अजनबी को देखा और सतर्कता से पूछा, "आप कौन हैं?"

अब उस आदमी को लगा कि सीधा बताने से मज़ा नहीं आएगा। वह हँसते हुए बोला, "बीननहारी बीन कपास, तेरी मेरी एक ही सास!"

महिला कुछ पल के लिए सोच में पड़ गई। उसने इधर-उधर देखा, माथे पर बल पड़े, लेकिन वह कुछ समझ नहीं पाई। आखिरकार उसने कहा, "माफ कीजिए, मैं कुछ समझ नहीं पाई।" अब आदमी ने हँसते हुए राज़ खोल दिया, "अरे, मैं आपका नन्दोई

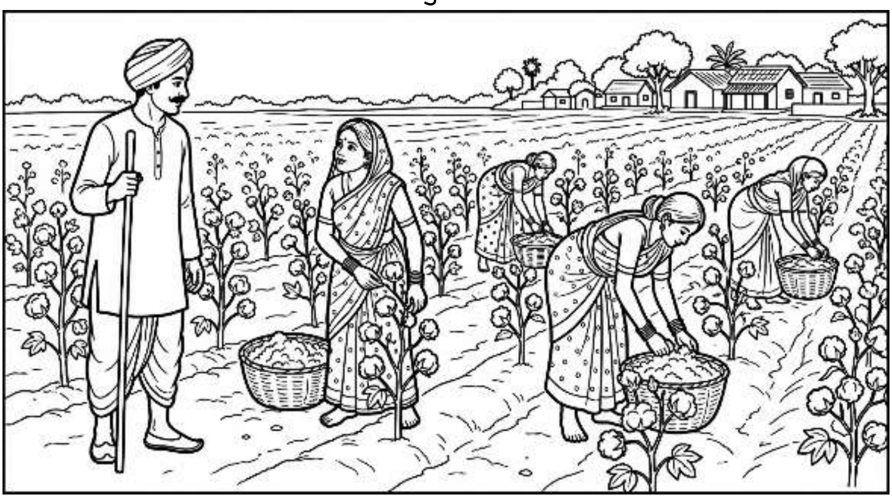

हूँ!"

महिला को अचानक याद आया–"अरे हाँ! यह तो मेरी ननद के पति हैं!" वह हँस पड़ी और बोली, "जीजा जी, यह तो आपने बड़ी मज़ेदार पहेली कही!" फिर वह उस आदमी के साथ गाँव के भीतर अपने घर की ओर चल दी, और रास्ते भर दोनों हँसी-मज़ाक करते रहे।

जब कहीं पर आपसी रिश्तों का जिक्र हो रहा होता है तो मजाक में यह कहावत कही जाती है।

: 275 : बीरबल की खिचड़ी

एक बार सर्दी के मौसम में अकबर के दरबार में चर्चा हो रही थी कि आजकल यमुना का पानी बहुत ठंडा है और खासकर रात में तो बहुत ही ज्यादा ठंडा हो जाता है। अकबर ने कहा कि अगर कोई व्यक्ति यमुना के पानी में कमर तक डूब कर रात भर खड़ा रह कर दिखाए तो उसे एक हजार अशरफियां इनाम में दी जाएंगी। इस बात की मुनादी करवा दी गई।

एक बेचारा गरीब आदमी जो कि कर्ज के बोझ से लगा हुआ था, उसने सोचा क्यों न जान की बाजी लगाकर ऐसा करके देख लूं। हद से हद जान ही तो जाएगी। मुगलों के जमाने में आम आदमी की जान की वैसे भी कोई कीमत नहीं थी। वह बेचारा रात भर कमर तक डूब कर यमुना के ठंडे पानी में खड़ा रहा। किनारे पर गश्त लगा रहे सिपाही बीच-बीच में आकर उसको देखते भी रहे।

सुबह जब वह अकबर के दरबार में इनाम लेने पहुंचा तो अकबर ने उससे पूछा कि भाई तुम्हें इतने ठंडे पानी में खड़े रहने की ताकत कहां से मिली। वह बोला जहांपनाह आपके महल में एक दिया जल रहा था मैं उसी को ताकता रहा और हिम्मत करके खड़ा रहा।

अकबर बोला, तो यह कहो कि तुम्हें उस दीपक से गर्मी मिलती रही, तो इसमें कौन सी बहादुरी है। तुम्हें कोई इनाम विनाम नहीं मिलेगा।

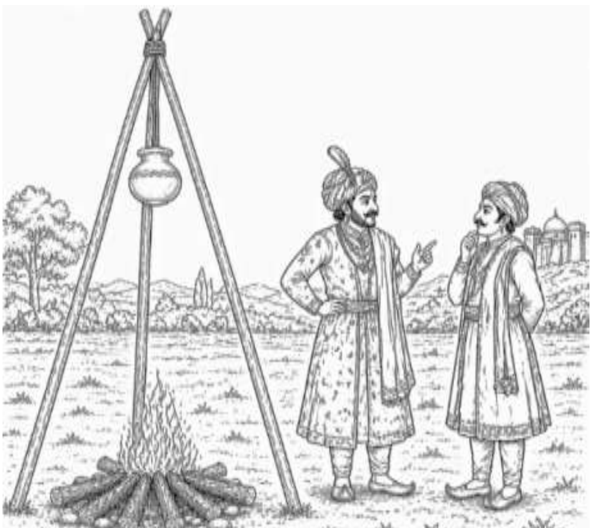

अकबर की इस दुष्टता को देखकर बीरबल को बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने अकबर को सबक सिखाने की सोची। अगले दिन बीरबल दरबार में नहीं आए। बादशाह को बेचैनी होने लगी। उसने आदमी भेज कर बीरबल को दरबार में बुलवाया। उस आदमी ने लौटकर बताया की हुजूर बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं और पकते ही उसे खाकर दरबार में हाजिर होंगे। काफी देर बीत गई और बीरबल नहीं आए तो अकबर को लगा कि इसमें जरूर कोई पेंच है। वह खुद देखने गया तो देखता क्या है कि बीरबल ने तीन बांसों के ऊपर ऊंचाई पर एक हडिया टांग रखी है और नीचे जमीन पर थोड़ी सी आग जला रखी है। अकबर तमक कर बोला, यह क्या तमाशा है बीरबल, ऐसे भी

कोई खिचड़ी पकती है? बीरबल बोले, जी हां जहांपनाह, जरूर पकेगी। जब दूर महल में जल रहे दीपक से ठंडे पानी में खड़े एक इंसान को गर्मी मिल सकती है तो ऐसे खिचड़ी क्यों नहीं पक सकती।

कोई व्यक्ति किसी काम को बहुत धीमे और हास्यास्पद ढंग से कर रहा हो तो यह कहावत कही जाती है।

: 276 : बुद्धिमान शत्रु से मूर्ख मित्र अधिक खतरनाक होता है

कहावत का अर्थ तो स्पष्ट है। इस को आसानी से समझाने के लिए एक कहानी कही जाती है। गहरे जंगल में एक शिकारी शेर के शिकार के लिए आया। यह कोई आम शेर नहीं था—चालाक और फुर्तीला था। झाड़ियों की ओट से हमला करता, फिर फौरन गायब हो जाता। शिकारी भी कम नहीं था, पूरी सतर्कता से शेर की हर हरकत पर नजर रखता और खुद को बचाता।

कई दिनों तक यह खेल चलता रहा, लेकिन शिकारी को सफलता नहीं मिली। शेर से पार पाना मुश्किल लग रहा था, इसलिए उसने जंगल में रहने वाले एक भोले-भाले भालू से दोस्ती कर ली। उसने भालू को मीठा शहद खिलाया, और भालू अब शिकारी का वफादार साथी बन गया।

एक दिन, लंबी कोशिशों के बाद थककर शिकारी एक पेड़ के नीचे सो गया। भालू वहीं बैठकर उसकी रखवाली करने लगा। तभी एक मक्खी आई और बार-बार शिकारी के चेहरे पर बैठने लगी। भालू ने उसे कई बार भगाया, लेकिन वह बार-बार लौट आती।

भालू को गुस्सा आ गया। उसने सोचा— "मेरे दोस्त को चैन से सोने नहीं दे रही? अभी

सबक सिखाता हूँ!"

उसने एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और पूरी ताकत से मक्खी को मारने के लिए शिकारी के चेहरे पर दे मारा। मक्खी तो उड़ गई, लेकिन शिकारी का वहीं अंत हो गया।

इस तरह, शिकारी अपने बुद्धिमान शत्रु शेर के हाथों नहीं, बल्कि अपने मूर्ख मित्र भालू के हाथों मारा गया।

इसीलिए कहा जाता है–"बुद्धिमान शत्रु से मूर्ख मित्र अधिक खतरनाक होता है!" इंग्लिश में कहावत है - A wise enemy is better than a foolish friend।

: 277 : बैरी लायो गेह में, किया कुटुम पर रोस, आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोस

(दई - दैव, ईश्वर; कामड़ा - दुर्भाग्य, दुर्दशा)

(घर वालों से बदला लेने के लिए मैंने बैरी को घर में बुलाया था। अब मेरी बारी भी आ गई है। इस दुर्दशा को मैंने खुद बुलाया है, भाग्य का इस में दोष नहीं है।)

किसी गाँव के पास एक कुएँ में मेंढकों का बड़ा झुंड रहता था। एक दिन कुएँ के मेंढकों में आपसी झगड़ा हो गया। एक ज़िद्दी और गुस्सैल मेंढक को औरों ने मिल कर पीट दिया जिससे वह बहुत नाराज़ हो गया। वह कुएँ के पास रहने वाले एक विषैले साँप के पास गया और बोला, "सांप भाई, अगर तुम्हें लगातार स्वादिष्ट खाना चाहिए तो तुम मेरे कुएँ में आओ और मेरे दुश्मनों से बदला लेने में मेरी मदद करो।"

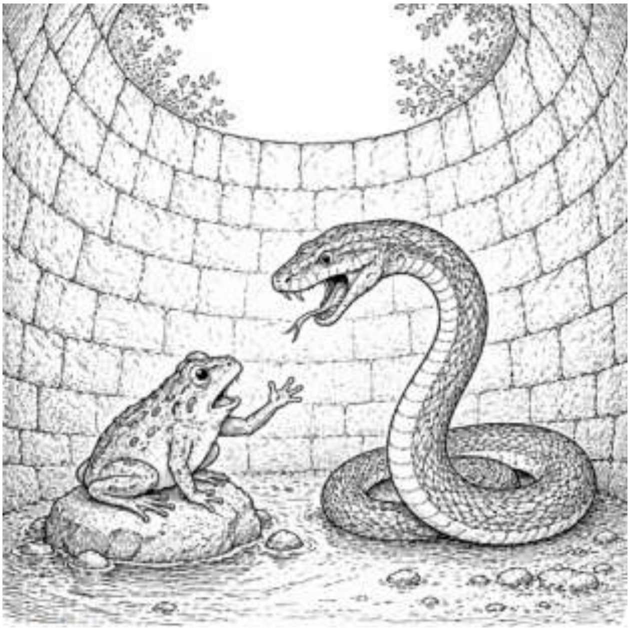

सांप को यह प्रस्ताव पसंद आया। मेंढक ने उसे कुएं में आने का रास्ता बताया। सांप कुएँ में घुस गया और एक-एक करके मेंढकों को खाने

लगा। जब बाकी मेंढक खत्म हो गए तो सांप उसकी ओर बढ़ा। अब वह मेंढक घबरा गया। उसने कांपते हुए सांप से कहा, "मैं तुम्हारा मित्र हूँ, कृपया मुझे मत खाओ!"

सांप ठहाका लगाकर हँसा, "मुझे भूख लगी है!" कह कर साँप ने उसे भी खा लिया। कहावत का अर्थ है कि शत्रु से मदद माँगना हमेशा विनाश का कारण बनता है।

ऐसा ही कुछ इतिहास में भी हुआ था। जब पृथ्वीराज चौहान और जयचंद के बीच दुश्मनी बढ़ी, तो जयचंद ने मोहम्मद गोरी को भारत बुला लिया। गोरी ने पहले पृथ्वीराज चौहान को हराया, लेकिन कुछ ही समय बाद कन्नौज पर आक्रमण कर जयचंद को भी खत्म कर दिया।

: 278 : बोले सो मारा जाय

एक राजकुमार ने अपने पिता की मृत्यु के बाद एक दिन अपने बुद्धिमान मन्त्री से कहा, "आप मुझे व्यवहारिक ज्ञान दीजिए और मेरे दोष बतलाइए।"

मंत्री ने कहा, "सब से पहला व्यवहारिक ज्ञान यह है कि चुप से सब काम बन जाते हैं। बोलने वाला मारा जाता है अत: मैं आपके अवगुण नहीं कहूंगा। कोई बात हित की हो और मन को सुहानेवाली हो ऐसा मुश्किल से ही होता है।"

राजकुमार को इससे संतोष नहीं हुआ क्योंकि वह अपनी तारीफ़ सुनना चाहता था। वह सुनना चाहता था कि मंत्री बोले, आप अपने पिता से अधिक बुद्धिमान हैं। लेकिन मंत्री चुप रहा क्योंकि वह खुशामदी नहीं था।

एक दिन राजकुमार मंत्री को साथ लेकर आखेट को गया। दिन भर भटकने के बाद भी कोई शिकार हाथ न लगा। सांझ होने पर लौटने के समय झाड़ी में एक तीतर बोला। राजकुमार ने आवाज के अंदाज पर तीर चलाया। तीतर ढेर हो गया। मंत्री बोला, "मूर्ख, न बोलता, न मारा जाता।"

: 279 : भई गति सांप छछूंदर केरी (उगले तो अंधा, निगले तो कोढ़ी)

(लोक विश्वास है कि सांप अगर छछूंदर को पकड़ ले तो बहुत मुश्किल में पड़ जाता है, क्योंकि अगर वह उस को छोड़ता है, तो अंधा हो जाएगा और निगल ले तो कोढ़ी हो जाएगा. यह कथा इसी विश्वास पर आधारित है।)

एक खेत के पास घनी झाड़ियों में एक साँप रहता था। वह रोज़ रात को निकलकर चूहों और मेंढकों का शिकार करता था। एक रात वह भोजन की तलाश में निकला। अँधेरा था और झाड़ियों में सरसराहट हो रही थी। उसे लगा कि कोई चूहा भाग रहा है। उसने झपट्टा मारा और अपने शिकार को पकड़ लिया।

लेकिन जैसे ही उसने ध्यान से देखा, तो वह चूहा नहीं, बल्कि छछूंदर थी। अब साँप बड़ी मुश्किल में पड़ गया। वह जानता था कि छछूंदर को छोड़ देने पर वह अंधा हो सकता है। और यदि उसे निगल ले, तो शरीर में कोढ़ फ़ैल सकता है। अब न तो वह उसे छोड़ पा रहा था, न ही निगल पा रहा था।

वह काफी देर तक वहीं तड़पता रहा—कभी छोड़ने का सोचता, तो भी डर लगता; कभी निगलने का सोचता, तो और बड़ी विपत्ति नजर आती। इसी ऊहापोह में वह बहुत देर तक वहीँ पड़ा रहा। तभी वहाँ से एक नेवला गुजरा। नेवला तो सांप का जन्मजात दुश्मन होता ही है। उस ने झपट कर सांप के टुकड़े टुकड़े कर दिए।

जब कोई व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में फँस जाता है कि वह किसी काम को न तो छोड़ सकता है और न ही पूरा कर सकता है तब यह कहावत कही जाती है।

: 280 : भय बिनु होहिं न प्रीत

जब भगवान श्रीराम, लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र पार करने की योजना बना रहे थे, तो उनके सामने एक बड़ी समस्या आ खड़ी हुई। समुद्र को पार किए बिना लंका पहुँचना असंभव था। भगवान राम ने समुद्र से प्रार्थना की, "हे समुद्र देव! कृपा करके हमें मार्ग दीजिए, ताकि हम राक्षसों का संहार कर सकें और धर्म की स्थापना कर सकें।"

राम जी ने एक दिन प्रार्थना की, फिर दूसरे दिन भी की और फिर तीसरा दिन भी निकल गया। राम समझ गए कि विनम्रता से हर कोई नहीं समझता!

क्रोध में आकर उन्होंने अपने धनुष को उठाया और अग्नि बाण चढ़ाकर समुद्र को सुखाने के लिए तैयार हो गए। जैसे ही राम जी ने संहारक मुद्रा धारण की, समुद्र घबरा गया। लहरें उफनने लगीं, समुद्री जीव व्याकुल हो उठे।

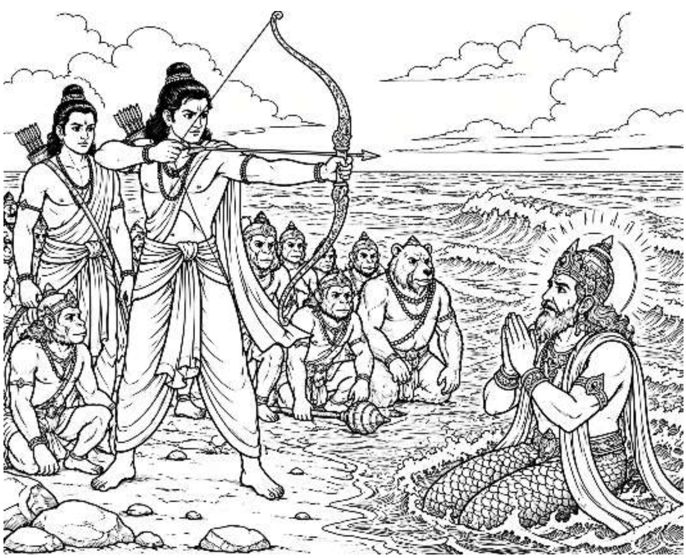

तब समुद्र भगवान राम के सामने हाथ जोड़कर प्रकट हुआ और विनम्रता से बोला, "प्रभु! कृपा करें, मैं अपने जल को तो विस्थापित नहीं कर सकता

लेकिन एक उपाय है जिससे आपका कार्य पूरा हो सकता है। नल और नील नामक वानर आपकी सेना के लिए सेतु का निर्माण कर सकते हैं, उनके द्वारा फेंके गए पत्थर पानी में नहीं डूबेंगे।"

भगवान राम ने समुद्र को क्षमा कर दिया, और फिर वानर सेना ने पत्थरों से रामसेतु का निर्माण किया, जिस पर चलकर वे लंका पहुँचे और रावण का अंत किया।

तुलसीदास जी ने इसे ऐसे कहा है "विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीत। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होहिं न प्रीत॥" कुछ लोग प्रेम और विनय से नहीं समझते, उन्हें शक्ति का परिचय देना ही पड़ता है। कहावत का अर्थ है कि अत्याचारियों और दुष्टों को केवल प्रेम से नहीं जीता जा सकता, उनके लिए शक्ति का प्रदर्शन जरूरी होता है।

: 281 : भागते चोर की लंगोटी ही भली

गहरे अंधकार से घिरी रात थी। पूरा गाँव चैन की नींद सो रहा था। ऐसे में एक चोर ने गाँव के सबसे अमीर बनिये के घर में बड़ी होशियारी से सेंध लगा दी। अन्दर जा कर उसने झटपट कुछ सामान इकट्ठा किया और सेंध में से बाहर निकलने लगा। लेकिन तभी कोई चीज़ गिरकर ज़ोर से खनक उठी!

"कौन है?" बनिये की नींद खुल गई। उसने तुरंत खुली अलमारी की ओर देखा और समझ गया कि घर में सेंध लगी है! वह दौड़ता हुआ पिछवाड़े की ओर पहुँचा।

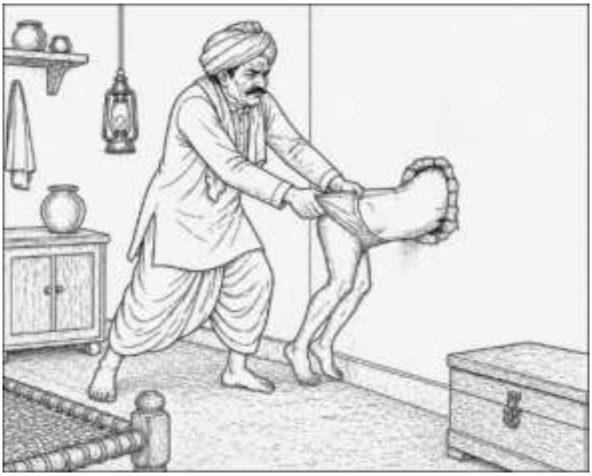

चोर चौकन्ना था। जैसे ही बनिया उसके करीब आया, वह झट से सेंध से बाहर कूदने लगा। पर बनिये ने तेज़ी से चोर की कमर पकड़ ली और चिल्लाया "अरे पकड़ो! पकड़ो! चोर!" चोर फुर्तीला था। वह बनिये की पकड़ से निकलकर अंधेरे में भाग गया। पर उसकी लँगोटी बनिए के हाथ में रह गई।

अगले दिन बनिए ने गाँववालों को रात के वाकये के बारे में बताया और सबको उसकी लंगोटी दिखाई। गाँव के एक बूढ़े दर्जी ने लंगोटी देखते ही पहचान लिया, "अरे, यह तो फलाने की है!" गाँववाले हंस पड़े। उन्होंने चोर को खोज निकाला और बनिये का सामान वापस दिलवाया।

इस कहावत को ऐसे सन्दर्भ में प्रयोग करते हैं कि जब पूरी चीज़ न मिले, तो जितना भी मिल जाए, उतना ही अच्छा है। बहुत से लोग इस को ऐसे बोलते हैं - भागते भूत की लँगोटी भली।

: 282 : भूत न मारे, मारे भय

रमेश एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति था, जो भूत-प्रेत, अंधविश्वास और टोने-टोटके को बिल्कुल नहीं मानता था। वह हमेशा कहता, "भूत-वूत कुछ नहीं होते, ये सब मन का भ्रम है!" गाँव के कुछ शरारती लड़कों ने उसकी इस बात को चुनौती देने की सोची। उन्होंने रमेश से कहा, "अगर तू सच में भूत-प्रेत को नहीं मानता, तो आधी रात को श्मशान में जा और वहाँ पीपल के पेड़ पर कोयले से अपना नाम लिखकर दिखा!"

रमेश हँसा और बोला, "अरे, इसमें कौन-सी बड़ी बात है! मैं आज ही जाकर लिख आऊँगा!"

आधी रात का समय था। रमेश बिना किसी डर के चल पड़ा। दूर कहीं उल्लू बोल रहा था, पर रमेश डरा नहीं। उसने खुद को समझाया, " बस जाकर लिखकर आ जाना है!" श्मशान में घुसते ही उसे थोड़ी घबराहट महसूस हुई, पर वह आगे बढ़ता रहा। पीपल का विशाल पेड़ उसके सामने था, जिसकी टेढ़ी-मेढ़ी शाखाएँ अंधेरे में डरावनी लग रही थीं। रमेश ने जल्दी से कोयला निकाला और कांपते हाथों से पेड़ की छाल पर अपना नाम लिख दिया।

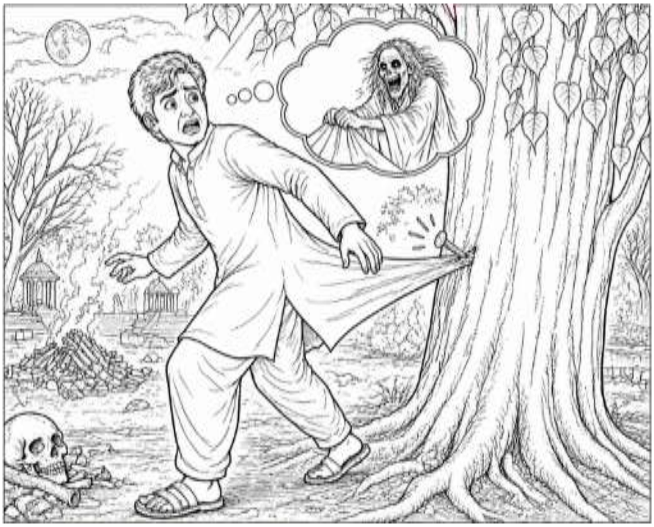

जैसे ही उसने लौटने के लिए कदम बढ़ाया, अचानक उसके कुरते का किनारा पेड़ पर लगी किसी पुरानी जंग लगी कील में फँस गया। पीछे से झटके का अहसास होते ही रमेश का दिल जोर से धड़क उठा!

"भ...भूत!!!" उसके दिमाग ने चेतावनी दी–"भाग!" लेकिन शरीर जवाब दे गया। उसे लगा किसी अदृश्य शक्ति ने उसे पकड़ लिया है! भय से उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं, साँसें अटक गईं और कुछ ही क्षणों में वह सदमे से गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

: 283 : भेड़िया आया, भेड़िया आया

किसी गाँव में एक शरारती चरवाहा रहता था। वह रोज़ अपनी भेड़ों को जंगल में चराने ले जाता था। एक दिन उसने सोचा, "क्यों न गाँववालों से थोड़ा मज़ा लिया जाए?" वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "भेड़िया आया! भेड़िया आया! जल्दी आओ, मेरी भेड़ों को बचाओ!"

गाँव के लोग, जो एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे, अपने-अपने काम छोड़कर डंडे, लाठियाँ लेकर दौड़े चले आए। पर वहाँ पहुँचकर देखा—कोई भेड़िया नहीं था! लड़का ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा था। गाँववालों ने गुस्से में कहा, "यह क्या मज़ाक है? हम अपना काम छोड़कर आए और तू हमें बेवकूफ बना रहा है?"

कुछ दिन बाद उसने फिर वही हरकत दोहराई। इस बार भी लोग दौड़ते हुए आए, लेकिन फिर मूर्ख बन गए। अब गाँव के लोग चिढ़ गए। उन्होंने सोचा, "यह लड़का झूठा है। अब से हम इस पर विश्वास नहीं करेंगे।"

एक दिन सचमुच एक बड़ा और भयानक भेड़िया आ गया! चरवाहा डर से काँप उठा। भेड़िया उसकी भेड़ों पर झपट पड़ा और एक भेड़ को घसीटने लगा। घबराकर वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "भेड़िया आया! भेड़िया आया! बचाओ!" लेकिन इस बार गाँववालों ने ध्यान ही नहीं दिया। आखिरकार, भेड़िया उसकी भेड़ को ले गया।

कहावत का अर्थ है कि सामाजिक मसलों में ठिठोली नहीं करनी चाहिए।

: 284 : मत चूको चौहान

इस विषय में एक कथा कही जाती है (पता नहीं यह सच है या नहीं)। पृथ्वीराज चौहान, अजयमेरु (आज का अजमेर) के वीर सम्राट थे। उन्होंने मोहम्मद गोरी को सत्रह बार युद्ध में हराया, लेकिन हर बार उसे क्षमा कर दिया। लेकिन अठारहवीं बार, उसने छल-कपट से पृथ्वीराज को हरा दिया। पृथ्वीराज को बंदी बना लिया गया और गोरी ने उन्हें अंधा कर दिया। पृथ्वीराज के दरबारी कवि चंदवरदाई भी उनके साथ थे। उन्होंने अपने सम्राट के अपमान का बदला लेने की योजना बनाई।

उन्होंने गोरी के दरबार में जाकर कहा, "हमारे सम्राट पृथ्वीराज शब्दवेधी बाण चला सकते हैं! वे बिना देखे, केवल आवाज़ से लक्ष्य भेद सकते हैं!" गोरी यह सुनकर चकित रह गया और इस चमत्कार को देखने के लिए तैयार हो गया। दरबार में आयोजन हुआ। एक घंटे को ऊँचाई पर लटकाया गया। योजना के अनुसार, जब घंटे पर हथौड़े की चोट होगी, पृथ्वीराज उस पर बाण चलाएंगे।

लेकिन असली खेल कुछ और था। चंदवरदाई ने पृथ्वीराज के कानों में कहा, *"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान!"*

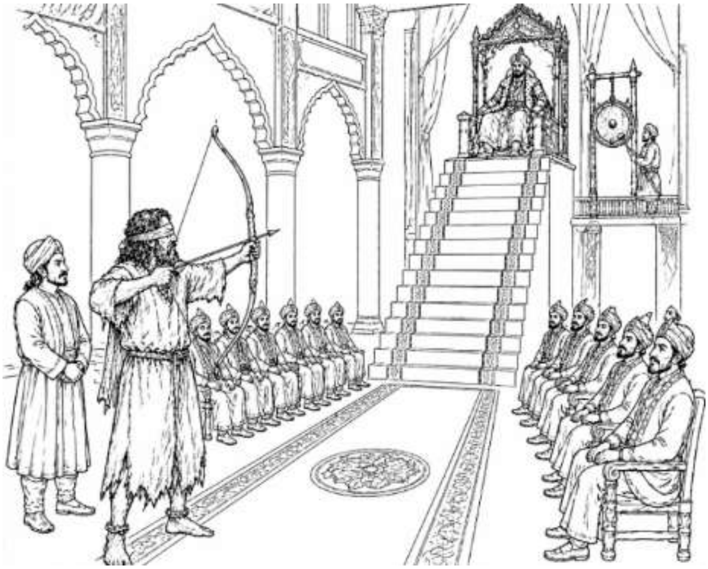

इससे पृथ्वीराज ने गोरी की स्थिति का अनुमान लगा लिया। घंटे की आवाज के बाद जैसे ही गोरी ने कहा, "तीर चलाओ!" पृथ्वीराज ने चलाया–तीर सीधे मोहम्मद गोरी के गले में जा धंसा और वह वहीं ढेर हो गया! चंदवरदाई ने अपने प्रिय सम्राट को शत्रुओं के हाथों अपमानित होने से बचाने के लिए उनके सीने में कटार भोंक दी और फिर खुद को भी समाप्त कर लिया। तभी से कोई कठिन कार्य करने के लिए किसी को जोश दिलाना हो तो कहा जाता है –"मत चूको चौहान!"

: 285 : मन चंगा तो कठौती में गंगा

संत रैदास अपने घर के बाहर सड़क पर बैठकर जूते गांठा करते थे।

एक दिन उसी रास्ते एक पंडितजी गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे। चलते-चलते उनका जूता टूट गया। रास्ते में रैदास को देखकर वे जूता ठीक कराने रुक गए। रैदास उस समय किसी दूसरे ग्राहक का काम कर रहे थे।

पंडितजी बोले, “भाई, मेरा जूता ज़रा जल्दी ठीक कर दो, मुझे गंगा जी जाना है।” रैदास ने विनम्रता से कहा, “पहले हाथ का पूरा कर लूँ, फिर आपका कर दूँगा।

आप बैठ जाइए, जल्दी हो जाएगा।" काम पूरा करके रैदास ने पंडितजी का जूता ठीक करना शुरू किया।

पंडितजी बोले, "आज बड़ा पवित्र पर्व है। लोग दूर-दूर से गंगा स्नान करने आते हैं। तुम्हारे तो गंगा जी पास ही हैं, क्या तुम स्नान करने नहीं जाओगे?" रैदास मुस्कराकर बोले, "महाराज, मैं गरीब आदमी हूँ। अगर गंगा नहाने जाऊँ, तो परिवार के लिए रोटी जुटाना कठिन हो जाएगा।" फिर थोड़ा रुककर बोले, "मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

पंडितजी ने तिरस्कार से कहा, "तुम अज्ञानी हो, तुम्हें आज के पर्व का महत्व नहीं पता।" रैदास ने कुछ उत्तर नहीं दिया और चुपचाप अपना काम पूरा कर दिया। जब पंडितजी पैसे देने लगे, तो रैदास बोले, "मुझे मजदूरी नहीं चाहिए। आप बस मेरा एक काम कर दीजिए।"

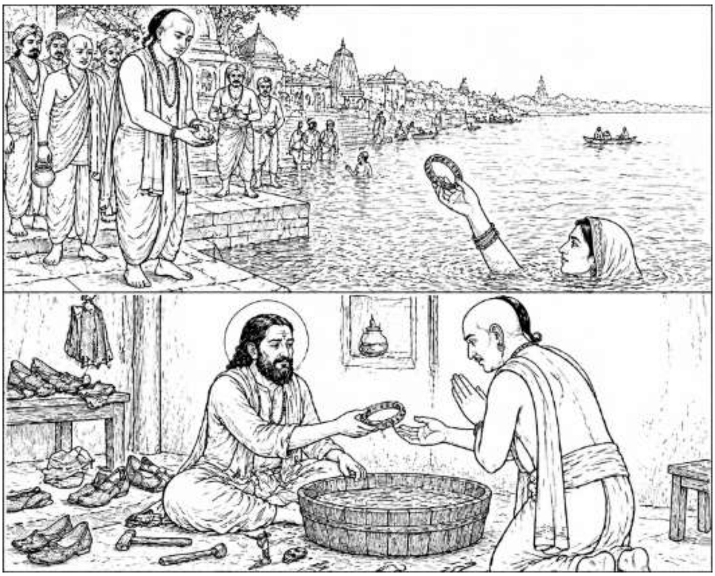

पंडितजी ने पूछा, "वह क्या?" रैदास ने कहा, "ये दो सुपारियाँ मेरी ओर से गंगा जी को भेंट कर दीजिए, लेकिन शर्त यह है कि गंगा जी स्वयं हाथ बढ़ाकर इन्हें लें।" पंडितजी मन ही मन हँसे, लेकिन जल्दी में सुपारियाँ लेकर चल पड़े। गंगा तट पर पहुँचकर उन्होंने स्नान किया, पूजा की। वापस लौटते समय उन्हें रैदास की सुपारियाँ याद आईं। उन्होंने सोचा–चलो, पानी में डाल देते हैं।

पर रैदास की शर्त याद आई–गंगा जी हाथ बढ़ाकर लें तभी देना। उन्होंने मज़ाक में कहा, "हे गंगा माता! ये रैदास की सुपारियाँ हैं, अगर आप हाथ बढ़ाकर लें तो मैं अर्पित करूँ।" तभी जल से एक हाथ निकला और सुपारियाँ लेकर अंदर चला गया। फिर दूसरा हाथ निकला, जिसमें सोने का सुंदर कंगन था। आवाज़ आई, "यह प्रसाद रैदास जी को दे देना। कहना उनकी भेंट स्वीकार है।"

पंडितजी यह देखकर चकित रह गए। रैदास की ऐसी महिमा देख कर उन्हें बहुत जलन भी हुई। लेकिन उनके मन में लालच आ गया। उन्होंने वह कंगन रैदास को देने के बजाय घर ले जाकर अपनी पत्नी को दिखाया। पत्नी ने कहा, “इसे राजा को भेंट कर दो, अच्छा इनाम मिलेगा।”

पंडितजी कंगन लेकर दरबार पहुँचे। राजा कंगन देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें एक लाख रुपये इनाम में दिए। कंगन रानी को दिया गया। रानी कंगन देख कर लट्टू हो गईं। पहन कर बोलीं, “मुझे इसका जोड़ा भी चाहिए।” कई सुनारों को कंगन दिखाया गया, लेकिन सब ने वैसा कंगन बनाने में असमर्थता जताई।

राजा ने पंडित को आदेश दिया, “इसका दूसरा कंगन लाओ, नहीं तो दंड मिलेगा।” डरे हुए पंडित रैदास के पास पहुँचे। उन्होंने सारी बात बताई और कहा, “मुझे बचा लीजिए। यह एक लाख रुपये ले लीजिए, बस दूसरा कंगन दिला दीजिए।”

रैदास ने कहा, “मुझे धन नहीं चाहिए। मैं अपनी कमाई से संतुष्ट हूँ। पर मैं आपकी सहायता अवश्य करूँगा।” उन्होंने अपनी चमड़ा भिगोने वाली कठौती पर कपड़ा ढका और कहा, “मन चंगा तो कठौती में गंगा।”

जब कपड़ा हटाया, तो उसमें वैसा ही दूसरा चमचमाता कंगन रखा था। रैदास ने वह कंगन पंडित को दे दिया। यह देखकर पंडितजी उनके चरणों में गिर पड़े। उन्होंने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी और बहुत आग्रह किया कि रैदास धन स्वीकार कर लें। पर रैदास ने कहा, “मैं अपनी मेहनत से सुखी हूँ, मुझे धन की आवश्यकता नहीं।”

: 286 : मनुज बली नहिं होत है समय होत बलवान, भीलन लूटीं गोपियाँ वहि अर्जुन वहि बान

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। भगवान श्रीकृष्ण भी गोलोकधाम पधार चुके थे। उनके जाने के बाद यादव कुल नष्ट हो गया। द्वारका में विधवाओं और असहाय स्त्रियों के अलावा कुछ नहीं बचा था।

धर्मराज युधिष्ठिर के आदेश पर अर्जुन द्वारका की स्त्रियों की रक्षा के लिए उन्हें हस्तिनापुर लाने के लिए निकले। द्वारका पहुँच कर अर्जुन उन स्त्रियों से मिले और उन से अनुरोध किया कि वे अर्जुन के साथ द्वारका चल कर अपना शेष जीवन सुरक्षा और सम्मान के साथ बिताएं। वे स्त्रियाँ इस के लिए राजी भी हो गईं।

लौटते समय रास्ते में जब वे एक घने जंगल से गुजर रहे थे, तो अचानक कुछ भील लुटेरों ने काफिले पर हमला कर दिया। अर्जुन ने गर्जना करते हुए अपना गांडीव उठाया और बाणों की वर्षा शुरू कर दी। परंतु आश्चर्य! उनके बाण पहले की तरह प्रभावी नहीं रहे। जो हाथ महाभारत के युद्ध में महायोद्धाओं को परास्त कर चुके थे, वे अब इन साधारण लुटेरों के सामने असहाय हो गए।

भीलों ने द्वारका की स्त्रियों को लूट लिया। अर्जुन अपने ही अस्त्र-शस्त्र के साथ बेबस खड़े थे।

अर्जुन ने निराश होकर अपना धनुष नीचे रख दिया और आकाश की ओर देखा। उन्होंने समझ लिया कि यह शक्ति, यह बल, यह विजय - सब कुछ समय का खेल था। समय की गति के साथ कोई बलवान व्यक्ति असहाय हो जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 287 : मियाँ की जूती मियाँ के सिर

एक मियाँ जी ने बड़े शौक से नई जूतियाँ खरीदीं। जूतियाँ इतनी सुंदर थीं कि वे हर किसी को दिखाना चाहते थे। इसी उत्साह में वे उन्हें पहनकर जुम्मे की नमाज़ पढ़ने मस्जिद चले गए।

नमाज़ पढ़कर बाहर निकले तो देखा–जूतियाँ गायब! किसी ने चुरा ली थीं। मियाँ जी ने सोचा, चोर अभी दूर नहीं गया होगा। वे तुरंत नंगे पैर ही तेज़-तेज़ चलते हुए पास के बाज़ार की ओर निकल पड़े। थोड़ी ही दूर पर उन्होंने एक आदमी को अपनी जैसी जूतियाँ पहने देखा। पहचानते ही वे उस पर टूट पड़े–

"अरे! यह तो मेरी जूतियाँ हैं, तुमने मस्जिद से चुराई हैं!" लेकिन वह आदमी दबंग स्वभाव का था। उल्टा मियाँ जी पर ही गरज पड़ा, "क्या बकते हो? मैं तुम्हारी जूतियाँ क्यों चुराऊँगा? बेवजह इल्ज़ाम लगाते हो!"

दोनों के बीच जोरदार बहस होने लगी। धीरे-धीरे भीड़ जमा हो गई। अधिकांश लोग समझ रहे थे कि मियाँ जी सही कह रहे हैं, पर उस दबंग आदमी के डर से कोई आगे बढ़कर कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

इतने में उस आदमी ने गुस्से में अपनी एक जूती उतारी और मियाँ जी के सिर पर तड़ातड़ तीन-चार जूते जमा दिए। बेचारे मियाँ जी अपमानित होकर चुपचाप वहाँ

से चले गए। तभी भीड़ में से किसी ने व्यंग्य में कहा– "लो भाई, यह तो अजीब बात हुई, मियाँ की जूती मियाँ के सिर!"

कहानी जरूर इस प्रकार है लेकिन व्यवहार में इस कहावत का प्रयोग तब करते हैं जब किसी चालाक व्यक्ति को उसी की तरकीब से मात दी जाए।

: 288 : माया तू है सुलक्खनी

बहुत समय पहले की बात है। एक सेठ थे–घर में लक्ष्मी का ऐसा ठाठ-बाट कि रुपयों पैसों की गिनती नहीं। उनका एक ही बेटा था–जगराम। लाड़-प्यार में पला, सुख-सुविधा में बड़ा हुआ। शादी भी खूब संपन्न घर में हुई।

लेकिन सेठ के मरते ही जगराम कुसंगति में पड़ गया। जुआ, नशा, फिजूलखर्ची–एक-एक कर पिता की जोड़ी हुई सारी संपत्ति नष्ट हो गई। वह दिन भी आए जब घर में चूल्हा जलना मुश्किल हो गया। पत्नी ने बहुत समझाया, पर जब हालात असहनीय हो गए, तो वह बच्चों को लेकर अपने पीहर चली गई। बूढ़ी माँ की भी मृत्यु हो गई। जगराम अकेला रह गया–न धन, न मान, न सहारा।

आख़िरकार वह भी पेट की आग बुझाने मजदूरी की तलाश में निकल पड़ा। भटकते-भटकते किस्मत उसे उसी गाँव ले आई जहाँ उसका ससुराल था। फटे हाल, रंग काला, दाढ़ी बढ़ी, देह पर चिथड़े, आवाज बैठी हुई–उसे पहचानना असंभव था। ससुराल वालों ने भी उसे नहीं पहचाना। उन्होंने

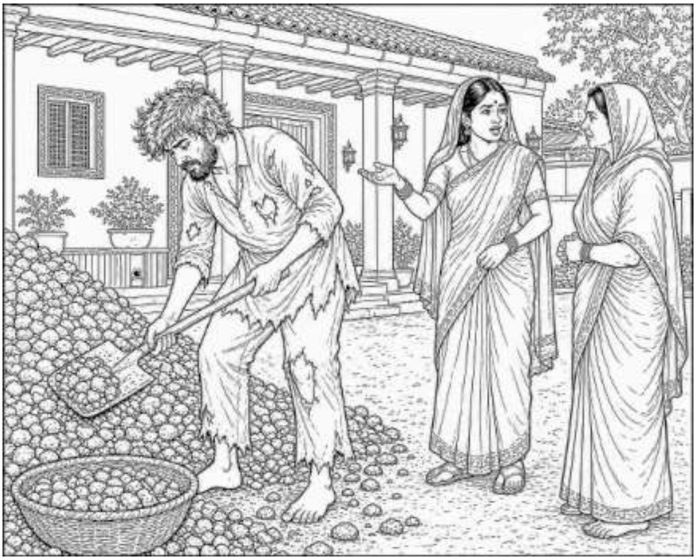

उसे नौकर रख लिया। वह पानी भरता, चूल्हे में लकड़ी और कोयले झोंकता, आँगन बुहारता–चुपचाप सब काम करता। ससुराल वालों ने उस का नाम रख दिया–झोकिया।

एक दिन घर के भीतर जगराम की पत्नी अपनी माँ से कह रही थी, "जगराम ने सब कुछ तो बर्बाद कर दिया, पर मेरी सास ने मुँह दिखाई में जो चार बहुमूल्य लाल दिए थे, वे उसके हाथ नहीं लगे। मैंने उन्हें अमुक जगह छिपा दिया था।"

झोकिया बाहर खड़ा यह सब सुन रहा था। उसका दिल ज़ोर से धड़क उठा। बिना कुछ कहे वह रातों-रात वहाँ से चला गया। अपने उजड़े हुए घर पहुँचा। उस जगह खुदाई की जहाँ लाल छिपाए गए थे। चारों लाल निकाले। उन्हें बेचकर फिर से कारोबार शुरू किया। इस बार अनुभव और लगन के साथ। किस्मत ने भी साथ दिया। थोड़े ही समय में जगराम फिर से मालदार बन गया।

अब वह शानदार कपड़ों में, ठाठ के साथ अपनी पत्नी को लेने ससुराल पहुँचा। इस बार ससुराल वालों ने उसकी बड़ी खातिर की–आदर, सम्मान, आतिथ्य। सब कुछ बदल गया था।

तब जगराम मुस्कराकर बोला, "माया तू है सुलक्खनी, नाम हुआ जगराम, एही आँगन फिर गया, धरा झोकिया नाम।" भाग्य के उतार चढ़ाव से कोई व्यक्ति बहुत गरीब या बहुत अमीर बन जाए तो यह कहावत कही जाती है।

: 289 : माया तेरे तीन नाम – परसा, परसू, परसराम

एक गाँव में एक गरीब व्यक्ति अपनी पत्नी और बेटे के साथ रहता था। मेहनत-मजदूरी करके वह किसी तरह परिवार का पेट पालता था। उसका बेटा परशुराम पढ़ाई में तेज और मेहनती था।

एक दिन वह व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। घरवालों पर मानो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। मजबूरी में पत्नी ने घर-घर काम करके किसी तरह गुज़ारा शुरू किया, पर बेटे की पढ़ाई छूट गई।

परशुराम ने ठान लिया कि वह मेहनत से कुछ काम करेगा। उसकी माँ ने बड़ी मुश्किल से कुछ पैसे जुटाकर चने और बर्तन खरीद दिए। अब वह रोज़ उबले चने बनाती और परशुराम गली-गली घूमकर बेचता। उसकी मीठी बोली और अच्छे व्यवहार के कारण लोग उसे पसंद करने लगे और आवाज देकर बुलाते– "अरे परसा, जरा इधर भी चने देना!"

कुछ समय में उसने थोड़े पैसे जमा कर लिए और एक छोटा खोमचा लगा लिया। माँ-बेटा मिलकर चाट बेचने लगे। अब लोग उसे थोड़ा सम्मान से कहने लगे, "परसू भैया, एक टिक्की बना देना।"

मेहनत, लगन और ईमानदारी से काम बढ़ता गया। जल्द ही उन्होंने एक छोटी दुकान खोल ली और मिठाई बनाना भी शुरू कर दिया। व्यापार खूब चल निकला और वे गाँव के प्रतिष्ठित लोगों में गिने जाने लगे।

अब वही लोग उसे आदर से बुलाते– "भैया परसराम, एक किलो मिठाई देना।" कहावत का अर्थ है कि धन (माया) के साथ व्यक्ति का सम्मान और संबोधन भी बदल जाता है–गरीबी में तिरस्कारपूर्ण, थोड़ी सम्पन्नता में साधारण, और धनवान होने पर आदरपूर्ण।

: 290 : मार के आगे भूत भी भागते हैं

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक किसान रहता था। बेचारा सीधा-सादा, मेहनती आदमी—पर उसकी पत्नी...बस पूछिए मत! वह बड़ी लड़ाका थी। उसका रोज़ का नियम था—किसान को आँगन में बिठाना और इक्कीस जूते लगाना। ना छुट्टी, ना माफी। किसान कब तक सहता! एक दिन वह तंग आकर घर छोड़कर पास के नगर को भाग गया।

लेकिन औरत भी कम ज़िद्दी नहीं थी। जिस जगह वह पति को बैठाकर जूते मारा करती थी, अब उसी जगह उसके नाम से जूते मारने लगी, "ले जगराम! आज के जूते!" उसे क्या पता था कि उस जगह के नीचे एक हँडिया गड़ी हुई है, जिसमें मंत्र-बल से एक भूत बंद किया गया है।

अब रोज़-रोज़ जूते उसी भूत के सिर पर पड़ने लगे। भूत बेचैन हो उठा—पर करे तो क्या करे! आख़िर एक दिन जूते की मार से हँडिया फूट गई। भूत उसमें से निकलते ही बेतहाशा भागा, और उसी नगर जा पहुँचा जहाँ किसान रहता था।

एक दिन भूत की नज़र किसान पर पड़ी। वह बोला, "जूत भाई! राम-राम।" किसान चौंका, "तुम मुझे कैसे जानते हो?" भूत बोला, "हम दोनों ने एक ही औरत के हाथ से जूते खाए हैं। इसलिए हम जूत भाई हैं।"

किसान ने दुखड़ा रोया, "भाई, यहाँ आए कई दिन हो गए, पर कोई ढंग की कमाई नहीं हो रही, पेट भरने की भी जुगाड़ नहीं हो पा रही।"

भूत बोला, "इसका उपाय मैं कर देता हूँ। मैं अमुक सेठ के बेटे में घुस जाऊँगा। कोई मुझे निकाल नहीं पाएगा। जब तुम आओगे, मैं तुरंत निकल जाऊँगा। इसके बदले सेठ से मोटी रकम वसूल लेना।" फिर सख़्ती से बोला, "लेकिन याद रखना—अगर मैं दोबारा किसी के शरीर में घुसूँ तो वहाँ भूलकर भी मत आना, नहीं तो जान से मार डालूँगा।"

किसान ने हामी भर दी। योजना के अनुसार सब हुआ। सेठ का बेटा ठीक हुआ, किसान को मुँह माँगी रकम मिल गई।

कुछ समय बाद भूत ने राजा के पुत्र के शरीर में प्रवेश कर लिया। अब तो हाहाकार मच गया। राजा को पता चला कि अमुक किसान ने सेठ के बेटे का भूत भगाया था। राजा ने तुरंत किसान को बुलवा भेजा।

अब किसान फँस गया—न जाए तो राजा मारे, जाए तो भूत मारे। सेठ के बेटे के शरीर से भूत निकालने के बाद वह जितना खुश था वह सारी ख़ुशी काफूर हो चुकी थी। उस के मन में आया कि लौट कर अपने गाँव चला जाए, लेकिन उस स्त्री का आतंक इतना हावी था कि वह यह हिम्मत भी नहीं कर पाया।

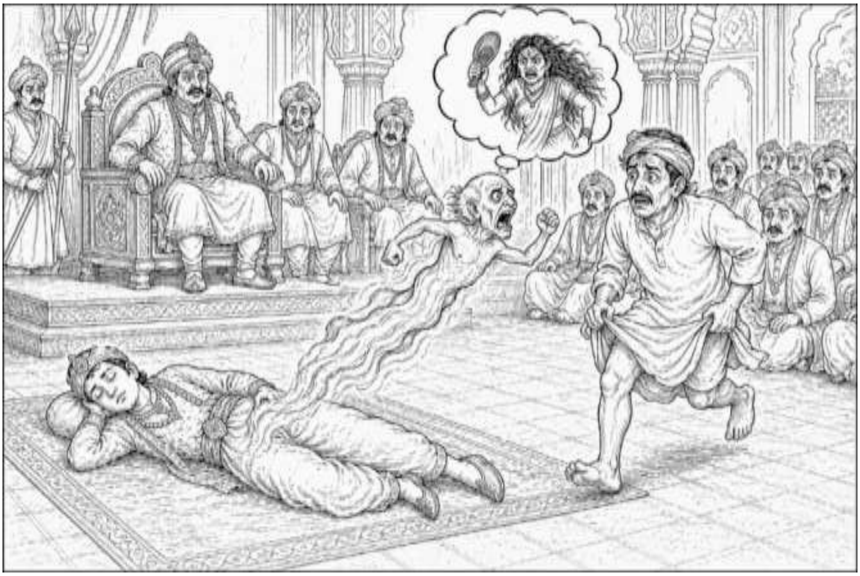

बहुत सोच-विचार के बाद उसने एक अक्ल की युक्ति निकाली। वह अपनी धोती ऊपर कसकर बाँध ली, जूते हाथ में पकड़े, ज़ोर से भागता हुआ राजकुमार के पास पहुँचा और चिल्लाते हुए बोला, "भूत भाई! रांड आई...(यानी वह जूते मारने वाली औरत यहाँ भी आ गई!)

इतना सुनते ही भूत के तो होश फ़ाख़्ता हो गए। जहाँ जूते की मार याद आई, वहीं वह राजकुमार के शरीर से तुरंत निकलकर भाग खड़ा हुआ। राजकुमार ठीक हो गया, राजा खुश हो गया, और किसान को भरपूर इनाम दिया।

इस कहावत पर एक और कहानी भी कही जाती है -

एक नगर में एक मकान बहुत बदनाम था। जो भी वहाँ किराए पर रहता, कुछ ही दिनों में उसके परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती। लोग कहते थे कि उस मकान में भूत रहता है, इसलिए कोई वहाँ रहने को तैयार नहीं होता था।

एक दिन एक निडर आदमी ने वह मकान किराए पर ले लिया। कुछ दिनों बाद भूत आया और उसे डराकर मकान खाली करने को कहा। आदमी ने डरने के बजाय उससे कहा, "देखो भूत भाई! मकान तो मैं छोड़ दूंगा पर एक बात बताओ कि आप कहाँ से आते हो?" भूत ने बताया कि वह यमराज के यहाँ से आता है जहाँ लोगों की उम्र लिखी जाती है।

आदमी ने चालाकी से अपनी उम्र जाननी चाही। अगले दिन भूत ने आकर बताया कि उसकी उम्र 85 वर्ष है। तब उस आदमी ने भूत को थोड़ा मक्खन लगाया और कहा, "वहाँ आप की इतनी जान पहचान है तो मेरी उम्र पाँच साल बढ़वा दो। दो दिन

बाद भूत ने लौटकर बताया कि यमराज के अनुसार उम्र न एक पल बढ़ सकती है, न घट सकती है।

यह सुनकर आदमी ने डंडा उठा लिया और भूत को डाँटते हुए कहा–"जब यमराज भी मेरी उम्र घटा बढ़ा नहीं सकते, तो तू मुझे कैसे मार सकता है? चल भाग यहाँ से।" यह सुनते ही भूत डरकर भाग गया और फिर कभी उस मकान में नहीं आया।

इस कहावत का एक पक्ष और भी है। कुछ लोग अपनी बात मनवाने के लिए अपने ऊपर भूत आने का नाटक करते हैं और घर वालों को परेशान करते हैं। सयाने लोग इस बात को ताड़ कर भूत की पिटाई के नाम पर जब उन की पिटाई करते हैं तो वे सारा नाटक भूल जाते हैं। इस सन्दर्भ में भी यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 291 : मियाँ की दाढ़ी वाहवाही में गई

किसी गाँव में एक मौलवी साहब रहा करते थे। लड़कों को पढ़ाना उनका काम था और गाँव में उनकी अच्छी-खासी इज़्ज़त भी थी। एक बार उन्हें किसी काम से कुछ दिनों के लिए घर जाना पड़ा। जाते समय उन्होंने अपनी जगह एक दूसरे मौलवी को रखवा दिया।

दिन बीते...जब वे लौटकर आए, तो देखा कि गाँव का माहौल ही बदल गया है। नया मौलवी बड़ी चालाकी से गाँव वालों के दिलों पर राज करने लगा था। लोग पुराने मौलवी से न बात करते, न पूछते। पुराने मौलवी को यह देख बहुत बुरा लगा। पर उन्होंने सोचा, "सीधी टक्कर से कुछ हासिल नहीं होगा, अक़्ल से काम लेना होगा।"

वे वहीं रहने लगे और मौका देखकर नए मौलवी की तारीफ़ों के पुल बाँधने लगे। "वाह! क्या इल्म है आपका!" "आप जैसा कोई नहीं!" तारीफ़ सुन-सुनकर नया मौलवी फूलकर कुप्पा होने लगा।

एक दिन जुमे की नमाज़ थी। गाँव भर के मुसलमान इकट्ठा हुए थे। पुराने मौलवी ने सबके सामने नए मौलवी की तारीफ़ शुरू की, बोले, "हुज़ूर! आपकी दाढ़ी का जिसे एक बाल मिल गया, वह मालामाल हो गया। बीमार ठीक हो गए, झगड़े मिट गए, दुश्मन दोस्त बन गए!"

इतनी वाहवाही सुनकर नया मौलवी इतराने लगा। तभी पुराने मौलवी ने बड़ी मासूमियत से कहा–"हुज़ूर, अगर मुमकिन हो तो मुझे भी अपनी दाढ़ी का एक बाल दे दीजिए।" नया मौलवी तारीफ़ के नशे में था। उसने बिना सोचे अपनी दाढ़ी से एक बाल नोचकर दे दिया।

बस फिर क्या था! यह देख एक आदमी आगे बढ़ा, "हुज़ूर, मुझे भी एक बाल दीजिए।" फिर दूसरा, फिर तीसरा... देखते-देखते लोगों की भीड़ उन पर टूट पड़ी। कोई इधर से, कोई उधर से– एक-एक बाल नोचने लगे।

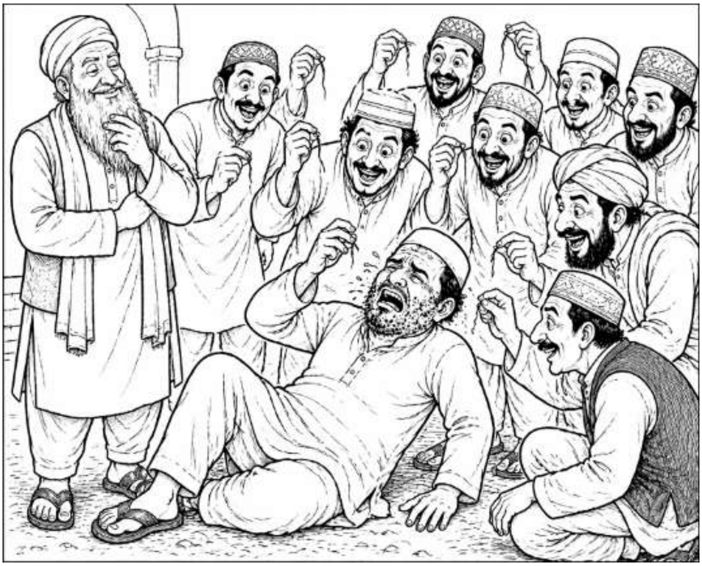

नया मौलवी घबरा गया। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। कुछ ही देर में उसकी पूरी दाढ़ी साफ़ हो चुकी थी। उसी रात बेचारा मौलवी चुपचाप गाँव छोड़कर भाग गया। लोगों की वाहवाही लूटने के चक्कर में कोई अपना बहुत बड़ा नुकसान कर बैठे तो यह कहावत कही जाती है।

: 292 : मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी

किसी गाँव में एक जाट और एक मियाँ में गहरी दोस्ती थी। दोनों हर सुख-दुख में साथ खड़े रहते।

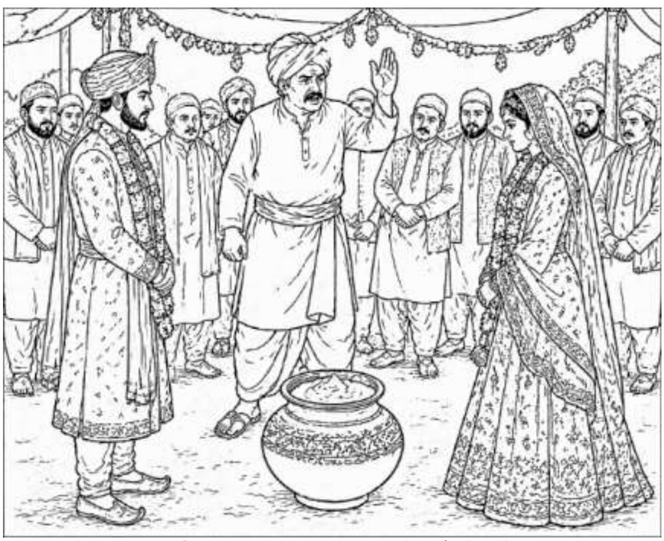

एक दिन मियाँ की शादी थी। शादी की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं– दूल्हा तैयार, दुल्हन तैयार, बारात भी आ चुकी थी। लेकिन ऐन मौके पर निकाह पढ़ाने वाला काजी नाराज होकर नहीं आया।

मियाँ और उसके परिवारवाले परेशान हो गए। "निकाह बिना काजी के कैसे होगा?" सब यही सोचने लगे। तभी वहाँ खड़े जाट ने हँसते हुए कहा, "इसमें कौन-सी बड़ी बात है? निकाह मैं करवा देता हूँ!"

जाट ने मियाँ और उसकी दुल्हन को पास-पास बिठाया। फिर मजाकिया अंदाज़ में बोल पड़ा, "मियाँ बीबी राजी, के करैगो काजी! हांडी में दही, निकाह होवै सही!"

सभी लोग पहले तो हैरान रह गए, लेकिन फिर ठहाके मारकर हँस पड़े। बात में सच्चाई भी थी—जब दूल्हा-दुल्हन खुद ही राजी हैं, तो काजी की नाराजगी से क्या फर्क पड़ता है! कहावत का अर्थ है कि जहाँ सहमति हो, वहाँ बाहरी हस्तक्षेप का कोई अर्थ नहीं। कभी कभी हास्य-बुद्धि और सहजता से भी बड़ी से बड़ी समस्या का हल निकाला जा सकता है।

: 293 : मुरगे की एक ही टांग थी

एक दिन एक बावर्ची अपने मालिक के लिए शाही दावत तैयार कर रहा था। मेनू में एक स्वादिष्ट मुर्गे की डिश भी थी। वह खुद को रोक नहीं पाया और मुर्गे की एक टांग चुपचाप खा गया। जब वह पकवान लेकर मालिक के सामने पहुँचा, तो मालिक ने प्लेट को गौर से देखा और चौंककर पूछा—"अरे! इस मुर्गे की सिर्फ एक ही टांग क्यों है?"

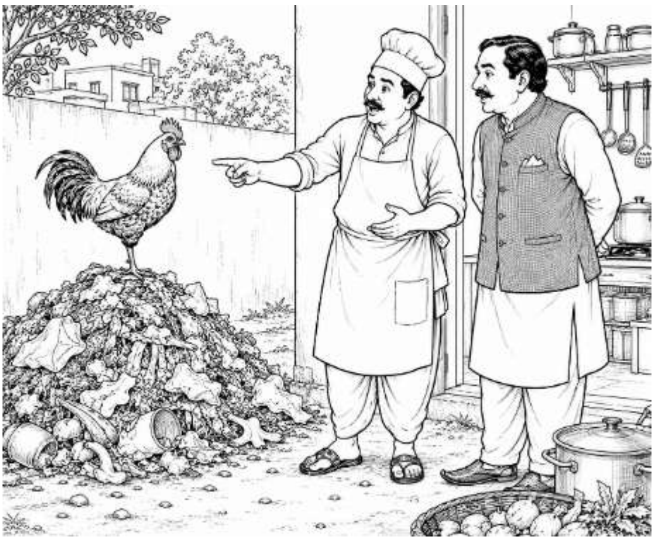

बावर्ची पूरी मासूमियत के साथ बोला, "हुजूर, कुछ मुर्गों की बस एक ही टांग होती है!"

इसके कुछ दिन बाद की बात है। संयोगवश एक दिन एक मुर्गा कूड़े के ढेर पर एक टांग से खड़ा था। बावर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा - हुजूर, एक टांग के मुर्गे को देखिए। मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर जमीन पर रख दिया। तो उसने बावर्ची से कहा - देख, इसके दोनों पैर हैं कि एक। इस पर उसने जवाब दिया - हुजूर, ताली बजाने से दो पैर दीख पड़े। अगर उस समय भी आपने ताली बजाई होती, तो दूसरा पैर भी सामने आ जाता।

जब कोई आदमी सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे तब यह कहावत कही जाती है।

: 294 : मूरख का माल खुशामद से खाइए

बहुत समय पहले की बात है। एक कौवे कहीं से रोटी का बड़ा-सा टुकड़ा मिल गया। कौवा बड़ा खुश हुआ। उसने रोटी को अपनी चोंच में दबाया और उड़कर एक ऊँचे पेड़ की डाल पर जा बैठा।

उसी रास्ते से एक लोमड़ी गुजर रही थी। उसकी नज़र जैसे ही कौवे की चोंच में रोटी के टुकड़े पर पड़ी, उसके मुँह में पानी आ गया। पर लोमड़ी जानती थी—"सीधे-सीधे छीनना उस के बस का नहीं था। सो उस ने अक्ल से काम लिया।

वह पेड़ के नीचे आकर बड़ी मीठी आवाज़ में बोली—"कौवे भाई! आप तो बड़े मधुर गायक हैं। बहुत दिनों से आपका गाना नहीं सुना। दिल तरस गया है, आज तो ज़रा एक बढ़िया-सा गीत सुना ही दीजिए।"

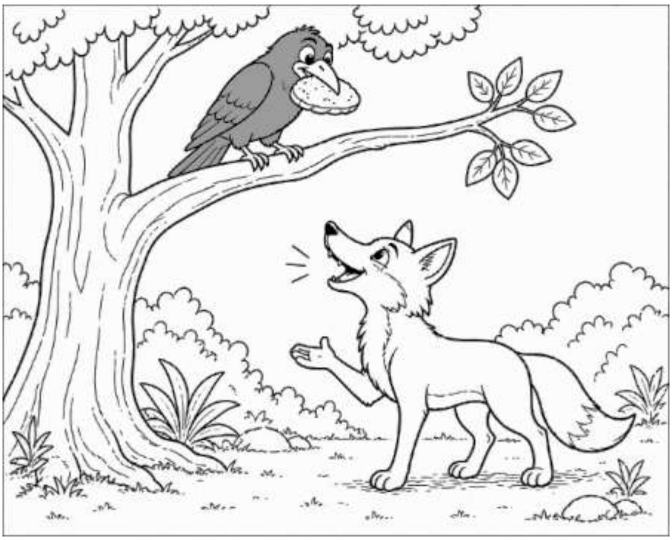

कौवे ने यह सुना तो सीना चौड़ा हो गया। तारीफ़ चीज़ ही ऐसी है कि बड़े बड़े लोग इस में फंस जाते हैं। जैसे ही उसने गाने के लिए मुँह खोला—रोटी का टुकड़ा सीधे नीचे आ गिरा। इससे पहले कि कौवा कुछ समझ पाता, लोमड़ी ने रोटी झपटी और ख़ुशी से सर हिलाती हुई भाग गई।

: 295 : मूरख मिले मौन हो जईयो, ऊसर बीज न बईयो जी

जंगल में एक दिन गधा और बाघ आपस में बहस करने लगे। गधा जोर-जोर से चिल्ला रहा था, "घास नीली होती है!" बाघ ने असहमति में सिर हिलाया और कहा, "नहीं, घास तो हरी होती है!" गधा अड़ गया, और दोनों के बीच तकरार बढ़ने लगी, मारपीट की नौबत आ गई तो मामला जंगल के राजा शेर के पास पहुँचा।

गधा शेर के पास जाकर जोरों से बोला, "महाराज! यह बाघ बेवजह मुझसे झगड़ रहा है। मैं कह रहा हूँ कि घास नीली होती है, मगर यह बार-बार हरी बता रहा है।

कृपया इसे सजा दी जाए!" बाघ ने भी हाथ जोड़कर विनती की, "महाराज, घास तो हरी ही होती है। आप ही न्याय कीजिए!"

शेर ने थोड़ी देर सोचा और फिर गुस्से से गरजते हुए फरमान सुना दिया,

"बाघ को एक हफ्ते की जेल होगी!" बाघ को समझ नहीं आया कि यह क्या हुआ! वह शेर के पास गया और धीरे से पूछा, "महाराज! मैंने तो सच ही कहा था। घास हरी होती है, फिर मुझे सजा क्यों?"

शेर मुस्कुराया और कहा, "बाघ, घास हरी ही होती है, इसमें कोई शक नहीं। तुम्हें सजा इसीलिए मिली है क्योंकि तुमने एक मूर्ख गधे के साथ बहस करने की गलती की।" कहावत का अर्थ है कि मूर्ख व्यक्ति से तर्क करना अपना ही समय और ऊर्जा बर्बाद करना है। कोई मूर्ख व्यक्ति अकारण ही बहस कर रहा हो तो समझदार लोग यह कहावत बोल कर चुप हो जाते हैं।

: 296 : मेरा बैल कानून नहीं पढ़ा है

एक दिन एक वकील और एक तेली (जो बैलों की मदद से कोल्हू चलाता था) आपस में बातें कर रहे थे। वकील ने तेली से पूछा–"भाई, तुम लोग अपने बैल के गले में घंटी क्यों बांधते हो?"

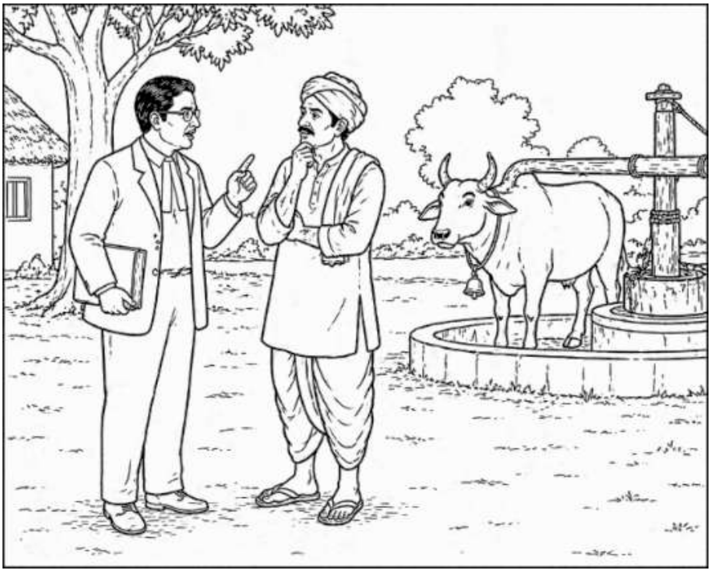

तेली मुस्कुराया और बोला–"जब हम बैल के पास नहीं होते, तो उसकी घंटी की आवाज़ से हमें पता चलता है कि वह लगातार घूम रहा है और कोल्हू चला रहा है। अगर घंटी बज रही है, तो मतलब बैल काम कर रहा है।"

वकील ने अपनी आदत के अनुसार एक और सवाल दाग दिया–"अच्छा, अगर तुम्हारा बैल खड़ा-खड़ा ही सिर हिलाने लगे और घंटी बजाता रहे, तो फिर तुम कैसे जानोगे कि वह सच में काम कर रहा है या सिर्फ धोखा दे रहा है?"

तेली यह सुनकर ज़ोर से हंसा और मज़ाकिया अंदाज़ में बोला, "साहब, मेरा बैल कानून नहीं पढ़ा है!" ज्यादा तर्क वितर्क कर के अपनी विद्वता दिखाने वाले लोगों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 297 : मेरी एक आंख फूटे कोई गम नहीं, पडोसी की दोनों फूटनी चाहिए

एक गांव में एक व्यक्ति रहता था जिसका मन जलन और द्वेष से भरा हुआ था। खासकर अपने पड़ोसी से उसे गहरी ईर्ष्या थी। वह दिन-रात यही सोचता कि कैसे पड़ोसी को नुकसान पहुँचे। जब कोई उपाय न सूझा तो उसने ठान लिया कि वह घोर तपस्या करेगा और स्वयं भगवान को प्रसन्न करके अपने पड़ोसी का विनाश करवाएगा।

वह जंगल में चला गया और कठोर तपस्या करने लगा। वर्षों बाद उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हुए और बोले, "वत्स, मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ। वर माँगो, पर ध्यान रहे, जो भी वरदान तुम्हें मिलगा, तुम्हारे पड़ोसी को उसका दुगुना मिलेगा।"

वह व्यक्ति यह सुनकर उलझन में पड़ गया। सोच में पड़ गया कि क्या माँगे! यदि धन माँगेगा तो पड़ोसी को उससे दोगुना मिल जाएगा। यह सोचते-सोचते उसका चेहरा कसैला हो गया। अंततः उसके मन में एक दुष्ट विचार आया। उसने भगवान से कहा, "हे प्रभु, मेरी एक आँख फोड़ दो!"

भगवान उसकी ईर्ष्या पर मुस्कुराए और बोले, "तथास्तु!" क्षणभर में उस की एक आँख जाती रही। लेकिन तभी उसके पड़ोसी की दोनों आँखें चली गईं। वह अंधा हो गया!

कुछ ही दिनों में गाँववालों को पड़ोसी पर दया आ गई। वे सब उसकी मदद को आगे आए। कोई उसे भोजन देता, कोई खेत संभालने में मदद करता। धीरे-धीरे उस की हालत पहले से भी बेहतर हो गई। उधर, दुष्ट व्यक्ति अपनी आधी दृष्टि और पूरी ईर्ष्या के साथ तिल-तिल जलता रहा। दूसरे को नुकसान पहुंचाने के लिए खुद भी नुकसान उठाने को तैयार रहने वाले ईर्ष्या में अंधे व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 298 : मोची- मोची लड़ाई होय, फाटे राजा कै जीन

एक राजा के यहाँ घोड़े की जीन की मरम्मत करवानी थी। इसके लिए एक मोची को बुलाया गया। उसे आने में कुछ देर हो गई। तब तक दूसरे मोची को बुला लिया गया। संयोग से, कुछ ही देर बाद पहला मोची भी वहाँ पहुँच गया। अब दोनों अपने-आपको काम का असली हकदार बताने लगे–पहला कहे, “मैं मरम्मत करूँगा”, दूसरा

कहे, "नहीं, यह काम मेरा है।" बात बढ़ते-बढ़ते झगड़े में बदल गई। दोनों जीन को अपनी ओर खींचने लगे। परिणाम यह हुआ कि जिसे ठीक करना था, वही जीन और ज्यादा फट गई।

जब यह बात राजा के रिसालदार को पता चली, तो उसने दोनों मोचियों को खूब डाँटा-फटकारा और दंड भी दिया। अंत में जीन तो उनसे ठीक करवाई ही, लेकिन बिना कोई मजदूरी दिए दोनों को वहाँ से भगा दिया।

जब दो लोगों की लड़ाई में किसी तीसरे का नुकसान हो तो यह कहावत कही जाती है.

: 299 : यही तो बीमारी थी

एक गाँव में एक चतुर चालाक बनिया रहता था। एक बार पूरे गाँव में भयंकर अकाल पड़ गया, खाने-पीने की चीज़ें मिलना मुश्किल हो गया एवं खेती और व्यापार ठप पड़ गया।

बनिए को समझ नहीं आ रहा था कि इस मुश्किल समय में क्या करे। तभी उसे एक तरकीब सूझी। उसने सुना था कि पास के शहर में एक बहुत बड़ा सेठ रहता है, जो विधुर था और उसे फिर से शादी करना चाह रहा था। वह शहर जाकर सेठ से मिला और बोला, "सेठजी, मेरी लड़की बड़े संस्कारों वाली है। अगर आप चाहें तो मैं आपकी शादी उससे करा सकता हूँ।"

सेठ को बात जँच गई। शादी तय हो गई और बनिए ने उससे शादी के लिए जरूरी खर्चों के वास्ते पाँच हजार रुपये भी ऐंठ लिए। शादी की तिथि निश्चित हो गई, और बारात के गाँव आने का दिन भी तय हो गया।

अब बनिए के सामने समस्या यह थी कि उसकी तो कोई लड़की थी ही नहीं! उसने सोचा–"अब जब इतना बड़ा झूठ बोल ही दिया है, तो इसे निभाने के लिए भी कुछ करना पड़ेगा।"

शादी के दिन उसने अपने घर पर एक ऊँचा झंडा लगवा दिया, जिससे बारात को दूर से ही उसका घर दिख जाए। सेठ अपनी बारात लेकर धूमधाम से गाँव पहुँचा और झंडे को देखकर उसी ओर बढ़ चला। बनिए और उसके घरवालों ने एक अनोखी चाल चली। उन्होंने गाँव के बाहर हाल ही में मरी एक बूढ़ी कुतिया की अर्थी तैयार कर दी। फिर चार लोग उसे कंधे पर उठाकर रोने-धोने का नाटक करने लगे। जब बारात वाले नज़दीक पहुँचे तो बनिया और उसके घरवाले विलाप करने लगे, "हाय! हमारी बेटी! शादी से ठीक पहले हमारी बिटिया हमें छोड़कर चली गई!"

यह सुनकर बारातियों के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। सेठ भी सकते में आ गया। उसे अपनी किस्मत पर रोना आ रहा था।

लेकिन तभी एक अजीब बात हुई। जल्दी में बनी अर्थी से कुतिया की पूँछ नीचे की ओर लटक गई थी। बारात में से किसी ने यह देख लिया और पूछा, "अरे, ये क्या है? बनिए ने प्रत्युत्पन्न मति का परिचय देते हुए तुरंत गंभीर स्वर में कहा, "यही तो बीमारी थी! कल अचानक हमारी बेटी की पूँछ निकल आई थी, और उसी के कारण उसकी मौत हो गई!"

सेठ और बाराती यह सुनकर अवाक रह गए। सेठ ने गहरी सांस ली, अपने लोगों को इशारा किया और चुपचाप वापस शहर लौट गया।

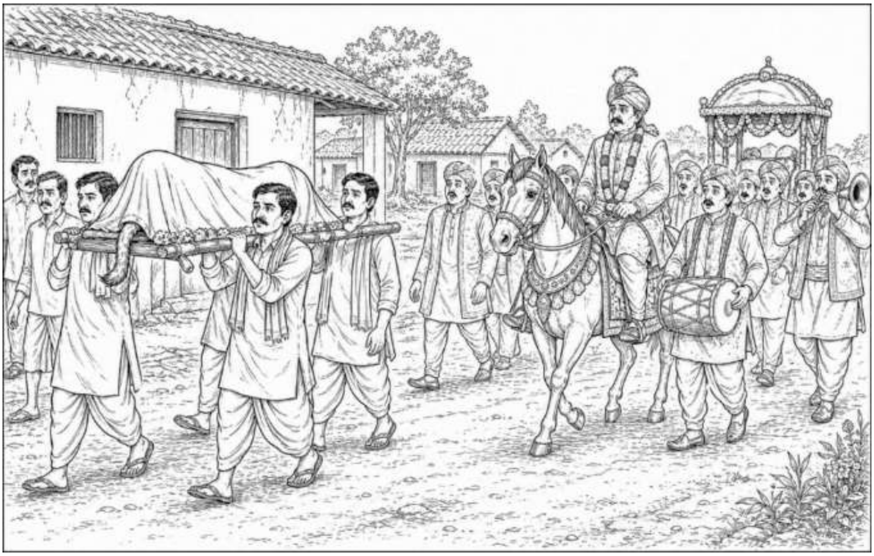

बनिए ने अपनी चतुराई से न सिर्फ अकाल के समय में पाँच हजार रुपये कमा लिए, बल्कि बारातियों को ऐसा उलझाया कि वे बिना हंगामा किए वापस चले गए। कोई व्यक्ति अचानक उत्पन्न होने वाली विपरीत परिस्थिति को बुद्धिमत्ता से अपने अनुकूल बना ले तो यह कहावत कही जाती है।

: 300 : या अल्लाह गौड़ों में भी कौन से गौड़

एक मुसलमान था जो की भेस बदलने और बातें बनाने में बहुत माहिर था। एक बार उसने सोचा कि हिंदुओं में ब्राह्मण लोग श्राद्ध पक्ष के दिनों में खूब माल उड़ाते हैं। ऐसा क्यों ना करूं कि मैं भी एक ब्राह्मण का वेश धर लूं और चुपचाप ब्राह्मणों के साथ मिलकर माल उडाऊं।

उसने सेकंड हैंड किताबें बेचने वाली किसी नुक्कड़ छाप दुकान से एक संस्कृत के श्लोक की किताब खरीदी और उसमें से कुछ श्लोक उल्टे सीधे याद कर लिए जिससे किसी के पूछने पर सुना सके, और एक यह बात याद कर ली कि ब्राह्मणों में एक गोत्र होता है गौड़।

अब वह ब्राह्मणों के साथ दावतों में जाकर माल उड़ाने लगा। एक दिन किसी ब्राह्मण को उसके रंग-ढंग पर कुछ शक हुआ तो उसने पूछा, “कौन जात हो?’ उसने शान से कहा, “ब्राह्मण हूँ, और क्या?” “कौन से ब्राह्मण हो?” पूछने वाले ने फिर पूछा। वह फिर बड़ी शान से बोला, “गौड़ ब्राह्मण हूं।” ब्राह्मण ने फिर से पूछा, “गौड़ों में कौन से गौड़ हो?” अब तो वह घबरा गया। उसे यह नहीं मालूम था की गौड़ गोत्र में भी कई गोत्र होते हैं। उसके मुंह से निकल गया, “या अल्लाह गौड़ों में भी कौन से गौड़।“

इतना सुना था कि सभी ब्राह्मण उसकी असलियत समझ गए और उसे मारपीट कर वहां से भगा दिया। कहावत का अर्थ है कि कपट और धोखाधड़ी बहुत लम्बे समय तक नहीं चल पाती है।

ब्राह्मणों के बहुत से गोत्रों, उनकी शाखाओं और उपशाखाओं का मजाक उड़ाने के लिए भी लोग यह कहावत बोलते हैं।

: 301 : रंगा सियार

एक बार एक सियार भोजन की तलाश में शहर की ओर चला गया। वहाँ कुत्तों ने उसे घेर लिया और वह अपनी जान बचाने के लिए भागता हुआ एक रंगरेज की दुकान में जा घुसा। भागते-भागते वह एक बड़े ड्रम में गिर पड़ा, जिसमें नीला रंग भरा हुआ था। किसी तरह बाहर निकला तो उसका पूरा शरीर नीले रंग में रंग चुका था।

जंगल में लौटने पर सभी जानवर उसे देखकर डर गए। उन्होंने ऐसा अजीब रंग पहले कभी नहीं देखा था। सियार ने मौका भाँप लिया। उसने गंभीर स्वर में कहा, “डरो मत! मुझे स्वयं भगवान ने भेजा है। मैं तुम्हारा राजा हूँ। अब से तुम सब मेरी आज्ञा मानो।” उसकी विचित्र शक्ल देखकर सभी जानवर विश्वास कर बैठे और उसे अपना राजा मान लिया।

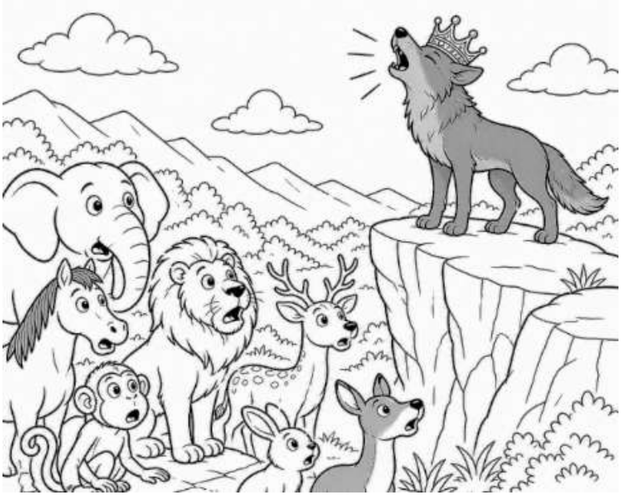

अब सियार बड़े ठाठ से रहने लगा। उसने शेर, बाघ और अन्य

जानवरों को अपनी सेवा में लगा दिया। लेकिन उसने एक चालाकी की, उसने बाकी सियारों को अपने पास आने से मना कर दिया, ताकि उसकी असलियत न खुल जाए।

एक दिन रात के समय दूर कहीं सियारों का झुंड हुआँ-हुआँ करने लगा। यह सुनकर रंगा सियार खुद को रोक नहीं पाया और अपनी असली आदत के अनुसार जोर से हुआँ-हुआँ करने लगा।

बस, उसी क्षण उसकी पोल खुल गई। शेर और अन्य जानवर समझ गए कि यह कोई दिव्य प्राणी नहीं, बल्कि एक साधारण सियार है जो छल कर रहा था। क्रोधित होकर उन्होंने उस पर हमला कर दिया और उसे मार डाला। कहावत का अर्थ है कि छल कपट बहुत दिन तक नहीं चलता, कभी न कभी खुल ही जाता है।

: 302 : राजा के दरबार में रोता जाए वो भी मार खाए, हँसता जाए वो भी मारा जाए

(राजा के हुआ बेटा, राजा का मरा बाप, न हंसते बने, न रोते बने)

बहुत समय पहले की बात है। एक समृद्ध राज्य का प्रतापी राजा था। वह न्यायप्रिय तो था, लेकिन गुस्से में आने पर बड़ा कठोर हो जाता था। एक दिन राज्य में दो बड़ी घटनाएँ एक साथ हो गईं—राजा की वृद्ध माँ का निधन हो गया और उसी दिन राजमहल में उनके घर उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र का जन्म हुआ।

यह एक विचित्र स्थिति थी। पूरे महल और राज्य में असमंजस की स्थिति थी—कोई शोक मनाए या उत्सव मनाए? राजा स्वयं भी गहरे द्वंद्व में था। उसकी माँ चली गई थी, जिससे वह बेहद दुखी था, लेकिन उसी दिन पुत्र-जन्म की खुशी भी थी, जिससे वह प्रसन्न भी था। ऐसे में राजा का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया।

राजमहल में जो व्यक्ति राजा के सामने रोता हुआ आता, उसे राजा क्रोधित होकर दंड देता और कहता, "क्या मेरे पुत्र-जन्म की खुशी तुम्हें नहीं दिखती?" जो व्यक्ति हंसता हुआ आता, उसे भी दंडित करता और गरजता, "मेरी माँ के जाने का तुम्हें कोई दुःख नहीं?"

तभी राज्य के सबसे चतुर भाट (दरबारी कवि) ने एक तरकीब निकाली। उसने अपने कपड़े अस्त-व्यस्त कर लिए, बाल बिखेर लिए, चेहरे पर एक अजीब-सी विचित्र हंसी और हल्का-सा रुदन का भाव बना लिया। वह आधा रोने जैसा, आधा हंसने जैसा दिखने लगा।

इस विचित्र भाव-भंगिमा में वह राजा के दरबार में पहुँचा। राजा ने उसकी ऐसी अवस्था देखकर पूछा, "ये तुम कैसी हालत में आए हो? तुम्हें हो क्या गया है?"

भाट ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, सुना है कि आपकी माता का स्वर्गवास हो गया और उसी दिन आपके घर में पुत्र-जन्म भी हुआ। अब यह सोचकर मेरी यह दशा हो गई है कि मैं हँसू या रोऊँ?"

राजा पहले तो कुछ पल तक उसे देखता रहा, फिर जोर से ठहाका लगाया। भाट की समझदारी और समयानुकूल बुद्धिमत्ता देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे भरपूर इनाम देकर सम्मानित किया।

: 303 : राजा नल पर विपदा पड़ी, भूनी मछली जल में तिरी

प्राचीन काल की बात है। निषध देश के प्रतापी और धर्मपरायण राजा नल की कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी। उनकी वीरता, सत्यनिष्ठा और नीतिपूर्ण शासन की मिसाल दी जाती थी। उनकी पत्नी, महारानी दमयंती, सौंदर्य और सतीत्व की मूर्ति थीं। दोनों का जीवन सुखमय था। परंतु एक दिन दुर्भाग्य ने राजा नल का द्वार खटखटाया। उन्हें जुए की ऐसी लत लगी कि वे अपना राजपाट, धन-दौलत, और यहाँ तक कि अपने वस्त्र तक हार गए। राजमहल से निकाल दिए गए, वे अपनी प्रिय रानी दमयंती के साथ वन में भटकने लगे।

जंगल का जीवन कठिन था। भोजन के बिना दिन बीतने लगे। राजा नल, जो कभी स्वर्ण थाल में परोसे गए दिव्य व्यंजन खाते थे, अब जंगल में फल-फूल खोजने को मजबूर थे। कई दिनों तक कुछ भी न मिलने के कारण भूख से व्याकुल हो गए।

इसी प्रकार भटकते-भटकते उन्हें एक तालाब दिखा, जिसमें मछलियाँ तैर रही थीं। भूख से बेहाल राजा नल ने झटपट एक मछली पकड़ ली और लकड़ियाँ इकट्ठा करके आग जलाई। जैसे-तैसे मछली को भूना, लेकिन जंगल की आग में वह राख से भर गई। मछली को धोने के लिए वह तालाब के पास गए। जैसे ही उन्होंने मछली को पानी में डाला, एक चमत्कार हो गया!

मछली, जो कुछ ही क्षण पहले भूनी जा चुकी थी, जीवित हो गई और पानी में तेजी से तैरकर दूर चली गई! राजा नल और दमयंती यह देखकर अवाक रह गए।

कहावत का अर्थ है कि विपत्ति के दिनों में सभी कुछ विपरीत होने लगता है।

: 304 : रुपया देख के रुपया आवेला

एक गाँव में भोला नाम का एक सीधा-सादा लेकिन अल्पबुद्धि व्यक्ति रहता था। एक दिन उसने किसी विद्वान को यह कहते सुना–"रुपया ही रुपये को खींचता है!" उसने सोचा, "अगर ऐसा सच में होता है, तो फिर मुझे मेहनत क्यों करनी पड़े? बस एक रुपया निकालकर रख दूँगा, और बाकी रुपये अपने आप खिंचते चले आएँगे!"

अब भोला को इस प्रयोग को आज़माना था। वह एक बड़े मंदिर में गया जहाँ कुछ पुजारी बैठे-बैठे रुपये गिन रहे थे और सिक्कों की ढेरियाँ लगा रहे थे। यह देखकर उसके मन में खुशी की लहर दौड़ गई।

वह फटाफट उनकी ढेरियों के सामने जा बैठा और अपनी जेब से एक रुपया निकालकर उसे हवा में लहराने लगा। कभी उसे सामने रखता, कभी अपनी हथेली पर रखकर घूरता, कभी धीरे-धीरे उसे हिलाने लगता–मानो रुपये को संकेत दे रहा हो कि जा खींच ला बेटा, बाकी रुपयों को अपनी ओर!"

तभी रुपये गिनने वालों में से एक पुजारी की नज़र उस पर पड़ गई। उन्होंने देखा कि वह बड़ी अजीब हरकत कर रहा है–रुपये को ढेरियों के सामने लहरा रहा है और टकटकी लगाए देख रहा है। उन्हें शक हुआ कि शायद यह कोई चोर है, जो मौका देखकर उनके रुपयों पर हाथ साफ करने की फिराक में है।

बस फिर क्या था! उन्होंने आव देखा न ताव, भोला को धर दबोचा और दो झापड़ रसीद कर दिए। साथ ही, उसके हाथ का रुपया भी छीन लिया और अपनी ढेरी में रख दिया।

बेचारा भोला रोता-गिड़गिड़ाता रह गया–"मुझे क्यों मारा? मैं तो बस ये देख रहा था कि रुपया रुपये को कैसे खींचता है!"

यह सुनकर पुजारियों की हँसी छूट गई। उनमें से एक ने कहा, "बेटा! तुमने जो सुना था, वह सच ही तो हुआ! देखो, तुम्हारा रुपया भी हमारी ढेरी में खिंच आया। "

: 305 : रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हाँसी

गाँव के चौपाल पर बुजुर्ग लोग अक्सर कहावतें सुनाते थे, जिनमें जीवन के गहरे अनुभव छिपे होते थे। एक दिन पंडित जी चौपाल पर बैठे थे, तभी उनका पुराना शिष्य आकर बोला, "पंडित जी, ये कहावत 'रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हाँसी' का क्या मतलब है? मुझे समझाइए न!"

पंडित जी मुस्कराए और बोले, "बेटा, यह कहावत दो बहुत ज़रूरी सीख देती है। पहली सीख: खांसी को हल्के में मत लो

एक बार एक गाँव में एक बूढ़े चाचा रहते थे। उन्हें महीनों से लगातार खांसी आ रही थी। घरवालों ने कहा, "चाचा, किसी वैद्य या डॉक्टर को दिखा दो, इतनी पुरानी खांसी ठीक नहीं होती!" लेकिन वे हँसकर टाल देते, "अरे, यह तो बस बदलते मौसम की बात है, कुछ दिन में ठीक हो जाएगी!"

समय बीतता गया, खांसी बढ़ती गई। जब वह बहुत कमजोर हो गए, तब जाकर उन्होंने डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने गंभीर चेहरा बनाते हुए कहा, "चाचा, यह साधारण खांसी नहीं, आपको फेफड़ों की गंभीर बीमारी हो गई है। अगर पहले आ जाते, तो इलाज आसान होता!" पंडित जी ने कहा, "समझे, बेटा? खांसी को नज़रअंदाज़ किया, तो बीमारी गंभीर हो सकती है!"

दूसरी सीख: किसी का मज़ाक उड़ाना लड़ाई को न्योता देना है। एक दिन दुर्योधन इंद्रप्रस्थ के भव्य महल में घूम रहा था। वह पांडवों के सुंदर राजमहल को देखकर ईर्ष्या कर रहा था। महल में कई ऐसे जलाशय थे, जो इतने साफ थे कि पानी का पता ही नहीं चलता था। भ्रम में पड़ा दुर्योधन अचानक एक जलाशय में गिर पड़ा।

महल में बैठी द्रौपदी ने यह दृश्य देखा और हंसते हुए कह दिया, "अंधे का पुत्र अंधा!" बस, यही बात दुर्योधन के दिल में तीर की तरह चुभ गई। वह भीतर ही भीतर जलता रहा और उसके प्रतिशोध की आग के कारण महाभारत का भयंकर युद्ध हुआ।

: 306 : रौन-गौरई की कुतिया

बुंदेलखंड में रौन और गौरई नाम के दो गाँव हैं। दोनों गाँवों के बीच अच्छी-खासी दूरी है। एक दिन एक चालाक कुतिया को खबर मिली कि दोनों गाँवों में बड़ी दावत हो रही है! उसने सोचा, "वाह! आज तो मज़ा आ जाएगा! पहले रौन गाँव में जाकर पेट भरूंगी, फिर गौरई गाँव जाकर माल उड़ाऊँगी।

कुतिया सबसे पहले रौन गाँव पहुँची। वहाँ देखा कि लोग अभी तैयारी ही कर रहे थे। खाना परोसने में देर थी। पेट में चूहे कूद रहे थे, इसलिए उसने सोचा, "जब तक यहाँ भोजन तैयार होता है, तब तक मैं गौरई गाँव जाकर अपनी भूख मिटा लेती हूँ, फिर लौटकर यहाँ भी खा लूँगी!"

यही सोचकर वह गौरई गाँव की ओर दौड़ पड़ी। गाँव दूर था, रास्ता लंबा था, धूप तेज थी, लेकिन भोजन की लालसा में वह हाँफती-काँपती वहाँ तक पहुँच ही गई। पर ये क्या? वहाँ तो सारी पंगत उठ चुकी थी, जूठी पत्तलें उठ चुकी थीं और बर्तन धुल रहे थे!

"अरे नहीं! मैं लेट हो गई!" कुतिया को बड़ा पछतावा हुआ। पर फिर उसे याद आया कि रौन गाँव की दावत अभी बची होगी! वह हड़बड़ाकर वापस भागी।

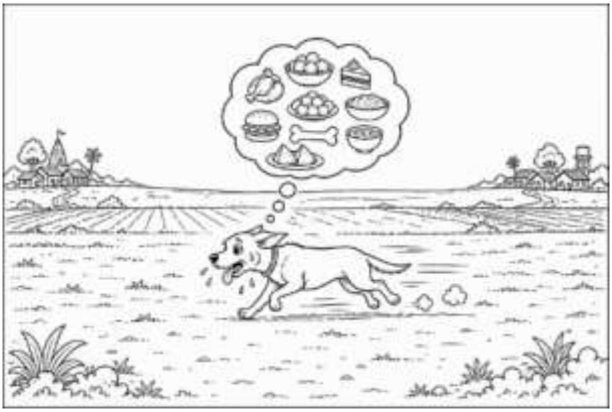

अब तक उसकी टांगें दर्द से कांपने लगी थीं, जीभ बाहर निकल आई थी, मगर वह किसी तरह दौड़ती-भागती फिर से रौन गाँव पहुँच गई। मगर वहाँ का नज़ारा देख कर तो उसके होश उड़ गए—यहाँ भी सारी दावत खत्म हो चुकी थी!

जब भी कोई व्यक्ति लालच में दो स्थानों पर लाभ उठाने की कोशिश करता है और अंत में कुछ भी नहीं पाता, तो यह कहावत कही जाती है!

: 307 : ला साले मेरी चने की दाल

एक शेखचिल्ली ने एक सिपाही से दोस्ती कर ली। दोनों साथ-साथ सफर पर निकले। चलते-चलते उन्हें एक सुनसान रास्ते पर एक चना पड़ा हुआ दिखा। शेखचिल्ली ने झट से उसे उठा लिया। मगर दोस्ती निभानी भी ज़रूरी थी, इसलिए उसने बड़े दिल से आधा चना खुद खा लिया और आधा सिपाही को दे दिया।

"ले भाई, आधा-आधा!!" शेखचिल्ली ने गर्व से कहा। सिपाही को हंसी आ गई, लेकिन दोस्ती का मान रखते हुए उसने चुपचाप आधा चना खा लिया।

अब सफर आगे बढ़ा। कुछ ही देर बाद शेखचिल्ली ने सिपाही से एक ऊटपटांग काम करने को कहा। सिपाही ने भौंहें चढ़ाकर कहा, "क्या बेवकूफी की बात कर रहा है! मैं ये नहीं करूंगा।"

शेखचिल्ली ने झट से उंगली दिखाते हुए कहा, "ला साले, मेरी चने की दाल!" सिपाही चौंक गया, "कौन सी दाल?" शेखचिल्ली ने गर्व से कहा, "अरे! वो जो मैंने तुझे आधा चना खिलाया था, अब तुझे मेरी हर बात माननी पड़ेगी!"

सिपाही माथा पीटकर रह गया, मगर दोस्ती बचाने के लिए मजबूरी में शेखचिल्ली की बात मान ली।

अब जब भी सिपाही किसी बात से मना करता, शेखचिल्ली तुंरत हुक्म जारी कर देता, "ला साले, मेरी चने की दाल!"

जब भी कोई मूर्ख व्यक्ति किसी के लिए छोटा-सा काम करके बड़ा एहसान जताने लगे, तो लोग मज़ाक में कह देते हैं–"ला साले, मेरी चने की दाल!"

: 308 : लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों, खिला खिला कर किया मुसंड, बैल का बैल और दंड का दंड

बहुत पुरानी बात है। एक गाँव में एक तेली था, जिसके पास एक हट्टा-कट्टा बैल था। वह बैल दिनभर तेल निकालने के काम आता था। गाँव में ही एक काज़ी साहब रहते थे, जिनका बैल भी कुछ कम नहीं था–बड़ा ही अकड़ू और लड़ाकू था।

एक दिन, पता नहीं कैसे, दोनों बैल आपस में भिड़ गए और देखते ही देखते उन में से एक बैल ज़मीन पर गिर पड़ा और उसकी साँसें थम गईं।

किसी आदमी ने काजी को जा कर बताया कि तेली के बैल ने उस के बैल को मार डाला है। काजी ने तुरंत तेली को बुलवा भेजा और उससे गरजकर कहा, "तेली! तूने अपने बैल को इतना खिला-पिला कर मुसंड बना दिया कि उसने मेरे

बैल को मार डाला। अब तू मुझे एक नया बैल देगा, साथ ही जुर्माने के तौर पर सौ सिक्के भी देगा!"

पर तब तक किसी दूसरे आदमी ने आ कर बताया कि दरअसल काजी के बैल ने तेली के बैल को मार डाला है। काज़ी ने ज़रा भी देर नहीं की, झट से लाल किताब खोली और उस में से कुछ पढ़ने का नाटक करते हुए बोला, "अरे भाई, जानवर ही तो था। बेचारा क्या जाने!"

यह कहावत वास्तव में न्याय व्यवस्था में आदिकाल से व्याप्त भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य है। लाल किताब से अर्थ संविधान की किताब से है।

: 309 : लाल बुझक्कड़ बूझिए और न बूझा कोय, कड़ी-बरंगा टार के ऊपर ही को लेय

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में लाल बाबू नाम के सज्जन रहते थे। अत्यंत अनपढ़ गाँव वालों के बीच अंधों में काने राजा। गाँव में कोई झगड़ा हो, कोई उलझन हो, तो लोग लाल बाबू के पास पहुँच जाते। वे अपने हिसाब से हर बात का कोई न कोई हल निकाल देते थे। गाँव की भाषा में पहेली का हल निकालने को बूझना कहते हैं, इसलिए उनका नाम पड़ गया– लाल बुझक्कड़।

एक दिन गाँव में हंगामा मच गया। एक झोपड़ी के भीतर एक छोटा बच्चा छत की बल्ली पकड़कर खड़ा था। किसी ने उसे चने दिए। बच्चे ने बल्ली के दोनों तरफ से हाथ बढ़ा कर हथेलियों का चुल्लू बना लिया और उसी में चने भर लिए। तभी उसकी माँ बोली, “चल बेटा, घर चलें।” अब अगर बच्चा हाथ खोले तो चने गिर जाएँ। और हाथ न खोले तो जाए कैसे? बस! बच्चा जोर-जोर से रोने लगा।

रोना सुना तो पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। हर आदमी अपने को सबसे बड़ा अक्लमंद समझता था। कोई बोला, “चने निकाल लो, हाथ छोड़ देगा।” लेकिन बच्चा

चने छोड़ने को तैयार ही नहीं था। अंत में बात इतनी बढ़ी कि सबने तय कर लिया– “हाथ काटने पड़ेंगे!”

उसी समय लाल बुझक्कड़ वहाँ आ पहुँचे। माजरा सुना तो भड़क उठे, “अरे मूर्खो! इतनी-सी बात में हाथ काटने चले हो?” सब बोले, “तो आप ही बताइए, अब क्या किया जाए?”

लाल बुझक्कड़ ने गंभीरता से चारों ओर देखा, नीचे देखा, फिर ऊपर देखा और सुझाव दिया, “छप्पर की कड़ियाँ और फूस हटाओ, फिर बच्चे को बल्ली के सहारे-सहारे ऊपर उठाओ और बल्ली से बाहर निकाल लो।”

जब कोई व्यक्ति खुद को बहुत बुद्धिमान समझते हुए किसी समस्या का बेढंगा और मूर्खतापूर्ण हल सुझाए, तो मज़ाक में यह कहावत कही जाती है।

: 310 : लाल बुझक्कड़ बूझिए और न बूझा कोय, हो न हो अल्लाह की सुरमादानी होय

किसी ज़माने की बात है, एक गाँव था जहाँ के लोगों ने कभी ओखली और मूसल नहीं देखा था। एक दिन सुबह-सुबह गाँव का एक आदमी खेतों की ओर निकला। चलते-चलते अचानक उसकी नजर एक अजीबोगरीब चीज़ पर पड़ी–एक ओखली और उसके अन्दर रखा मूसल।

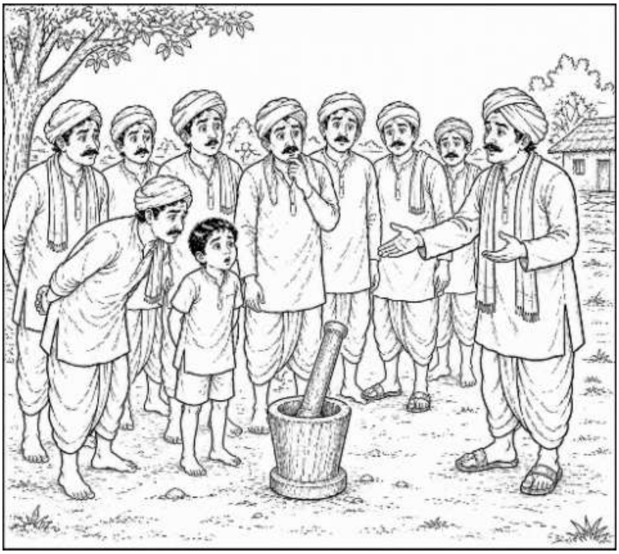

वह चक्कर में पड़ गया कि यह आखिर क्या चीज़ है! उसने गाँव में शोर मचा दिया, "अरे भाइयों! गाँव के बाहर एक अजूबा पड़ा है! आओ, देखो तो सही!"

गाँव के लोग दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे। चारों तरफ से उस अजीब चीज़ का निरीक्षण करने लगे। लेकिन घंटों माथापच्ची करने के बाद भी कोई सही जवाब न ढूंढ़ सका।

अब जब पूरा गाँव हार गया, तो आखिरकार लाल बुझक्कड़ को बुलाया गया। लाल बुझक्कड़ ने गंभीरता से ओखली को चारों तरफ से देखा, मूसल को उठा-उठाकर

घुमाया। दाढ़ी खुजलाई, सिर पर हाथ फेरा और बहुत सोच-विचार के बाद बोले, "हो न हो, यह अल्लाह मियाँ की सुरमे की दानी है!"

गाँव वाले स्तब्ध रह गए। अरे हाँ! यह तो हम ने सोचा ही नहीं था।

जब भी कोई मूर्ख व्यक्ति बिल्कुल मूर्खतापूर्ण अनुमान लगाकर ज्ञान बघारता है, तो यह कहावत प्रयोग की जाती है!

: 311 : लाल बुझक्कड़ बूझिए, और न बूझा कोय, पाँव में चाकी बाँध के, हिरना कूदा होय

बहुत पुरानी बात है। एक गाँव था, जहाँ के लोगों ने कभी हाथी नहीं देखा था। एक रात, गाँव के पास से कोई हाथी गुज़र गया। उसके भारी-भरकम पांवों से ज़मीन पर बड़े-बड़े गोल निशान बन गए।

सुबह जब गाँव के लोग खेतों की ओर निकले, तो ज़मीन पर पड़े ये अजीबो-गरीब गोल निशान देखकर हक्के-बक्के रह गए! यह किसका पैर है? कोई राक्षस तो नहीं? या फिर आसमान से कोई देवता उतरा था? घंटों माथापच्ची करने के बाद भी कोई सही जवाब नहीं ढूंढ़ पाया।

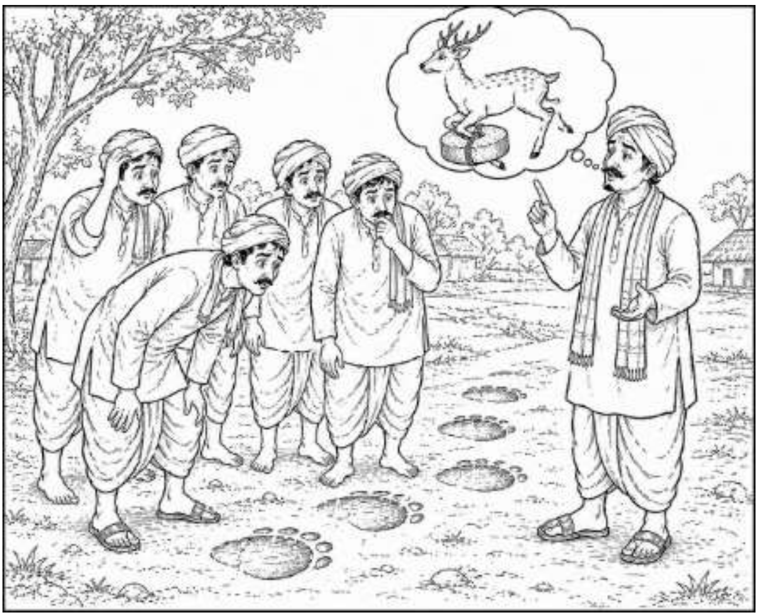

जब पूरा गाँव परेशान हो गया, तो उन्होंने गाँव के सबसे बड़े ज्ञानी– लाल बुझक्कड़ को बुलाने का फैसला किया।

लाल बुझक्कड़ आए, आँखें मिचमिचाईं, ज़मीन पर पड़े गोल निशानों को ध्यान से देखा। कुछ देर बाद वे गंभीर स्वर में बोले– "यह कोई हिरन था, जिसने अपने पाँव में चक्की बाँध ली थी और कूदता चला गया!"

गाँव वाले इतनी पहुँची हुई बात पर वाह वाह कर उठे। जब भी कोई बिना सोचे-समझे बेतुकी अटकलें लगाता है तो यह कहावत कही जाती है!

: 312 : लाला जी तोर बतिया कहि देब

गाँव में लाला जी बड़े इज़्ज़तदार आदमी थे। एक दिन सुबह-सुबह, लाला जी गाँव के किनारे एक बेर के पेड़ के नीचे बैठकर शौच कर रहे थे। तभी अचानक, एक पका हुआ बेर पेड़ से गिरा और ठीक लाला जी के सामने आ टपका!

लाला जी ने इधर-उधर देखा, कोई आसपास नहीं था। उन्होंने झट से बेर उठाया और मज़े से खा लिया।

संयोग से उसी दिन गाँव में एक बरात आई थी। रात को बरातियों के लिए शानदार महफिल जमी। गाँव के चौपाल पर एक मशहूर वैश्या नाच रही थी।

गाते हुए वह एक लोकगीत की पंक्ति गाने लगी, "लाला जी तोर बतिया कहि देब!" अब यह सुनते ही लाला जी के होश उड़ गए! "अरे बाप रे! यह वैश्या जानती है कि मैंने सुबह पाखाने के वक्त बेर खा लिया था!" लाला जी घबरा गए कि अगर यह वैश्या सबके सामने राज़ खोल देगी, तो गाँव में उनकी नाक कट जाएगी!

लाला जी ने फौरन अपनी जेब से कुछ सिक्के निकालकर वैश्या की ओर उछाल दिए ताकि वह चुप हो जाए। वैश्या ने समझा कि लाला जी को उसका गाना बहुत पसंद आ रहा है! वह और जोश में आकर फिर गाने लगी, "लाला जी तोर बतिया कहि देब!"

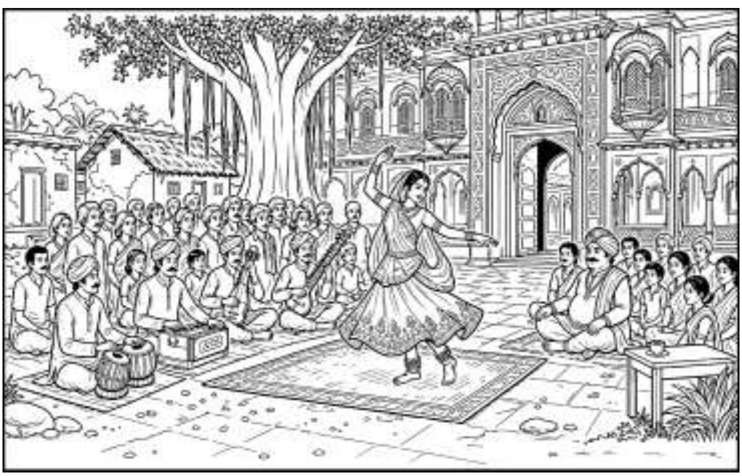

अब लाला जी को और डर लगने लगा। "अभी भी चुप नहीं हुई? अच्छा और पैसे दो!" उन्होंने फिर से रुपयों की बौछार कर दी। अब वैश्या को तो लगा कि लाला जी इस लाइन पर ही फिदा हैं! वह बार-बार वही लाइन दोहराने लगी!

अब लाला जी को गुस्सा भी आ रहा था और डर भी लग रहा था। उन्होंने आख़िरकार हार मानते हुए ऊँची आवाज़ में चिल्ला दिया, "अरे! क्या कहेगी तू? यही

न कि मैंने सुबह शौच करते हुए एक टपका हुआ बेर खा लिया था? तो कह दे! अब मैं और पैसे नहीं दूँगा!" यह सुनते ही पूरी महफ़िल ठहाकों से गूंज उठी! किसी व्यक्ति को अगर अपने अपराध या गलती का डर होता है, तो उसे बेवजह भी हर बात पर शक होने लगता है। इसीलिए जब कोई अपनी ही गलती के कारण डरकर अजीब व्यवहार करने लगता है, तो लोग हंसकर यह कहावत बोलते हैं।

: 313 : लेना एक न देना दो

एक मोर और एक कछुए में गहरी दोस्ती थी। मोर पेड़ पर रहता था और कछुआ उसी पेड़ के नीचे पोखरे में रहता था। मोर दाने चुगता, पोखरे से पानी पीता और मस्त होकर नाचता। कछुआ उसका नाच देखकर बहुत प्रसन्न होता था।

एक दिन दुर्भाग्य से एक बहेलिए ने मोर को अपने जाल में फँसा लिया और उसे बाज़ार में बेचने के लिए ले चला। मोर ने बहेलिए से विनती की, “अगर तुम थोड़ी-सी दया करो तो मुझे अपने दोस्त कछुए से मिल लेने दो, क्योंकि अब शायद हम सदा के लिए बिछड़ जाएंगे।”

बहेलिया मान गया और मोर को कछुए के पास ले आया। अपने मित्र को बहेलिए के हाथों में फँसा देखकर कछुए को बहुत दुःख हुआ। उसने बहेलिए से विनती की, “कृपया मेरे मित्र को छोड़ दो।” बहेलिया बोला, “अरे! अगर मैं इस तरह शिकार छोड़ दूँगा तो भूखा मर जाऊँगा।”

कछुए ने कहा, “अगर मैं तुम्हें इसे छोड़ने का इनाम दूँ तो?” बहेलिया बोला, “फिर तो मैं छोड़ सकता हूँ।”

कछुए ने पोखरे में डुबकी लगाई और मुँह में एक सुंदर लाल (कीमती रत्न) लेकर बाहर आया। उसने वह लाल बहेलिए को दे दिया। लाल पाकर बहेलिया बहुत खुश हुआ और उसने मोर को छोड़ दिया।

लेकिन थोड़ी दूर जाते ही उसके मन में लालच आ गया। वह सोचने लगा, “मैंने सिर्फ एक लाल क्यों लिया? दो लाल क्यों नहीं माँगे?” यह सोचकर वह वापस कछुए के पास आया और बोला, “तुमने मुझे ठग लिया है। मैं एक लाल में मोर को छोड़ने वाला नहीं था। मुझे एक और लाल दो, नहीं तो मैं मोर को फिर पकड़ लूँगा।”

कछुए को इस बात का अनुमान था। उस ने पहले ही मोर से कह दिया था कि वह तुरंत वहाँ से दूर उड़ जाए। वह बोला, “ठीक है, तुम वह लाल मुझे दे दो। मैं उसी जैसा दूसरा लाल पोखरे से निकालकर तुम्हें दे दूँगा।”

लालच में अंधे बहेलिए ने बिना सोचे-समझे अपना लाल कछुए को दे दिया। कछुए ने लाल लिया और पानी में डुबकी लगाते हुए कहा, “मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि

तुम्हें दो-दो लाल दे दूँ। तुम्हें एक लेना नहीं और मुझे दो देना नहीं यानी "लेना एक न देना दो।" और वह पानी में गायब हो गया।

इस कहावत को एक दूसरे सन्दर्भ में भी प्रयोग किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति किसी से कोई सरोकार नहीं रखता हो तो भी यह कहावत प्रयोग की जाती है। इस बारे में एक कथा भी कही जाती है। एक व्यक्ति बहुत दिन बाद परदेस से आया। उसकी पत्नी ने उसको प्रसन्न करने के लिए बहुत से खाद्य पदार्थ बनाए और सुंदर शैय्या तैयार की।

लेकिन वह व्यक्ति बिना इन सब में कोई रूचि दिखाए फर्श पर ही सो गया। इस पर इस कहावत को इस प्रकार कहा गया - दूर देस से साजन आया, ऊंची मैंड़ी पलंग बिछाया, खाय पीय कर रहिया सोय, लेना एक न देना दोय।

: 314 : लेना देना कुछ नहीं, हामी भरूँ करोड़। (ढपोर शंख)

प्राचीन समय में एक ब्राह्मण गरीबी के कारण भिक्षाटन से अपने परिवार का पेट पालता था। जब भुखमरी की नौबत आ गयी तो किसी ने बताया कि समुद्र देवता यदि प्रसन्न हो जाएं तो उसकी गरीबी दूर हो जाएगी। ब्राह्मण समुद्र के तट पर पहुँच कर तपस्या करने लगा।

समुद्र देवता तपस्या से प्रसन्न हुए और प्रकट होकर वरदान माँगने को कहा। ब्राह्मण बोला, "हे देव! मैं भीख मांगकर भी बच्चों का पेट भरने में असमर्थ हो गया हूँ। पूजा-पाठ, करने का समय भी नहीं मिल पाता। मेरी इस समस्या का कोई समाधान कर दें। समुद्र देव ने ब्राह्मण को एक शंख देकर कहा - रोज पूजा-पाठ से निवृत्त होकर पवित्र मन से जो भी इस शंख से मांगोगे वह मिल जाएगा।

ब्राह्मण प्रसन्न होकर घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में शाम हो गयी, और उसे एक वणिक के घर रुकना पड़ा। रात में ब्राह्मण ने शंख से भोजन प्रदान करने की प्रार्थना की। तत्काल ब्राह्मण और वणिक के परिवार के लिए स्वादिष्ट भोजन आ गया। चमत्कृत वणिक ने पूछा तो ब्राह्मण ने पूरी कहानी उसे सुना दी, और निश्चिन्त हो कर सो गया।

लालची वणिक ने रात में सो रहे ब्राह्मण की पोटली से शंख चुराकर दूसरा साधारण शंख रख दिया।

ब्राह्मण ने घर पहुँचकर झट स्नान और पूजा कर के शंख से भोजन मांगा। जब कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उसने उल्टे पाँव वणिक के पास पहुँच कर अपनी विपदा सुनायी। चतुर वणिक ने कहा कि यह गड़बड़ जरूर समुद्र ने की होगी। भोला ब्राह्मण फिर समुद्र तट पर जा पहुँचा और तपस्या प्रारम्भ कर दी। समुद्र देव प्रकट हुए तो ब्राह्मण ने पूरी कहानी सुनाई।

सारी बात समझ कर समुद्र देवता ने एक दूसरा शंख दिया और बोले - इसे ले जाओ... घर जाने से पहले पोटली से बाहर मत निकालना। इससे जो भी मांगोगे हर बार उससे दूना देने को तैयार रहेगा।

ब्राह्मण दूनी प्रसन्नता से घर की ओर चला। उसी वणिक के घर रुका। लालची वणिक ने उसका खूब सत्कार किया। ब्राह्मण ने पूरी बात बतायी और यह भी बता दिया कि दूसरा शंख घर ही जाकर बाहर निकालेगा। दूना देने की बात भी बता दी। लोभी वणिक ने ब्राह्मण के सो जाने के बाद पोटली से शंख निकाला और उसके स्थान पर पहले वाला शंख रख दिया। ब्राह्मण मुँह-अन्धेरे उठकर अपने घर के लिए चल दिया।

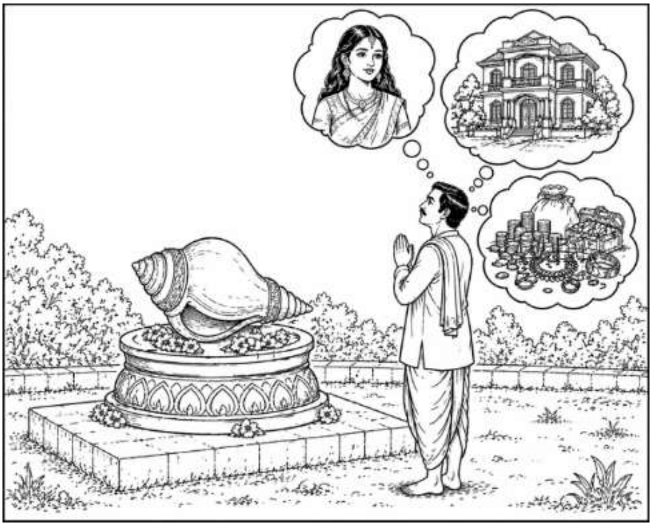

वणिक ने अगले दिन जल्दी-जल्दी स्नान करके नया शंख निकाला और पूजा कर के शंख से माँगना शुरू किया। "महल जैसा मकान दें!" शंख से आवाज आयी- "एक नहीं दो ले लो..." वणिक प्रसन्न होकर मांगने लगा। "अप्सरा जैसी पत्नी दें!"

फिर आवाज आयी, "एक नहीं दो ले लो...!" "सर्वगुण सम्पन्न पुत्र दें!" "एक नहीं दो ले लो..." "सात घोड़ों वाला रथ दें" "एक नहीं दो ले लो..."

काफी समय बीत गया पर सामान कोइ प्रकट नहीं हुआ। परेशान होकर वणिक ने शंख से पूछा, "आप कैसे दाता हैं जी, पहले वाले शंख ने तो जो भी मांगा, तुरन्त दे दिया था।"

शंख हँसकर बोला, " अरे मूर्ख, देने वाला शंख तो वही था जिसे उसका असली अधिकारी ले गया। मैं ढपोर शंख हूँ, लेना देना कुछ नहीं, हामी भरूँ करोड़।

: 315 : वक्र चंद्रमा ग्रसै न राहु

जब समुद्र मंथन हुआ और समुद्र से अमृत निकला, तब उसे पाने के लिए देवताओं और असुरों में विवाद हो गया। दोनों ही अमृत पाकर अमर होना चाहते थे।

तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया। उनके अद्भुत रूप को देखकर असुर मोहित हो गए। मोहिनी ने सबको आश्वासन दिया कि वह अमृत सबमें समान

रूप से बाँटेंगी। असुर भी उनके रूप से मोहित होकर उनकी बात मान गए, जबकि देवताओं को इस योजना का संकेत पहले से था।

मोहिनी रूप में विष्णु जी अमृत केवल देवताओं को ही देने लगे। तभी एक चतुर असुर ने यह चाल समझ ली और वह चुपचाप देवताओं की पंक्ति में जाकर बैठ गया। जैसे ही उसने अमृत का पान किया, सूर्य और चन्द्र देव के संकेत पर विष्णु जी ने उसे पहचान लिया और तुरंत अपने सुदर्शन चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर

दिया।

लेकिन तब तक अमृत उसके गले से नीचे पहुँच चुका था, इसलिए वह मरा नहीं। उसका सिर और धड़ दोनों अलग-अलग जीवित रहे। सिर को राहु और धड़ को केतु कहा गया।

कथा के अनुसार, राहु अपनी शत्रुता के कारण समय-समय पर सूर्य और चंद्रमा को ग्रसने का प्रयास करता है। इसी से सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण की घटना मानी जाती है। परंतु उसका सिर अलग होने के कारण वह उन्हें पूरी तरह निगल नहीं पाता, और वे पुनः बाहर निकल आते हैं।

यह भी कहा जाता है कि राहु केवल पूर्ण चंद्रमा (पूर्णिमा) को ही ग्रसता है, क्योंकि पूर्ण चंद्र सीधा और गोल होता है। टेढ़े (वक्र) चंद्रमा को वह नहीं ग्रस पाता।

कहावत का अर्थ इस कथा से भिन्न सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है। कहावत का अर्थ कि कुटिल या टेढ़े स्वभाव वाले व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, जबकि सीधे-साधे और सरल लोग ही अक्सर निशाना बन जाते हैं।

: 316 : वह पानी मुल्तान गया

संत कबीर दास जी और संत रैदास जी का गहरा स्नेह था। दोनों संतों के विचार अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे के प्रति आदर भाव था। एक दिन कबीरदास जी,

रैदास जी के सत्संग में पहुँचे। सत्संग के बाद उन्हें प्यास लगी, तो उन्होंने रैदास जी से पानी माँगा।

रैदास जी ने निःसंकोच चमड़ा भिगोने की कठौती से पानी निकालकर कबीरदास जी को दे दिया।

कबीर दास जी ने सोचा–"अगर मैं यह पानी पीने से मना कर दूँ, तो यह रैदास जी का अपमान होगा, और अगर पी लिया तो मन में अशुद्धि का भाव है!"

इसलिए उन्होंने बड़े चालाकी से पानी हथेलियों से लेकर नीचे गिरा दिया और एक भी बूंद अपने मुँह में नहीं जाने दी। कबीर दास जी जब घर पहुँचे, तो उन्होंने अपनी अंगरखी (कुर्ता) धोने के लिए अपनी पुत्री कमाली को दे दी। कमाली ने अंगरखी धोते समय देखा कि कुछ दाग हट नहीं रहे हैं। तो उसने कपड़े को दाँतों से चूस लिया ताकि दाग छूट जाए। जैसे ही कपड़े से निचुड़ा हुआ पानी उसके मुँह में गया, कमाली त्रिकालदर्शी हो गई–अब वह भूत, भविष्य और वर्तमान सब कुछ देखने लगी! कुछ समय बाद कमाली अपने ससुराल मुल्तान चली गई।

उस के कुछ दिन बाद एक दिन कबीर दास जी अपने गुरु रामानंद जी के साथ यात्रा पर निकले। रास्ते में कमाली का ससुराल (मुल्तान) पड़ता था।

जब दोनों वहाँ पहुँचे, तो देखा कि कमाली ने पहले से ही उनके लिए भोजन तैयार कर दिया था और दो आसन भी बिछा रखे थे! गुरु रामानंद जी चकित होकर बोले–"बेटी! तुझे कैसे पता चला कि हम आने वाले हैं?"

कमाली मुस्कुराई और पूरी अंगरखी वाली घटना सुना दी। अब कबीरदास जी को अपने अज्ञान पर बहुत पछतावा हुआ! "अरे! वही पानी जो मैंने अभिमान में गिरा दिया था, उसने ही मेरी बेटी को त्रिकालदर्शी बना दिया!"

कबीर दास जी भागे-भागे रैदास जी के पास पहुँचे और हाथ जोड़कर बोले, "मुझे क्षमा करें! अब मैं वह पानी पीना चाहता हूँ।" रैदास जी हँसते हुए बोले, "पाया था तो पिया नहीं, तब मन में अभिमान किया, अब पछताए होत क्या, वह पानी मुल्तान गया!" यानी जो मौका मिला था, उसे अभिमान में गँवा दिया, अब पछताने से क्या फायदा?

अवसर चूक जाने के बाद कोई व्यक्ति पछताए और पुन: उस वस्तु को पाने का प्रयास करे तो कहते हैं – "वह पानी मुल्तान गया!"

: 317 : विद्या पढ़ी संजीवनी, निकले मति से हीन, ऐसे निर्बुद्धी जने, सिंह ने खा लये तीन

बहुत समय पहले की बात है। तीन युवक गुरुकुल में रहकर संजीवनी विद्या सीख रहे थे। यह एक अद्भुत विद्या थी, जिससे मरे हुए प्राणियों को जीवित किया

जा सकता था। गुरुकुल में वर्षों तक अध्ययन करने के बाद, वे तीनों बड़ी प्रसन्नता के साथ घर लौट रहे थे। रास्ते में एक घना जंगल पड़ा।

जंगल में चलते-चलते उनकी नजर शेर (सिंह) की बिखरी हुई हड्डियों पर पड़ी।

एक मित्र उत्साहित होकर बोला–

"दोस्तों! हमने संजीवनी विद्या तो सीख ली, लेकिन इसे आजमाया नहीं। क्यों न इस मृत सिंह को जीवित करके देख लें?"

तीनों मित्रों को यह सुझाव बहुत अच्छा लगा। तीनों ने आपस में काम बाँट लिया–पहले मित्र ने हड्डियों को जोड़कर सिंह का अस्थिपंजर बना दिया, दूसरे मित्र ने उस पर मांस और चमड़ी चढ़ा दी, तीसरा मित्र, जो सबसे ज्यादा उत्साहित था, बोला–"अब मैं इसमें प्राण डालता हूँ!"

उसी समय एक स्थानीय व्यक्ति वहाँ से गुजर रहा था। वह यह सुनकर घबरा गया और बोला, "अरे मूर्खो! यह सिंह है! अगर यह जीवित हो गया तो हम सबको खा जाएगा!"

परंतु तीनों मित्रों ने उसकी बात को हंसी में उड़ा दिया और बोले, "हम इतने वर्षों की पढ़ाई को बर्बाद नहीं होने देंगे!" और तीसरे मित्र ने मंत्र पढ़कर सिंह में प्राण डाल दिए। राहगीर इस मूर्खता से बचने के लिए जल्दी से एक पेड़ पर चढ़ गया।

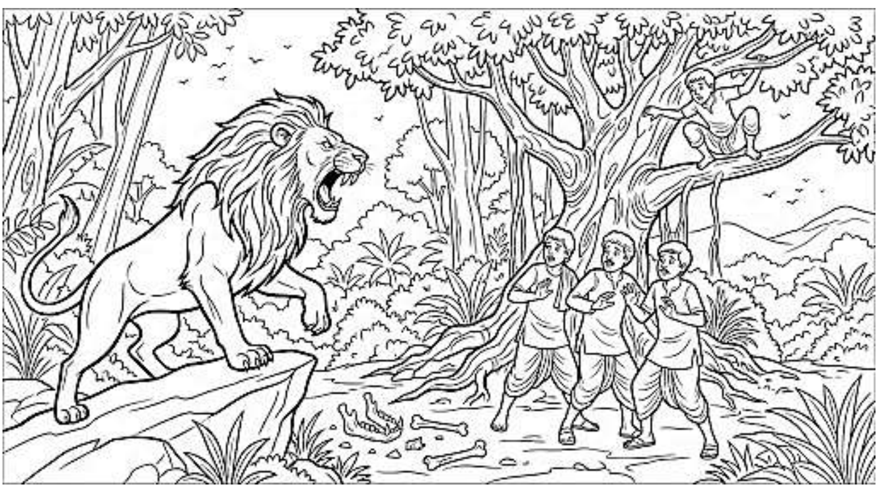

अगले ही क्षण, सिंह गर्जना करते हुए खड़ा हो गया! और जैसे ही उसने अपने सामने तीन मूर्ख युवकों को देखा, वह उन पर टूट पड़ा!

कुछ ही पलों में उस ने तीनों को अपना भोजन बना लिया।

यदि कोई पढ़ा लिखा मूर्ख व्यक्ति अपने ज्ञान से अपना ही नुकसान कर बैठे तो उसका मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 318 : शक्ल चुड़ैल की मिज़ाज परियों का

एक बदसूरत औरत थी जिसकी शक्ल देख कर लोग डर जाते थे। लेकिन वह अपने आप को बहुत सुंदर समझती थी। उसका हाल यह था कि वह हमेशा आईने के सामने बैठी रहती और खुद को किसी परी से कम नहीं समझती थी। जब कोई उससे कुछ कहता, तो वह बड़ी अदाओं और नखरे से जवाब देती। तब लोगों ने उस के ऊपर यह कहावत बनाई। कहावत उन स्त्रियों के लिए प्रयोग की जाती है जिनकी सूरत अच्छी न हो मगर नखरे और मिज़ाज बहुत ऊँचे हों।

: 319 : शेख ने कौवे को भी दगा दी

किसी शेख ने एक कौवे को पकड़ना चाहा। इसके लिए वह अपने मुंह में रोटी का एक टुकड़ा लेकर मृतवत जमीन पर पड़ गया। एक कौवे ने ज्यों ही उसके शरीर पर बैठकर उस टुकड़े को लेना चाहा त्यों ही उसने उसकी गर्दन अपने मुंह से पकड़ ली। कौवे ने छुटकारा पाने का कोई उपाय न देख उसकी जात पूछी, यह सोचकर कि ज्यों ही यह मुंह खोलेगा, मैं उड़ जाऊंगा। पर शेख उससे भी अधिक चालाक निकला। उसने और भी मजबूती से उसकी गर्दन अपने दांतों के बीच दबाकर कहा- 'शेख'। आप शेख बोल कर देखें, उसके लिए दांत नहीं खोलने पड़ते।

इस कहावत को दूसरे रूप में भी कहा जाता है - **शेख़ ने कछुए को भी दग़ा दी।** कहते हैं कि एक शेख़ साहब और कछुए में दोस्ती हो गई। एक बार शेख़ साहब को भूख लगी और घर में कुछ न था। उन्होंने कछुए को बहला-फुसलाकर हांडी में डाल दिया और उसे ही पकाकर खा गए।

: 320 : शेर की खाल ओढ़ लेने से गधा शेर नहीं बन सकता

एक गधा जंगल में घूम रहा था, तभी उसकी नजर एक मरे हुए शेर की खाल पर पड़ी। उसके मन में एक खुराफाती विचार आया, "अगर मैं यह खाल ओढ़ लूं, तो

जंगल के सारे जानवर मुझे शेर समझने लगेंगे!" बस फिर क्या था! उसने झटपट शेर की खाल ओढ़ ली और अकड़ कर चलने लगा।

अब जो भी जानवर उसे देखता, डरकर भाग जाता। "वाह! यह तो कमाल हो गया!" गधा मन ही मन खुश था। धीरे-धीरे जंगल के जानवर उसे सच में राजा मानने

लगे और डर के मारे उससे दूर रहने लगे।

लेकिन जंगल का चालाक गीदड़ यह सब देख रहा था। उसे कुछ शक हुआ। "यह शेर कभी दहाड़ता क्यों नहीं? और इसकी चाल भी तो बड़ी अजीब लग रही है!" एक दिन उसने गधे को छुपकर घास चरते देख लिया! और फिर उसके पद चिन्ह देखने पर तो उसे निश्चय हो गया कि यह तो गधा ही है। उसने अन्य जानवरों से भी यह बात कही, लेकिन जंगल के राजा का सामना करने की हिम्मत किसी में नहीं हुई।

अब गीदड़ ने एक चाल चली—वह एक गधी को जंगल के राजा के दरबार में ले आया। जेठ का महीना था, गर्मी चरम पर थी। गधी को मस्ती चढ़ गई और वह ज़ोर-ज़ोर से रेंकने लगी! बस, फिर क्या था! गधे के अंदर का असली गधा जाग गया। वह अपनी खुशी रोक नहीं पाया और जोरों से रेंकने लगा! "ढ़ेंचू, ढ़ेंचू, ढ़ेंचू!"

गीदड़ ने तुरंत लपक कर शेर की खाल खींच ली और सारा जंगल देखता रह गया—"अरे! यह तो गधा निकला!" सभी जानवरों को अपने साथ हुए धोखे पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने मिलकर गधे को वहीं मार डाला!

कहावत का अर्थ है कि दूसरों को धोखा देकर कोई अधिक समय तक राज नहीं कर सकता, असली पहचान कभी न कभी उजागर हो ही जाती है! आजकल के कुछ नेताओं पर भी यह कहावत सटीक बैठती है।

: 321 : शैतान भी लडकों से पनाह मांगता है

एक शैतान को इंसानों की दुनिया में घूमने का बड़ा शौक था। उसे खासतौर पर लड़कों के साथ खेलना बहुत पसंद था।

एक दिन उसने सोचा, "आज मैं लड़कों के साथ खेलूंगा, लेकिन किसी को यह पता नहीं चलना चाहिए कि मैं शैतान हूँ!" उसने झटपट एक गधे का रूप धारण कर लिया और मैदान में खेल रहे लड़कों के पास पहुंच गया।

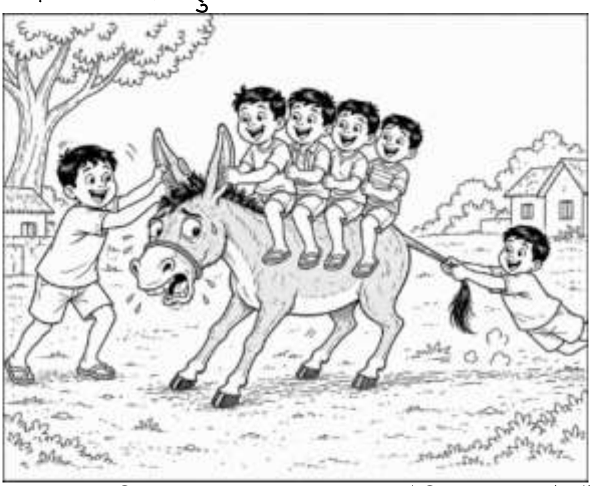

लड़कों ने जैसे ही गधे को देखा, उनकी आंखों में चमक आ गई! "अरे! आज तो मज़ा आ गया! चलो, इस पर सवारी करते हैं!"

बस, फिर क्या था! लड़कों ने झटपट गधे पर चढ़ना शुरू कर दिया। एक लड़का बैठा–गधा चुप रहा, दूसरा लड़का बैठा–गधा चुप रहा, तीसरा बैठा–गधा अब भी चुप रहा, चौथा भी बैठ गया–गधा फिर भी सहन कर गया। लेकिन जब पांचवें लड़के को बैठने के लिए कोई जगह नहीं मिली, तो वह गधे की पूंछ पकड़ कर लटक गया।

अब तो गधे बने शैतान की हालत खराब हो गई। उसे बस एक ही रास्ता दिखा, "भागो!" शैतान इतनी तेज़ दौड़ा कि मैदान छोड़ गाँव की सीमा के ही बाहर निकल गया। भागते-भागते वह सोचने लगा, "हे भगवान! यह लड़के तो मुझसे भी बड़े शैतान निकले! अब से मैं इनके पास भूलकर भी नहीं जाऊँगा!"

बच्चे बहुत शैतानी कर रहे हों तो उन से तंग आकर बड़े लोग यह कहावत बोलते हैं।

: 322 : सच्चा जाए रोता आए, झूठा जाए हँसता आए

कहा जाता है कि एक राजा के दरबार में दो व्यक्ति अपना-अपना विवाद लेकर पहुँचे। उनमें से एक सत्यवादी था, जबकि दूसरा अत्यंत धूर्त और चालाक।

सत्यवादी व्यक्ति ने बिना किसी लाग-लपेट के अपनी बात स्पष्ट रूप से रखी और अपने कथन पर अडिग रहा। किंतु उसकी सादगी और स्पष्टता के कारण उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि उसे दंड भी सहना पड़ा।

दूसरी ओर, धूर्त व्यक्ति ने बड़ी चतुराई और मीठी बातों से राजा को प्रभावित कर लिया। उसने अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत की कि वह निर्दोष प्रतीत होने लगा।

परिणाम यह हुआ कि झूठा व्यक्ति पुरस्कार प्राप्त कर प्रसन्नता से दरबार से बाहर निकला, जबकि सत्यवादी व्यक्ति निराश और दुखी होकर लौटा।

कहावत का अर्थ है कि दुनिया में सत्य का मार्ग कठिन होता है, जबकि छल-कपट से काम लेने वाले लोग तत्काल लाभ पा लेते हैं।

: 323 : सतलड़ी मिलने ही वाली है

गाँव के नुक्कड़ पर दो पक्के नशेबाज़ बैठे थे। शराब के दो-तीन दौर चल चुके थे, और अब गप्पें हांकने का सिलसिला शुरू हो चुका था।

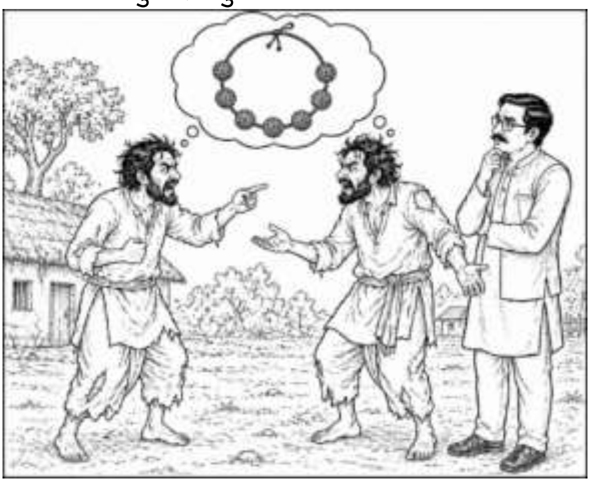

पहले नशेबाज़ ने आँखें मिचमिचाते हुए कहा–

"यार! अगर अभी मुझे एक सतलड़ी (सात लड़ियों की माला) मिल जाए, तो क्या कहने!"

दूसरे ने उसकी बात सुनते ही जोश में आकर जवाब दिया–"अरे! कभी न कभी मिल ही जाएगी, लेकिन सात में से चार लड़ियाँ मेरी और तीन तेरी! "पहला नशेबाज़ तुनक गया–"क्यों रे? सात में से चार तू क्यों लेगा? मुझे मिलेगी इसलिए चार तो मेरी होंगी और तीन तेरी!"

अब क्या था! दोनों में झगड़ा शुरू हो गया! गालियाँ चलीं, लात-घूंसे बरसे, कपड़े फटने तक नौबत आ गई।

इतने में उधर से एक समझदार आदमी गुजरा। उसने बीच-बचाव करते हुए पूछा कि वे किस बात पर लड़ रहे हैं। नशेबाजों ने कहा कि सतलड़ी के बँटवारे के लिए लड़ रहे हैं। राहगीर ने पूछा, "अरे भाई! पहले बताओ, ये सतलड़ी कहाँ है जिसके लिए जान देने पर उतारू हो?"

अब दोनों ठिठक गए। एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे और बोले, "अभी मिली तो नहीं, लेकिन अगर मिल जाए, तो बंटवारा तो पहले से तय होना चाहिए न!" एग्जिट पोल को ले कर जब टीवी चैनलों पर राजनीतिक दलों के प्रवक्ता आपस में लड़ रहे होते हैं तो यह कहावत याद आती है।

: 324 : सत्तू मनभत्तू जब घोले तब खइबे तब जइबे, धान बिचारे भल्ले कूटे खाए चल्ले

गाँव के दो आदमी शहर जा रहे थे। लंबा रास्ता था, सफर के लिए खाने-पीने का इंतजाम करना जरूरी था।

पहले आदमी की पत्नी समझदार थी, सत्तू बांध दिया– झटपट घोलो, खाओ और आगे बढ़ो।

दूसरे के घर में शायद और कुछ नहीं था, या उसकी पत्नी कुछ ज्यादा ही फूहड़ थी, सो उसने थोड़े से धान बांध दिए।

रास्ते में भूख लगी तो सत्तू वाले ने खाने की तैयारी शुरू की।

धान वाले ने सत्तू देखा तो उस के मन में पाप आ गया। सोचने लगा कैसे इस सत्तू को हथियाया जाए। वह सत्तू वाले पास जा कर बोला–"अरे भाई! यह सत्तू कितना झंझट भरा खाना है। पहले पानी ढूँढो, फिर बैठ कर इतनी देर तक उसे घोलो, फिर खाओ तो कभी यहाँ चिपकता है तो कभी वहाँ चिपकता है। इतने सब झंझट के बाद कहीं जाकर आगे बढ़ोगे!"

भोले-भाले सत्तूवाले ने सिर हिलाया–"बात तो सही कह रहे हो!"

अब चालाक धानवाले ने अपनी असली चाल चली–"देखो, मेरे पास धान है। इसे तो बस फटाफट कूटो, खाओ और फुर्र हो जाओ! इससे बढ़िया क्या हो सकता है?"

भोले आदमी को बात जम गई। उसने बिना सोचे-समझे अपना कीमती सत्तू दे दिया और बदले में धान ले लिया। जब खाने बैठा तो समझ आया– धान तो ऐसे ही खाया नहीं जा सकता!

पहले कूटना पड़ेगा, फिर छिलका हटाना पड़ेगा, फिर पीसना पड़ेगा, तब कहीं जाकर खाया जाएगा!

उधर, चालाक आदमी मजे से सत्तू खाकर, पेट भरकर, रास्ता नाप चुका था! भोले आदमी ने सिर पकड़ लिया। कहावत का अर्थ है किसी को मूर्ख बना कर अपना घटिया माल उसे भिड़ा देना और उसका अच्छा माल उस से ठग लेना।

: 325 : सब से न्यारा बाल हठ

बादशाह अकबर का दरबार सजा था, और चर्चा हो रही थी– बालहठ यानी बच्चों की ज़िद पर! बीरबल बोले, "जहाँ तक मेरी समझ है, बच्चों की ज़िद पूरी करना किसी के बस की बात नहीं!" अकबर को यह सुनकर गुस्सा आ गया, बोला, "मैं किसी की भी कोई भी ज़िद पूरी कर सकता हूँ!" बीरबल मुस्कुराए और बोले, "तो हुज़ूर, इसे आजमा कर देख लेते हैं!"

फ़ौरन एक नटखट बच्चा बुलाया गया। अकबर ने बड़े प्यार से पूछा, "बेटा, तुम जो भी माँगोगे, वह तुम्हें मिलेगा!"

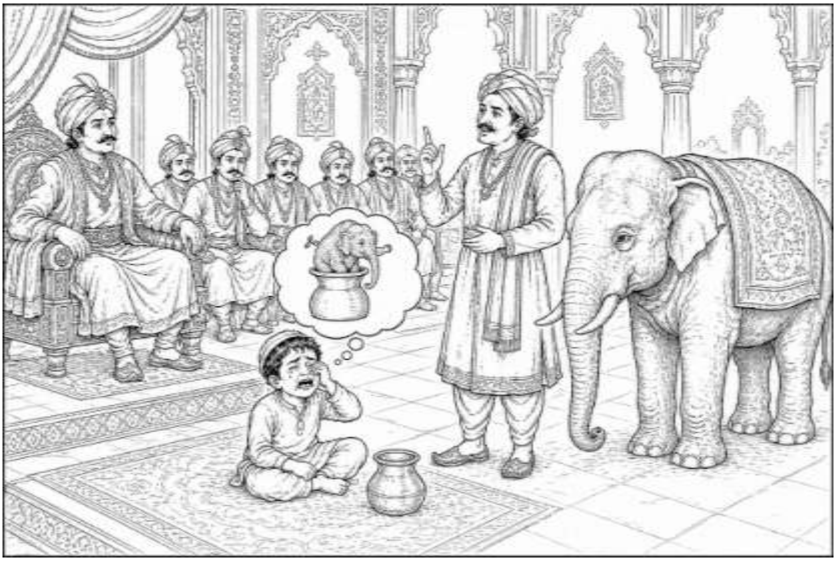

बच्चे की आँखें चमकीं, "मुझे हाथी चाहिए!" अकबर ने तुरंत हाथी मंगवा दिया। फिर बच्चा बोला, "अब मुझे एक लोटा चाहिए!" यह भी हाजिर कर दिया गया। अकबर ने गर्व से बीरबल की ओर देखा, मानो कह रहा हो, "देखा? मैं हर ज़िद पूरी कर सकता हूँ!"

अब बच्चे ने मासूमियत से कहा, "अब इस हाथी को लोटे में डाल दो!" अकबर चौंक गया, "अरे भई, यह तो मुमकिन नहीं है!" पर बच्चे ने रोना शुरू कर दिया, "मुझे बस हाथी लोटे में चाहिए!" अकबर ने समझाने की बहुत कोशिश की, पर बच्चा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। अंत में उसको हार माननी पड़ी!

: 326 : समझने वाले की मौत है

बादशाह अकबर का दरबार सजा हुआ था। किसी प्रसिद्ध गवैये का गाना चल रहा था, और सारे दरबारी मंत्रमुग्ध होकर सिर हिला रहे थे। अकबर को यह देखकर अचरज हुआ। उसने बीरबल से पूछा, "बीरबल, क्या ये सब लोग सच में इस गाने को समझ रहे हैं?"

बीरबल मुस्कुराए और बोले, "जहाँपनाह, इसका पता तो अभी लगाया जा सकता है!" बीरबल खड़े हुए और दरबारियों से बोले, "जहाँपनाह के सामने इस तरह सिर हिलाना अच्छा नहीं लगता। अब से अगर कोई गाना सुनकर सिर हिलाएगा, तो उसका सिर कलम कर दिया जाएगा!"

अब तो सब दरबारी सचेत होकर सीधे बैठ गए। कोई भी हिलने की हिम्मत नहीं कर रहा था। गाना जारी रहा, लेकिन अब दरबारियों के चेहरे कठोर हो गए थे, जैसे किसी ने उन पर कड़ा पहरा बैठा दिया हो।

कुछ ही देर में, एक बुज़ुर्ग दरबारी के मुँह से अनायास निकल पड़ा–"हे भगवान! समझने वाले की मौत है!"

बीरबल ने तुरंत पूछा, "क्यों भई, क्या हुआ?" वृद्ध दरबारी दुखी स्वर में बोले– "क्या बताऊँ, गाना सुनकर सिर हिलाए बिना नहीं रह सकता, और आपने उसकी मनाही कर दी!"

बीरबल बादशाह की ओर मुड़े और मुस्कुराते हुए बोले, "जहाँपनाह! बस यही एक साहब हैं जो सच में गाना समझते हैं। बाकी सब तो केवल नकल कर रहे थे!"

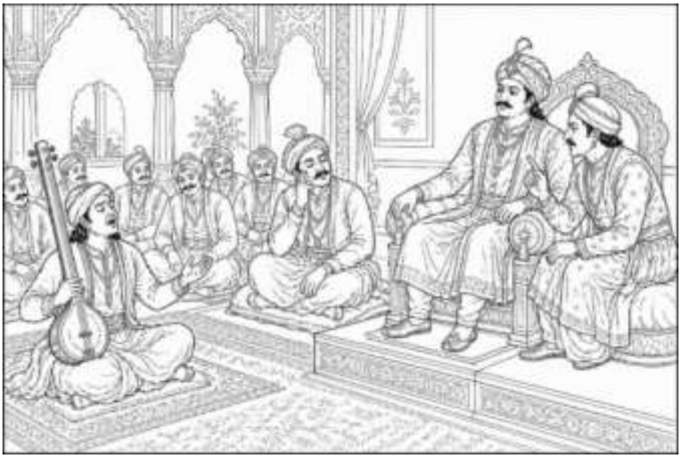

अकबर ठहाका मारकर हँस पड़ा और बोला, "बीरबल, तुम्हारी बुद्धि का कोई जवाब नहीं!"

इसी प्रकार के सन्दर्भ में यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 327 : सयाना आदमी लीक नहीं पीटता

किसी गाँव के एक मंदिर में एक अंधे पुजारी रहते थे। उनका नियम था–रोज़ दो रोटियाँ बनाते, उन्हें भगवान को भोग लगाते और फिर वही खा लेते। लेकिन किसी समय कहीं से एक बिल्ली मंदिर में आ गई। पुजारी जैसे ही आँखें बंद कर हाथ जोड़ते, वह झपट्टा मारकर रोटियाँ ले उड़ती। बेचारे पुजारी भूखे रह जाते!

इस समस्या से तंग आकर पुजारी ने एक युक्ति निकाली। उन्होंने लकड़ी की एक बड़ी खूँटी बनवाई और जब भी रोटियाँ भोग में रखते, तो उनके बीच में वह खूँटी ठोंक देते। अब बिल्ली चाहकर भी उन्हें उठा नहीं पाती।

समय बीता, और एक दिन वह अंधे पुजारी परलोक सिधार गए। उनके बाद उनका एक चेला पुजारी बना। गुरु की परंपरा निभाने के लिए वह भी हर दिन भोग लगाते समय रोटियों में खूँटी ठोंकता।

कुछ वर्षों बाद वह पुजारी भी चल बसा, और मंदिर में एक नया पुजारी आया। वह पहले से अधिक समझदार था। एक दिन उसने किसी वृद्ध से पूछा, “बाबा, यह क्या परंपरा है?" वृद्ध ने उसे पूरी कहानी सुना दी।

पुजारी हँसा और बोला, "अब तो यहाँ कोई बिल्ली भी नहीं है, और में अंधा भी नहीं हूँ, फिर मैं यह बेकार की परंपरा क्यों निभाऊँ?" उसी दिन से रोटियों में खूँटी ठोंकने की यह परंपरा समाप्त हो गई। कहावत का अर्थ है कि समझदार व्यक्ति बेवजह पुरानी परंपराओं का अंधानुकरण नहीं करता।

: 328 : सहरी खाये सो रोजा रक्खे

रमज़ान का महीना था। मियां साहब हर दिन सूरज निकलने से पहले अच्छी तरह पेट भरकर सहरी खाते और फिर पूरे दिन रोज़े की पाबंदी निभाते। मगर खाने-पीने के बड़े शौकीन थे, इसलिए सहरी में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

एक दिन मियां साहब ने बड़ी मेहनत से सहरी का पूरा इंतज़ाम किया, मगर जैसे ही वह वहाँ से हटे, उनका पालतू कुत्ता झट से थाली पर टूट पड़ा और सारी सहरी चट कर गया!

मियां साहब के तो होश उड़ गए!। अब उनका पूरा दिन भूखे रहने का क्या मतलब था! उन्होंने कुत्ते को पकड़ा और उसे खिड़की की सलाखों से बाँध दिया।

फिर बोले, "अबे बदमाश! तूने मेरी सहरी खा ली, तो अब

रोज़ा भी तुझे ही रखना पड़ेगा!" बस, इस तरह मियां साहब ने खुद को रोज़ा रखने की मुसीबत से बचा लिया। जो लोग चालाकी से अपने कर्तव्यों से बचने की कोशिश करते हैं उन के लिए मजाक में यह कहावत कही जाती है।

: 329 : सहरी भी न खाऊं तो काफ़िर न हो जाऊं

रमज़ान का महीना था। मस्जिद के बाहर एक बड़े चौबारे में गाँव के सभी मुसलमान इकट्ठे होकर सहरी खा रहे थे। ताज़ा पराठे, दूध, खजूर और फलों से थालियाँ सजी हुई थीं। सभी लोग पूरे दिन के रोज़े की तैयारी में थे, इसलिए दिल खोलकर खा रहे थे।

इसी भीड़ में एक शख्स भी बैठा था, जो बड़े मजे से सहरी का आनंद ले रहा था। वह पराठे तोड़ता, चटनी लगाता और लज़ीज़ पकवानों पर हाथ साफ करता जा रहा था।

तभी किसी ने गौर किया कि यह आदमी तो रोज़ा नहीं रखता! बस, फिर क्या था? सारे रोज़ेदारों ने एक साथ सवाल दाग़ दिया, "अरे मियाँ! तुम तो रोज़ा रखते नहीं, फिर सहरी क्यों खा रहे हो?"

वह शख्स बिना घबराए, शांति से बोला, "भाइयों, मैं नमाज़ भी नहीं पढ़ता, रोज़ा भी नहीं रखता। अब अगर सहरी भी न खाऊं, तो काफ़िर नहीं हो जाऊंगा?"

उसकी बात सुनकर सब एक पल को चौंक गए, फिर पूरी महफ़िल में ठहाके गूंज उठे! कोई कुछ कहता, इससे पहले ही वह मज़े से आखिरी कौर निगलकर उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे चलता हुआ वहाँ से निकल गया।

कुछ लोग धर्म की परंपराओं को निभाने के बजाय सिर्फ रस्मों का मजा लेने में ही यकीन रखते हैं। यह कहावत ऐसे ही लोगों पर तंज़ करती है!

: 330 : सांच को आँच नहीं

(कहानी में यह माना गया है कि असली ऊन का कम्बल आग नहीं पकड़ता। मालूम नहीं इस में कितना सच है)।

बहुत समय पहले की बात है। एक नगर में एक जुलाहा रहता था। उसका काम था–ऊन से बढ़िया कम्बल बुनना। कम्बल ऐसे कि ठंड में शरीर को ढँक लें और देखने में भी मज़बूत और सुन्दर। पर उसकी सबसे बड़ी पूँजी उसकी ईमानदारी थी। वह मिलावट नहीं करता था, धोखा नहीं देता था। एक दिन उसने नगर के एक साहूकार को दो उम्दा कम्बल दिए। साहूकार ने कहा, “दो दिन बाद आना, तब पैसे ले जाना।” जुलाहा मान गया।

दो दिन बाद वह अपने पैसे लेने पहुँचा। साहूकार ने बड़ी बेरुखी से कहा, "अरे भाई, मेरे गोदाम में आग लग गई थी। दोनों कम्बल जल गए। इसका मतलब तुम्हारे कंबल नकली थे। अब मैं पैसे क्यों दूँ?"

यह सुनकर जुलाहा घबराया नहीं। शांत स्वर में बोला, "सेठ जी, यह नहीं हो सकता। मेरा धंधा सच्चाई पर चलता है। असली कम्बल में आग नहीं लगती।"

साहूकार हँस पड़ा और बोला, "अपनी बात को साबित करो"

जुलाहे के कंधे पर एक कम्बल पड़ा था। उसने उसे सामने रखते हुए कहा, "लीजिए, इसी में आग लगाकर देख लीजिए।"

अब तो आस-पास के लोग भी तमाशा देखने के लिए इकट्ठा हो गए।

साहूकार ने माचिस जलाई, दीया जलाया, आग दिखाने की काफी कोशिश की–पर कम्बल न जला, न सुलगा। लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। तब जुलाहे ने धीरे से कहा, "याद रखिए सेठ जी–साँच को आँच नहीं।

साहूकार को झख मार कर दोनों कम्बलों की पूरी कीमत चुकानी पड़ी।

: 331 : सांची कहें तो मौसी का काजल

किसी गाँव में एक सज्जन रहते थे। स्वभाव ऐसा कि जो अपने को सच लगे, वही मुँह से बोल दें, न लाग-लपेट, न घुमा-फिरा कर बात। इसी आदत के कारण गाँव वालों ने उनका नाम रख दिया–"साँचेरैया"।

साँचेरैया हमेशा सच बोलते थे, सामने वाला खुश हो रहा है या नाराज़ इससे उन्हें फर्क नहीं पड़ता था।

एक बार साँचेरैया अपनी मौसी के यहाँ पहुँचे। मौसी का घर तो अपने घर जैसा ही समझा जाता है, इसलिए उन्होंने दरवाज़ा खटखटाने की ज़हमत नहीं उठाई। चुपचाप दरवाज़ा खोला और अंदर पहुँच गए।

अंदर का दृश्य देखकर वे ठिठक गए। मौसी बड़े ठाठ से श्रृंगार कर रही थीं–और मौसा वहीं खड़े होकर मुस्करा रहे थे। उस जमाने की सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार स्त्रियों के श्रृगार करने के समय उनके पति का वहाँ खड़े रहना आपत्तिजनक और मर्यादाहीन आचरण माना जाता था।

साँचेरैया ने न कुछ कहा, न कोई राम राम, पांय लागन कही बस उल्टे पाँव बाहर लौट आए और चुपचाप दरवाज़े पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद मौसी बाहर आईं। उन्हें दरवाज़े पर बैठे देखकर बोलीं–"अरे! साँचेरैया! तू कब आयो?"

साँचेरैया बिना सोचे तुरंत बोल पड़े, "जब तुम काजल लगा रही थीं और मौसा वहीं खड़े हँस रहे थे।" इतना सुनते ही मौसी के तो तेवर ही बदल गए। "अरे तेरो सत्यानास हो!" "मौसी से हँसी करता है!" यह कहते हुए वे साँचेरैया को मारने दौड़ीं। अब साँचेरैया क्या करते! जान बचाकर वहाँ से भाग खड़े हुए।

उसके बाद से जब कभी सांचरैया को सच बोलने की वजह से किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता, वह हँसकर कहते, "सांची कहें तो मौसी का काजल।"

: 332 : सावन में गधा उदासा

गधे के गधेपन पर एक कहानी कही जाती है। एक बार एक गधा सावन के महीने में जंगल में घूम रहा था। चारों ओर हरी-हरी घास खिली हुई थी, और सब कुछ हरा-भरा नजर आ रहा था। मगर गधे का दिल में ख़ुशी नहीं थी। वह इस सोच में डूबा हुआ था कि इतनी सारी घास को वह अकेले कैसे खा पाएगा? वह सोच कर चिंता से दुबला हुआ जा रहा था कि अब मुझे इसे इतनी सारी घास खत्म करने का बोझ उठाना पड़ेगा।

फिर वैशाख का महीना आया। अब मैदान सूखने लगे और घास कम हो गई।

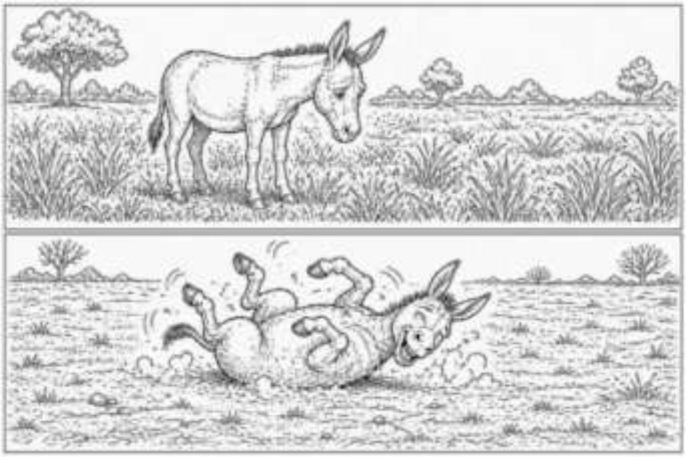

गधा अपनी खुशी में इतराता हुआ सोचने लगा, "अरे वाह! मैंने सारी घास खा ली है, अब क्या फिक्र!" इसीलिए गधे को वैशाख नंदन कहते हैं। कोई व्यक्ति बहुत सी सुविधाएं मिलने के बाद भी उदास हो तो यह कहावत कहकर उसका मजाक उड़ाया जाता है।

: 333 : सास मर गई, तूम्बे में आत्मा

कोई बूढ़ी औरत अपनी बहू को बहुत तंग किया करती थी। जब वह मरने लगी तो बहू से बोली कि देखो, मरने के बाद मैं अपनी आत्मा घर में रखे तूम्बे में बंद कर जाऊंगी। तुम उस तूम्बे को ही सास समझना और हर काम उससे पूछकर किया करना। बहू के अन्धविश्वासी मन में सास का इतना खौफ था कि उसके मर जाने पर वह ऐसा ही करने लगी। हर काम करने से पहले वह तूम्बे के पास जाकर खड़ी हो जाती और पूछती, "सास जी, यह काम मुझे कैसे करना चाहिए?"

एक दिन जब वह तूम्बे के पास खड़ी होकर कुछ पूछ रही थी, तब संयोग से उसकी एक पड़ोसिन वहां आ गई। उसने यह तमाशा देखा तो पहले तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। फिर जब बहू ने पूरी बात बताई तो उसने

हँसते हुए तूम्बे को जमीन पर पटक चकनाचूर कर दिया। उस दिन के बाद से बहू को तूम्बे रूपी सास के आतंक से मुक्ति मिल गई और वह आनंदपूर्वक रहने लगी।

: 334 : सिखाए पूत दरबार नहीं चढ़ते

कहा जाता है कि एक पिता ने अपने पुत्र को दरबार में भेजने से पहले उसे कुछ बातें रटाकर सिखा दीं। उसने सोचा कि इन्हीं बातों के आधार पर उसका पुत्र वहाँ सफल हो जाएगा।

पुत्र दरबार में पहुँचा। प्रारंभ में उसने वही रटी हुई बातें दोहरा दीं, परंतु जब उससे अलग-अलग प्रश्न पूछे जाने लगे, तो वह उलझ गया। क्योंकि उसके पास अपनी ओर से उत्तर देने की क्षमता नहीं थी।

दरबारियों ने उसकी स्थिति देखकर समझ लिया कि वह केवल सिखाई हुई बातें ही दोहरा सकता है, उसके पास स्वयं की समझ और विवेक नहीं है। तभी यह कहावत बनी।

कहावत का अर्थ है कि जो व्यक्ति केवल रटकर या दूसरों के सहारे काम करता है, वह महत्वपूर्ण परिस्थितियों में सफल नहीं हो पाता; अपनी बुद्धि और समझ आवश्यक होती है।

: 335 : सींख सड़प्पे तो लाला जी के साथ गए, अब तो देखो और खाओ

यह कहानी एक कंजूस परिवार की है, जो अपनी कंजूसी के कारण घर में ही हंसी का कारण बन गए थे। एक समय की बात है, एक कंजूस आदमी था, जिसने अपने घर में यह नियम बना रखा था कि जब भी घी का बर्तन निकाला जाता, तो उसमें सींक डुबाकर जितना घी बाहर आता, उतना ही घर के लोग खाते।

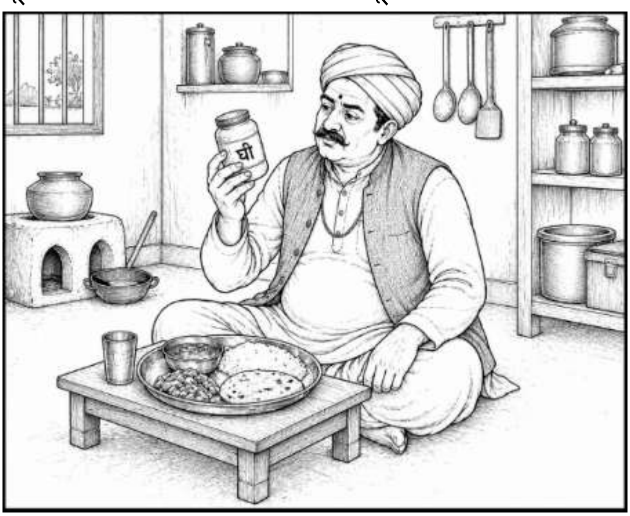

लेकिन जब वह आदमी मर गया, तो उसका बेटा उससे भी बढ़कर कंजूस निकला। उसने अपने घर

में नया नियम लागू किया। उसने घी के बर्तन का मुंह बंद कर दिया और उस पर पक्की डाट लगा दी। फिर उसने घरवालों से कहा, "देखो, लाला जी के ज़माने में तुम लोग सींख डुबो-डुबो कर खूब घी खाते रहे, अब तो बस घी को देखो और खाना खाओ।" यानी घी का बर्तन खुला नहीं रहेगा, अब कोई भी घी नहीं खा सकता, बस उसे देख ही सकते हो।

इसी प्रकार एक बंगाली कंजूस व्यक्ति की भी कथा है। वह नदी के किनारे बैठकर भात खाया करता था और हर कौर के साथ नदी की ओर हाथ बढ़ाकर कहता था, "ऊ मशली, ई भात!" यानी वह मछली को देखकर भात का आनंद लिया करता था। मछली तो नदी में होती थी, लेकिन वह कंजूस मछली को देख-देख कर ही पेट भरता था। बहुत कंजूस लोगों का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 336 : सीख उसी को दीजिए, जा को सीख सुहाए

बया का घोंसला हम सभी ने देखा है कि कितने बढ़िया तरीके से बनाती है। उस में गर्मी से, सर्दी से, बरसात से सब से बचने का इंतजाम होता है।

एक बार जाड़े की बरसात के दौरान एक बया अपने घोसले से बाहर निकली तो क्या देखती है कि एक बंदर पेड़ की डाल पर बैठा वरिश में भीग कर थरथर काँप रहा है। उसे बंदर की हालत पर दया भी आई और उसकी नासमझी पर गुस्सा भी।

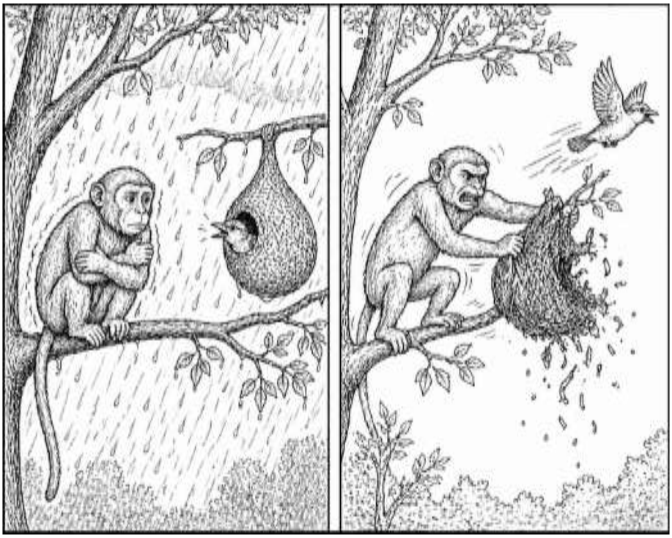

उसने बंदर से कहा - भैया! तुमने अपने लिए घर क्यों नहीं बनाया। बंदर इस बात से चिढ़ गया और बोला, तुझे क्या मतलब मैं कैसे भी रहूं। लेकिन बया नहीं मानी, उसने फिर से बंदर को नसीहत देने की कोशिश की - मानुष जैसे हाथ पांव हैं, मानुष जैसी काया, चार महीने वर्षा बीती, छप्पर क्यों नहीं छाया।

बंदर गुस्से में उस पर झपटा। बया ने उड़ कर अपनी जान तो बचा ली पर बंदर ने खिसिया कर उस का घर तोड़ दिया।

: 337 : सुख मानो तो सुक्ख है, दुख मानो तो दुक्ख

एक आदमी अपनी छोटी सी झोपड़ी में अपने परिवार के साथ रहता था। उसकी एक पत्नी थी और सात बच्चे थे। उसने कुछ मुर्गियां भी पाल रखी थी जिन्हें वह जंगली जानवरों और चोरों के डर से अपनी झोपड़ी के अंदर ही रखता था। वे सारी मुर्गियां दिन भर कुटकुट करके शोर मचातीं और गंदगी फैलाती थीं। बरसात के दिनों में झोपड़ी में पानी टपकता था जिससे जिंदगी और भी दूभर हो जाती थी। उसके पास एक बकरी भी थी जिसको वह मजबूरी में बाहर ही बांध देता था।

एक बार उस गांव के पास जंगल में एक मंदिर में किन्हीं सिद्ध महात्मा ने डेरा डाला। गाँव के लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए उन के पास जाने लगे। एक दिन वह आदमी बहुत परेशान होकर उन महात्मा जी के पास गया और रो-रो कर उनसे फरियाद की। उसने कहा महात्मा जी मेरी जिंदगी बिल्कुल नर्क है। एक छोटी सी झोंपड़ी में नौ परिवार के लोग, बारह मुर्गियां और दो मुर्गे। हम कैसे

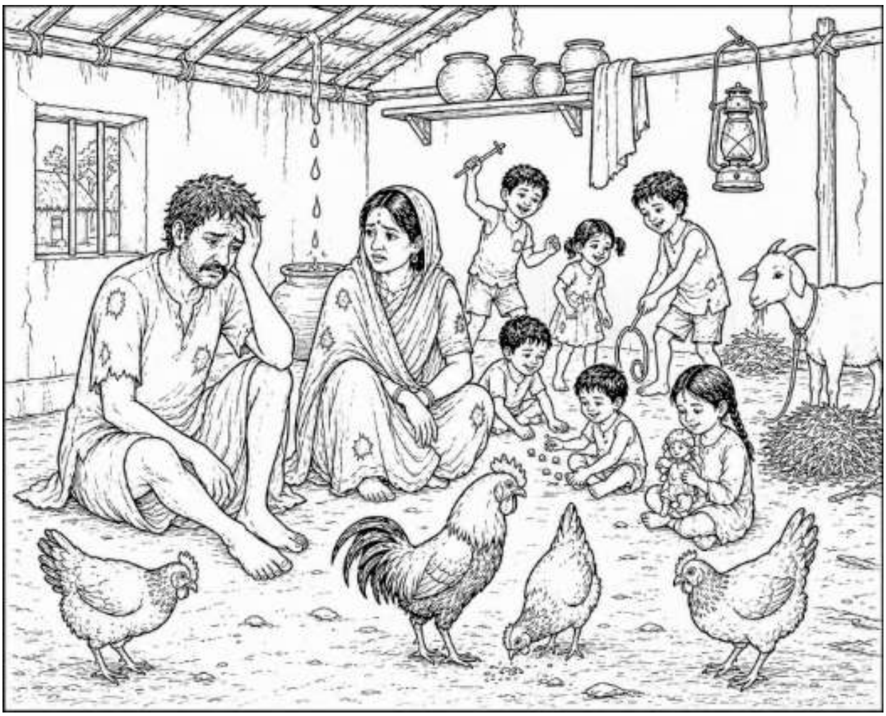

अपनी जिंदगी काटें।

महात्मा जी ने उसकी पूरी बात सुनी और बोले, “जो मैं कहूंगा वह करोगे?” उस आदमी ने कहा, “जी महाराज बिल्कुल करूंगा।” महात्मा जी ने कहा, “बकरी को भी अंदर बांध लो।”

वह बोला, “महात्मा जी फिर तो हम लोग बिल्कुल ही मर जाएंगे।” महात्मा जी ने कहा, “जैसा मैं कह रहा हूं वैसा ही करो और एक हफ्ते बाद मेरे पास आओ।”

एक हफ्ते बाद वह आदमी महात्मा जी के पास रोता हुआ आया और उनके पैर पकड़ कर लेट गया। बोला, “महात्मा जी हम सब वाकई मर जाएंगे। झोपड़ी में वैसे ही जगह नहीं थी, अब यह बकरी और अंदर आ गई। यह बदबू करती है, इस ने मिंगनी करके सारी झोपड़ी भर दी है। अब तो बिल्कुल नहीं रहा जाता।”

महात्मा जी बोले, “ठीक है बकरी को बाहर बांध दो और एक हफ्ते बाद मेरे पास आकर बताओ कि जिंदगी कैसी चल रही है।”

एक हफ्ते बाद वह आदमी फिर से महात्मा जी के पास आया तो काफी खुश नजर आ रहा था। महात्मा जी ने पूछा, “कहो क्या हाल है?” वह बोला, “बहुत अच्छे हैं महाराज जी, कोई बकरी सकरी नहीं केवल हम नौ लोग और थोड़ी सी मुर्गियाँ। हम सब बहुत सुखी हैं।” कहावत का अर्थ है कि सुख और दुःख बहुत कुछ मनुष्य की मानसिक दशा पर निर्भर करते हैं।

: 338 : सुन रे ढोल, बहू के बोल

कोई बूढ़ी औरत अपने लड़के से उसकी स्त्री की हमेशा शिकायत किया करती थी। बहू बदचलन थी, पर लड़के को लगता था कि माँ केवल द्वेष वश ऐसा कहती है। उस ने कभी माँ की बात पर ध्यान नहीं दिया और अपनी पत्नी का बचाव करता रहा।

कुछ दिनों बाद बहू गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उस समय बीमारियों के कोई ख़ास इलाज तो होते नहीं थे। लिहाजा झाड़ फूँक और ग्रह शांति के लिए कुल पुरोहित को बुलाया गया। कुल पुरोहित ने आकर बहू से कहा कि तुम्हारा अंतिम समय निकट है। तुमने अब तक जितने अपराध किए हैं, उन्हें मेरे सामने स्वीकार कर लो तो नरक से बच जाओगी।

बहू ऐसा करने को तैयार हो गई। तब बुढ़िया ने अपने लड़के को एक बड़े ढोल में छिपा दिया, जो वहीं रोगी के पास रखा हुआ था। इधर जब स्त्री अपने किए सभी दुष्कर्मों को एक-एक करके पुरोहित के सामने स्वीकार कर रही थी, तब उसकी सास उक्त वाक्य कहकर ढोल बजाती जाती थी, और कहती जाती थी - रन रे ढोल बहू के बोल, जिससे उसका लड़का अपनी दुराचारिणी स्त्री के सभी कर्मों को ध्यान से सुन ले और बहू को पता न चले कि उसका पति सब सुन रहा है।

किसी व्यक्ति को किसी गलत बात के लिए आगाह करना हो तो यह कहावत प्रयोग की जाती है।

: 339 : सुनार अपनी माँ की नथ में से भी चुराता है

बादशाह का दरबार लगा हुआ था। दरबारियों के बीच बैठा एक चतुर सुनार अपनी कारीगरी के साथ-साथ अपनी चालाकी के लिए भी मशहूर था। उसी दौरान बादशाह ने उससे एक सवाल पूछा, "बताओ, तुम एक रुपये में कितना सोना बचा सकते हो?"

सुनार मुस्कुराया और बोला, "जहाँपनाह, पूरे सोलह आने!" यह सुनकर बादशाह को यकीन नहीं हुआ। उसने आदेश दिया कि सुनार को राजमहल में ही रहकर एक सोने की मूर्ति बनानी होगी, और इस दौरान उस पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी। लेकिन सुनार भी कम नहीं था। उसने पहले से ही एक योजना बना ली।

उसने अपने घर पर ठीक वैसी ही एक मूर्ति पीतल की बनाई और उसे अपनी पत्नी के पास दही की मटकी में डालकर छोड़ दिया।

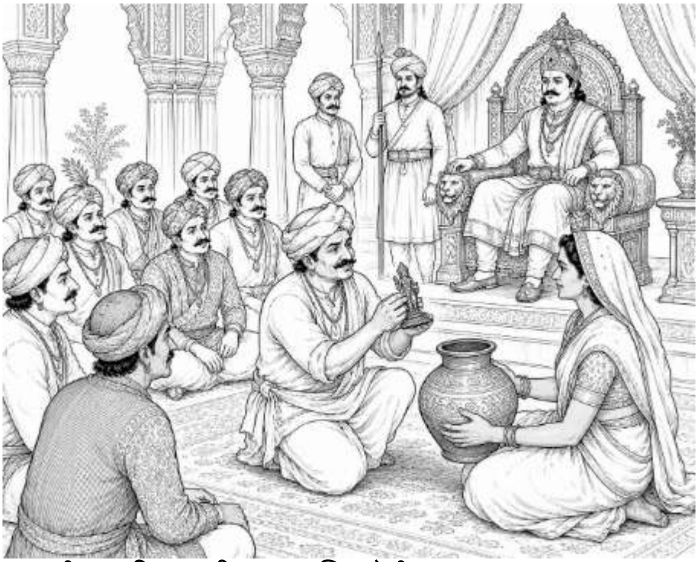

अब सुनार राजमहल पहुँचा और दरबार के सामने सोने की मूर्ति बनाने लगा। कुछ दिनों की मेहनत के बाद जब सब के सामने सामने मूर्ति तैयार हो गई, तो उसने कहा, "जहांपनाह, अब इसे खटाई में साफ करना होगा, तभी इसकी असली चमक निकलेगी!"

उसी समय सुनार की पत्नी, जिसे पहले से समझा दिया गया था, सड़क पर "दही लो, खट्टा दही लो!" की आवाज़ लगाती हुई राजमहल के पास आई। सुनार ने तुरंत कहा, "इस मूर्ति को चमकाने के लिए दही की खटाई ही ठीक रहेगी!"

बादशाह की आज्ञा मिलते ही दही खरीदा गया। सुनार ने दही की मटकी ली, उसमें सोने की मूर्ति डाल दी और फिर उसी मटकी से पीतल की मूर्ति निकालकर सबके सामने रख दी।

इस तरह, असली सोने की मूर्ति सुनार के घर पहुँच गई, और राजमहल में सबको नकली मूर्ति पकड़ाई गई। जब बादशाह ने सुनार से पूछा कि उसने यह कैसे

किया, तो उसने हंसते हुए कहा, "जहांपनाह, सुनार तो अपनी माँ की नथ में से भी चुरा सकता है!"

: 340 : सोटे अब चल तेरी बारी

एक बार एक शेखचिल्ली ने - अपनी मां से कहा कि मैं देश-भ्रमण के लिए जाऊंगा, मेरे लिए रास्ते में खाने के लिए कुछ बना दे। उसकी मां जानती थी कि यह थोड़ी दूर जा कर ही लौट आएगा इसलिए उस ने चार रोटियां ही बना कर दीं, जिन्हें लेकर वह यात्रा पर चल पड़ा। पहले मुकाम पर ही एक पेड़ के नीचे जाकर बैठा और रोटियां निकालकर कहने लगा-एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों को ही खा जाऊं।

संयोग की बात कि उस पेड़ पर चार परियां रहती थीं। शेखचिल्ली की अजीब सी शक्ल देख कर और उस की बात सुनकर उन्होंने समझा कि अवश्य यह कोई बड़ा दैत्य है, जो हम चारों को ही खाना चाहता है। इसलिए वे उसके सामने आकर बोलीं कि अगर आप हमें प्राणदान दें, तो हम आपको एक बहुत अनोखी वस्तु भेंट करेंगी। शेखचिल्ली वैसे तो महामूर्ख था, लेकिन यह बात उसकी समझ में फौरन आ गई और वह इसके लिए राजी हो गया। तब परियों ने उसे एक जादू की कड़ाही दी और कहा कि आप इससे जितनी भी पूड़ियां मांगेंगे, यह आपको देगी।

शेखचिल्ली कड़ाही पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे लेकर घर की तरफ़ लौट पड़ा। चलते-चलते एक जगह रात हो गई तो वह एक सराय में ठहर गया। वहां उसने कड़ाही की सब विशेषता भटियारे को बता दी। चालाक भटियारे ने चुपचाप उस कड़ाही को उठाकर उसके स्थान पर एक दूसरी कहाड़ी रख दी। शेखचिल्ली को इसका कुछ पता नहीं चला।

वह जब घर पहुंचा, तो वही कड़ाही मां को देकर बोला- इसकी परीक्षा करो, पर जब कड़ाही चूल्हे पर चढ़ाई गई और पूड़ियां मांगी गई तो कुछ भी न मिला। शेखचिल्ली बड़ा निराश हुआ। दूसरे दिन वह फिर चार रोटियां साथ ले उसी पेड़ के नीचे आकर बैठ गया और फिर अपनी उसी बात को दुहराया।" परियां बड़ी हैरान हुई कि आखिर क्या बात है। जब उन्हें सारा किस्सा मालूम हुआ, तो इस बार उसको एक रस्सी और सोंटा देकर उन्होंने कहा कि इसकी सहायता से तुम्हारी कड़ाही मिल जाएगी।

शेखचिल्ली उन दोनों चीजों को लेकर फिर उसी सराय में गया और रस्सी को जमीन पर बिछाकर बोला बांध ले चोर को। रस्सी ने उस भटियारे को तुरंत बांध लिया। फिर सोंटे को जमीन पर पटककर उसने कहा-सोंटे, अब चल तेरी बारी। उसके इतना कहते ही सोंटा उसको पीटने लगा। मार से घबरा कर भटियारे ने तब उसकी कड़ाही वापिस कर दी, जिसे लेकर वह खुशी-खुशी घर आया।

जब साम, दाम और भेद से काम न चले और सब तरह से हारकर दंड नामक अंतिम उपाय काम में लाना पड़े तो यह कहावत कही जाती है।

: 341 : सोने के अंडे देने वाली मुर्गी का पेट न फाड़ो

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसकी आमदनी का कोई खास जरिया नहीं था, लेकिन एक दिन उसे एक अजीबो-गरीब मुर्गी मिली। वह हर दिन एक सोने का अंडा देती थी!

किसान पहले तो हैरान रह गया, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि यह तो ईश्वर का वरदान है! वह रोज उस अंडे को बेचता और आराम से रहने लगा। कुछ समय बाद किसान के मन में एक विचार आया—"अगर यह मुर्गी रोज़ एक अंडा दे सकती है, तो इसके पेट में और भी कितने अंडे होंगे!"

उसने सोचा, "रोज़-रोज़ इंतज़ार करने से अच्छा है कि एक ही दिन में सारे सोने के अंडे निकाल लूँ और तुरंत ही अमीर बन जाऊँ!" बस, फिर क्या था! उसने छुरा उठाया और बिना सोचे-समझे मुर्गी का पेट चीर दिया। लेकिन जैसे ही उसने पेट देखा, उसके होश उड़ गए!

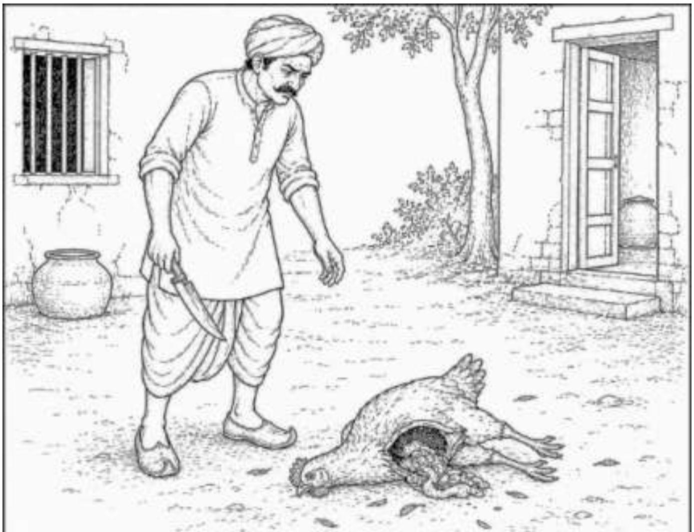

अंदर न कोई अंडा था, न सोना! अब उसकी अनमोल मुर्गी भी मर चुकी थी। किसान का दिल बैठ गया। इसलिए कहा जाता है, "लालच बुरी बला है!" जो लोग जल्दी अमीर बनने के चक्कर में मूर्खतापूर्ण फैसले ले लेते हैं, वे अक्सर अपना सब कुछ गँवा बैठते हैं।

: 342 : सोने वाले की भैंस तो पाड़ा ही जनेगी

गाँव में दो पड़ोसी थे—रामू और श्यामू। दोनों की भैंसें गर्भवती थीं और किसी भी दिन ब्याहने वाली थीं। दोनों अपनी-अपनी भैंसों की देखभाल कर रहे थे और बेसब्री से उनके ब्याहने का इंतज़ार कर रहे थे।

रात काफी हो चुकी थी, लेकिन भैंसों के ब्याहने के कोई संकेत नहीं दिख रहे थे। रामू ने श्यामू से कहा, "भाई, दोनों के जागने से क्या फ़ायदा? एक आदमी सो जाए, और जब भैंस ब्याहने लगे तो उसे जगा लिया जाए।" श्यामू को यह बात ठीक लगी, और उसने रामू को कहा, "ठीक है, तू सो जा, मैं जागता हूँ। जब ज़रूरत पड़ेगी, तुझे जगा दूँगा।"

रामू चैन से सो गया, और श्यामू जागकर अपनी और रामू की भैंस दोनों पर नज़र रखने लगा। श्यामू की भैंस ने एक पाड़ा (नर बछड़ा) जना और रामू की भैंस ने एक पाड़ी (मादा बछड़ी) को जना।

गाँव में सब जानते हैं कि पाड़ी की कीमत पाड़े से बहुत अधिक होती है, इसलिए श्यामू ने एक चाल चली। उसने धीरे से पाड़ी को अपनी भैंस के पास कर दिया और पाड़े को रामू की भैंस के पास।

इसके बाद उसने रामू को जगाया और कहा, "भाई, तेरी भैंस ने पाड़ा जना है!" रामू ने जैसे ही देखा, उसे कुछ अजीब लगा। उसने संदेह से कहा, "अरे, यह पाड़ी तो मेरी भैंस जैसी लग रही है!"

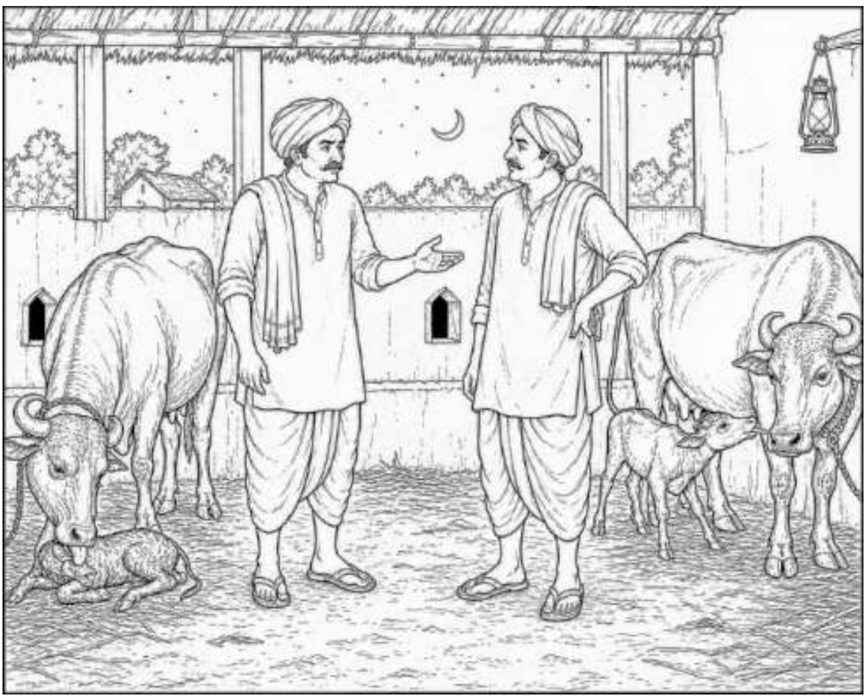

पर श्यामू ने उसे समझाते हुए कहा, "नहीं-नहीं, तेरी भैंस तो पाड़ा ही ब्याई है।" इतने में एक बुज़ुर्ग गाँववाला वहाँ आ गया। उसने पूरी बात सुनी और मुस्कुराते हुए बोला, "बेटा, चाहे सच कुछ भी हो, पर सोने वाले की भैंस तो पाड़ा ही जनेगी!"

कहावत का अर्थ है कि जागते रहते हैं, सतर्क रहते हैं, वे ही फायदा उठाते हैं। लेकिन जो लापरवाह रहते हैं, वे हमेशा धोखा खा जाते हैं!

: 343 : सौ का भाई साठ

एक जाट ने गाँव के साहूकार से सौ रुपये उधार लिए थे। महीने-दर-महीने बीतते गए, लेकिन उसने पैसे लौटाने का नाम ही नहीं लिया। साहूकार रोज़-रोज़ उसे टोकता, लेकिन वह हर बार कोई न कोई बहाना बनाकर बात टाल देता।

एक दिन साहूकार गुस्से में खुद उसके घर जा पहुँचा और बोला, "भाई, बहुत हो गया! अब तुम्हें आज ही मेरे सौ रुपये चुकाने पड़ेंगे!" जाट बिल्कुल घबराया नहीं। उल्टा हंसते हुए बोला,

"अरे साहूकार जी, इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हो? सौ रुपये मांग रहे हो, लेकिन सोचो, सौ और साठ तो भाई-भाई हैं। जब सौ और साठ में कोई फर्क ही नहीं, तो मुझे असल में सिर्फ साठ रुपये देने चाहिए!" साहूकार कुछ कहता, इससे पहले ही उसने आगे जोड़ा, "अब इन साठ में से आधा रकम तो छूट मिलनी चाहिए, तो रह गए सिर्फ तीस रुपये!"

"अब इन तीस में से दस रुपये मैं कभी बाद में दे दूंगा, दस रुपये किसी दूसरे से दिलवा दूंगा, और बाकी दस रुपये का क्या देना-लेना, बस समझो हिसाब बराबर हो गया!"

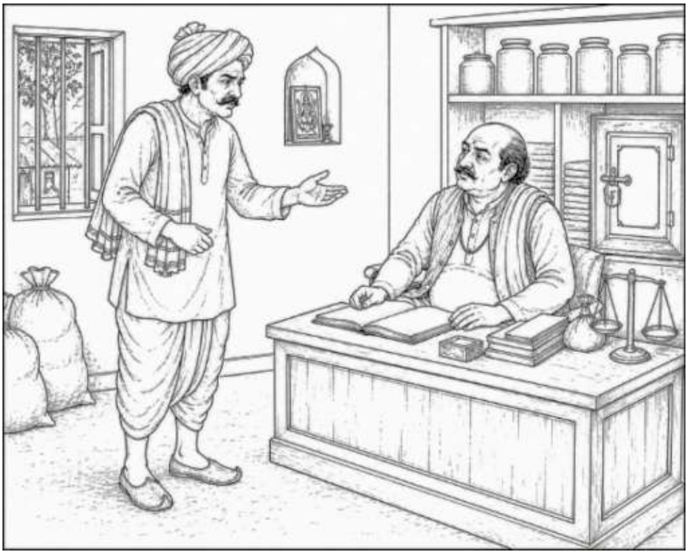

साहूकार नया फार्मूला सुनकर अवाक रह गया। वह समझ ही नहीं पाया कि उसका कर्ज़ वसूली से पहले ही माफ कैसे हो गया! जब भी कोई कर्ज़ चुकाने से बचने के लिए बहाने गढ़ता है, तो यही कहावत याद आती है–सौ का भाई साठ!"

: 344 : सौ नकटों में एक नाक वाला नक्कू

एक ऐसे नगर का उल्लेख मिलता है, जहाँ सभी लोग बिना नाक के थे। यह स्थिति वहाँ इतनी सामान्य थी कि किसी को इसमें कोई विचित्रता नहीं लगती थी।

एक दिन वहाँ एक ऐसा व्यक्ति पहुँचा, जिसकी नाक सामान्य और लंबी थी। उसे देखते ही नगर के लोग आश्चर्यचकित हो गए। वे सब उस व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने लगे और उसे 'नक्कू' कहकर चिढ़ाने लगे।

वह व्यक्ति, जो वास्तव में सामान्य था, उस वातावरण में असामान्य प्रतीत होने लगा। इसी प्रसंग से यह कहावत प्रचलित हुई।

कहावत का अर्थ है कि जहाँ सभी लोगों में कोई कमी हो तो जिस में कोई कमी न हो वह व्यक्ति ही उपहास का पात्र बन जाता है।

: 345 : सौ बार चोर की, एक बार शाह की

एक सेठ की दुकान पर एक नौकर काम करता था। उसकी एक बुरी आदत थी, वह रोज़ चोरी से गुड़ खा लेता था! सेठ सोच रहा था, "हर रोज़ घड़ा खाली होता जा रहा है, कोई न कोई तो गुड़ चुरा रहा है!"

सेठ ने चोर को पकड़ने के लिए एक चाल चली। उसने गुड़ के घड़े को हटा दिया और उसकी जगह बिरोजे (एक तरह का चिपचिपा गोंद) से भरा घड़ा रख दिया। अगली सुबह, नौकर रोज़ की तरह आया, और बिना देखे सीधे हाथ घड़े में डाल दिया। उसने मुट्ठीभर बिरोजा निकालकर मुँह में रख लिया, यह सोचकर कि यह गुड़ है!

जैसे ही उसने इसे चबाने की कोशिश की, उसका मुँह बुरी तरह चिपक गया। वह बोल भी नहीं पा रहा था और इधर-उधर हाथ-पैर मारने लगा। सेठ ने तुरंत उसे पकड़ लिया और गुस्से में कहा, "हर रोज़ तू मेरी दुकान से चोरी करता था, आज देख, खुद अपने जाल में फँस गया!"

इसके बाद सेठ ने उसकी खूब मरम्मत की और उसे दुकान से निकाल दिया।

कहावत का अर्थ है कि चोर चाहे कितनी भी चालाकी कर ले, लेकिन अंत में पकड़ा ही जाता है।

: 346 : सौ सयाने एक मत

(निन्नानवे घड़े दूध में एक घड़ा पानी क्या जाना जाय?)

एक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा, "बीरबल, दुनिया में सबसे ज्यादा चतुर लोग कौन होते हैं?" बीरबल तुरंत बोले, "जहाँपनाह, सबसे ज्यादा चतुर तो ग्वाले होते हैं!" अकबर को यह जवाब कुछ अजीब लगा। उसने कहा, "अगर ऐसा है तो इसे साबित करो!"

बीरबल ने आगरा के सारे ग्वालों को बुलवाया और उनसे कहा, "बादशाह सलामत का आदेश है कि इस हौज़ (तालाब) को आज रात दूध से भरना है। हर ग्वाले को एक-एक घड़ा दूध हौज़ में डालना होगा।" ग्वाले यह सुनकर राज़ी हो गए और रात को एक-एक घड़ा दूध डालने की तैयारी करने लगे।

लेकिन हर ग्वाले के मन में एक ही ख्याल आया, "अरे! इतने सारे लोग दूध डालेंगे, अगर मैं सिर्फ एक घड़ा पानी डाल दूँ, तो किसी को क्या पता चलेगा?"

यही सोचकर रात के अँधेरे का फायदा उठाते हुए हर ग्वाले ने दूध की जगह पानी ही डाल दिया! अगली सुबह, जब अकबर और बीरबल हौज़ देखने पहुँचे, तो वे हैरान रह गए—पूरा हौज़ पानी से भरा था, दूध का नामोनिशान भी नहीं था!

कहावत का अर्थ है कि बुद्धिमान लोगों का सोचने का तरीका एक ही होता है।

: 347 : हंस बरन बैठक भई, सुआ बरन किलकोट, सिंह बरन गर्जन भई, गधा बरन भई लोट

यह कहावत शराबियों की महफ़िल का बड़ा ही रोचक और व्यंग्यपूर्ण वर्णन करती है। इसमें शराब पीने के बाद मनुष्य की अलग-अलग अवस्थाओं की तुलना विभिन्न पशुओं से की गई है।

शुरुआत में, लोग बहुत शालीनता से बैठते हैं, जैसे हंस। धीरे-धीरे चुस्कियाँ लेते हुए धीमे स्वर में बात करते हैं। वातावरण शांत रहता है।

कुछ देर बाद जब शराब का असर शुरू होता है, तो वही लोग तोतों की तरह चहचहाने लगते हैं। आवाज़ ऊँची हो जाती है, और आपस में बहस शुरू हो जाती है।

जैसे-जैसे नशा और चढ़ता है, माहौल बदल जाता है। अब वे शेर की तरह गरजने लगते हैं—जोर-जोर से बोलना, झगड़ना, यहाँ तक कि हाथापाई तक की नौबत आ

जाती है। और अंत में, जब नशा सिर पर चढ़ जाता है, तो हालत ऐसी हो जाती है कि वे गधों की तरह इधर-उधर लोट लगाने लगते हैं।

यह कहावत बताती है कि शराब का प्रभाव धीरे-धीरे व्यक्ति के व्यवहार को कैसे बदल देता है–शालीनता से शुरू होकर शोर, झगड़े और अंततः बेहोशी तक।

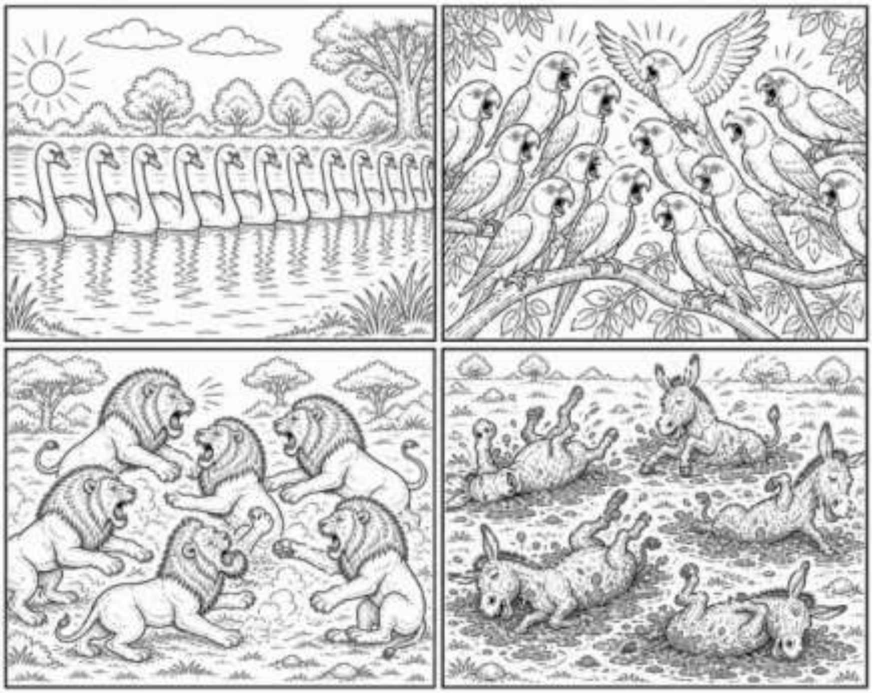

: 348 : हंसा थे सो उड़ गए कागा भये दिवान

किसी समय की बात है, एक निर्धन ब्राह्मण था, एक समय उस के घर की तंगी इतनी बढ़ गई कि भूख से मरने की नौबत आ गई। जब कहीं से कोई सहायता नहीं मिली, तो उसने सोचा–"ऐसे तिल-तिल मरने से अच्छा है कि जंगल के किसी जानवर का भोजन बन जाऊं। कम से कम मेरे मरने से किसी का पेट तो भरेगा!"

यह सोचकर ब्राह्मण जंगल में घूमता हुआ एक सिंह की मांद तक जा पहुंचा। जैसे ही सिंह ने उसे देखा, वह झपट कर उसे पकड़ने ही वाला था कि तभी उसके मंत्री हंस ने सिंह को रोका।

हंस बहुत दयालु था। उसने सिंह से कहा, "महाराज! यह ब्राह्मण देवता हैं, और आप इनके यजमान। यदि आपने इन्हें मार दिया, तो आपको पाप लगेगा।" सिंह ने हंस की बात मान ली और न सिर्फ ब्राह्मण को जीवनदान दिया, बल्कि उसे मांद में

पड़े मृत मनुष्यों के पुराने गहने और धन भी सौंप दिए ताकि वह अपने जीवन की कठिनाइयों से उबर सके।

ब्राह्मण के कुछ दिन उस धन से अच्छी तरह कट गए। पर कुछ समय बाद जब वह धन समाप्त हो गया, तो वह फिर से वह सिंह की मांद की ओर चल पड़ा, यह सोचकर कि इस बार भी सिंह दयालुता दिखाएगा। उसने सिंह के पास जा कर कहा, "हे वनराज यजमान, कृपया मेरी सहायता करो।"

लेकिन इस बार सिंह का मंत्री बदल चुका था! अब एक चालाक कौवा सिंह का मंत्री बन गया था। कौवे ने तुरंत सिंह से कहा, "महाराज! यह ब्राह्मण केवल अपना स्वार्थ देखता है। पहली बार बचकर गया तो फिर से लौट आया। ऐसे लोगों पर दया करना व्यर्थ है! इसे तुरंत मार डालना चाहिए!"

सिंह ने कौवे की बात पर विचार किया और ब्राह्मण को घूरते हुए कहा, "हंसा थे सो उड़ गए, कागा भये दिवान। जा बामन घर आपने, सिंह काके जजमान।।"

यह सुनकर ब्राह्मण वहां से भाग खड़ा हुआ। जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाए, तब यह कहावत कही जाती है।

: 349 : हमारे साथ रहोगे तो मजे में रहोगे

एक बार की बात है, शेखचिल्ली और एक जाट साथ-साथ सफर पर निकले। शेखचिल्ली अपनी आदत के अनुसार बड़ी-बड़ी बातें कर रहा था और जाट उसे मजे से सुन रहा था।

रास्ते में चलते-चलते अचानक शेखचिल्ली की नजर सड़क पर पड़ी एक मूंगफली पर पड़ी। उसने जाट से कहा, "अरे भाई, ज़रा यह मूंगफली उठा लो!" जाट को थोड़ा अटपटा तो लगा पर उसने झुककर मूंगफली उठा ली। अब शेखचिल्ली बोला, "अब इसे छील दो।" जाट ने मूंगफली छील दी। शेखचिल्ली फिर बोला, "अब इसे खा लो।"

जाट ने मूंगफली खा ली और सोचा कि अब शेखचिल्ली कुछ नया कहेगा। लेकिन जब उसने कुछ नहीं कहा, तो जाट ने पूछा, "अब क्या?" शेखचिल्ली बड़ी शान से बोला, "अब क्या, हमारे साथ रहोगे तो ऐसे ही मजे में रहोगे!"

कोई बहुत छोटा सा काम कर के किसी पर एहसान जता रहा हो तो मजाक में यह कहावत कही जाती है।

: 350 : हाथी खरीदना आसान है पर पालना मुश्किल

एक गांव में एक बड़े जमींदार रहते थे। एक दिन उनके घर एक आदमी हाथी बेचने आया। जमींदार का बेटा बहुत उत्सुकता से आगे बढ़ा और पूछा, "हाथी कितने का है?"

हाथी बेचने वाला बोला, "सिर्फ एक रुपये में!" लड़के को अपनी किस्मत पर यकीन ही नहीं हुआ। उसने खुशी-खुशी जमींदार की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा!

लेकिन जमींदार गंभीर थे। उन्होंने नकारते हुए सिर हिलाया और बोले, "बहुत महंगा है, नहीं ले पाएंगे!" लड़के को कुछ समझ नहीं आया, पर पिता की बात मानकर वह चुप रह गया।

कुछ महीने बाद फिर से एक आदमी हाथी बेचने आया। इस बार भी लड़के ने वही सवाल किया, "हाथी कितने का?" अबकी बार हाथी बेचने वाले ने जवाब दिया, "पूरा एक लाख रुपये!"

जमींदार बेटे की तरफ देखकर बोले, "ले लो, काम आएगा!"

लड़का हैरान रह गया। उसने तुरंत सवाल किया, "पिताजी, जब पिछले हाथी की कीमत सिर्फ एक रुपया थी, तब आपने कहा कि वह बहुत महंगा है। अब जब यह हाथी एक लाख का है, तब आप इसे खरीदने के लिए कह रहे हैं! ऐसा क्यों?"

जमींदार मुस्कुराए और बोले, "बेटा, हाथी खरीदना आसान है, पर पालना मुश्किल। जब हमारे पास उसे खिलाने के लिए पैसे नहीं थे, तब एक रुपये का हाथी भी महंगा था। लेकिन अब हम उसे संभाल सकते हैं, इसलिए लाख रुपये का भी सस्ता है!"

: 351 : हिजड़ों ने भला कभी काफिला लूटा है

किसी जमाने में एक गांव के पास से गुजरने वाला रास्ता बहुत बदनाम था। वहां से जो भी काफिला गुजरता, डाकू उसे लूट लेते।

गांव के कुछ हिजड़ों ने यह सब देखा तो उनके मन में भी लालच आ गया। उन्होंने सोचा, "जब गांव के दूसरे लोग लूट सकते हैं, तो हम क्यों नहीं?" रात के अंधेरे में सबने मिलकर डाकुओं जैसी वेशभूषा बनाई। किसी ने लकड़ी की तलवार उठा ली, किसी ने लाठी, और किसी ने रस्सी का ही चाबुक बना लिया। खुद को खतरनाक दिखाने के लिए वे चेहरों पर कालिख भी पोत लाए।

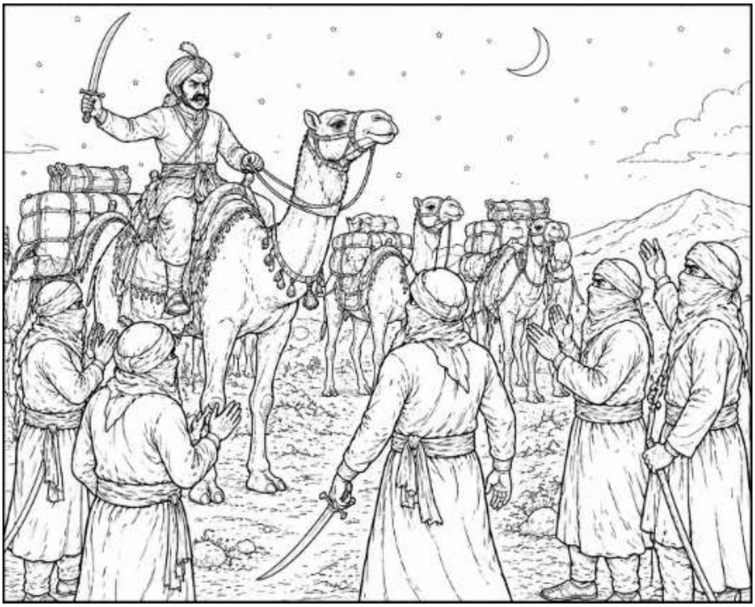

आधी रात को वे रास्ते के किनारे छिप गए। कुछ समय बाद, दूर से ऊंटों की घुंघरू की आवाज़ सुनाई दी। जैसे ही काफिला पास आया, वे जोश में चीखते हुए सामने कूद पड़े–"सुनो! अगर जान प्यारी है तो ऊंट यहीं छोड़कर भाग जाओ!"

उस स्थान का ऐसा आतंक छाया हुआ था कि काफिले में मौजूद व्यापारी डर के मारे ऊंटों को वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए। हिजड़ों ने एक-दूसरे को देखा और खुशी से मुस्कुराए–"अरे! ये तो सच में लूट हो गई!"

काफिले में एक राजपूत योद्धा भी था। उसने भागने के बजाय अपनी तलवार निकाल ली और गरजते हुए बोला–

"अगर मुझमें ज़रा भी राजपूती खून है, तो मैं भागूंगा नहीं! सामने आओ, मैं तुम्हारी तरह हिजड़ा नहीं हूँ!"

उसने "हिजड़ा" शब्द कायर के अर्थ में प्रयोग किया था लेकिन हिजड़े सोचने लगे कि उसने पहचान लिया है कि वे डाकू नहीं हिजड़े हैं। उनकी हिम्मत जवाब दे गई। वे तालियां बजाते हुए और खूब पहचाना जी, खूब पहचाना जी कहते हुए वहां से भाग निकले। कहावत का अर्थ है कि कायर लोग कितनी भी हिम्मत करने की कोशिश करें, वे बहादुरी का काम नहीं कर सकते।

: 352 : होय भिन्सार बड़ी बिल खोदब

(भिन्सार - सुबह)

एक ठंडी रात थी, बर्फीली हवा चल रही थी और लोमड़ी बुरी तरह से ठिठुर रही थी। वह अपने बिल में सिकुड़कर बैठी हुई थी, लेकिन फिर भी ठंड से बच नहीं पा रही थी। उसने मन ही मन सोचा, "कल सुबह, जब सूरज निकलेगा, तब मैं बहुत गहरा बिल खोदूंगी और उसमें घुस कर ठंड से बच जाऊँगी।"

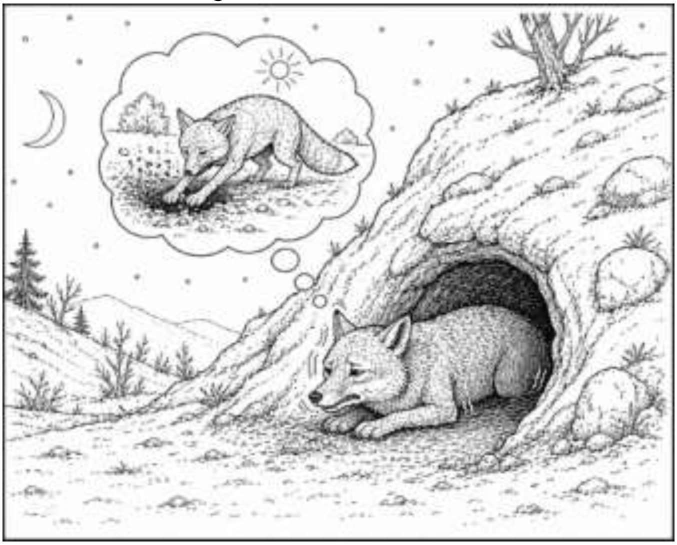

लेकिन जब सुबह धूप निकली और हल्की सी गर्मी ने लोमड़ी के शरीर को छुआ, तो उसकी मनस्थिति बदल गई। अब ठंड का डर नहीं था। लोमड़ी बाहर निकली, शरीर को ऐंठा और धूप सोखने लगी।

वह सोचने लगी, "अरे! इतनी जल्दी क्या है? बिल खोदने का काम मैं बाद में कर लूंगी। अभी तो धूप में आराम कर लेती हूँ।"

और फिर वह आलस्य में पड़ी रही।

काम को हमेशा टालने वालों के लिए यह कहावत कही जाती है।

: 353 : त्रिशंकु वाली स्थिति

त्रिशंकु की कहानी भारतीय पौराणिक ग्रंथों में मिलती है। त्रिशंकु का असली नाम सत्यव्रत था, जो सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु के वंशज और अयोध्या के राजा हरिश्चंद्र के पूर्वज थे। वे एक पराक्रमी और धर्मपरायण राजा थे, लेकिन उनकी एक अत्यधिक असाधारण इच्छा थी–वे अपने शरीर के साथ स्वर्ग जाना चाहते थे!

त्रिशंकु ने अपने कुलगुरु वशिष्ठ से इस इच्छा को पूरा करने का अनुरोध किया। वशिष्ठ ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है और कोई भी जीवित व्यक्ति शरीर सहित स्वर्ग नहीं जा सकता।

राजा त्रिशंकु ने यह सुनकर वशिष्ठ के पुत्रों से सहायता मांगी, लेकिन उन्होंने भी इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। इससे क्रोधित होकर त्रिशंकु ने उनका अपमान कर दिया, जिससे वशिष्ठ के पुत्रों ने उन्हें "चांडाल" (अछूत) बनने का श्राप दे दिया।

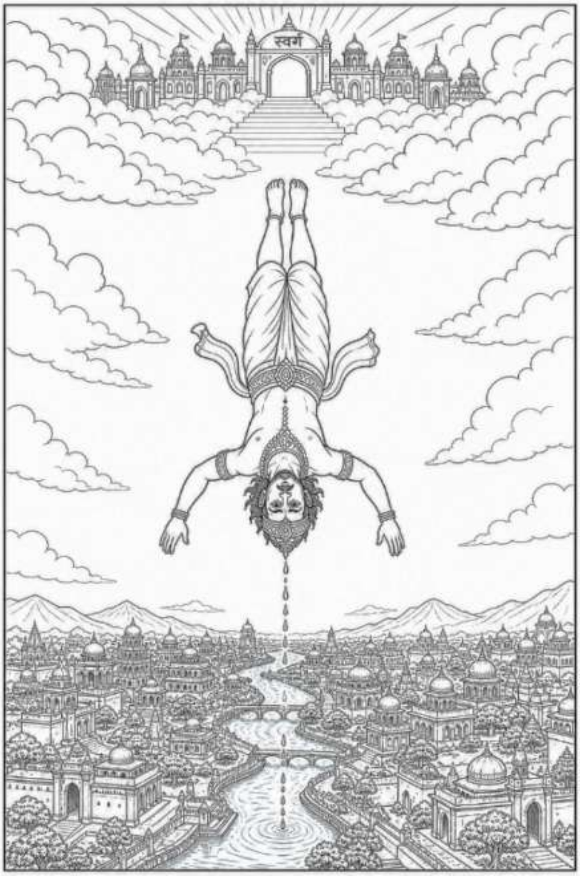

अपमानित और निराश त्रिशंकु ने महर्षि विश्वामित्र की शरण ली। विश्वामित्र वशिष्ठ के पुराने प्रतिद्वंद्वी थे, और उन्होंने अपनी तपस्या के बल पर त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने का निश्चय किया।

जब महर्षि विश्वामित्र ने अपने तपोबल से राजा त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने का प्रयास किया, तो देवताओं ने उन्हें स्वर्ग में प्रवेश नहीं करने दिया और आधे रास्ते से ही रोक दिया। इस कारण वे आकाश में उलटे लटक गए।

ऐसा कहा जाता है कि जब त्रिशंकु स्वर्ग और पृथ्वी के बीच लटके हुए थे, तो वे धरती और स्वर्ग का सुंदर वैभव, नदियाँ, पर्वत और वनस्पति को देखते रहते थे। इतनी ऊँचाई से देखने के कारण उनके मुँह से लगातार लार टपकती रही, जो नीचे गिरकर एक नदी में परिवर्तित हो गई।

चूँकि यह नदी अहंकार और तृष्णा के कारण बनी थी, इसलिए इसे "कर्मनाशा" कहा गया, अर्थात "कर्मों का नाश करने वाली"। माना जाता है कि कर्मनाशा नदी में स्नान करने से पुण्य नष्ट हो जाते हैं।

जब कोई व्यक्ति न इधर का रहता है, न उधर का, तो उसे "त्रिशंकु अवस्था" कहा जाता है। त्रिशंकु की कथा सिखाती है कि मनुष्य को अपनी सीमाओं को समझकर ही इच्छाएँ रखनी चाहिए और प्रकृति के नियमों का सम्मान करना चाहिए।

<u>लेखक की अन्य कृतियाँ</u> <u>(कृपया QR कोड स्कैन करें)</u>

<u>प्रिंट एवं ई-बुक्स</u>

हिंदी कहावत कोश - हार्ड कवर एडिशन - amazon.in पर उपलब्ध. इस पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा 14 सितम्बर 2024 हिंदी दिवस पर किया गया. दस हजार से अधिक कहावतें, कहावतों की कहानियाँ एवं चित्र.

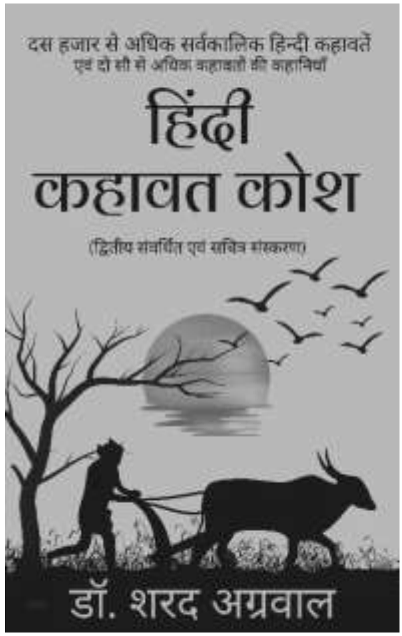

हिंदी कहावत कोश - kindle edition

ई-बुक रीडर्स के लिए

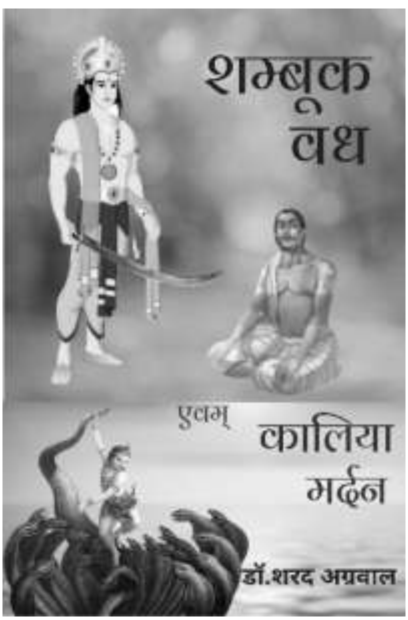

शम्बूक वध एवं कालिया मर्दन

पेपरबैक amazon.in पर उपलब्ध.

शम्बूक वध एवं कालिया मर्दन

kindle edition

Ram & Shambook Krishna & Kalia

Kindle Edition (English version for overseas readers)

वेबसाइट्स

hindikahawat.in दस हजार से अधिक हिंदी कहावतें, कहावतों की कहानियाँ, लोकगीत, बच्चों की कहावतें, ट्रकों की कहावतें, संस्कृत कहावतें, मुहावरे, कहावतों से सम्बंधित प्राचीन शब्दावली एवं वस्तुओं के चित्र

healthhindi.in स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारिक जानकारी पर लेख एवं वीडियोज

यू-ट्यूब चैनल्स

Hindikahawatkosh हिंदी कहावतों एवं पहेलियों पर रुचिकर शार्ट वीडियोज

@sharad110659 स्वास्थ्य जानकारी देने वाले वीडियोज

Drsharadflute बांसुरी की मधुर धुनें - सुगम संगीत एवं भक्ति संगीत